लेखाशास्त्र

वित्तीय विवरणों का विश्लेषण

कक्षा 12 के लिए पाठ्यपुस्तक

लेखक

जी. सी. माहेश्वरी

डी. के. गुप्ता

मुनीष मक्कड़

संपादक

जी. सी. माहेश्वरी

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

जून 2003 ज्येष्ठ 1925

पुनर्मुद्रण

नवंबर 2003 कार्तिक 1925

PD 5T GR

ISBN 81-7450-205-X

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस श्री अरविंद मार्ग नई दिल्ली 110 016	108, 100 फीट रोड हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे बनाशंकरी III इस्टेज बैंगलूर 560 085	नवजीवन ट्रस्ट भवन डाकघर नवजीवन अहमदाबाद 380 014	सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी कोलकाता 700 114	सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स मालीगांव गुवाहाटी 781021

प्रकाशन सहयोग

संपादन : गोबिंद राम

उत्पादन : अतुल सक्सेना

आवरण

अमित श्रीवास्तव

रु. : **40.00**

एन. सी. ई. आर. टी. वाटर मार्क 70 जी एस एम पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, श्री अरविंद मार्ग नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा इंडिया आफसेट प्रेस, ए-1, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-1, रिंग रोड नई दिल्ली 110 016 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

विद्यालयीशिक्षाकेलिएराष्ट्रीयपाठ्यचर्याकीरूपरेखा-2000 के अनुसार वाणिज्य विषयक पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। इसी दिशा में, व्यावसायिक अध्ययन एवं लेखाशास्त्र की नई पाठ्यपुस्तकें तथा अनुदेशों संबंधी अन्य सामग्री चरणबद्ध रूप में प्रकाशित की जा रही हैं। लेखाशास्त्र पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में व्यावसायिक गतिविधियों से प्रभावित परिवर्तनों के विश्लेषण, प्रबंधन, मूल्यांकन की क्षमता प्रदान करता है।

ग्यारहवीं कक्षा के लिए लेखाशास्त्र की पाठ्यपुस्तकों को लेखांकन विषय-वस्तु की परंपरागत प्रथाओं, अवधारणाओं एवं सिद्धांतों तथा नवीनतम व्यावसायिक गतिविधियों के अनुसार तैयार किया गया था। कक्षा 12वीं के लिए तैयार की गई सत्र तीन की पाठ्यपुस्तक में साझेदारी एवं कंपनी खातों के महत्त्वपूर्ण पहलुओं को प्रस्तुत किया गया था। सत्र चार से संबंधित प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक वित्तीय विवरणों तथा उनके विश्लेषण से संबंधित है। वित्तीय विवरणों के विश्लेषण हेतु, पाठ्यसामग्री में कंपनियों के वार्षिक प्रतिवेदनों को सम्मिलित किया गया है।

इस पुस्तक में भावाभिव्यक्ति की स्पष्टता, ठोस विषय-वस्तु का क्रमबद्ध प्रस्तुतिकरण और गहन विवेचन सुनिश्चित करने का भरसक प्रयत्न किया गया है। इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि इस पुस्तक में दी गई शब्दावली और खाता प्रणाली प्रथा का बुनियादी रेखाचित्र समामेलित कंपनियों के प्रकाशित विवरणों के अनुरूप ही रहे।

सभी अध्यायों में विभिन्न प्रकार के वर्गीकृत उदाहरण एवं प्रश्न दिए गए हैं।

हम विश्वविद्यालयों, तकनीकी संस्थानों और विद्यालयों से आए सभी विषय विशेषज्ञों के आभारी हैं जिनके सहयोग से ही इस पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करना संभव हुआ।

परिषद् विद्यार्थियों और अध्यापकों से पाठ्यपुस्तक में सुधार हेतु टिप्पणी एवं सुझाव आमंत्रित करती है।

जगमोहन सिंह राजपूत
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
जून 2002

पाठ्यपुस्तक समीक्षा कार्यगोष्ठी के सदस्य

जी. सी. माहेश्वरी
प्रोफेसर
प्रबंधकीय शिक्षण विभाग
एम.एस. विश्वविद्यालय
वडोदरा, गुजरात

डी. के. गुप्ता
प्रोफेसर
विश्वविद्यालय व्यवसाय विद्यालय
पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

मुनीष मक्कड़
प्रोफेसर
अंतर्राष्ट्रीय प्रबंध संस्थान, नई दिल्ली

एस. सी. जैन
रीडर
भगत सिंह महाविद्यालय, नई दिल्ली

एस. एस. सहरावत
सहायक आयुक्त
केंद्रीय विद्यालय संगठन, गुवाहाटी

हिंदी रूपांतर

शिव जुनेजा
वरिष्ठ वाणिज्य अध्यापक
संत निरंकारी उच्चतम माध्यमिक विद्यालय
पहाड़गंज, नई दिल्ली

अश्विनी काला
वरिष्ठ वाणिज्य अध्यापक
हीरा लाल जैन उच्चतम माध्यमिक विद्यालय
सदर बाज़ार, दिल्ली

मनवीर सिंह राणा
वाणिज्य अध्यापक
गंगा इंटरनेशनल स्कूल
हिरण कूदना, रोहतक रोड,
दिल्ली

क्षिप्रा वैद्या ***(समन्वयक)***
लेक्चरॉर
डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो॰ क॰ गांधी

विषय-सूची

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे,

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे, और

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू सके।

अध्याय 1

वित्तीय विवरणों का विश्लेषण

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप :

- वित्तीय विवरणों के विश्लेषण का अर्थ एवं महत्त्व की व्याख्या कर सकेंगे;
- वित्तीय विवरणों जो कि, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक एवं वार्षिक रूप में जारी किए जाते हैं, की विषय-वस्तु को समझ सकेंगे;
- निदेशक प्रतिवेदन की विषय-वस्तु की व्याख्या एवं उसकी विषय-सूची को बता सकेंगे;
- वार्षिक प्रतिवेदनों में प्रकट निगमन अधिशासन से संबंधित मदों को सूचीबद्ध कर सकेंगे।

वित्तीय विवरण, लेखांकन प्रक्रिया का अंतिम उत्पाद होते हैं। लेखांकन प्रक्रिया का. यह अंतिम उत्पाद लेखाकरण आंकड़ो को तुलन-पत्र, आय विवरण एवं वित्तीय स्थिति में परिवर्तन के रूप में संक्षेपित करना होता है जो कि लेखांकीय आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या में सहायता प्रदान करता है। पिछला दशक न केवल वित्तीय विवरणों की विषय-वस्तु के विकास परिष्करण, समृद्धिकरण के लिए अपितु सूचनाओं की गुणवत्ता एवं विश्वसनीयता के अतिरिक्त विश्व भर में वित्तीय विवरणों की एकरूपता के लिए भी क्रांतिकारी दशक रहा है। यह अध्याय वित्तीय विवरणों की उन अवधारणाओं और विषय-वस्तु को प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है जो कि निगमित उपक्रमों द्वारा अपने सदस्यों एवं अन्य उपभोगकर्त्ताओं को सामान्य उद्देशीय वित्तीय विवरणों के रूप में उपलब्ध कराई जाती हैं।

1.1 वित्तीय विवरणों का अर्थ एवं विषय-वस्तु

(क) वित्तीय विवरणों का अर्थ

वित्तीय विवरण उस लेखांकन कार्य का अंतिम उत्पाद होते हैं जो कि लेखावधि, अर्थात् त्रैमासिक, अर्धवार्षिक या वार्षिक, के दौरान किया जाता है। सामान्यत: वित्तीय विवरणों में तुलन-पत्र और लाभ व हानि खाता शामिल होते हैं। लाभ व हानि खाते को आय विवरण भी कहा जाता है। सार्वजनिक रूप से उपलब्ध वित्तीय विवरणों में विनिर्माण खाता एवं व्यापार खाता शामिल नहीं होते हैं। वार्षिक खातों में कोष प्रवाह और रोकड़ प्रवाह विवरण भी शामिल होते हैं। वित्तीय विवरण विगत अवधि से संबंधित ऐतिहासिक प्रलेख होते हैं।

तुलन-पत्र, परिसंपत्तियों, देयताओं और पूंजी के शेष का एक विवरण है जो कि एक समय बिंदु पर उपक्रम की वित्तीय स्थिति को दर्शाता है। लाभ व हानि खाता एक दी गई अवधि, जैसे कि त्रैमासिक या वार्षिक, के दौरान व्यापारिक गतिविधियों का प्रतिवेदन है, और यह उस अवधि में व्यवसाय द्वारा अर्जित लाभ (अथवा वहन की गई हानि) को ज्ञात करने के लिए तैयार किया जाता है। इसमें लेखांकन अवधि से संबंधित विक्रय तथा अन्य आय, व्यय एवं

हानि की मदें सम्मिलित होती हैं। वित्तीय स्थिति में परिवर्तन विवरण कार्यशील पूँजी के अंर्तवाह एवं बहिर्वाह की व्याख्या करता है जबकि रोकड़ प्रवाह विवरण, नकद प्रवाह को दर्शाता है। वित्तीय विवरणों को मौद्रिक रूप में तैयार किया जाता है। वास्तविक जीवन में, जब यह वार्षिक आधार पर तैयार किए जाते हैं, कुछ संस्थाएँ इन्हें ''वार्षिक खाते'' भी कहती हैं। हालांकि, अंतरिम वित्तीय विवरण एक छोटी अवधि, सामान्यत: तीन माह, के लिए तैयार किए जाते हैं और इसीलिए इन्हें ''त्रैमासिक वित्तीय विवरण'' कहा जाता है। वित्तीय विवरण निदेशक मंडल द्वारा अंशधारकों के प्रति संरक्षक दायित्वों के निर्वहन हेतु तैयार किए जाते हैं और इस प्रकार निगमन विधान उन्हें अंशधारकों की वार्षिक आम सभा में कंपनी कार्यकलापों का 'सही एवं स्पष्ट' दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का दायित्व सौंपता है। लाभ व हानि खाता तुलन-पत्र के साथ संलग्न होना चाहिए और लेखापरीक्षा प्रतिवेदन (लेखापरीक्षक का अलग, विशिष्ट या पूरक प्रतिवेदन, यदि कोई हो तो) भी संलग्नित होना चाहिए।

(ख) वित्तीय विवरणों की विषय-वस्तु

वित्तीय विवरणों की विषय-वस्तु निम्नलिखित है :

(अ) मंडल प्रतिवेदन

(ब) निदेशक का जवाबदेही विवरण

(स) प्रबंध विवेचन एवं विश्लेषण

(द) लेखापरीक्षक प्रतिवेदन

(य) निगमन अधिशासन पर प्रतिवेदन

(र) लेखांकन नीतियाँ

(ल) तुलन-पत्र

(व) लाभ व हानि खाता

(ह) रोकड़ प्रवाह विवरण

(क्ष) खंड प्रतिवेदन

उपरोक्त वर्णित विवरण, खाते एवं प्रतिवेदन वह वैधानिक आवश्यकताएँ हैं जो कि प्रबंध द्वारा अनुपालित की जाती हैं। कुछ स्थितियों में गैर-वैधानिक प्रकटीकरण भी किए जाते हैं जो कि स्वैच्छिक प्रकृति के होते हैं, जैसे कि मानव संसाधन लेखांकन, परिवर्तनशील मूल्यों के लिए लेखांकन, मूल्य संवर्धित विवरण, सामाजिक लेखांकन प्रतिवेदन, इत्यादि। यहाँ केवल उन्ही का विवेचन किया गया है जिनका प्रकटीकरण वैध ानिक रूप से आवश्यक है।

1.2 मंडल प्रतिवेदन

निदेशक मंडल निम्न के संदर्भ में कंपनी के समक्ष, वार्षिक आम सभा में प्रस्तुत किए गए प्रत्येक तुलन-पत्र के साथ एक प्रतिवेदन सलंग्न करने को बाध्य होता है :

(अ) वित्तीय रूप में कंपनी के कार्यकलापों की स्थिति जैसे कि आमद, व्यय, कर पूर्व लाभ कराधान, कर पश्चात् लाभ, प्रावधानों एवं संचयों में हस्तांतरण और अग्रेनीत शेष;

(ब) राशि, यदि कोई हो, जिन्हें ये किसी संचय के लिए प्रस्तावित करें;

(स) लाभांश के रूप में अनुमोदित राशि, यदि कोई हो;

(द) कंपनी की वित्तीय स्थिति को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण परिवर्तन एवं वचनबद्धताएं, यदि कोई हो, जो कि कंपनी के वित्तीय वर्ष के मध्य घटित हुए हो, जो कि तुलन-पत्र एवं प्रतिवेदन की तिथि से संबंधित हो;

(य) ऊर्जा संरक्षण, तकनीकी अवशोषण, विदेशी विनिमय आय एवं निर्गमन जैसा कि निर्धारित हो;

(र) कंपनी या उसकी सहायक कंपनियों के व्यापार की प्रकृति में परिवर्तन के बारे में कोई महत्त्वपूर्ण सूचना;

(ल) ऐसा विवरण, जिसमें कि कंपनी के उन सभी कर्मचारियों के नाम, जो 12 लाख रु. वार्षिक से कम पारिश्रमिक नहीं लेते थे या वह कर्मचारी जो वर्ष के दौरान एक अवधि के लिए कार्यरत था जिसका *मासिक पारिश्रमिक 1 लाख रु. से कम था स्पष्ट रूप से दर्शाया गया हो। साथ ही यह भी दर्शाया* गया हो कि क्या ऐसा कर्मचारी किसी निदेशक अथवा प्रबंधक का संबंधी है अथवा नहीं और यदि है तो उस निदेशक का नाम स्पष्ट रूप से दिखाया जाएगा। (यह सीमा समय-समय पर परिवर्तित होती है।)

1.3 निदेशक का जवाबदेही विवरण

मंडल प्रतिवेदन में निदेशक का जवाबदेही विवरण भी सम्मिलित होगा, जो यह दर्शायेगा कि :

(अ) वार्षिक खातों के निर्माण में महत्वपूर्ण विचलनों से संबंधित उचित स्पष्टीकरण के साथ ही प्रचलित लेखांकन मानकों का अनुसरण किया गया है। लेनदेनों के अभिलेखन एवं वित्तीय सूचना के प्रकटीकरण में, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाऊटेंट्स द्वारा जारी किए गए सभी लेखांकन मानकों का पालन किया जाना अनिवार्य है। पिछली प्रथा/परंपरा से विचलन की दशा में, जोकि लेखांकन मानकों के नए मानदंडों या मानकों के क्रियान्वयन से उत्पन्न हुई हों, स्पष्टीकरण या तो संलग्न के रूप में या तुलन-पत्र में दर्शायी गई संबंधित मद के लिए उत्पाद टिप्पणी के रूप में दिया जाएगा।

Example :

In terms of Accounting Standard-AS 22-Accounting for Tax on income which is mandatory with effect from 01.04.2001, the company has made provision of deferred tax liability arising out of temporary timing difference of Rs. 1,305.57 lakhs upto 31st March, 2001, which is charged to the General Reserve and Rs. 433.85 lakhs for the current year which is debited to the profit& loss account.

The break up of deferred tax liability and assets are as follows:

Deferred tax liability:

On account of depreciation Rs. 1,744.32 lakhs

Deferred tax assets:

On account of leave encashment provision Rs. 4.90 lakhs

*Annual Report 2001-2002; Gammon India Limited, (**B. Other notes** number14, p. 47*

The company had in 1998 established an Employee Stock Option Plan (ESOP) in terms of which 7,468,800 equity shares of the face value of Re. 1 each were allotted to employees of the company and employees of associate companies and to Zee Network Employees Welfare Trust (ZNEWT) in the year 1999-2000 at a price of Rs. 21.20 per share on exercise of options. ZNEWT to hold 3,154,800 shares for the eventual transfer to eligible employees to whom options are granted from time to time by the ESOP Committee of the Company.

This stock option was established prior to SEBI guidelines on stock options, which came into effect from June 1999, and hence these guidelines are not applicable to the company as per the clarification from SEBI. Accordingly, compensation cost of stock option granted is not required to be accounted.

19th Annual Report (2000-01) Zee Telefilms Ltd., Note no. 18, p. 53.

(ब) वित्तीय वर्ष के अंत में कंपनी के कार्यकलापों का सही एवं स्पष्ट दृष्टिकोण और उस अवधि के लाभ एवं हानि को दर्शाने के लिए, निदेशकों ने ऐसी लेखांकन नीतियों का चयन और सतत् प्रयोग उन निर्णयों और पूर्वानुमानों के लिए किया जो कि उचित एवं दूरदर्शी हैं;

(स) निदेशकों ने उपयुक्त लेखांकन अभिलेखों के अनुरक्षण में कंपनी अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार परिसंपत्तियों की सुरक्षा और घोटालों एवं अन्य अनियमिताओ से बचाव और उनका पता लगाने के लिए पर्याप्त और उचित सावधानी बरती है;

(द) निदेशकों ने वार्षिक खाते सतत् व्यापार आंधार पर तैयार किए;

(य) बोर्ड लेखापरीक्षक प्रतिवेदन में दिए गए प्रत्येक आरक्षण, विशेषक अथवा विपरीत टिप्पणी पर संपूर्ण सूचना एवं स्पष्टीकरण उपलब्ध कराएगा।

प्रदर्श 1.1

WIPRO LIMITED
DIRECTOR'S REPORT

The Directors present the Annual Report of Wipro Limited for the year ended March 31, 2001

FINANCIAL RESULTS

(Rs. in Mns)

	2001	*2000*
Sales and other income (net of excise duty)	30,922	22,921
Profit before tax	7,655	3,507
Provision for tax	992	501
Profit after tax before extraordinary items	**6,663**	**3,006**
Extraordinary gains (Loss)	16	(523)
Profit for the year	6,679	2,483
Appropriations :		
Interim dividend on preference shares	18	26
Interim dividend on equity shares	-	69
Proposed dividend on equity shares	116	-
Corporate tax on distributed dividend	14	10
Transfer to Capital Redemption Reserve	250	-
Transfer to General Reserve	6,281	2378

Sales of the company in the year ended March 31, 2001 were Rs. 30,922 millions up by 35% and Profit after Tax before extraordinary items was Rs. 6,663 millions up by 122% over the previous year. Over the last 10 years the sales have grown at an average annual rate of 23% and profit after tax at 50%. The company's export at Rs. 18,134 millions has registered a growth of 73% compared to the previous year.

Dividend

The Directors recommended a dividend of Re 0.50 per equity share to be appropriated from the profits of the year 2000-01 subject to the approval by the members at the Annual General Meeting.

Directors

Mr. Arun K. Thyagarajan, resigned as Director of the Company, with effect from November 30th, 2000. The Directors place on record their appreciation of the valuable advice and guidance given by him while he was a Director of the Company.

Dr. Ashok Ganguly, Dr. Jagdish N Sheth and Mr. P. S. Pai, retire by rotation and being eligible offer themselves for reappointment.

Fixed Deposits

Fixed deposits from public as at 31st March, 2001 were Rs. 0.89 million and the unclaimed deposits as at that date were Rs. 0.89 million.

Subsidiary Companies

As required under Section 212 of the Companies Act, 1956, the Annual Report for the year 2000-01 and accounts for the year ended March 31, 2001, of the subsidiary companies Wipro Welfare Limited, Wipro Net Limited, Wipro Trademarks Holdings Limited, Wipro Prosper Limited, Wipro Inc., Enthink Inc., and Wipro Japan KK are attached.

Auditors

The auditors M/s. N M Raiji and Co., retire at the conclusion of the ensuing Annual General Meeting and offer themselves for reappointment.

Personnel

Information as per Section 217(2A) of the Companies Act, 1956 read with the Companies (Particulars of Employees) rules 1975 is given in the Annexure forming part of this report.

Issue of American Depository Receipts and listing on New York Stock Exchange (NYSE)

Your company had issued 3,162,500 American Depository Receipts representing 3,162,500 American Depository Shares each representing one Equity Share of Rs. 2/- each which were issued and allotted at an offer price of USD 41.375 and the same were listed on the New York Stock Exchange (NYSE) on October 19, 2000. The ticker symbol of Wipro in NYSE is **WIT**. The underlying equity shares were issued on all the stock exchanges in India where the other equity shares of the Company are listed.

ADS 2000 Stock Option Plan

Under the ADS 2000 Stock Option Plan, 268,250 stock options representing 268,250 American Depository Shares each representing one equity share of Rs. 2 each were granted to the employees. The details of options granted under the ADS Stock Option Plan 2000 to senior management are given below:

Options granted to Senior Management

Name	**Options**
Vivek Paul	60,000
Suresh C Senapaty	3,000

Research and Development

Our R&D efforts continued in the area of IEEE 1394, Bluetooth, SoC and Voice Infrastructure. We have developed reusable components which enables us to deliver

a variety of high end design services to mention a few are the 1394 links, Bluetooth broadband controllers, Ethernet Media Access Controller, 4 Port packet cables, etc., Significant investment of resources in developing an OSGi. Infrastructure for this is being accepted as the framework for delivery of services to residential users.

The total expenditure on R&D during the year was Rs. 93.87 millions including capital expenditure of Rs. 10.88 millions.

Foreign Exchange Earnings and Outgoings

The foreign exchange earnings of the company during the year were Rs. 18,134 millions while the outgoings were Rs. 8,330 millions (including materials imported).

Report on Corporate Governance

A detailed report on Corporate Governance has been included separately in the Annual Report.

Directors Responsibility Statement

As required under Section 217 (2AA) of the Companies Act, 1956 it is hereby stated that :

(a) in the preparation of annual accounts, the applicable accounting standards had been followed alongwith proper explanations relating to material departures;

(b) the Directors had selected such accounting policies and applied them consistently and made judgements and estimates that were reasonable and prudent so as to give a true and fair view of the state of affairs of the company at the end of the financial year and of the Profit or Loss of the Company for that period;

(c) the Directors had taken proper and sufficient care for the maintenance of adequate accounting records in accordance with the provisions of this act for safeguarding the assets of the company and for preventing and detecting fraud and other irregularities; and

(d) the Directors had prepared the annual accounts on a going concern basis.

Acknowledgments

The Directors thank the Company's customers, suppliers, bankers, financial institutions, Central and State Governments and shareholders for their consistent support to the Company. The Directors also sincerely acknowledge the significant contributions made by all the employees for their dedicated services to the Company.

On behalf of the Board

Bangalore, April 21, 2001

Azim H Premji

Chairman

1.4 प्रबंध विवेचन एवं विश्लेषण

वार्षिक प्रतिवेदनों के इस भाग में उद्योग संरचना एवं विकास का विश्लेषण और विवेचन, अवसर एवं चुनौतियाँ, चालू क्रियाओं के बिंब, भावी दृष्टिकोण, व्यापारिक संवृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले जोखिम और संस्थाएँ, आंतरिक नियंत्रण तंत्र एवं इसकी प्रभावकारिता, लेखापरीक्षा समिति का गठन, प्रतिकार समिति, अंशधारक शिकायत समिति, रोजगार समिति, वित्तीय एवं प्रचालन निष्पादन, मानव संसाधन विकास और औद्योगिक संबंध वातावरण के लिए किए गए प्रयत्न, शामिल होते हैं। यह भाग अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल उस वातावरण का जिसमें कंपनी प्रचलित हो रही हैं, परिचालन विश्लेषण उपलब्ध कराता है अपितु उन महत्त्वपूर्ण तत्वों को भी दर्शाता है जो कि उस भावी व्यापारिक वातावरण को आकार प्रदान करेंगें जिसमें कि कंपनी का परिचालन होता है। विषय-वस्तु का सतर्क विश्लेषण व्यक्ति को भावी दिशा के निर्धारण में सहायता कर सकता है। हालांकि इसे अग्रावलोकन सूचना के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए क्योंकि इसकी अधिकतम सूचनाएं विगत अवधि से संबंधित होती हैं।

1.5 निगमन अधिशासन पर प्रतिवेदन

निगमन अधिशासन में कंपनियां संचालक मंडल द्वारा इस प्रकार निर्देशित एंव नियंत्रित की जाती हैं ताकि स्वामित्वधारक मूल्य को निगम व्यूहरचनाओं के उचित प्रारुपण द्वारा सृजित किया जा सके जिससे भाविष्यिक संस्थाओं का निर्माण किया जाएगा। कंपनी जगत में हाल ही में घटित घटनाएँ जो कि वित्तीय घोटालों, कंपनी अधिग्रहण हेतु संघर्षो, लेखांकन घोटलों की ओर जाती है, उस कार्यविधि की वैद्धता पर प्रश्नचिन्ह लगाती है जिसके अनुसार निदेशक अंशधारकों के हित में कार्य करते है। विश्व भर में निदेशकों के उत्तरदायित्वों को पारदर्शी बनाने के लिए और यह सुनिश्चित करने के लिए कानून बनाए गए और नियम सुधारे गए कि निदेशक अपने हितों में कार्य न करें बल्कि अन्य स्वामित्वधारकों के हितों का परित्याग किए बिना अंशधारकों के हित में कार्य करें। लेखांकन के क्षेत्र में निगमन अधिशासन का केंद्र बिंदु उचित रूप में प्रकटीकरण की रूपरेखा, अनुश्रवण, चूक और सुधारक तंत्र जो कि प्रबंधकों एवं अन्य स्वामित्वधारकों के लक्ष्यों के संतुलन को सुनिश्चित करने से संबंधित है। इस घाटे पर सेबी ने सूचीयन समझौते में संशोधन को प्रभावित किया जहां पर खंड 49 को निगमन अधिशासन के अनुसार सूचीबद्ध कंपनियों के लिए कुछ प्रकटीकरण करने हेतु सुनिश्चित किया गया है।

प्रकटीकरण की मदें निम्नलिखित है :

1. निदेशक मंडल की संरचना - उनके नाम वर्गीकरण (कार्यकारी/अकार्यकारी/नामित), अनुभव एवं पद नाम के साथ;

2. मंडल समितियाँ जैसे कि लेखा परीक्षा समिति, पारिश्रमिक समिति, अंशधारक शिकायत समिति, प्रतिकार एवं सुविधा समिति;
3. प्रबंध-कार्यकारी को "प्रबंधकीय विवेचन एवं विश्लेषण" शीर्षक के अंतर्गत अंशधारकों के प्रति कंपनी की कार्यप्रणाली का विस्तृत विश्लेषण देना होगा;
4. मंडल सभा की कार्यविधि;
5. अनुपालन अधिकारी;
6. सामान्य आम सभा समय तिथि एवं स्थान सहित;
7. अंशधारक सूचना जिसमें कि, अंशधारकों को दिए गए नोटिस, वित्तीय कैलेंडर, खाता बंद होने की तिथि, लाभांश भुगतान तिथि, मतदान की विधि, शेयर बाजार का नाम जहाँ कंपनी सूचीबद्ध होगी, स्कंध कूट, बाज़ार मूल्य आँकड़े, निक्षेपाकारों एवं परिरक्षकों के नाम एवं पते, उत्पादन सुविधाओं की अवस्थिति, सूचित हो, और
8. निगमन अधिशासन पर लेखापरीक्षक का प्रमाण पत्र।

प्रदर्श 1.2

REPORT ON CORPORATE GOVERNANCE — WIPRO LIMITED

INTRODUCTION

"Good Corporate Governance" is governance with the highest standards of professionalism, integrity, accountability, fairness, transparency, social responsiveness and business ethics. Good Corporate Governance, is a critical doctrine to the global economic system, enabling the business to not only effectively and efficiently achieve its corporate objectives but also provides it the structure and methodology to sustain its survival in globally competitive environment. Your Company has always been managed with the principles of "Good Corporate Governance".

CORPORATE GOVERNANCE AT WIPRO

In 1999-2000, your Company initiated the process of making substantial disclosures on the Company and its Board of Directors in the Annual Report and strengthened it further during 2000-2001. While continuing to make similar disclosures, we have benchmarked your Company's corporate practices with the guidelines recommended by the SEBI Committee on Corporate Governance. We are glad to inform you that the Company adheres to all the mandatory recommendations made by the SEBI Committee.

I BOARD OF DIRECTORS

A *The Board of Directors of the Company shall have an optimum combination of executive and non-executive directors with not less than fifty per cent of the Board of Directors comprising of non-executive directors. In case the Company has an executive chairman, at least half of the Board should comprise of independent directors.*

The details of the Directors on the Board of your Company for the year 2001-2002 are given below :

Name	*Category*	*Designation*	*Date of Appointment*	*Number of membership in Boards of other public companies*
Azim H. Premji	Promoter Director	Chairman & Managing Director	01.09.1968	II
P. S. Pai	Executive Director	Vice Chairman	01.12.1998	Nil
Vivek Paul	Executive Director	Vice Chairman	26.07.1999	1
Hamir K. Vissanji*	Non-Executive Director	Director	21.09.1956	4
N. Vaghul	Non-Executive Director	Director	09.06.1997	12
B. C. Prabhakar	Non-Executive Director	Director	20.02.1997	Nil
Jagdish N. Sheth	Non-Executive Director	Director	01.01.1999	2
Ashok Ganguly	Non-Executive Director	Director	01.01.1999	7
Eisuke Sakakibara**	Non-Executive Director	Additional Director	01.01.2002	Nil
P. M. Sinha**	Non-Executive Director	Additional Director	01.01.2002	4
Nachiket Mor***	Nominee Director	Director	27.11.1996	3

* resigned from the Board effective January 15, 2002.

** appointed as Additional Directors with effect from January 1, 2002.

*** resigned from the Board effective July 19, 2001.

B *All pecuniary relationship or transactions of the non-executive directors vis-a-vis the Company should be disclosed in the Annual Report.*

None of the non-executive directors have any pecuniary relationship or transaction with the Company.

II *AUDIT COMMITTEE*

A qualified and independent Audit Committee shall be set up having a minimum of three independent non-executive directors as members. The role of the Audit Committee shall include the following :

- *Oversight of the Company's financial reporting process and the disclosure of its financial information to ensure that the financial statement is correct, sufficient and credible*
- *Recommending the appointment and removal of external auditor, fixation of audit fee and also approval for repayment for any other services*
- *Reviewing with management the annual financial statements before submission to the Board*

The Audit Committee of the Board of Directors reviews, acts and reports to the Board of Directors with respect to various auditing and accounting matters, including the recommendation for appointment of our independent auditors, the scope of the annual audits, fees to be paid to the independent auditors, the performance of our independent auditors and our accounting practices.

The Audit Committee also reviews audit observations of Wipro's Internal Audit department pertaining to various Business Units (BU) and discusses the same with BU Management. Wipro's Internal Audit is an ISO 9001:2000 certified function.

The Audit Committee comprises of the following three non-executive directors. The Audit Committee reviews the audited quarterly and yearly financial results with the Management before being submitted to the Board for its consideration and approval.

Mr. N. Vaghul – Chairman

Messrs B. C. Prabhakar and P. M. Sinha – Members

Name	*Name of meeting held during the year*	*Number of meetings attended during the year*
N. Vaghul	4	4
Nachiket Mor*	4	1
Hamir K. Vissanji**	4	2
B. C. Prabhakar**	4	3
P. M. Sinha***	4	1

* resigned with effect from July 19, 2001 and attended the meeting help up to that date.

** resigned with effect from January 15, 2002.

*** co-opted with effect from July 19, 2001 and attended all the meeting held after that date.

**** co-opted with effect from January 1, 2002 and attended all the meetings held after that date.

III REMUNERATION OF DIRECTORS

A. *The remuneration of the non-executive directors shall be decided by the Board of Directors.*

Non-executive directors were paid professional fees for the services rendered by them to the Company during the year 2001-02 which was approved by the Board of Directors of the Company at their meetings held on April 19, 2001 and September 3, 2001.

B. *Appropriate disclosures on the remuneration of directors have to be made in the section on the corporate governance of the annual report;*

The details of actual payments made during the financial year 2001-02 to the directors of the Company are given below :

a) Remuneration paid to Proprietor and Executive Directors

(Rs. in 000s)

Name	Basic Salary	Commission Incentives	Allowance	Other annual compensation*	Deferred benefits	No. of options granted	No. of ADS options granted	Expiration Date
Azim H. Premji	2,100	9,717	-	2,172	2,883	-	-	
Vivek Paul	15,463	29,152	-	1,533	2,319	55,000	160,000	Feb, 2009
P. S. Pai	2,280	9,717	9,500	1,509	616	25,000	-	June 2006

* In addition, the above directors were entitled to rent free furnished residential accommodation or house rent allowance, leave travel concession, reimbursement of medical expenses, personal accident insurance, fully maintained Company car with driver, interest subsidy on housing loan, gardener, watchman, electricity, servant and gratuity as per Company policy. Deferred benefits in the case of Mr. Vivek Paul was Company's contribution to Deferred Compensation Plan. In the case of others, it was Company's contribution to Pension and Provider Fund.

** Figures mentioned are rupee equivalent — as amounts were paid in US Dollars.

b) Professional fees paid to Non-Executive Director

Six of our non-executive directors were paid professional fees as detailed hereunder :

Professional fees paid for the full year (2001-02)

(Rs. in 000s)

	Ashok Ganguly	B.C.Prabhakar	N. Vaghul	Dr. Jagdish N.Sheth*
Professional fees	800	400	800	1,221

* Figures mentined above are Rupee equivalent – as amounts were paid in US Dollars.

Professional fees paid for part of the year (2001-02)**

	Prof. Eisuike Skaakibara***	P.M. Sinha
Professional fees	486	250

** Professional fees paid only with effect from date of appointment i.e. January 1,2002.

*** Figures mentioned above are Rupee equivalent – as amounts were paid in Yen.

IV COMPENSATION AND BENEFITS COMMITTEE

The Compensation and Benefit Committee of the Board of Directors, which was formed in 1987, determines the salaries, benefits and stock option grants for our employees, directors and other individuals compensated by our Company. The Compensation Committee also administers our compensation plans. The Compensation & BEnefits Committee comprises of the following three non-executive directors :

Mr. N. Vaghul - Chairman

Messrs B.C. Prbhakar and P.M. Sinha - Members

Name	*Number of meetings held during the year*	*Number of meetings attended during the year*
N. Vaghul	4	4
Hamir K. Vissanji*	4	2
B.C. Prabhakar	4	4
P.M. Sinha**	4	1

* resigned with effect from January 15, 2002.

** co-opted with effect from January 1,2002 and attended all the meetings held after that date.

V BOARD PROCEDURE

A. *The Board of Directors of a company shall meet at least four times a year, with a maximum time gap of four months between any two meetings.*

During the last financial year, our Board met at four meetings held on April 19,2001, July 19,2001, October 17, 2001 and January 17,2002. All the Board meetings were held at our Registered Office at Bangalore.

Agenda papers along with explanatory statements were circulated to the Directors in advance for each of these meetings. All relevant information, as recommended by the SEBI Committee on Corporate Governance as well as items required under Clause 49 of the Listing Agreement were placed before the Board from time to time. The details of Board meetings held during 2001-02 and attendance record of each of the Directors are given below :

Name of the Director	*Number of meetings held*	*Number of meetings attended*
Azim H. Premji	4	4
P.S. Pai	4	4
Vivek Paul	4	4
Hamir K. Vissanji*	4	2
N. Vaghul	4	4
B.C. Prabhakar	4	4
Jagdish N. Sheth	4	3
Ashok Ganguly	4	4

Eisuke Sakakibara**	4	1
P.M. Sinha**	4	1
Nachiket Mor***	4	1

* resigned with effect from January 15, 2002

** appointed with effect from January 1,2002 and attended all meetings held after that date.

*** resigned with effect from July 19,2001 and attended all meetings upto that date.

B. *Company further agrees that a director shall not be a member in more than 10 committees or act as chairman of more than five committees across all companies in which he is a director.*

None of the Directors of our Company were members in more than 10 committees nor acted as chairman *of more than five committees across all companies in which they were directors. Details of Board memberships positions accupied by the Directors, accross all companies, have been given at the beginning of the section.*

VI MANAGEMENT

A *Management discussion and analysis report shall form part of the annual Report to the shareholders.*

The Company has provided a detailed Management Discussion and Analysis in its Annual Report for the year 2001-02 in pages 82 through 89.

B. *Disclosures must be made by the management to the Board relating to all material financial and commercial transactions, where they have personal interest, that may have a potential conflict with interests of the Company.*

During 2001-02, on transactions of material nature had been entered into by the Company with the Management or their relatives that may have a potential conflict with interests of the Company.

VII SHAREHOLDERS

A *In the case of appointment of a new director or re-appointment of a director, the shareholders must be provided with the following information :*

- *a brief resume of the director*
- *nature of companies in which the person also holds the director ship and the membership of committees of the Board*

The notice for the Annual General Meeting held on July 19,2001 complied with this requirement.

B. *All information like quarterly result, presentation made by companies to analyst shall be put on Company's website.*

Our Quarterly and Annual results as well as copies of the Press Releases and Company Presentations were displayed on the following web-sites i.e. www. wiproindia.com and www.wipro.com

Apart from the above, we also regularyl provided the information to the stock exchanges as per the requirements of the Listing Agreements and updated our websites periodically to include information on new developments and business opportunities of the Company.

C. A Board committee under the chairmanship of a non-executive director shall be fonned to specifically look into the redressing of shareholder's and investor's complaints like transfer of shares, non receipt of balance sheet, non receipt of declared dividends, etc. This committee shall be designated as 'shareholders/investors grievance committee'

ADMINISTRATIVE AND SHAREHOLDERS/INVESTORS GRIEVANCES COMMITTEE

The Administrative and Shareholders/Investors Grievance Committee administered the following :

a. redress shareholder and investor's compliants etc. relating to transfer of shares, non receipt of balance sheet, non receipt of declared dividends
b. consolidate and sub-divide share certificates]
c. approve tranmission and issue of duplicate/fresh share certificate
d. open and close Bank accounts
e. grant and revoke general, specific and banking powers of attorney

The composition of the Administrative and Shareholders/Investors Grievances Committee is as follows :

Mr. B.C. Prabhakar - Chairman

Mr. Azim H. Premmi - Members

D *The Board of the Company shall delegate the power of share transfer to an officer or a committee or to the registrar and share transfer agents so as to expedite the process of share transfers.*

VIII COMPLIANCE

A certification shall be obtained from the auditors of the Company regarding compliance of conditions of corporate governance as stipulated and the same sent to the shareholders along with the director's report which is sent annually to all the shareholders of the Company.

The certificate obtained from our statutory Auditors M/s. N.M. Raiji & Co., dated April 19, 2002 appears at page 50 of the Annual Report.

IX COMPLIANCE OFFICER AND ADDRESS FOR CORRESPONDENCE

The name and designation of the Compliance Officer of the Company is Mr. Suresh C. Senapaty, Corporate Executive Vice President -Finance.

In addition, shareholders/ADR holders can contact Mr. J. Shankar, Corporate Treasurer in Indian and Mr. R. Sridhar in USA on financial matters and Mr. Satish Menon, Corporate Vice President-Legal & Company Secretary on all legal and secretarial matter.

Their contact details are given below :

Name	*Telephone Number*	*Email id*	*Fax No.*
S.C. Senapaty	91-080-8440011-Extn113 91-080-8440055 (Direct)	suresh.senapaty@wipro.com	91-080-8440104
J. Shankar	91-080-8440011-Extn 170 91-080-8440079 (Direct)	shankar.jaganathan@wipro.com	91-080-8440051
Satish Menon	91-080-8440011-Extn 180 91-080-8440078 (Direct)	Satish.menon@wipro.com	91-080-8440051
R. Sridhar	011-408 5574402	sridhar.ramabsubbu@wipro.com	001408 615 7178

X GENERAL BODY MEETINGS

1. Details on Annual General Meetings (AGM) :

   1.1 Location and time, where last three AGMs held :

Year	Location	Date	Time
1998-99	Taj Residency, Bangalore	July 29, 1999	4.30 pm
1999-00	Taj Residency, Bangalore	July 27, 2000	4.30 pm
2000-01	Doddakannelli, Sarjåpur Road, Bangalore	July 19, 2001	4.30 pm

   1.2 Whether special resolutions were put through postal ballot last year ? No Generally, all the resolutions in the AGM are passed through show of hands.

Attendence of AGMs and EGMs during the last financial year :

July 19, 2001 At the Annual General Meeting, all the Directors were present.

July 19, 2001 At the Extra-Ordinary General Meeting, all the Directors were present.

2. Details on Extraordinary General Meetings (EGM) :

   2.1 Location and time, where last three EGMs held :

Year	*Location*	*Date*	*Time*
1998-99	Ganesha Complex, Madiwala, Bangalore	December 13, 1999	11.00 am
1999-00	Taj Residency, Bangalore	April 26, 2000	4.30 pm
2000-01	Doddakannelli, Sarjapur Road, Bangalore	July 19, 2001	5.30 pm

3. Details on resolutions passed through Postal Ballot :

   Pursuant to the provisions of Section 192A of the Companies Act, 1956 read with the Companies (Passing of the Resolution by Postal Ballot) Rules, 2001, consent of the shareholders was obtained by way of Ordinary Resolutions passed under Section 293 (1) (a) of the Companies Act, 1956, for transfer of one of the Company's undertaking

engaged in the business of Fluid Power to Netkracker Limited with effect from opening hours of March 1, 2002. The name of Netkracker Limited has since been changed to Wipro Fluid Power Limited.

The Scrutinizer appointed for the purpose of conducting the POstal Ballot Exercise was Mr. T.S. Suresh, Partner, King & Partridge, Advocates & Solicitors.

The Company complied with all the procedural formalities for the conduct of Postal Ballot.

XI GENERAL SHAREHOLDERS INFORMATION

The following information would be useful to our shareholders :

1. Annual General Meeting - Date and Time - Venue	July 18, 2002 at 4.30 Wipro Limited Doddakannelli Sarjapur Road Bangalore 560 035
2. Financial Calendar	(Tentative schedule)
- Financial reporting for the quarter ended June 30, 2002	Second fortnight of July 2002
- Financial reporting for the half year ending September 30, 2002	Second fortnight of October 2002
- Financial reporting for the half year ending December 31, 2002	Second fortnight of January 2003
- Financial reporting for the year ending March 31, 2003	Second fortnigh of April 2003
- Annual General Meeting for the year ending March 31, 2003	Second fortnigh of July 2003
3. Book Closure Date :	July 3 July 18, 2002 (Bothe days inclusive)
4. Dividend Payment Date :	Dividend as recommended by the Board of Directors, if declared at the meeting, will be payable on or after July 18, 2002, subject to deduction of tax, if any.
5. Listing on Stock Exchanges at :	
Equity Shares	
Bangalore Stock Exchange Limited No. 51, First Cross J.C. Road, Bangalore 560 027	Stock Exchange, Ahmedabad Opp. Sahajanand College Kamadhenu Complex Panjara Pole

The Stock Exchange, Mumbai Phiroze Jeejeebhoy Towers, Dalal Street Mumbai 400 023	Ahmedabad 380 015
National Stock Exchange of India Ltd. Exchange Plaza, 5th Floor, Plot No. C/1 G Block Bandra East, Mumbai 400 051	The Kolkatta Stock Exchange Association Ltd. 7, Lyons RangeKolkatta 700 001
The Delhi Stock Exchange Association Ltd. 3/1, Asaf Ali Road, DSE House New Delhi 110002	Cochin Stock Exchange Ltd. 36/165, 4th Floor, MES Builing Judges Avenue, Kaloor Cochin 682 017
American Depository Receipts (ADRs) New York Stock Exchange 60 Wall Street New York	

Listing fees for the year 2001-02 and 2002-03 have been paid to the Indian Stock Exchanges

Listing fees to New York Stock Exchange for listing of ADRs has been paid for the calendar year 2002.

6. Stock Code :

The Stock Exchange Mumbai	Wipro
National Stock Exchange of india Ltd.	Wipro
New York Stock Exchange (ADRs)	WIT

7. Stock Market Data :

Month	Price in NSE during each month		S&P CNX Nifty Index during each month		Wipro price movement %		Nifty Index movement %	
	High Rs.	Low Rs.	High Rs.	Low Rs.	High	Low	HIgh	Low
April, 01	1,588	759	1,172	1,000				
May, 01	1,868	1,451	1,226	1,096	18	91	5	10
June, 01	1,774	1,221	1,176	1,060	-5	-16	-4	-3
July, 01	1,459	1,367	1,127	1,047	-18	12	-4	-1
Aug., 01	1,565	1,362	1,084	1,052	7	0	-4	0
Sept., 01	1,525	802	1,059	849	-3	-41	-2	-19
Oct., 01	1,199	812	1,000	884	-21	1	-6	4
Nov., 01	1,564	1,010	1,098	974	30	24	10	10
Dec., 01	1,974	1,421	1,133	1,010	26	41	3	4
Jan., 02	1,875	1,461	1,122	1,052	-5	3	-1	4
Feb., 02	1,785	1,562	1,206	1,069	-5	7	8	2
Mar., 02	1,894	1,550	1,201	1,118	6	-1	0	5

8. Registrar & Share Transfer Agents : Karvy Consultants Limited
51/2, Vanivilas Road
T.K.N. Complex
Opp. National College
Basavangudi
Bangalore
Tel : 080-6613400/6621192/93
Fax : 080-6621169

9. Share Transfer System : The turnaround time for completion of transfer of shares in physical form is generally less than 7 days from the date of receipt, if the documents are clear in all respects.

We have internally fixed turnaround time for closing the queries/complaints received from the shareholders.

10. Details of queries/complaints received and resolved during the year 2001 - 2002

Name of queries /complaints	*Received*	*Resolved*	*Unresolved*
No. of requests for change of address	122	122	-
No. of requests for transmission	9	9	-
Non receipt of share certificates/bonus share	13	13	-
Non receipt of Dividend/Revalidation of Dividend Warrants	131	131	-
Letters from SEBI & Stock Exchanges	3	3	-
Issue of duplicate share certificates	6	5	1*
Spliting of shares	17	17	-

11. Distribution of Shareholding as of March 31, 2002 :

Category	*No. of shareholders*	*Percentage*	*No. of shares*	*Percentage*
1-500	54,729	96.26	1,514,402	0.65
501-1000	785	1.38	620,322	0.27
1001-2000	475	0.84	707,370	0.30
2001-3000	196	0.34	513,792	0.22
3001-4000	88	0.15	314,386	0.14
4001-5000	84	0.11	297,703	0.13
5001-10000	174	0.31	1,271,609	0.55
Above 10001	348	0.61	227,226,105	97.74
Total	**56,879**	**100.00**	**232,465,689**	**100.00**

12.Categories of Shareholding as on March 31, 2002 :

Sl. No.	*Category*	*No. of Shares held*	*% of shareholding*
A.	PROMOTERS HOLDING		
1.	Promoters		
	- Promoter in his capacity as partner of Partnership firms	162,586,800	69.94
	- Promoter in his capacity as director of Private Limited Companies	22,746,300	9.78
	- Promoter in his individual capacity	9,340,510	4.02
	- Promoter Director's Relatives	453,500	0.20
B.	NON PROMOTER HOLDING		
	INSTITUTIONAL INVESTORS		
	Multual Funds and UTI	1,713,774	0.74
	Banks, Financial Institutions, Insurance Companies (Central/State Government Institutions/ Non Government Institutions)	1,210,715	0.52
	FIIs*	6,806,985	293
C.	OTHERS		
	Private Corporate Bodies	4,007,959	1.72
	Indian Public	16,549,183	7.11
	NRIs/OCBs	5,083,140	2.19
	Directors and Relatives	617,875	0.27
	Trusts	1,348,948	0.58
	TOTAL	**232,465,689**	**100.00**

* Includes 2,587,000 shares traded as ADRs.

13. Dematerialisation of Shares and Liquidity : Over 96% of our outstanding equity shares have been dematerialized upto March 31, 2002.

14. Outstanding convertible instruments : As of March 31, 2002, there are no outstanding convertible instruments.

15. Outstanding ADRs as of March 31, 2002 : Outstanding ADRs as of March 31, 2002 are 2,587,080. Each ADR represents one underlying Equity Share.

16. Address of our depository for ADS : Morgan Guaranty Trust Company of New York
60, Wall Street
New York, NY 10260

Tel : 011-(212) 648-3208
Fax : 011-(212) 648-5576

17. Name and address of the custodian for ADS in India : ICICI Limited
ICICI Towers

Bandra Kurla Complex
Bandra East
Mumbai 400 051.

Tel : 91-22-6531414
Fax : 91-22-6531165

18. Plant locations :

a. Our Software Development Facilities are located at :

Sl. No.	*Address*	*City*
1.	SB Towers, 88, MG Road	Bangalore 560 001
2.	Information Technology Park, Whitefield	Bangalore 560 066
3.	8, 7th Main Block, Koramangala	Bangalore 560 095
4.	K-312, Koramangala Industrial Layout, V Block Koramangala Bangalore	560 095
5.	271-271A, Sri Ganesh Complex, Hosur Main Road, Madiwala - I Bangalore	560 095
6.	26, Sri Chamundi Complex, Madiwala II, Bommanahalli, Hosur Main Road	Bangalore 560 068
7.	Madiwala Village, Bangalore-Housr Road, Madiwala - III	Bangalore 560 068
8.	111, Mount Road, Guindy	Chennai 600 032
9.	138, Shollinganallur, Old Mahabalipuram Road	Chennai 600 019
10.	A 314, Block III, KSSIDC Multistoried Complex, Keonics Electronic City	Bangalore 561 229

11.	1-8-448, Lakshmi Buildings, SP Road, Begumpet	Secunderabad 500 016
12.	Survey Nos. 64, Serilingampali Mandal, Madhapur	Hyderabad 500 033
13.	Sharada Arcade, 685/2B &685/2C, Satara Road	Pune 411 037
14.	Plot No. 2, MIDC, Infotech Park, Hingewadi	Pune 411 027
15.	3rd Floor, International Technology Centre Belapur, Navi Mumbai Mumbai 400 614	
16.	Plot No. 480-481, Section 20, Udyog Vihar Phase II	Gurgaon 122 015

(b) Our manufacturing facilities are located at :

Sl. No.	*Address*	*City*
1.	PO Box No. 12, Dist. Jalgaon	Amalner 425 401
2.	L-8, MIDC, Waluj	Aurangabad 431 136
3.	105, Hootagalli Industrial Areas	Mysore 571 186
4.	A-28, Thattanchavady Industrial Estate	Pondicherry 605 102
5.	10, Thiruvandar Koil Village, Thirubhuvanai, Villainur Taluk	Pondicherry 605 102
6.	120/1, Vellancheri	Guduvanchery 603 202
7.	Plot No. 4, Anthrasanahalli Industrial Area	Tumkur 572 106

19. Members can contact us at our registered office :

Wipro Limited Doddakannelli

Sarjapur Road

Bangalore 560 035.

Telephone : (91-80) 8440011. Fax : (91-80) 8440051.

AUDITORS'S CERTIFICATE ON CORPORATE GOVERNANCE

To the members of Wipro Limited

We have examined the compliance of conditions of Corporate Governance by Wipro Limited (the Company) for the year ended on March 31, 2002, as stipulated in Clause 49 of the Listing Agreements of the Company with the stock exchanges.

The compliance of conditions of Corporate Governance is the responsibility of the Management. Our examination was limited to procedures and implementation thereof, adopted by the Company for ensuring the compliance of the conditions of Corporate

Governance. It is neither an audit nor an expression of opinion on the financial statement of the Company.

In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, we certify that the Company has complied with the conditions of Corporate Governance as stipulated in the above mentioned Listing Agreements.

We have been explained that no investor grievances are pending for a period exceeding one month against the Company as per the records maintained by the Company.

We further state that such compliance is neither an assurance as to the future viability of the Company nor the efficiency or effectiveness with which the Management has conducted the affairs of the Company.

For **N.M. Raiji & Co.**
Chartered Accountants

J.M. Gandhi
Partner

Mumbai, April 19, 2002

1.6 लेखापरीक्षक प्रतिवेदन

कंपनी के वित्तीय क्रियाकलापों की स्थिति के लिए लेखा पुस्तकों, अभिलेखों, सूचनाओं एवं मूल्यांकित स्पष्टीकरणों पर आधारित लेखापरीक्षकों द्वारा तैयार की गई पेशेवर राय की अभिव्यक्ति को लेखापरीक्षक प्रतिवेदन कहते हैं। कंपनी अधिनियम 1956 की धारा 227 के अंतर्गत लेखापरीक्षक प्रतिवेदन में यह दर्शाया जाना आवश्यक है कि तुलन-पत्र कंपनी के क्रियाकलापों की स्थिति का साफ एवं स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है साथ ही लाभ व हानि खाता वर्षभर में अर्जित लाभ (हानि) के संदर्भ में साफ एवं स्पष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है तथा यह विवरण लेखांकन मानकों के अनुरूप तैयार किए गए हैं। यदि कंपनी, कंपनी अधिनियम 1956 की धारा 227 (अ) के अंतर्गत आती है तो लेखापरीक्षक को निर्माण एवं अन्य कंपनियां (लेखापरीक्षक प्रतिवेदन) आदेश 1988 से संबंधित मामलों को प्रतिवेदित करना होता है। ये मामले परिसंपत्तियों के अभिलेख तथा मौलिक सत्यापन, रहतिए का मूल्यांकन, ऋणों एवं ब्याज, माल की क्रय प्रक्रिया, आंतरिक नियंत्रण तंत्र से संबंधित होते हैं। लेखापरीक्षक द्वारा इसका भी संकेत दिया जाता है कि क्या ऋण औद्योगिक कंपनियां (विशेष प्रावधान) अधिनियम 1985 की धारा 3 (1) (0) के अंतर्गत ऋण है अथवा नहीं। लेखा परीक्षक प्रतिवेदन में महत्वपूर्ण विचलनों की ओर इंगित किया जाता है तथा यदि आवश्यक हो तो प्रतिवेदन में विशेषक दिया जाना चाहिए। यदि ऐसे मामले लेखापरीक्षक प्रतिवेदन में उठाए गए हैं तो संचालक मंडल द्वारा पर्याप्त एवं उचित स्पस्टीकरण मंडल प्रतिवेदन, जिसका विवेचन उपर किया गया है, में दिया जाता है।

प्रदर्श 1.3

AUDITOR'S REPORT

To the members of WIPRO LIMITED

We have audited the attached Balance Sheet of Wipro Limited as at March 31, 2001 and also the annexed Profit & Loss Account for the year ended on that date, and report that;

1. We have obtained all the information and explanations which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of our audit.
2. In our opinion, proper books of accounts as required by law have been kept by the Company so far appears from our examination of the books.
3. The Balance Sheet and the Profit & Loss Account dealt with by this report are in agreement with the books of account.
4. In our opinion, the Profit and Loss Account dealt with by this report are in agreement with the books of account.
5. As per the information and explanations provided to us, none of the directors are disqualified from being appointed as directors under Section 274(1) of the Companies Act, 1956.
6. In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, the said account, read together with the notes thereon give information required by the Companies Act, 1956 and on the basis of such checks as we considered appropriate we further state that:
   a. give a true and fair view of the state of affairs of the Company as at March 31, 2001; in case of the Balance Sheet and
   b. give a true and fair view of the Profit for the year ended on that date, in case of the Profit & Loss Account
7. As required by the Manufacturing and Other Companies (Auditor's Report) Order, 1988, issued by the Company Law Board in terms of Section 227(4A) of the Companies Act, 1956 and on the basis of such checks as we considered appropriate, we further state that:
   (i) The Company has maintained proper records showing quantitative details and the situation of its fixed assets. A major portion of fixed assets have been physically verified by the management during the year. In our opinion, the frequency of verification of fixed assets by the management is reasonable, having regard to the size of the Company and the nature of its assets. No material discrepancy has been noticed between the book records and the assets physically verified.
   (ii) None of the fixed assets of the Company have been revalued during the year.
   (iii) Stocks of finished goods, stores, spare parts and raw materials other than with the third parties have been physically verified by the management at reasonable intervals. There is a process of obtaining confirmation in respect of stores with third parties.

(iv) In our opinion and according to the information and explanations given to us, the procedures for physical verification of stocks followed by the management are reasonable and adequate in relation to the size of the Company and the nature of its business.

(v) The discrepancies between the physical stocks and the book stocks were not material and have been properly dealt within the books of account.

(vi) In our opinion, the valuation of stocks is fair and proper in accordance with the normally accepted accounting principles, and is on the same basis as in the preceding year.

(vii) The Company has not taken any loans secured or unsecured from companies, firms or other parties listed in the register maintained under section 301 of the Companies Act, 1956. We have informed that there are no companies under the same management as defined under Section 370(1-B) of the Companies Act, 1956.

(viii) The Company has granted unsecured interest free/interest-bearing loans to its subsidiaries and to companies which are listed in the register maintained under Section 301 of the Companies Act, 1956. The terms and conditions of such loans are prima facie, not prejudicial to the interest of the Company.

(ix) In respect of loans and advances in the nature of loans given by the Company, the parties/employees have generally repaid the principle amount and interest as per terms, wherever stipulated.

(x) The Company has adequate internal control procedures commensurate with its size and nature of its business for the purchase of stores, raw materials including components, plant and machinery, equipment and other assets and for the sale of goods.

(xi) The transactions for purchase of goods and materials and sale of goods, materials and services, made in pursuance of contracts or agreements entered in the register maintained under Section 301 of the Companies Act, 1956, as aggregating during the year to Rs. 50,000/- or more in respect of each party, have been made at prices which are generally reasonable having regard to prevailing market prices for such goods, materials, or services or the prices at which transactions for similar goods or services have been made with other parties.

(xii) As explained to us, the Company has a regular procedure for determination of unserviceable or damaged stores and raw material. In our opinion adequate provision has been made in the accounts for the estimated loss on the items so determined.

(xiii) The Company has not accepted any public deposits during the year. The amount outstanding as on the balance sheet date is only in respect of unclaimed deposits accepted in earlier years. On account of this no comment is required for the compliance of the Section 58A of the Companies Act, 1956 and the Companies (Acceptance of Deposits) Rules, 1975 and directives issued by the Reserve Bank of India with regard to the deposits accepted from the public.

(xiv) In our opinion, the Company has maintained reasonable records for the sale and disposal of realizable by-products and scrap.

(xv) The Company has a system of internal audit which is commensurate with its size and nature of business.

(xvi) We have broadly reviewed the books of account maintained by the Company pursuant to the rules made by the Central Government for maintenance of Cost records in respect of the Vanaspati, Soaps and Lighting products under Section 209(1)(d) of the Companies Act, 1956 and are of the opinion that, prima facie, the prescribed accounts and records have been maintained. We have not, however, made a detailed examination of the records with a view to determining whether they are accurate or complete.

(xvii) The Company has generally been regular in depositing Provident Fund and Employees State Insurance dues with the appropriate authorities, except that in a few cases there were minor delays in depositing the dues.

(xviii) There are no undisputed amounts in respect of Income Tax, Wealth Tax, Sales Tax, Customs Duty and Excised Duty which, as at the Balance Sheet date, were outstanding for a period of more than six months from the date they become payable.

(xix) On the basis of our examination of the books of account and the information and explanations given to us, there are no personal expenses which have been charged to the revenue account other than those incurred in terms of contractual obligations or in accordance with generally accepted business practice.

(xx) The Company is not a sick industrial Company within the meaning of Section 3 (1) (o) of the Sick Industrial Companies (Special Provisions) Act, 1985.

(xxi) In respect of service activities, the Company has a reasonable system, commensurate with its size and nature of business for:

a. recording receipts, issues and consumption of materials and allocating materials consumed to the relative jobs/projects

b. allocating man - hours utilized to the respective jobs/projects.

c. authorization at appropriate levels and an adequate system of internal control on issue of stores and allocation of stores and man power to jobs/projects.

(xxii) The business activity carried on by the Company includes letting out immovable property on rental basis. For such activities, maintenance of records of materials, stores, man-hours etc., is not considered necessary.

(xxiii) As regards the trading activity of the Company during the year, damaged goods were determined and suitable value adjustment was made in the books of account.

for **N.M. Raiji & Co.,**
Chartered Accountants

J.M. Gandhi
Partner

Mumbai, April 20, 2001

1.7 तुलन-पत्र

तुलन-पत्र, अंशधारकों की समता (चुकता अंश पूँजी एवं संचयों एवं अधिशेष), ऋणों, चालू देयताओं और प्रावधानों, स्थायी परिसंपत्तियों (मूल्यह्रास घटाकर), निवेशों, ऋणों और अग्रिमों, और चालू परिसंपत्तियों का विवरण देता है। संक्षेप में, तुलन-पत्र एक समय बिंदु पर निवेश एवं वित्तीय क्रियाकलापों का सूचीकरण है। रोकड़ प्रवाहों, आय एवं अंशधारकों के समता में निर्बंधित प्रत्येक लेखांकन व्यवहार तुलन-पत्र को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, आमद एवं व्यय के अंतर संचयों एवं अधिशेषों को प्रभावित करता है जो परिणामस्वरूप अंशधारक समता को प्रभावित करता है। हालांकि यह ध्यान देने योग्य है कि तुलन-पत्र में दर्शाए गए मूल्य ऐतिहासिक प्रकृति के होते है और जब तक किसी विशेष स्थिति में निर्दिष्ट न हो अपना वर्तमान बाजार मूल्य नहीं दर्शाते हैं।

तुलन-पत्र का प्रारूप कंपनी अधिनियम की अनुसूची VI में निर्धारित किया गया है जो कि इस अध्याय के परिशिष्ट में दिया गया है।

1.8 लाभ एवं हानि खाता

एक आय विवरण दो समय बिंदुओं के मध्य वित्तीय निष्पादन का मापक होता है। यह एक समयावधि के दौरान आमदों (विक्रय और अन्य आयों), लाभ वृद्धियों, व्ययों एवं हानियों को सूंचीबद्ध करता है। यह समयावधि प्राय: एक वित्तीय वर्ष होती है। लाभ को पिछली अवधि के व्यवहारों पर उचित समायोजन के पश्चात् कर पूर्व एवं कर पश्चात् के रूप में दर्शाया जाता है। इस प्रकार ज्ञात शुद्ध लाभ का विविध संचयों के विनियोजन हेतु उपयोग किया जाता है जैसा कि विधि द्वारा आदेशित हो या निदेशक मंडल द्वारा निश्चित किया गया है। अधिशेष यदि कोई हो तो अगले वर्ष को अग्रेनीत किया जाता है।

1.9 रोकड़ प्रवाह विवरण

रोकड़ प्रवाह विवरण एक लेखांकन अवधि में रोकड़ के अंतरप्रवाह और बहिर्वाह को सूचित करता है। लेखांकन उपार्जन पद्धति के अंतर्गत लाभ व हानि खाते द्वारा दर्शाया गया शुद्ध लाभ, कंपनी की जीवन अवधि को छोड़कर, शुद्ध रोकड़ प्रवाह के बराबर नहीं होता है। चूंकि लाभ एवं हानि खाता एक समय खंड से संबंधित एवं कुछ लेखांकन नीतियों पर आधारित होता है, इसलिए यह अवश्यक है कि रोकड़ अंतरप्रवाह एवं बहिर्वाह का आवधिक प्रतिवेदन किया जाए। रोकड़ प्रवाह विवरण, सूचीयन समझौते के खंड-32 के कार्यान्वयन के लिए प्रकाशित किया जाना आवश्यक है और कंपनी के समतुल्य लाभ व हानि खाता एवं तुलन-पत्र के साथ यह समझौते पर आधारित एवं सम्मिलित होना चाहिए। भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान ने रोकड़ प्रवाह विवरण से संबंधित लेखांकरण मानक AS-3 जारी किया है। इसका विस्तृत विवेचन "वित्तीय स्थिति में परिवर्तन का विवरण" नामक अध्याय में दिया गया है।

1.10 वित्तीय विवरणों से संबंधित टिप्पणियाँ एवं संलग्न

औपचारिक वित्तीय विवरण व्यावसायिक संस्था के वित्तीय व्यवहारों की सही एवं स्पष्ट स्थिति देने के लिए पर्याप्त नहीं होते है, इसलिए यह विवरण अनुसूचियों, संलग्नों एवं टिप्पणियों के साथ प्रस्तुत किए जाते हैं जो कि तुलन-पत्र एवं लाभ हानि खाते का हिस्सा बनते हैं। यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह ज्ञात की गई संख्याओं के संदर्भ में अतिरिक्त सूचनाएँ एवं स्पष्टीकरण उपलब्ध कराते हैं। एक समयावधि में आमदों की मान्यता और विविध व्ययों के मिलान से संबंधित विभिन्न लेखांकन नीतियों को समझने के लिए इन टिप्पणियों का सावधानीपूर्वक पठन आवश्यक है।

1.11 वित्तीय विश्लेषण की अवधारणा

वित्तीय विवरण व्यवसाय विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता हैं, जिससे पूर्व लेखांकन विश्लेषण तथा जिसके पश्चात् नया विश्लेषण किया जाता है। लेखांकन विश्लेषण में यह जाँचा जाता है कि किस प्रकार सर्वमान्य लेखांकन सिद्धांतो एवं रीतियों का उपयोग कर परिसंपत्तियों, देयताओं, आमदों एवं व्ययों का मूल्य निर्धारित किया जाता है। लेखांकन नियमों एवं व्यवहारों के परिवर्तन में वृद्धि; परिसंपत्तियों एवं देयताओं के मूल्यों के साथ ही शुद्ध लाभ/हानि पर भी महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालती है। कंपनी के लेखांकन विकल्पों एवं उपार्जन अनुमानों के प्रभावपूर्ण मूल्यांकन के लिए परिसंपत्तियों के मूल्यांकन एवं लागत के आमद से मिलान से संबंधित अभिशासित नियमों को सावधानीपूर्वक जाँचा जाना चाहिए।

वित्तीय विश्लेषण से यह जाना जाता है कि किस प्रकार प्रबंधन व्यावसायिक मामलों के संचालन में प्रभावपूर्णता एवं कार्यकुशलता पर ध्यान केंद्रित कर विश्लेषणात्मक उपकरणों एवं तकनीकों जैसे अनुपातों, रोकड़ प्रवाह मापकों का प्रयोग व्यावसायिक उपक्रम के परिचालन, वित्तीयन, और निवेश निष्पादन के लिए कर सकते है। सार्वजनिक रूप से उपलब्ध वित्तीय विवरण पर आधारित वित्तीय विश्लेषण प्रकट वित्तीय सूचनाओं की गुणवत्ता एवं परिमाणिकता पर गंभीर बाधाएं उत्पन्न करती है। अतः किसी भी सूचना को उपयोगकर्त्ताओं के निर्णय क्षमता के लिए सुयोग्य, सुनिश्चित, तकनीकी व तर्गसंगत विश्लेषण, वित्तीय विश्लेषक के अनुभव एवं दक्षता पर निर्भर करता है इसी कारणवश, सभी वित्तीय विश्लेषक एवं लेखापरिक्षक परोक्ष वाक्यों का प्रयोग करके, उद्घोषित करते हैं, ''उपलब्ध कराई गई सूचना के आधार पर''। वित्तीय विश्लेषण तुलन-पत्र और लाभ-हानि खाता का एक समयावधि में समरूप विवरण अथवा तुलनात्मक विवरण तैयार करके किया जा सकता है। इन तकनीकों का अगले अध्याय में विस्तृत व्याख्या की गई है।

वित्तीय विश्लेषण का अगला विस्तार भविष्य के लिए विश्लेषण है जिसमें शामिल होता है उन सभी परिवर्तनों को ध्यान में रखकर पूर्वानुमानित वित्तीय विवरणों का विकास जो कि दिए गए व्यवसाय की इन परिवर्तनों से संबंधित मान्यताओं को एवं प्रयुक्त पूर्वानुमान तकनीकों की सीमाओं को आकार देंगे तथा प्रमाणित करेंगे। यह प्रक्रिया जटिल है और इसके लिए अच्छी पेशेवर निपुणता की आवश्यकता होती है।

1.12 वित्तीय विवरणों के प्रकार

भारत में वित्तीय प्रतिवेदन की शुरूआत विधि के विशिष्ट प्रावधानों के कार्यान्वयन हेतु अनुपालन प्रतिवेदन से हुई जिनके अनुसार अंशधारकों की वार्षिक आम सभा में अंशधारकों के प्रति संरक्षक दायित्वों के निर्वहन हेतू लेखापरीक्षक प्रतिवेदन और निदेशक प्रतिवेदन के साथ तुलन-पत्र और आय विवरण को प्रस्तुत करना भी आवश्यक है और उपरोक्त सभी दस्तावेज कंपनियों के रजिस्ट्रार के पास जमा करना भी आवश्यक है। भारतीय प्रतिभूति विनिमय बोर्ड द्वारा सूचीबद्ध सार्वजनिक कंपनियों के संदर्भ में पहले अद्र्धवार्षिक और बाद में त्रैमासिक वित्तीय विवरण की प्रस्तुति अनिवार्य बनाने से पूर्व तक कंपनियां साधारणत: अपना वार्षिक वित्तीय विवरण प्रस्तुत करती थी। इस प्रकार समयावधि के आधार पर वित्तीय विवरण के प्रकाशन से हमारे पास दो तरह के वित्तीय विवरण उपलब्ध होते हैं।

1. वार्षिक वित्तीय विवरण
2. त्रैमासिक वित्तीय विवरण

1.12.1 वार्षिक वित्तीय विवरण

यह वे विवरण एवं खाते होते हैं जिन्हे कंपनी के उन सदस्यों की वार्षिक आम सभा में प्रस्तुत किया जाता है जो बाद में इन्हें अनुमोदित करते हैं। इन विवरणों में, तुलन-पत्र, लाभ एवं हानि खाता, रोकड़ प्रवाह एवं वित्तीय स्थिति में भौतिक परिवर्तन का विवरण सम्मिलित होते है। विवरण, सहायक कंपनी के खाते बंद होने की मूलभूत तिथि, अभिभावक कंपनी से भिन्न हो तो ऐसी दशा में समामेलित वित्तीय विवरण (सूत्रध ारी कंपनी के विषय में) सम्मिलित होते हैं। इसके अतिरिक्त, निगमन अधिशासन, ऊर्जा उपभोग, निर्यात आयों, संबंधित पक्षीय लेनदेनों, तुलन-पत्र, लाभ एवं हानि खाता, निदेशक प्रतिवेदन और सहायक कंपनी (कंपनियों) के लेखापरीक्षकों के प्रतिवेदनों से संबंधित प्रकटीकरण शामिल होते हैं।

1.12.2 त्रैमासिक वित्तीय प्रतिवेदन

कंपनी इन प्रतिवेदनों को प्रत्येक तिमाही के अंत में जारी करती है और यह अंतरिम वित्तीय प्रतिवेदन के रूप में भी जाने जाते हैं। त्रैमासिक वित्तीय प्रतिवेदन सेबी द्वारा आदेशित होते है और यह उस शेयर बाजार में जमा कराए जाते है जहाँ प्रतिभूत्तियाँ सूचीबद्ध होती हैं। यह प्रतिवेदन कंपनियों के वर्तमान वित्तीय निष्पादन को समझने एवं उनके उद्देश्यों के मूल्यांकन एवं पूर्वानुमान में सहायक होती है। त्रैमासिक प्रतिवेदनों को यदि आपस में संयोजित कर दिया जाए तो यह वार्षिक निष्पादन को दर्शाती हैं परंतु मौसमीय यादृच्छिक, पूर्वनिश्चित, चक्रीय एवं अयादृच्छिक कारकों के कारण यह सही सिद्ध नहीं हो पाते है।

सैद्धांतिक रूप से, माना जाता है कि अंतरिम अवधि लेखांकन प्रचालन परिणाम आवश्यक रूप से उसी प्रकार ज्ञात किए जाने चाहिए जैसे कि वार्षिक लेखांकन अवधि के परिणाम। इस दृष्टिकोण से प्रत्येक अंतरिम अवधि के अंत में बिलेखो, उपार्जनों और अनुमानों के प्रतिवेदन के लिए उन्हीं सिद्धांतों का उपयोग किया जाना चाहिए। जिनका कि वार्षिक प्रतिवेदनों के लिए किया गया हो। लेखांकरण मानक (AS-25) के

लिए कम से कम निम्न घटक आवश्यक होते है :

(अ) संघटित तुलन-पत्र

(ब) संघटित लाभ एवं हानि विवरण,

(स) संघटित रोकड़ प्रवाह विवरण, और

(द) चुनिंदा व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ।

यदि एक उपक्रम अपने अंतरिम वार्षिक प्रतिवेदन में एक संपूर्ण वित्तीय विवरण तैयार एवं प्रस्तुत करता हैं तो इन विवरणों का आकार एवं विषय-वस्तु उन आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए जो कि संपूर्ण वार्षिक वित्तीय विवरणों के समूह में लागू होती है। यदि उपक्रम अपने अंतरिम प्रतिवेदनों में संघटित वित्तीय विवरणों का समूह बनाता है तो उन संघटित वित्तीय विवरणों में वह सभी शीर्षक एवं उपशीर्षक शामिल होने चाहिए जो कि इसके नवीनतम वार्षिक वित्तीय प्रतिवेदनों में सम्मिलित हैं। अतिरिक्त टिप्पणियाँ शामिल की जानी चाहिए यदि उनका विलोपन संघटित अंतरिम वित्तीय विवरणों को भ्रामक बनाता हैं।

एक उपक्रम द्वारा अपने वित्तीय विवरणों में निम्न सूचनाएँ टिप्पणियों के रूप में शामिल की जानी चाहिए, यदि वह अत्यावश्यक हो और अंतरिम वित्तीय प्रतिवेदनों में कही और प्रकट न की गई हों :

(अ) विवरण, कि अंतरिम वित्तीय विवरण में उन्हीं समान लेखांकन नीतियो का अनुसरण किया गया है जो कि नवीनतम वार्षिक वित्तीय विवरणों में अनुसरित की गई हैं अथवा यदि वह नीतियाँ बदल गई हो तो उनके परिवर्तन की प्रकृति एवं प्रभाव का वर्णन।

(ब) अंतरिम परिचालनों की सामयीकता के बारे में विवरणात्मक टिप्पणियाँ।

(स) परिसंपत्तियों, देयताओं, समता, शुद्ध आय को प्रभावित करने वाली मदों की प्रकृति एवं मात्रा, रोकड़ प्रवाह जो अपनी प्रकृति आकार अथवा आकस्मिकता के कारण असामान्य हो।

(द) वर्तमान वित्तीय वर्ष की विगत अंतरिम अवधियों में प्रतिवेदित राशियों के आकलनों में परिवर्तनों की प्रकृति एवं मात्रा।

(य) ऋण, समता एवं भावी समता अंशो का निर्गमन, पुनः क्रय, पुर्नभुगतान और पुर्नसंरचना।

(र) लाभांश, समग्र अथवा प्रति अंश, समता अंशों एवं अन्य के लिए पृथक रूप से।

(ल) खंड आमद, प्रत्येक खंड के लिए विनियोजित पूँजी एवं परिणाम।

(व) उपक्रम की संरचना में परिवर्तनों के प्रभाव जैसे कि समामेलन, अधिग्रहण अथवा नियंत्रित कंपनियों एवं दीर्घकालीन निवेशो का निपटान, पुनर्गठन एवं प्रचालनों का विच्छेदन।

(श) पिछले तुलन-पत्र से संभावित देयताओं में आधारभूत परिवर्तन।

यह ध्यान देने योग्य है कि जबतक स्पष्ट न हो, हमारे मतानुसार त्रैमासिक प्रतिवेदनों में उन्हीं सामान्य स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों का अनुसरण किया जाना चाहिए जो वार्षिक प्रतिवेदनों के निर्माण का आधार बनते हैं। यहाँ इन्फोसिस टेक्नॉलॉजी लिमिटेड द्वारा जारी किया गया त्रैमासिक वित्तीय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया है।

प्रदर्श 1.4

इनफोसिस टेक्नोलॉजी लि. का त्रैमासिक वित्तीय प्रतिवेदन

Infosys®

Infosys Technologies Limited

Regd. Office : Electronics City, Hosur Road
Bangalore 561 229, India

Audited financial results for the quarter and nine months ended December 31, 2002

(Rs. in crore, except per share data)

	Quarter ended December 31,		*Nine months ended December 31,*		*Year ended March 31,*
	2002	*2001*	*2002*	*2001*	*2002*
Income from software services and products					
Overseas	945.18	648.35	2,552.93	1,882.93	2,552.47
Domestic	13.46	12.45	49.90	40.53	51.12
Total	958.64	660.80	2,602.83	1,923.46	2603.59
Software development expenses	481.62	309.50	1.283.50	902.01	1,224.82
Gross Profit	477.02	351.30	1,319.33	1,021.45	1,378.77
Selling and marketing expenses	73.60	32.85	198.02	93.96	129.79
General and administration expenses	69.93	51.00	189,65	160.60	211.35
Operating profit before interest, depreciation and amortization	333.49	267.45	931.66	766.89	1.037.63
Interest	-	-	-	-	-
Depreciation and amortization	49.48	41.33	136.19	115.83	160.65
Operating profit after interest, depreciation and amortization	**284.01**	226.12	795.47	651.06	876.98
Other income	29.80	14.92	72.22	43.07	66.41
Provision for investments	-	-	23.76	-	-
Profit before tax	313.81	241.04	843.93	694.13	943.39
Provision for taxation	57.50	35.00	33.11	96.50	135.43

Paid-up equity share capital (par value Rs. 5 each, fully paid)	33.11	33.08	105.57	33.08	33.09
Reserves	2,673.99	1,916.84	104.70	1,916.84	2,047.22
Earnings per share (par value Rs. 5 each)					
Basic	38.70	31.14	105.57	90.33	122.12
Diluted	38.22	31.02	104.70	89.86	121.37
Dividend per share (par value Rs. 5 each)	-	-	12.50	7.50	20.00
percentage (%)	-	-	250	150	400
Aggregate of non-promoters shareholding					
Number of shares	4,73,94,894	4,70,92,487	4,73,94,894	4,70,92,487	4,71,78,795
Percentage of shareholding	71.56	71.17	71.56	71.17	71.28

Segment reporting

	Quarter ended December 31,		*Nine months ended December 31,*		*Year ended March 31,*
	2002	*2001*	*2002*	*2001*	*2002*
Revenue by industry segment					
Financial services	360.79	226.20	982.25	700.23	953.98
Manufacturing	166.23	104.76	442.36	329.00	445.94
Telecom	134.60	100.07	379.19	301.73	406.79
Retail	112.82	89.83	300.59	232.63	320.40
Others	184.20	139.94	498.44	359.87	476.48
Total	958.64	660.80	2,602.83	1,923.46	2,603.59
Less : Inter -segment revenue	-	-	-	-	-
Net revenue from operations	958.64	660.80	2,602.83	1,923.46	2,603.59
Segment profit / (Loss)before tax and interest :					
Financial services	117.62	80.12	319.87	258.02	350.87
Manufacturing	55.98	33.73	148.78	108.49	152.76
Telecom	51.09	49.55	152.00	146.49	191.16
Retail	46.77	43.24	128.37	110.48	151.36
Others	62.03	60.81	182.69	143.68	191.48
Total	**333.49**	**267.45**	**931.66**	**76689**	**1,037.63**
Less : Interest	-	-	-	-	-
Less : Other un-allocable expenditure (excluding un-allocable income)	49.48	41.33	136.19	115.83	160.65
Operating profit before tax	284.01	226.12	795.47	651.06	876.98

Notes on segment information

Principal segments

The company's operations predominantly relate to providing technology services delivered to clients globally, operating in various industry segments. Accordingly, revenues represented along industry classes comprise the primary basis of the segmental information set out above.

Segmental capital employed

Fixed assets used in the company's business or liabilities contracted have not been identified to any of the reportable segments, as the fixed assets and support services are used interchangeably between segments. Accordingly, no disclosure relating to total segment assets and liabilities have been made.

Notes :

1. The above audited results for the quarter and the nine months ended December 31, 2002 have been taken on record by the Board at its meeting held on January 10, 2003. There are no qualifications in the auditors reports issued for these periods.
2. Details of expenses.

	Quarter ended December 31,		*Nine months ended December 31,*		*Year ended March 31,*
	2002	*2001*	*2002*	*2001*	*2002*
Staff costs *There are no other items exceeding 10% of aggregate expenditure*	446.32	287.70	1,195.28	825.86	1,117.87

3. Particulars of other income

	Quarter ended December 31,		*Nine months ended December 31,*		*Year ended March 31,*
	2002	*2001*	*2002*	*2001*	*2002*
Interest on deposits	19.52	12.36	55.89	35.96	51.23
Exchange difference	8.87	2.07	13.74	5.89	13.26
Miscellaneous income	1.41	0.49	2.59	1.22	1.92
Total	**29.80**	**14.92**	**72.22**	**43.07**	**66.41**

4. The company evaluates all investments for any diminution in their carrying values that is other than temporary. Accordingly, the company provided for an aggregate amount of Rs. 23.76 crore during the quarter ended September 30, 2002, which consists of Rs. 0.75 crore to JASDIC Park Company, Japan; Rs. 6.85 crore to Asia Net Media (BVI) Ltd., the British Virgin Islands; Rs. 8.95 crore to on Mobile Systems, Inc. (formerly On Scan, Inc.). USA; Rs. 7.21 crore to Workadia Inc., USA; Rs. 10,350/- to The Saraswat Co-operative Bank Limited ; and Rs. 10/- to Software Services Support Education Center Limited.

5. Progeon Limited "Progeon") was incorporated on April 3,2002, and is a subsidiary established to provide business process management and transitioning services. Infosys ('the company") has invested RS. 12.25 crore in 1,22,49,993 fully paid equity shares of Rs. 10/- each in Progeon, at par. Progeon obtained its first round of financing by securing funding of Rs. 49.00 crore from Citicorp International Finance Corporation, USA ("CIFC") in exchange for 43, 75,000 cumulative, convertible, redeemable preferred shares of face value Rs. 100/- at a premium of Rs. 12/- per share. The preference shares are convertible to an equal number of equity shares based on certain events as agreed between the company and CIFC.

6. During the nine months, the company invested RS. 0.27 crore in M-Commerce Ventures Pte Limited, Singapore ("M-Commerce") for 10 ordinary shares of face value Singapore $ ("S$") 1/- each fully paid at par and 90 redeemable preference shares of face value S$ 1/- each fully paid for a premium of S$ 1,110. Accordingly, the aggregate investment in M-Commerce as at December 31, 2002 amounts to Rs.. 2,11 crore (Rs.. 1.84 crore as at December 31, 2001 and March 31, 2002).

7. During the nine months ended December 31, 2002, the company entered into arrangements to purchase Intellectual Property Rights (IPR"). Details of the arrangements are as follows:

   - Purchase of IPR in Trade IQ, a treasury management product, from IQ Financial Systems, Inc., USA ("IQFS") in the first quarter, for the banking group. The aggregate consideration paid was Rs. 18.94 crore (US$ 3.88 million). Management estimates the useful life of the IPR as two years.

   - An agreement to purchase IPR in AUTOLAY, a commercial software application product used in the design of high performance structural systems, with the Aeronautical Development Agency, India ("ADA") in the first quarter, for the engineering service and consulting practice. The company has a firm commitment to share revenues with ADA for a maximum of US$ 5 million (Rs. 24.50 crore) payable by 10 years of the contract date. The ownership of intellectual property in AUTOLAY will transfer to the company on remittance of the consideration to ADA. The committed consideration is recorded as IPR. Management estimates the useful life of the IPR as five years.

   - Purchase of non-exclusive global license to Link, a signature display software, from Integra Microsystems Private Limited, India in the third quarter. The arrangement allows the company to make proprietary modifications to the source code and transfer certain other rights in Link to third parties for use along with its banking products. The consideration amounts to Rs. 0.65 crore. Management estimates the useful life of the license as one year.

8. Effective the current fiscal year, the company has voluntarily adopted the applicable accounting standard on intangible assets, which is mandatory effective the year commencing April 1, 2003. Management has also evaluated the effect of other recently issued accounting standards such as discontinuing operations and reporting of interests in joint ventures (although all these accounting standards are not mandatory effective the year commencing April 1, 2003. Management has also evaluated the effect of other recently issued accounting standards such as discontinuing operations and reporting of interests in joint ventures (although all these accounting standards are not mandatory

for the fiscal year ending 2003). These accounting standards do not have a material impact on the financial statements of the company.

9. The approval of the Reserve Bank of India for the increase in the investment limit of Foreign Institutional Investors from 49% to 100% was obtained on July 4, 2002.
10. During the quarter ended December 31, 2002, nine months ended December 31, 2002 and the year ended March 31, 2002, the company issued 24,309, 43,359 and 28,013 equity shares respectively pursuant to the exercise of stock options by certain employees.
11. The Board has approved a grant of 2,000 stock options to Mr. Claude Smadja, Independent Director on July 10, 2002.
12. Mr. Phaneesh Murthy resigned from the company's Board of Directors and as Head-Sales and Marketing and Head-Communication and Product Services (CAPS) effective July 23, 2002.
13. The lawsuit filed by Reka Maximovitch against the company and its former director, Mr. Phaneesh Murthy, is in the early stages of discovery. A September 2003 trial date has been set. An unfavorable resolution could adversely impact infosys results of operations or financial condition.

Audited consolidated financial results of Infosys Technologies Limited and subsidiary

(Rs. in crore, except per share date)

	Quarter ended December 31, 2002	*Nine months ended December 31, 2002*
Income from software services, products and Business Process Managment("BPM")		
Overseas	951.56	2,560.41
Domestic	13.46	49.90
Total	**965.02**	**2,610.31**
Software development and BPM expenses	486.04	1,289.46
Gross Profit	**478.98**	**1,320.85**
Selling and marketing expenses	75.09	200.61
General and administration expenses	71.21	192.59
Operating profit before interest, depreciation and amortization	**332.68**	**927.65**
	-	-
Interest	50.05	136.93
Depreciation and amortization	282.63	790.72
Operating profit after interest, depreciation and amortization	**29.78**	**73.07**
	-	**23.76**
Other income	312.41	840.03
Provision for investments	57.50	145.00
Profit before tax	254.91	695.03
Provision for txation	33.11	33.11
Profit after tax	**2,670.09**	**2,670.09**

Paid-up equity share capital (par value Rs. 5/- each, fully paid)		
Reserves		
Earnings per share (par value Rs. 5/- each)		
Basic	38.49	104.98
Diluted	38.01	104.12
Dividend per share (par value	-	**12.50**
Rs. 5/- each)	-	**250**
percentage (%)		
Aggregate of non-promoters shareholding		
Number of shares	4,73,94,894	4,73,94,894
Percentage of shareholding	71.56	71.56

Note :

1. Progeon Limited, a subsidiary of Infosys Technologies Limited, was incorporated during the first quarter and has prepared its financial statements from April 03, 2002 (the date of incorporation) to December 31, 2002, which have been consolidated.
2. Principles of consolidation : The financial statements are prepared in accordance with the principles and procedures for the preparation and presentation of consolidated financial statements as set out in the accounting standard on Consolidated Financial Statements prescribed by the Institute of Chartered Accountants of India. This being the first year of presentation of consolidated financial statements in line with the accounting standards, figures for the prior period have not been provided as they are unconsolidated and, therefore, do not permit meaningful comparison. The financial statements of the parent company. Infosys Technologies Limited "Infosys" or "company") and Progeon Limited (Progeon" or "subsidiary") have been combined on a line by line basis by adding together the book values of like items of assets, liabilities, income and expenses after eliminating intra-group balances and transactions and resulting unrealized gains / losses. The consolidated financial statements are prepared applying uniform accounting policies used in Infosys and Progeon.

By order of the Board
for **Infosys Technologies Limited**

Bangalore, India
January 10, 2003

Nadan M. Nilekani
Chief Executive Officer, President and Managing Director.

N.R. Narayana Murthy
Chairman and Chief Mentor

The Board has also taken on record the unaudited consolidated results of Infosys Technologies Limited and its subsidiary (Pregeon Limited) for the three months and nine months ended December 31, 2002, prepared as per US GAAP. The summary of the above financial statements is as follows :

(In US$ million, except per ADS data)

Consolidated financial information	(Unaudited) *Quarter ended December 31,*		(Unaudited) *Nine months ended December 31,*		(Audited) *Year ended March 31,*
	2002	*2001*	*2002*	*2001*	*2002*
Revenues	200.01	137.58	537.77	405.37	545.05
Gross profit	89.81	64.53	245.93	190.85	255.02
Amortization of deferred stock compensation expense	1.24	1.23	3.73	3.74	5.01
Net income	52.25	41.65	141.80	122.18	164.47
Earnings per American Depositary Share					
Basic	0.40	0.32	1.08	0.93	1.25
Diluted	0.39	0.31	1.06	0.92	1.24
Total assets	635.40	439.42	635.40	439.42	471.16
Cash and cash equivalents	308.56	179.96	308.56	179.96	210.48

Note : Twop american Depositary Shares (ADS) Are equivalent to one equity share.

The reconciliation of net income as per Indian GAAP AND US GAAP is as follows :

(In US$ million)

Particulars	*Three months ended December 31,*		*Nine months ended December 31,*		*Fiscal year*
	2002	*2001*	*2002*	*2001*	*2002*
Net profit as per Indian GAAT	53.09	42.88	143.95	125.93	169.11
Amortization of deferred stock compensation expense	(1.24)	(1.23)	(3.73)	(3.75)	(5.01)
Deferred txes	-	-	-	-	0.37
Gain on forward foreign exchange contracts	0.70	-	0.70	-	-
Net provision for investments	-	-	1.69	-	-
Profit/Loss) from progeon Limited	(0.30)	-	(0.81)	-	-
Consolidated net income as per US GAAP	52.25	41.65	141.80	122.18	164.47

Certain statements in this release concerning our future growth prospects are forward-looking statements, which involve a number of risks and uncertainties that could cause actual results to differ materially from those in such forward-looking statments. The risks and uncertainties relating to these statments include, but are not limited to, risks and uncertainties regarding fluctuations in earnings, our ability to manage growth, intense competition in IT services including those factors which may affect our cost advantage, wage increases in India, our ability to attract and retain highly skilled professionals, lime and cost overruns on fixed-rice, fixed - time frame contracts, client concentration, restrictions

on immigration, our ability to mange our international operations, reduced demand for technology in our key focus areas, disruptions in telecommunication networks, our ability to successfully complete and integrate potential acquisitions, liability for damages on our service contracts, the success of the companies in which infosys has made strategic investments, withdrawal of governmental fiscal incentives, political instability, legal restrictions on raising capital or acquiring companies outside India, and unauthorized use of our intellectual property and general economic conditions affecting our industry. Additional risks that could effect our future operating results are more fully described in our United States Securities and Exchange Commission fillings Including our Annual Report on form 20-F for the fiscal year ended March 31, 2002 and Quarterly reports on form 6 K for the quarters ended June 30,2002 and September 30, 2002. These fillings are available at www.sec.gov. Infosys may, from time to time, make additional written and oral forward looking statements, including statements contained in the company's fillings with the Securities and Exchange Commission and our reports to shareholders. The company does not undertake to update any forward-looking statement that may be made from time to time by or on behalf of the company.

1.12.3 खंड प्रतिवेदन

अभी हाल ही में व्यावसायिक उपक्रमों के लिए खंड सूचनाओं को प्रकाशित करना इसलिए आवश्यक किया गया कि इससे वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ताओं को, उपक्रम के निष्पादन को उचित प्रकार से समझने, उपक्रमों के जोखिम एवं प्रतिफलों के उचित निर्धारण और संपूर्ण उपक्रम के बारे में सूचित निर्णय हेतु सक्षम बनाने में सहायता मिल सकेगी। अनेक उपक्रम उत्पादों एवं सेवाओं के विविध समूह उपलब्ध कराते हैं अथवा वह उन भौगोलिक क्षेत्रों में प्रचालित होते हैं जो कि विभेदक दरों पर लाभप्रदता, संवृद्धि के अवसरों, भावी संभावनाओं एवं संवृद्धि के अधीन होते हैं। उदाहरणस्वरूप, हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड एक बहुउत्पाद कंपनी है जबकि इन्फोसिस टेक्नोलॉजी लिमिटेड एक बहुबाज़ारीय कंपनी है क्योंकि इसके उत्पाद भिन्न विशेषताओं वाले विदेशी बाज़ारों में विक्रय किए जाते हैं। एक उपक्रम के विभिन्न प्रकार के उत्पादों एवं सेवाओं और विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में उसके प्रचालनों के बारे में सूचना, खंड सूचना कहलाती है। खंड सूचना, एक बहुशाखी अथवा बहुअवस्थितियों वाले उपक्रम के जोखिम एवं प्रतिफलों के आकलन में प्रासंगिक होती है। इसलिए खंड सूचना का प्रतिवेदन व्यापक रूप से वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक माना गया है। भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान की परिषद् द्वारा जारी लेखांकन मानक (AS-27) जो कि 01 अप्रैल 2001 तक या उसके पश्चात् प्रारंभ होने वाले लेखांकन अवधियों पर लागू है, अधिदेशात्मक प्रकृति का है, और त्रैमासिक एवं वार्षिक प्रतिवेदनों में अनुपालित किया जाना चाहिए।

खंड की अवधारणा

व्यवसाय खंड उस उपक्रम का एक विशिष्ट संघटक है जो कि एक विशिष्ट उत्पाद अथवा सेवा या संबंधित उत्पादों के समूह अथवा सेवाओं को उपलब्ध कराने में संलिप्त है और उन जोखिम एवं प्रतिफलों के अधीन है जो अन्य व्यवसाय खंडों से भिन्न होते हैं। व्यवसाय खंड या तो उत्पाद या फिर भौगोलिक स्थिति के आधार पर होते हैं।

एक उत्पाद/सेवा खंड निर्धारित करने के लिए निम्न कारकों को ध्यान में रखा जाना चाहिए :

(अ) उत्पाद/सेवाओं की प्रकृति

(ब) उत्पादन प्रक्रियाओं की प्रकृति

(स) उत्पाद/सेवा हेतु क्रेताओं का प्रकार अथवा वर्ग

(द) उत्पाद के वितरण अथवा सेवाएँ उपलब्ध कराने हेतु प्रयुक्त विधियाँ

(य) विनियामक वातावरण की प्रकृति, उदाहरणस्वरूप बैंकिंग, बीमा अथवा सार्वजनिक उपयोगिताएँ।

भौगोलिक खंड उस उपक्रम का एक विशिष्ट संघटक है जो कि उस आर्थिक वातावरण में परिचालित हो रहा है जो कि जोखिम एवं प्रतिफलों के अधीन है और उन उपक्रमों से भिन्न हैं जो अन्य आर्थिक वातावरण के परिचालित होते है।

सामान्यत: यह बहुराष्ट्रीय उपक्रमों अथवा बहुअवस्थापित उपक्रमों के संदर्भ में सुविधाजनक रूप से लागू होता है। भौगोलिक खंड का निर्धारण करने हेतु निम्न कारको को ध्यान में रखा जाता है :

(अ) आर्थिक एवं राजनीतिक वातावरण में समानता;

(ब) विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के परिचालन में संबंध;

(स) परिचालनों की समानता;

(द) एक विशेष क्षेत्र में परिचालनों से संबंधित विशिष्ट जोखिम;

(य) विनिमय नियंत्रण नियमन; और

(र) अंतर्निहित मुद्रा जोखिम।

खंड आमद : हालांकि, इसमें विगत अवधि मदें, लेखांकन नीतियों में परिवर्तन, ब्याज अथवा लाभांश आय जिसमें सम्मिलित है अन्य खंडो को दिए गए ऋणों एवं अग्रिमों पर ब्याज जब कि खंड के प्रचालन मूलत: वित्तीय प्रकृति के न हो, और निवेशों की बिक्री पर लाभ अथवा कर्जों का निपटान, शामिल नहीं होते हैं।

खंड व्यय : एक खंड की प्रचालन गतिविधियों से उत्पन्न होते हैं परंतु इनमें विगत अवधि व्यय अथवा ब्याज व्यय, जब तक कि प्रचालन खंड से संबंधित न हों, सम्मिलित नहीं किए जाते हैं। खंड व्यय में निम्नलिखित शामिल नहीं होते है :

(अ) लेखांकन मानक–5 में परिभाषित असाधारण मदें, एक समयावधि के लिए शुद्ध लाभ अथवा हानि, विगत अवधि की मदें और लेखांकन नीतियों में परिवर्तन;

(ब) ब्याज व्यय, जिसमें सम्मिलित है, अन्य खंडों के अग्रिमों एवं ऋणों पर ब्याज, जबतक कि खंड के प्रचालन मुख्यतः वित्तीय प्रकृति के न हो;

(स) निवेशों के विक्रयों पर हानियाँ अथवा कर्जों के निपटान में हानियाँ, जब तक कि खंड के प्रचालन मुख्यतः वित्तीय प्रकृति के न हों;

(द) आयकर व्यय; और

(य) सामान्य प्रशासकीय व्यय, मुख्य कार्यालय व्यय एवं अन्य व्यय जो उपक्रम स्तर पर उत्पन्न हुए हों तथा समग्र उपक्रम से संबंधित हों। हालांकि लागतें कभी-कभी उपक्रम स्तर पर एक खंड से संबंधित भी होती है। ऐसी लागतें खंड व्यय का हिस्सा होती है यदि वह खंड की प्रचालन गतिविधियों में उचित आधार पर बाँटी जा सकें।

खंड परिणाम खंड आगम एवं व्यय का अंतर है।

खंड परिसंपत्तियाँ वह प्रचालित पासिंपत्तियाँ है जो कि एक खंड द्वारा उसकी प्रचालन गतिविधियों में नियोजित होती है।

यदि खंड के खंड परिणाम में ब्याज अथवा लाभांश आय सम्मिलित है तो इसकी खंड परिसंपत्तियों में, संबंधित प्राप्तियाँ, ऋणों, निवेशों, अथवा अन्य ब्याज या लाभांश उत्पन्न करने वाली संपत्तियों को सम्मिलित किया जाएगा। खंड पासिंपत्तियों में आयकर संपत्तियाँ सम्मिलित नहीं होती हैं।

खंड परिसंपत्तियों का निर्धारण संबंधित छूट/आरक्षितियों की कटौती के पश्चात् किया जाता है जो कि उपक्रम के तुलन-पत्र में सीधे निष्प्रभावनों के रूप में प्रतिवेदित होती हैं।

खंड देयताएँ वह प्रचालन देयताएँ है जो एक खंड की प्रचालन गतिविधियों का परिणाम होती है और जो या तो खंड यदि एक खंड के खंड परिणाम में ब्याज व्यय सम्मिलित हो तो उसकी खंड देयताओं में संबंधित ब्याज वाहक देयताएँ भी सम्मिलित होंगी। खंड देयताओं में आयकर देयताएँ सम्मिलित नहीं होती हैं।

खंड लेखांकन नीतियाँ वह लेखांकन नीतियाँ हैं जो उपक्रम के वित्तीय विवरणों को तैयार एवं प्रस्तुत करने के लिए अपनाई जाती है और साथ ही वह लेखांकन नीतियाँ भी जो कि विशेषतः खंड प्रतिवेदन से संबंधित होती हैं।

खंड प्रतिवेदनों में प्रकटीकरण : खंड प्रतिवेदन हेतु आवश्यक संक्षेपित प्रकटीकरण निम्नवत् हैं —

PRIMARY FORMAT IS BUSINESS SEGMENTS	*PRIMARY FORMAT IS GEOGRAPHICAL SEGMENTS BY LOCATION OF ASSETS*	*PRIMARY FORMATS IS GEOGRAPHICAL SEGMENTS BY LOCATION OF CUSTOMERS*
Required Primary Disclosures	***Required Primary Disclosures***	***Required Primary Disclosures***
Revenue from external Customers by Business segment	Revenue from external customers by location of assets	Revenue from external customers by location of customers
Revenue from transactions with other segments by business segment	Revenue from transactions with other segments by location of assets	Revenue from transactions with other segments by location of customers
Segment result by business segment	Segment result by location of assets	Segment result by location of customers
Carrying amount of segment assets by business segment	Carrying amount of segment assets by location of assets	Carrying amount of segment assets by location of customers
Segment liabilities by business segment	Segment liabilities by location of assets	Segment liabilities by location of customers
Cost to acquire tangible and intangible fixed assets by business segment	Cost to acquire tangible and intangible fixed assets by location of assets	Cost to acquire tangible and intangible fixed assets by location of customers
		Carrying amount of segment assets by location of assets if different from location of customers
		Cost to acquire tangible and intangible fixed assets by location of assets if different from location of customers
Other Required Disclosures	***Other Required Disclosures***	***Other Required Disclosures***
Basis of pricing inter-segment transfers and any change therein	Basis of pricing inter-segment transfers and any change therein	Basis of pricing inter-segment transfers and any change therein
Changes in segment accounting policies	Changes in segment accounting policies	Changes in segment accounting policies
Types of products and services in each business segment	Types of products and services in each business segment	Types of products and services in each business segment
Composition of each geographical segment	Composition of each geographical segment	Composition of each geographical segment

1.13 वित्तीय विश्लेषण की अवधारणा

एक संख्या की दूसरे के संबंध में अभिव्यक्ति विश्लेषण की प्रक्रिया है, और एक व्यावसायिक उपक्रम के वित्तीय मामलों की दशा का विश्लेषण है। विश्लेषण में संबंध स्थापित करना, तुलना एवं प्रवृत्तियों का आकलन शामिल होते हैं। वित्तीय विश्लेषण उपक्रम के वर्तमान एवं पूर्व निष्पादन मूल्यांकन और भविष्य में इसके बने रहने की संभावनाओं के आकलन में वित्तीय आंकड़ों के प्रयोग को व्यवहारित करता है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि उस व्यक्ति की पकड़ जो कि वित्तीय विश्लेषण करने जा रहा है, न केवल उपयुक्त उपकरणों एवं तकनीकों पर होनी चाहिए अपितु उसे एक सिद्धहस्त शिल्पकार भी होना चाहिए ताकि वह इन उपकरणों एवं तकनीकों का सृजनात्मक एवं कल्पनात्मक प्रयोग कर सके। इसके अलावा उसे परिपूर्ण सांख्यिकीय जानकारी से सुसज्जित होना चाहिए ताकि वह उन परिवर्तनों, जो कि संस्था के व्यावसायिक वातावरण को आकार प्रदान करते हैं, को ध्यान में रखकर वर्तमान निष्पादन को व्यवसाय के भविष्य से संबद्ध कर सके।

संक्षेप में, इसके लिए दोहरा अभ्यास आवश्यक होगा : (अ) विगत निष्पादन का विश्लेषण (ब) निकट भविष्य की भविष्यवाणी के लिए, भावी विश्लेषण। एक व्यक्ति को वित्तीय आंकड़ों के विश्लेषण के लिए विभिन्न तकनीकों, जैसे — क्षैतिज एवं लम्बवत् विश्लेषण और विश्लेषण के उपकरणों जैसे — लेखांकन अनुपातों, वित्तीय स्थिति में परिवर्तन विवरण, जिन्हें आगामी अध्यायों में विवेचित किया जाता है, के बारे में जानना अत्यंत आवश्यक है।

1.13.1 वित्तीय विश्लेषण के प्रयोग

वित्तीय विवरणों का प्रयोग विविध निर्णय संदर्भों, जैसे कि प्रतिभूति विश्लेषण, साख अर्हता विश्लेषण, उधार विश्लेषण, ऋण विश्लेषण, लाभांश निर्णय, विलयनों, अधिकरणों, अधिग्रहणों एवं सामान्य व्यवसाय विश्लेषण, में किया जा सकता है। इनकी व्याख्या निम्नवत् हैं —

1.13.1.1 प्रतिभूति विश्लेषण

एक निवेशक यह जानना चाहेगा कि क्या संस्था, लाभांश भुगतान, पूँजी मूल्यवृद्धि और धन की सुरक्षा के संबंध में उसकी अपेक्षाओं को पूरा करती है। वह जानना चाहेगा कि क्या एक विशेष फर्म में उसका निवेश उसकी परिसंपत्ति में वृद्धि कर रहा है या नहीं। यदि नहीं तो इसके क्या कारण है? यदि हाँ तो उस उद्योग की अन्य फर्मों की तुलना में उसे कितना अच्छा उपकृत किया जा रहा है। क्या उसे अपना निवेश जारी रखना चाहिए या उसे विक्रय कर देना चाहिए। लेखांकन रूप में, प्रतिभूति विश्लेषक रोकड़-उत्पादन क्षमता, लाभांश भुगतान नीति एवं अंश मूल्यों के व्यापार में रूचि रखता है।

1.13.1.2 *उधार विश्लेषण*

एक फर्म के प्रबंधक को एक भावी व्यापारी को उधार देना पड़ सकता है अत: वह जानना चाहेगा कि क्या उसे उधार दिया जाए अथवा नहीं। एक नए ग्राहक, व्यापारी को उधार देने से संबंधित जोखिम कौन से हैं। इसी प्रकार के प्रश्न एक बैंकर द्वारा तब उठाए जा सकते हैं जब हम उसके पास ऋण हेतु पहुँचते हैं।

1.13.1.3 *ऋण विश्लेषण*

फर्म का प्रबंधक फर्म की उधार लेने की क्षमता को जानने में इच्छुक हो सकता है जिसके लिए, ऋण एवं समता में संबंध, भुगतान की क्षमता एवं अधिक उधार लेने की क्षमता के विश्लेषण की आवश्यकता होगी।

1.13.1.4 *लाभांश निर्णय*

प्रबंधन को कंपनी के अंशधारकों को नियत अवधि में लाभांशों के भुगतान (समता प्रतिफलों) के रूप में पुरस्कृत करना होता हैं। इसके लिए प्रबंधन चाहता है, भावी वर्षों में एक समान लाभांशों की दर के प्रति आश्वस्ति, साथ ही कंपनी का पिछला निष्पादन और उद्योग की प्रथा।

1.13.1.5 *विलयन एवं अधिग्रहण*

यदि कंपनी अपने प्रतियोगियों के संबंध में अच्छा कर रही है और अधिशेष रोकड़ प्रवाह उत्पादित कर रही हो तो, प्रबंधन अन्य कंपनियों एवं ब्रांडों का अधिग्रहण कर बाजार विस्तार और लाभप्रद निवेश के लिए प्रलोभित हो सकता है। इसके लिए प्रतिस्पर्धी, सहायक ब्रांडों और उत्पादो के विश्लेषण अथवा प्रचालनों के क्षैतिज या लम्बवत् संयोजन की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिए रिलांयस इंडस्ट्रीज ने पैट्रोलियम रसायन व्यापार के क्षैतिज विस्तार के लिए इंडियन पैट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन लिमिटेड में स्वामित्व हिस्सेदारी अधिग्रहित की है। इसी प्रकार हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने लक्मे इंडिया लिमिटेड के उत्पादों का अधिग्रहण किया है।

1.13.1.6 *सामान्य व्यवसाय विश्लेषण*

सामान्य व्यवसाय विश्लेषण का उद्देश्य फर्म की भावी लाभप्रदता निर्धारण के लिए मुख्य लाभ उत्प्रेरकों एवं व्यवसाय जोखिमों को पहचानना होता है।

प्रतियोगी लाभ सृजन के लिए इस विश्लेषण की आवश्यकता होती है। यह विश्लेषण फर्म के लिए भावी संवृद्धि परिदृश्य के विकास में भी सहायक होता है।

1.13.1.6 *विनियामक अनुपालन*

विनियामकों में कंपनी रजिस्ट्रार, कंपनी मामलों का विभाग, स्टॉक एक्सचेंज सम्मिलित हैं। सेबी इन प्रतिवेदनों का उपयोग विषय्-वस्तु के विश्लेषण के लिए करती है ताकि विभिन्न नियमों एवं नियमनों जो कि समय-समय पर लागू होते हैं, का अनुपालन सुनिश्चित किया जा सके।

1.14 वित्तीय विश्लेषण में हित समूह

वित्तीय विश्लेषण, उपक्रम तरलता, लाभप्रदता, ऋणशोधन क्षमता और उपक्रम की कुशलता एवं निष्पादन का निर्धारण करने वाले अन्य सूचकों को मापने की कोशिश करता है। वित्तीय विवरणों का विश्लेषण, अर्तर्निहित व्यक्ति, अभिकरण के उद्‌देश्य और हित के साथ संयोजित होता है। उन कुछ अभिकरणों में, निवेशक बैंकर्स, ऋणदाता, पूर्तिकार, ग्राहक, कर्मचारी, प्रबंधन और विनियामक प्राधिकरण, जैसे—कर प्राधिकरण, स्टॉक एक्सचेंज, कंपनी विधि बोर्ड इत्यादि शामिल होते हैं। इनमें से कई अभिकरणों के विविध एवं विरोधी हित होते हैं।

निवेशक अपने निवेश की लाभप्रदता एवं सुरक्षा में रूचि रखता है और यह जानना चाहेगा कि क्या व्यवसाय लाभप्रद है, उसमें संवृद्‌धि की संभावना है, और क्या यह सही मार्ग पर प्रगतिशील है।

बैंकर्स और ऋणदाता उपक्रम द्‌वारा उनके ऋणों की परिचर्या में रूचि रखते है जैसे कि ब्याज का नियमित भुगतान और निर्धारित तिथियों पर मूलधन की वापसी। बैंकर्स एवं ऋणदाता उनके निवेश की सुरक्षा एवं प्रतिफलों की विश्वसनीयता के बारे में भी जानना चाहेंगे।

पूर्तिकार जिनका उपक्रम के साथ व्यवहार होता है नियत तिथि पर अपने भुगतान की प्राप्ति में रूचि रखते है और उपक्रम का लघुअवधि बचनबद्‌धताओं को पूरा करने के सामर्थ्य के बारे में जानना चाहेंगे।

कर्मचारी बेहतर वेतन, बोनस एवं व्यवसाय की निरंतरता में रूचि रखते हैं और इसके वित्तीय निष्पादन एवं लाभप्रदता के बारे में जानना चाहेंगे।

प्रबंधन उपक्रम के वित्तीय निष्पादन और वित्तीय स्थिति में रूचि रखता है। यह निरंतर जारी संस्था के रूप में इसकी जीवनक्षमता, रोकड़ प्रबंधन, कर्जदारों, माल एवं स्थायी संपत्तियों, और पूँजी संरचना की पर्याप्तता के बारे में जानना चाहेंगे। प्रबंधन, समग्र रूप से उपक्रम की संपूर्ण वित्तीय स्थिति एवं उसके विभिन्न विभागों की लाभप्रदता में भी रूचि ले सकता है।

विनियामक प्राधिकरण (जैसे कि कंपनी विधि बोर्ड, सेबी, स्टॉक एक्सचेंज, कर प्राधिकरण, इत्यादि) यह जानना चाहेंगें कि वित्तीय विवरण विशिष्ट विधानों एवं नियमों के अनुरूप तैयार किए गए हों और विभिन्न संबंधित अभिकरणों के हितों की सुरक्षा करते हों। उदाहरणस्वरूप, कर प्राधिकरण विधान के अनुसार कर देयताओं के उचित निर्धारण को सुनिश्चित करने में रूचि ले सकते हैं।

इस प्रकार विभिन्न एजेंसियाँ उपक्रम की ओर अपना-अपना दृष्टिकोण रखती हैं, और इसकी लाभप्रदता एवं वित्तीय स्थिति को जानने में रूचि रखती हैं। संक्षेप में, लाभप्रदता एवं वित्तीय स्थिति का एक विस्तृत कार्यकरण अध्ययन, वित्तीय विवरण विश्लेषण का संपूर्ण उद्‌देश्य होता है।

1.15 वित्तीय विवरणों के विश्लेषण की सीमाएँ

वित्तीय विवरणों का विश्लेषण उपक्रम की वित्तीय स्थिति एवं उसके प्रचालनों की शक्तियों एवं कमजोरियों को जानने का एक सुदृढ़ तंत्र है। हालांकि यह कुछ कमियों से प्रभावित होता है जिन्हें विश्लेषण करते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए। इसकी कुछ प्रमुख सीमाएँ इस प्रकार हैं :

(1) प्रकाशित वित्तीय विवरणों में प्रकट सूचना की गुणवत्ता, लेखांकन गुणवत्ता एवं नियमों से नियंत्रित होती है। लेखांकन नियमों, रीतियों, सिद्धांतों का प्रयोग एक समय से दूसरे समय, एक फर्म से दूसरी फर्म और एक उद्योग से दूसरे उद्योग में बदलता रहता है जिससे कि लेखांकन संख्याएँ अतुलनीय हो जाती है। यह समस्या तब और जटिल हो जाती है जब प्रबंधन द्वारा वित्तीय स्थिति और आय विवरण को सरल बनाने के लिए लेखांकन नियमों का चयनात्मक प्रयोग किया जाता है। दूषित लेखांकन प्रतिवेदनों के अनेक कारण होते हैं जैसे कि कर प्रतिफल, प्रबंधकीय पारिश्रमिक, पूँजी बाजार प्रतिफल, प्रतियोगिता इत्यादि। लेखांकन सृजनात्मकता से बचाव हेतु विश्लेषक द्वारा निम्न प्रश्नों के पूछे जाने की आवश्यकता होती है :

(अ) क्या कंपनी आर्थिक निष्पादन के निर्धारण हेतु पर्याप्त प्रकटीकरण उपलब्ध कराती है?

(ब) क्या फर्म अपने वर्तमान निष्पादन की उचित व्याख्या कर सकती है?

(स) क्या प्रबंधन व्यवसाय से संबंधित जोखिम कारकों को दर्शाती हैं?

(द) विभिन्न खंडों में फर्म के निष्पादन की गुणवत्ता क्या है?

(य) भावी बुरी खबरों के बारे में प्रबंधन कितना तैयार है?

(र) फर्म का निवेशक संबंध कार्यक्रम कितना अच्छा है?

(2) लेखांकन सूचनाओं का प्रकटन नियमन के प्रवर्तन की गुणवत्ता से भी नियंत्रित होता है। यदि नियमनों का प्रवर्तन कठोरता से नहीं होता हो और दंड पर्याप्त रूप से अधिक न हों तो, प्रबंधन लेखांकन संख्याओं में हेर-फेर के लिए प्रेरित हो सकता है जो कि वित्तीय विश्लेषण को और अधिक जटिल बना देता है।

(3) लेखांकन मानकों के विकास एवं प्रकटीकरण का वांछित स्तर भी वित्तीय विश्लेषण की गुणवत्ता को प्रभावित करेगा। उदाहरण के लिए, भारत में, सेबी के गठन के बाद लेखांकन प्रकटीकरण और प्रमाणीकरण काफी अर्से बाद आया है लेकिन उतने अच्छे रूप में भी नहीं, जैसे कि यूरोप में आया है।

(4) पूँजी बाजार नियमन भी प्रकटीकरण की गुणवत्ता एवं मात्रा पर प्रभाव डालते है। सूचीयन समझौते में धारा 32 और धारा 49 के जुड़ने से पहले कंपनियाँ रोकड़ प्रवाह एवं निगमित अधिशासन के मामलों का प्रकटीकरण नहीं करती थी।

(5) कंपनी विधान का विकास एवं प्रवर्तन भी वित्तीय प्रकटीकरण की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। उदाहरणस्वरूप "कंपनी-लेखापरीक्षक संबंधों " पर नरेश चंद्र समिति की सिफारिशों/अनुमोदनों का अनुसरण करते हुए, मुख्य वित्त अधिकारी (CFO) को आवधिक वित्तीय विवरणों में प्रकटित लेखांकन संख्याओं की सत्यता प्रमाणित करनी होती है।

(6) लेखापरीक्षा मानकों की गुणवत्ता और सनदी लेखाकारों के पेशेवर आचार भी लेखांकन प्रतिवेदनों की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। संसार भर में बढ़ रहे लेखांकन घोटालों ने सरकार को, लेखापरीक्षा के लिए सरकारी एवं निजी उपक्रमों की आचार संहिता एवं गुणवत्ता को कठोर बनाने के लिए बाध्य कर दिया है। अमेरिका में सार्वजनिक चूक बोर्ड (POB) का गठन एवं भारत में, सनदी लेखाकार संस्थान, लागत एवं कार्य लेखाकार संस्थान और कंपनी सचिवों में प्रस्तावित समीक्षा बोर्ड, अनुपालन एवं गुणवत्ता में सुधार की ओर उठाया गया एक कदम है।

(7) वित्तीय विश्लेषण पेशे की परिपक्वता का स्तर भी प्रकटीकरण की गुणवत्ता को प्रभावित करता हैं। वित्तीय विश्लेषण का पेशा भारत में अभी अपनी शैशवावस्था में है क्योंकि बहुत कम ऐसे पेशेवर घराने हैं जो स्वतंत्र वित्तीय विश्लेषण करते है और यही स्थिति वित्तीय विश्लेषण के आचरण को नियंत्रित करने वाले नियमनों की है। वित्तीय विश्लेषकों को उनकी पेशेवर सेवाओं के लिए जवाबदेह बनाने के लिए हमें अभी एक लंबी दूरी तय करने की आवश्यकता है।

इस अध्याय में प्रयुक्त शब्द

(1) वित्तीय विवरण

(2) वार्षिक प्रतिवेदन

(3) निदेशक प्रतिवेदन

(4) प्रबंध विवेचन एवं विश्लेषण

(5) लेखापरीक्षक प्रतिवेदन

(6) निगमन अधिशासन

(7) अंतरिम प्रतिवेदन

(8) खंड प्रतिवेदन

(9) वित्तीय विश्लेषण

सारांश

आशय

वित्तीय विवरण विगत अवधि से संबंधित ऐतिहासिक प्रलेख होते हैं। वित्तीय विवरण लेखांकन कार्य के अंतिम उत्पाद होते हैं जो कि लेखावधि अर्थात त्रैमासिक, अर्धवार्षिक या वार्षिक के दौरान किया जाता है। समान्यतया वित्तीय विवरणों में तुलन-पत्र और लाभ एवं हानि खाता शामिल होते हैं।

महत्त्व

वित्तीय विवरणों का विश्लेषण उपक्रम की तरलता, निष्पादन और अन्य सूचको के मापन और इसकी कुशलता एवं निष्पादन के मूल्यांकन के लिए किया जाता है। यह उद्देश्यों एवं विभिन्न अभिकरणों जैसे निवेशकों, बैंकरों, ऋणदाताओं, पूर्तिकारों, नियमन प्राधिकरणों के हितों से जुड़ा हुआ है।

अर्थ

वित्तीय विवरण ऐतिहासिक प्रलेख और लेखांकन अवधि, एक वर्ष या वर्ष के एक हिस्से जैसे कि तिमाही, अर्धवार्षिक या नमाही, के दौरान किए गए लेखांकन कार्य का अंतिम उत्पाद होते हैं। एक संख्या को दूसरे के संबंध में अभिव्यक्ति विश्लेषण की प्रक्रिया हैं, और एक व्यावसायिक उपक्रम के वित्तीय मामलों की दशा का विश्लेषण हे। विश्लेषण में संबंध स्थापित करना, तुलना एवं प्रवृत्तियों का आकलन शामिल होते हैं।

वित्तीय विवरणों की विषय-सूची

वित्तीय विवरणों में निम्नलिखित शामिल होते हैं :

(अ) मंडल प्रतिवेदन

(ब) निदेशक उत्तरदायित्व विवरण

(स) प्रबंध-विवेचन और विश्लेषण

(द) लेखापरीक्षक प्रतिवेदन

(य) निगमन अभिशासन पर प्रतिवेदन

(र) लेखांकन नीतियाँ

(ल) तुलन-पत्र

(व) लाभ और हानि खाता

(ह) रोकड़ प्रवाह विवरण

(क्ष) खंड प्रतिवेदन

सीमाएँ

वित्तीय विवरणों के विश्लेषण की सीमाएँ है जो कि वित्तीय विवरणों, जैसे लेखांकन अवधारणाओं या सिद्धांतों में निहित हैं। वित्तीय विवरणों में वित्तीय आँकड़े अंतर्विष्ट होते है जो कि अभिलेखित व्यवहारों के गुणात्मक पहलू से रिक्त होते हैं। यह भूतकाल से संबंधित होते हैं, ऐतिहासिक लागतों कें संदर्भ में मूल्यों को प्रतिबिंबित करते है और स्पष्ट मापन के रूप में परिणामों को प्रस्तुत नहीं करते हैं और वित्तीय विवरणों का विश्लेषण इसी प्रकार संरक्षित होना चाहिए।

अभ्यास

I ***वस्तुनिष्ट प्रश्न***

दर्शाइए कि क्या नीचे दिए गए कथन 'सत्य' अथवा 'असत्य' हैं :

(अ) एक लेखांकन संस्था तभी अर्थपूर्ण बनती है जब इसकी तुलना दूसरी से की जाती है।

(ब) तुलन-पत्र एवं स्थिति विवरण समानार्थक होते हैं।

(स) वित्तीय विवरणों के विश्लेषण कीमत स्तर पर परिवर्तनों को अनदेखा नहीं करते हैं।

(द) वित्तीय विवरण ऐसा उपकरण है जिससे पुराने आँकड़ों का विश्लेषण किया जा सकता है।

(य) वित्तीय विश्लेषण की कोई सीमाएँ नहीं होती हैं।

(र) वित्तीय विश्लेषण, वित्तीय विवरणों की कमियों से प्रभावित होता है।

(ल) लेखापरीक्षक प्रतिवेदन एक राय है न कि प्रमाण-पत्र।

(व) अभिशासन पर लेखापरीक्षक प्रतिवेदन एक प्रमाण-पत्र है न कि एक राय।

(श) खंड भौगोलिक अवस्थिति, ग्राहक और उत्पाद से संबंधित होते हैं।

(क्ष) वित्तीय विवरण, वित्तीय भविष्यवाणी/पूर्वानुमान के लिए काफी होते हैं।

II ***लघु उत्तरीय प्रश्न***

(अ) वित्तीय विवरण की अवधारणा की व्याख्या कीजिए।

(ब) तुलन-पत्र की विषय-सूची को सूचीबद्ध कीजिए।

(स) निगम अधिशासन प्रतिवेदन में सम्मिलित मदों को सूचीबद्ध कीजिए।

(द) वित्तीय विवरण विश्लेषण का अर्थ बताइए।

या

वित्तीय विवरण विश्लेषण की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

(य) वित्तीय विश्लेषण को परिभाषित कीजिए।

(र) आय विवरण क्या होता है? (अथवा) आय विवरण से क्या तात्पर्य है?

(ल) अंतरिम प्रतिवेदन क्या होता है?

(व) खंड प्रतिवेदन क्या होता है?

(ह) खंड आगम क्या होता है?

(क्ष) खंड परिसंपत्तियाँ एवं देयताएँ क्या हैं?

(श) वित्तीय विवरणों की तीन सीमाओं को सूचीबद्ध कीजिए।

III ***निबंधात्मक प्रश्न***

(अ) वित्तीय विवरणों के विश्लेषण, उद्देश्य और महत्त्व की व्याख्या कीजिए।

(ब) वित्तीय विवरणों के विश्लेषण की सीमाओं की व्याख्या कीजिए।

(स) कर्जदारों, बैंकरों एवं वित्तीय संस्थानों के लिए वित्तीय विवरणों का क्या महत्त्व है?

(द) निगमन अधिशासन प्रतिवेदन क्या होता है? निगमन अधिशासन प्रतिवेदन की विषय-सूची का विवेचन कीजिए।

(य) अंतरिम प्रतिवेदन क्या होता है? अंतरिम प्रतिवेदन का प्रारूप दीजिए।

IV ***प्रोजेक्ट/परियोजना कार्य***

(अ) एक सूचीबद्ध कंपनी के वार्षिक खाते (प्रकाशित) प्राप्त कीजिए। तीन वर्ष की अवधि के लिए उनकी विषय-सूची की तुलना कीजिए।

(ब) निम्नांकित 'वैबसाईट' (website) को डाउनलोड (download) करें।

- www.infy.com
- www.rip.com
- www.wipro.com
- www.bajajauto.com
- www.hll.com

प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय अंतरिम प्रतिवेदनों की विषय-सूची की तुलना कीजिए।

(स) किन्ही पांच कंपनीयों के खंड प्रतिवेदन एकत्रित करें तथा खंड चुनाव एवं प्रकटीकरण की मदों के आधार पर तुलनात्मक टिप्पणी लिखें।

उत्तर

(अ) सत्य	(ब) असत्य	(स) असत्य	(द) असत्य	(य) असत्य
(र) सत्य	(ल) सत्य	(व) सत्य	(ह) सत्य	(क्ष) असत्य

अनुसूची 6
(धारा 211 देखिए)
[1][भाग 1
तुलन-पत्र का प्रारूप

(यहाँ कंपनी का नाम भरिए)..............................कंपनी का तुलन-पत्र, जैसा वह............... ....(यहाँ वह तारीख भरिए जिस तक के लिए वह तैयार किया गया है) को थी

ये हिदायतें जिनके अनुसार दायित्व निश्चित किए जाने हैं	दायित्व		आस्तियाँ		वे हिदायतें जिनके अनुसार आस्तियाँ निश्चित की जानी चाहिए
	पूर्ववर्ती वर्ष के आंकड़े	चालू वर्ष के आंकड़े	पूर्ववर्ती वर्ष के आंकड़े	चालू वर्ष के आंकड़े	
* किसी मोचनीय अधिमानी पूँजी के (यदि कोई हो) मोचन या संपरिवर्तन के निबंधन उस निकटतम तारीख के साथ यहाँ दें जो मोचन या संपरिवर्तन की। अनिर्गमित अंश (शेयर) पूँजी विषयक किसी विकल्प की विशिष्टियाँ यहाँ दी जाएँ अधिमानी अंशों (फ्रिरेन्स शेयरों) के विभिन्न वर्गों की विशिष्टियाँ यहाँ दी जाएँ	रु. (ख) *अंश (शेयर) पूँजी ...रु. प्रति अंश(शेयर) वाले प्राधिकृत अंश (शेयर) (विभिन्न वर्गों की पूँजी में भेद दिखाते हुए तथा हर वर्ग की बाबत नीचे दी हुई विशिष्टियाँ देते हुए लिखें) ... रु.प्रति अंश(शेयर) वाले ... निर्गमित अंश (शेयर) (विभिन्न वर्गों की पूँजी में भेद दिखाते हुए तथा हर वर्ग की बाबत नीचे दी हुई विशिष्टियाँ देते हुए लिखें। (ग) ... रु. प्रति अंश (शेयर) वाले	रु. (ख)	रु. (ख) * स्थिर आस्तियाँ : (क) गुडविल (ख) भूमि (ग) निर्माण (घ) पट्टाधृतियाँ (ड.) रेल पार्श्विकाएँ (साइडिंग) (च) संयंत्र (प्लांट) और मशीनरी (छ) फर्नीचर और फिटिंग (ज) संपत्ति का विकास (झ) पेटेंट, व्यापार चिह्न, और डिजाईन (ड.) जीवधन, तथा (ट) यान आदि पर हुए व्यय अलग-अलग दिखाएँ	रु. (ख)	* हर शीर्षक के नीचे मूल लागत तथा वर्ष भर में उसमें हुई वृद्धियाँ और उसमें की गई कटौतियाँ तथा वह कुल अवक्षयण, जो अपलिखित कर दिया गया है या जिसके लिए उपबंध वर्ष के अंत तक के लिए, कर दिया गया है, कथित किया जाएगा, [2][जहाँ कि पूर्वोक्त मूल लागत तथा उसमें हुई किन्ही वृद्धियों और कटौतियों का संबंध ऐसी किसी स्थिर आस्ति से है जो भारत से बाहर के देश से अर्जित की गई है तथा ऐसी आस्ति के अर्जन के पश्चात् किसी समय विनिमय दर में तब्दीली होने के परिणामस्वरूप कंपनी के भारतीय करेंसी में

1. 1860 के अधिनियम सं. 65 की धारा 217 द्वारा मूल भाग 1 के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. अधिसूचना सं. सा. का. नि. 129, तारीख 3 जनवरी, 1968 द्वारा अन्त:स्थापित।

ये हिदायतें जिनके अनुसार दायित्व निश्चित किए जाने हैं	दायित्व		आस्तियाँ		वे हिदायतें जिनके अनुसार आस्तियाँ निश्चित की जानी चाहिए
	पूर्ववर्ती वर्ष के आंकड़े	चालू वर्ष के आंकड़े	पूर्ववर्ती वर्ष के आंकड़े	चालू वर्ष के आंकड़े	
	(रु.)	(रु.)	(रु.)	(रु.)	अभिव्यक्त उस दायित्व में कोई वृद्धि या कमी हुई है जो उस आस्ति की पूरी लागत या उसके भाग मद्धे अदायगी करने अथवा उस आस्ति के अर्जन के खास प्रयोजन से किसी विदेशी करेंसी में प्रत्यक्षत: या अप्रत्यक्षत: किसी व्यक्ति से कंपनी द्वारा उधार ली गई पूरी धन राशि या उसका भाग चुकाने का है (और जो दायित्व दोनों दशाओं में से हर एक में उस तारीख के अव्यवहितपूर्व विद्धमान था जिसको विनिमय दर में तब्दीली हुई है) वहाँ वर्ष के दौरान दायित्व में जितनी रकम से ऐसे वृद्धि या कमी हुई है वह यथा स्थिति लागत में जोड़ दी जाएगी या लागत से घटा दी जाएगी, तथा ऐसे जोड़ने या घटाने के पश्चात् जो रकम आई है वह स्थिर आस्ति की लागत समझी जाएगी। **स्पष्टीकरण 1**- यह पैरा उन सब तुलन-पत्रों के संबंध में लागू होगा जो तारीख 6 जून, 1966 या उसके किसी बाद के दिन
	ख	ख	ख	ख	

की स्थिति को व्यक्त करते हुए तैयार किए जाएँ और जहाँ कि भारत सरकार के औद्‌योगिक विकास और कंपनी कार्य मन्त्रालय (कंपनी कार्य विभाग) जी. एस. आर. सं. 129 और तारीख 3 जनवरी, 1968 वाली भारत सरकार की अधिसूचना के निकलने की तारीख पर ऐसा कोई तुलन-पत्र, जिसके संबंध में यह पैरा लागू होता है, पहले ही तैयार कर लिया जाता है तथा कंपनी के समक्ष उसके वार्षिक साधारण अधिवेशन में रख दिया गया है वहाँ इस पैरा में विनिर्दिष्ट समायोजन उक्त अधिसूचना के निकलने के पश्चात् किए गए पहले तुलन-पत्र में किया जा सकेगा।

स्पष्टीकरण 2- इस पैरे में जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो 'विनियमय दर', 'विदेशी करेंसी' और 'भारतीय करेंसी' के क्रमशः वही अर्थ होंगे जो उन्हें आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 43क की उपधारा (1) के अधीन

....

[1][वह स्रोत अंशों (शेयरों) में से उदाहरणार्थ लाभों के पूंजीकरण अथवा आरक्षितियों या अंश (शेयर) प्रीमियम खाता विनिदिष्ट कीजिए जिससे बोनस अंश (शेयर) निर्गमित किए गए हैं।]

प्रतिश्रुत अंश (शेयर)। आहूत. ....रु. ऊपर उल्लिखित अंशों (शेयरों) में से.........अंशों (शेयरों) का पूर्णतः समादत्त के रूप में आबंटन नकदी में कोई संदाय प्राप्त हुए बिना संविदा के अनुसरण में किया गया है।

[1][ऊपर उल्लिखित अंशों (शेयरों) में से..अंश (शेयर) पूर्णतः समादत्त के तौर पर बोनस अंशों (शेयरों) के रूप में आबंटित किए गए हैं।]

वे आहूत राशियाँ घटाइए जो : (i) प्रबंध अभिकर्ता

दिए हुए हैं, तथा उक्त उपधारा का स्पष्टीकरण 2 और स्पष्टीकरण 3 यावत्शक्य उक्त पैराग्राफ के संबंध में ऐसे लागू होंगे जैसे वे उक्त उपधारा (1) 0 को लागू हैं।]

[1][हर दशा में, जिसमें कि मूल लागत अयुक्तियुक्त व्यय या विलम्ब के बिना अभिनिश्चित नहीं की जा सकती, बहियों से प्रकट होने वाला मूल्य दर्ज किया जाएगा। इस पैरे के प्रयोजनों के लिए ऐसा मूल्यांकन वह शुद्ध रकम होगा जो इस अधिनियम के प्रारंभ पर कंपनी की बहियों में उस आस्ति का मूल्य उसमें से वे रकमें घटाकर दिया हुआ है जो अवक्षयण के लिए या मूल्य में कमी के कारण पहले उपबंधित या अपलिखित कर दी गई है तथा जहाँ कि ऐसी आस्ति बेच दी जाती हैं, वहाँ विक्रय आगमों की रकम कटौती के रूप में दिखाई जाएगी।]

जहाँ कि पूँजी में कमी की जाने या आस्तियाँ के पुनः मूल्यांकन पर कोई राशियाँ अपलिखित की गई हैं वहाँ (प्रथम तुलन-पत्र के

---

1. अधिसूचना सं. सा. का. नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा प्रतिस्थापित। देखिए भारत का राजपत्र, असाधारण, भाग 2, अनुभाग 3 (1), पृष्ठ 117।

¹[समहृत अंशों (शेयरों) के पुनः निर्गमन पर कोई पूँजीगत लाभ पूँजी आरक्षिति को अंतरित की जानी चाहिए।]

या सचिवों तथा कोषपालों द्वारा तथा उस दशा में जिसमें कि प्रबंध अभिकर्ता या सचिव तथा कोषपाल फर्म है, उसके भागीदारों द्वारा तथा उस दशा में जिसमें कि प्रबंध अभिकत्ता या सचिव तथा कोषपाल प्राइवेट कंपनी हैं, उस कंपनी के निदेशकों या सदस्यों द्वारा

(ii) निदेशकों द्वारा

(iii) अन्यों द्वारा असमादत्त हैं।

*[जोड़िए– समहृत अंश (शेयर) वह (रकम जो मूलतः समादत्त की गई थी)

पश्चात्) हर तुलन-पत्र में, जो वह कमी की जाने या मूल्यांकन किए जाने के बाद का है कम किए गए आंकड़े मूल लागत के बदले और कमी करने की तारीख दर्ज किए जाएंगे। की गई कमी की रकम कमी करने के बाद वाले पहले पाँच वर्षों के प्रत्येक तुलन-पत्र में दिखाई जाएगी।

इसी प्रकार जहाँ कि आस्तियों का अधिमूल्यन करके कोई राशियाँ जोड़ी गई हैं वहाँ अधिमूल्यन के बाद वाले हर तुलन-पत्र में वर्धित आंकड़े मूल लागत के बदले वृद्धि की तारीख सहित दिए जाएँ, अधिमूल्यन की तारीख के बाद पहले पाँच वर्षों के लिए हर तुलन-पत्र में वृद्धि की रकम दिखायी जाएगी।

²[**स्पष्टीकरण** –पूर्ववर्ती दो पैराओं में की कोई बात दूसरे पैरे के अनुसार किए गए किसी समायोजन को लागू नहीं होगी।]

1. अधिसूचना सं. सा. का. नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा अन्तःस्थापित।

2. अधिसूचना सं. सा.का.नि. 129, तारीख 3 जनवरी, 1968 द्वारा अन्तःस्थापित। देखिए भारत का राजपत्र, असाधारण, भाग 2, अनुभाग 3 (i), पृष्ठ 117।

अंतिम तुलन-पत्र के बाद वाली वृद्धियाँ और कटौतियाँ हर विनिर्दिष्ट शीर्षक के अंतर्गत दिखाइए आरक्षिति के संबंध में [4]'निधि' शब्द केवल वहाँ प्रयुक्त किया जाना चाहिए जहाँ कि ऐसी आरक्षिति खास तौर पर विशिष्ट मद के लिए ही विनिधान के रूप में है।]

*** आरक्षितियाँ और अधिशेष**

[3](1) पूँजी आरक्षितियाँ

(2) पूँजी मोचन आरक्षितियां

(3) अंश (शेयर) प्रीमियम खाता (गग)

(4) हर आरक्षिति का स्वरूप विनिर्दिष्ट करते हुए अन्य आरक्षितियाँ तथा तद्विषयक रकम। इसमें से लाभ-हानि खाते के नामे पक्ष में अतिशेष (यदि कोई हो) घटा दीजिए (छ)।

(5) अधिशेष अर्थात् निम्नलिखित के लिए आबंटित रकमों का उपलब्ध करने के पश्चात् लाभ-हानि लेखा का अतिशेष : – लाभांश, बोनस तथा आरक्षितियाँ।

(6) आरक्षितियों के लिए वे रकमें जिन्हें उनमें जमा कर देने की प्रस्थापना है।

(7) निक्षेप निधियाँ

विनिधान

यह दिखाएँ कि विनिधान का स्वरूप तथा मूल्यांकन का ढंग क्या है, उदाहरणार्थ लागत या बाजार मूल्य तथा निम्नलिखित के बीच प्रभेद करें।

(1) सरकारी या न्यासिक प्रतिभूतियों में विनिधान,

(2) अंशों (शेयरों), डिबेंचरों या बन्धपत्रों में विनिधान, पूर्णत: तथा भागत: समादत्त अंशों (शेयरों) को पृथक्त: दिखाएँ तथा अंशों (शेयरों) के विभिन्न वर्गों में भी प्रभेद करें तथा समनुषंगी कम्पनियों के अंशों (शेयरों), डिबेंचरों या बंधपत्रों में विनिधानों को भी ऐसे ही ब्यौरों सहित दिखाएँ

(3) स्थावर संपत्तियाँ

[2][(4) भागीदारी फर्मों की पूंजी में विनिधान]

*कंपनी के जिन विनिधानों का कुटेशन होता है उनकी संकलित रकम तथा उनका बाजार मूल्य भी दिखाया जाए।

कंपनी के जिन विनिधानों का कुटेशन नहीं होता उसकी भी संकलित रकम दिखाई जाएँ।

---

1. अधिसूचना सं. सा. का.नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा अन्त:स्थापित।
2. अधिसूचना सं. सा.का.नि. 494 (ई), तारीख 30 अक्तूबर, 1973 द्वारा अन्त:स्थापित।
3. *अधिसूचना सं.सा.का.नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा प्रतिस्थापित।*
4. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा प्रतिस्थापित। देखिए भारत का राजपत्र, असाधारण, भाग 2, अनुभाग 3 (i), पृ. 117।

[1][निदेशकों, प्रबंध अभिकर्ताओं, सचिवों तथा कोषपालों, प्रबंध क से लिए उधार पृथक्त: दिखाए जाएँ।]	**प्रतिभूत उधार** (1) डिबेंचर (2) बैंकों से लिए गए उधार और अग्रिम (3) समनुषंगियों से लिए गए उधार और अग्रिम (4) अन्य उधार और अग्रिम	**चालू आस्तियाँ उधार और अग्रिम** (क) चालू आस्तियाँ (1) विनिधानों पर प्रोद्भूत ब्याज	
प्रतिभूत उधारों पर प्रोद्भूत और शोध्य ब्याज 'प्रतिभूत उधार' शीर्षक के नीचे समुचित उप-शीर्षकों के नीचे दिखाए जाएँ। प्रतिभूति का स्वरूप हर दशा में दिखाया जाएँ,		*(2) स्टोर और फालतू पुर्जे (3) वियोजित औजार] *(4) व्यापार स्टाक *(5) वे संकर्म जो चल रहे हैं। (6) अन्याय ऋणी	*स्टाक का मूल्यांकन करने का ढंग यहाँ दिया जाए तथा कच्चे माल की रकम भी वहाँ, जहाँ भी साध्य हो, पृथक्त: लिखी जाए। *जो संकर्म चला रहे हैं उनके मूल्यांकन का ढंग लिखिए। विविध ऋणियों के बारे में निम्नलिखित की विशिष्टियाँ पृथक्त: दी जाए:
जहाँ कि उधारों के लिए प्रत्याभूति प्रबंध अभिकर्ताओं, सचिवों तथा कोषपालों, प्रबन्धकों और/या निदेशकों ने दी है वहाँ उनका भी		(क) छह मास से अधिक तक की कालावधि के लिए विद्धमान ऋण (ख) अन्य ऋण (इनमें से निम्नलिखित के लिए	(क) वे ऋण जिनकी बाबत यह विचार है कि वे खरे हैं और जिनके लिए पूरी-पूरी प्रतिभूति कंपनी को प्राप्त है, तथा

[1]. अधिसूचना सं. सा. का.नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा अन्त:स्थापित।

उल्लेख किया जाएगा तथा ऐसे उधारों की संकलित रकम हर शीर्षक के नीचे दिखाई जाए।

** निर्गमित डिबेन्चरों के मोचन या संपरिवर्तन के निबंधन, यदि कोई हों, मोचन या संपरिवर्तन के निबंधन, यदि कोई हों, मोचन या संपरिवर्तन की शीघ्रतम तारीख सहित दिखाएँ।

[1][उपबंधित रकम घटा दें]

[2][(7क) हाथ में रोकड़ बाकी

(7ख) बैंक में अतिशेष जो–

(क) अनुसूचित बैंकों में, तथा

(ख) अन्यों में, है।]

(ख वे ऋण जिनकी बाबत यह विचार है कि वे खरे हैं, किन्तु जिनके लिए ऋणी की वैयक्तिक प्रतिभूति के अतिरिक्त कोई अन्य प्रतिभूति कंपनी को प्राप्त नहीं है, तथा

(ग) संदेहास्पद ऋण या डूबन्त समझे जाने वाले ऋण।

वे ऋण जो कंपनी के निदेशकों से या अन्य अधिकारियों से अथवा उनमें से किसी द्वारा या तो पृथक्तः या किसी अन्य व्यक्ति के साथ शोध्य हैं अथवा वे ऋण जो यथाक्रम ऐसी फर्मों या कंपनियों द्वारा शोध्य हैं जिनमें कोई निदेशक भागीदार या निदेशक या सदस्य है, पृथक्तः दिखाया जाएँ।

[2][जो कंपनियों धारा 370 की उपधारा (1ख) के अर्थ के अंतर्गत उसी प्रबंध मंडल के अधीन हैं, उनसे शोध्य ऋण कंपनियों के नामों सहित संप्रकट किए जाएँ।]

कंपनी के निदेशकों या अन्य

---

1. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा प्रतिस्थापित।

2. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 78, तारीख 4 जनवरी, 1963 द्वारा प्रतिस्थापित।

अधिकारियों से वर्ष के दौरान किसी भी समय शोध्य अधिकतम रकम टिप्पण के रूप में दिखाई जाएँ। इस शीर्षक के नीचे दिखाई जाने वाली [1][उपबंधित रकम] उन ऋणों की रकमों से अधिक नहीं होनी चाहिए जिन्हें डूबन्त या संदेहास्पद समझा गया है तथा ऐसी [1][उपबंधित रकम] का कोई अतिशेष, यदि पहले ही सृष्ट हो, हर बार खाता बन्द करने के समय दायित्व कालम में "आरक्षितियाँ और अधिशेष शीर्षक" के नीचे संदेहास्पद और डूबन्त ऋणों के लिए आरक्षिति उपशीर्षक के नीचे दिखाएँ।

[2][बैंकों में विद्यमान अतिशेषों के संबंध में निम्नलिखित की विशिष्टियाँ पृथक्तः दी जाएँ :

(क) अनुसूचित बैंकों में चालू खातों में, आह्वान खातों में तथा निक्षेप खातों में विद्यमान रकमें;

(ख) अनुसूचित बैंकों से भिन्न बैंककारों के नाम तथा ऐसे बैंककारों के यहां चालू खातों,

---

1. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा प्रतिस्थापित।

2. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 78, तारीख 4 जनवरी, 1963 द्वारा प्रतिस्थापित।

आह्वान खातों, तथा विद्यमान अतिशेष रकमें तथा ऐसे हर बैंककारों से वर्ष के दौरान किसी समय ऋण के तौर पर खड़ी अधिक रकम; तथा

(ग) किसी निदेशक का या उसके नातेदार या अथवा प्रबंध अभिकर्ता का, सचिवों तथा कोषपालों का, पश्चात्कथित के किसी सहयुक्त अथवा यदि कोई हित (अनुसूचित बैंकों से भिन्न) उन बैंककारों में से किसी में हैं, जिनके प्रति ऊपर (ख) में निर्देश किया गया है, तो उनमें हर एक में उस हित का स्वरूप।]

[1][निदेशकों, प्रबंध अभिकर्ताओं, सचिवों तथा कोषपालों, प्रबंधक से लिए गए उधार पृथक्त: दिखाए जाएँ।

अप्रतिभूत उधारों पर प्रोदभूत और शोध्य ब्याज अप्रतिभूत उधार शीर्षक के समुचित उपशीर्षकों के नीचे सम्मिलित किया जाएगा।]

जहाँ कि उधारों के लिए प्रत्याभूति प्रबंधन अभिकर्ताओं, प्रबंध तथा/कोषपालों, प्रबंध तथा/या निदेशकों द्वारा दी गई है वहाँ उसका तथा ऐसे उधारों की संकलित रकम का भी उल्लेख ऐसे हर शीर्षक के नीचे किया जाएगा।

प्रारूप के पादभाग की टिप्पण (घ) देखें।

अप्रतिभूत उधार

(1) सावधिक निक्षेप

(2) समनुषंगियों से उधार और अग्रिम

(3) (क) बैंकों से

(ख) अन्यों से

अल्पावधि उधार और अग्रिम

(4)(क) बैंकों से

(ख) अन्यों से

अन्य उधार और अग्रिम

चालू दायित्व और उपबन्धित रकम

क. चालू दायित्व

[3](1) प्रतिग्रहण

*(ख) उधार और अग्रिम

(8)[2][(क)] समनुषंगियों को अग्रिम और उधार

---

1. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा अन्तःस्थापित

2. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 494 (ई), तारीख 30 अक्तूबर, 1973 द्वारा मद 8 पुनः अक्षरांकित की गई।

3. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 78, तारीख 4 जनवरी, 1963 द्वारा प्रतिस्थापित

(2) विविध लेनदार

(3) समनुषंगी कंपनियां

(4) उस प्रभाग के लिए अग्रिम संदाय और अनवसित डिस्काउन्ट जिसका मूल्य उस समय निम्नलिखित प्रकार जैसी कंपनियों की दशा में देना बाकी है, उदाहरणार्थ, समाचारपत्र, अग्नि, बीमा, नाट्य मंडली क्लब, बैंककारी, वाष्प पोत कंपनियां आदि

(5) वे लाभांश जो बिना दावा रह गए हैं।

(6) अन्य दायित्व, यदि कोई हों।

(7) वह ब्याज जो उधारों पर प्रोद्भूत तो हो गया है पर शोध्य नहीं हुआ है।]

(ख) उपबंधित रकमें

[2](8) कराधान लेखे उपबंधित रकम

(9) प्रस्थापित लाभांश

(10) आकस्मिकताओं के वास्ते

(11) भविष्य निधि स्कीम के लिए

[1](ख) भागीदार फर्मों को जिनमें कंपनीया उसका कोई समनुषंगी भागीदार है, अग्रिम ओर उधार]

(9) विनिमय पत्र

(10) वे अग्रिम, जो नकदी में या वस्तु रूप में या प्राप्त किए जाने वाले मूल्य में अर्थात् रेटों, करों, बीमों आदि में वसूलीय हैं

(11) प्रबंध अभिकर्ताओं, सचिवों तथा कोषपालों के यहाँ चालू खाते में अतिशेष

(12) सीमा शुल्क, पत्तन न्यास आदि के यहाँ अतिशेष (जहाँ कि वे माँग पर देय हो)।

*''अन्याय ऋणी'' संबंधी जो हिदायतें ऊपर दी गई हैं वे ''उधार और अग्रिम'' को भी लागू होंगी।

---

1. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 494 (ई), तारीख 30 अक्तूबर, 1973 द्वारा अन्तःस्थापित।

2. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा प्रतिस्थापित।

(12) बीमा, पैंशन और कर्मचारिवृन्द के लिए वैसी ही अन्य सुविधाओं के लिए

(13) अन्य उपबन्धित रकमें।]

वह कालावधि जिसके लिए लाभांश बकाया पड़े रहे हैं अथवा उस दशा में जिसमें कि अंश (शेयर) एक से अधिक वर्गों के हैं वह कालावधि, जिसके लिए हर ऐसे वर्ग लेखे लाभांश बकाया पड़े रहे हैं, दर्ज की जाएगी।

वह रकम आय-कर की कटौती करने से पूर्व रूप की दिखाई जाएगी किंतु कर मुक्त लाभांश की दशा में वह रकम आय-कर से मुक्त रूप में दिखाई जाएगी तथा यह तथ्य कि वह ऐसे दिखाई गई है कथित दर्ज किया जाएगा। कंपनी के निदेशकों या अन्य अधिकारियों की ओर से कंपनी द्वारा दी गई प्रत्याभूतियों की रकम दर्ज की जाएगी ओर जहाँ साध्य हो कर ऐसे समाश्रित दायित्व की रकम भी, यदि सारभूत हो, विनिर्दिष्ट की जाएगी।

(तुलन-पत्र में एक पाद-टिप्पण निम्नलिखित को पृथक्कत: दिखाते हुए दे दिया जाए–

(1) कंपनी के विरुद्ध वे दावे जिन्हें ऋण के रूप में अभिस्वीकृत नहीं किया गया है।

(2) भागत: समादत्त अंशों (शेयरों) पर अनाहृत दायित्व।

(3) नियत संचयी लाभांश की बकाया

(4) उन संविदाओं लेखे प्राकलित रकम जो पूँजी खाते निष्पादित किए जाने के लिए बची है और जिनके लिए रकम उपलबंधित नहीं की गई है।

(5) कोई अन्य धन जिसके लिए कंपनी समाश्रितत: दायित्वाधीन।]

प्रकीर्ण व्यय:

(वहाँ तक, जहाँ तक कि वह उपलिखित [1][या समायोजित] नहीं कर दिया गया है।

(1) प्रारंभिक व्यय

(2) व्यय, जिसके अंतर्गत अंशों (शेयरों) या डिबेंचरों की हामीदारी या प्रतिश्रुति के लिए कमीशन या दलाली आती है।

(3) अंशों (शेयरों या डिबेंचरों के निर्गमन परम अनुज्ञात बट्टा (डिस्काउन्ट)

(4) सन्निमणि के दौरान पूँजी में से दिया गया ब्याज (ब्याज की दर भी लिख दीजिए)

(5) विकासार्थ व्यय जिनका समायोजन नहीं हुआ है।

(6) (हर का स्वरूप विनिर्दिष्ट करते हुए) अन्य मदें।

[2][लाभ-हानि लेखा]

[1][मद विशेष के लिए अलग नियत न की गई आरक्षितियों की, यदि कोई हों, कटौती के पश्चात् लाभ-हानि लेखा का अग्रेनीत नामे पक्ष का अतिशेष यहाँ दिखाइए।]

---

1. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा अन्त:स्थापित

2. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा प्रतिस्थापित

टिप्पणी

तुलन-पत्र तैयार करने के लिए हिदायतें - (क) इस प्ररूप में की किन्हीं मदों या उपमदों में से किसी के दिए जाने के लिए जो जानकारी अपेक्षित है यदि वह स्वयं तुलन-पत्र में सुविधापूर्वक सम्मिलित नहीं की जा सकती तो वह प्रत्येक अनुसूची या अनुसूचियों में दी जाएगी जो तुलन-पत्र से उपाबद्ध कर दी जाएगी तथा उसका भाग बन जाएगी। यह सिफारिश उस सूरत के लिए की जाती है जब भरी जाने वाली मदें अनेक हों।

(ख) यदि यह वांछित हो तो रुपयों के अलावा नए पैसे भी दर्ज किए जा सकते हैं।

(ग) [1][समनुषंगी कंपनी] की दशा में नियंत्री कंपनी द्वारा धृत अंशों (शेयरों) की तथा क्रमान्तिम नियंत्री कंपनी तथा उसकी समनुषंगियों द्वारा धृत अंशों (शेयरों) की संख्या पृथक्तः दर्ज की जानी चाहिएँ।

संपरीक्षक से यह अपेक्षित नहीं होता कि वह प्रबंध मंडल द्वारा यथा प्रमाणित अंशधारिता हित का सही होना प्रमाणित करें।

[1](गग) अंश (शेयर) प्रीमियम खाता मद के अंतर्गत उस रीति से, जो धारा 78 में उपबन्धित है, उपयोग के वर्ष में उसके उपयोग करने के ब्यौरे आते हैं।]

(घ) अल्पावधि उधारों के अंतर्गत वे उधार होंगे जो तुलन-पत्र की तारीख पर एक से अनधिक वर्ष तक शोध्य रहे हैं।

(ड.) वह अवक्षयण जो अपलिखित कर दिया गया है या जिसके लिए उपबंध कर दिया गया है, विभिन्न आस्ति शीर्षकों में बाँट दिया जाएगा तथा स्थिर आस्तियों का मूल्य निकालते समय उसकी कटौती कर ली जाएगी।

(च) तुलन-पत्र की तारीख के पश्चात् जो लाभांश समनुषंगी कंपनियों ने घोषित किए हैं वे तब के सिवाय सम्मिलित न किए जाने चाहिएँ जिसमें की वे ऐसी कालावधि के लिए हैं जो तुलन-पत्र की तारीख को या पूर्व खत्म हो गई हो।

(छ) संविदाएँ जिस विस्तार तक निष्पादित नहीं की गई हैं वहाँ तक उनसे प्रत्याशित फायदों के प्रति कोई भी निर्देश तुलन-पत्र में न दिया जाएगा पर बोर्ड की रिपोर्ट में वह निर्देश किया जाएगा।

[1][(ज) लाभ-हानि खाते में नामे पक्ष में के अतिशेष को अनायोजित आरक्षितियों में से, यदि कोई हों, घटाए गए के रूप में दिखाया जाएगा।]

(झ) जहाँ तक उधारों और अग्रिमों का संबंध है, वह रकम जो प्रबंध अभिकर्ताओं अथवा सचिवों तथा कोषपालों द्वारा किन्हीं अन्य व्यक्तियों से पृथक्तः या संयुक्ततः शोध्य है, पृथक्तः दिखाई जाएगी; [2][वे रकमें जो धारा 370 की उपधारा (1ख) के अर्थ के अंतर्गत एक ही प्रबंध मंडल के अधीन अन्य कंपनियों द्वारा शोध्य हैं] वे भी कंपनियों के नामों सहित दिखाई जाएगी तथा उनमें से किसी भी एक द्वारा जो अधिकतम रकम वर्ष भर में किसी भी समय शोध्य है वह भी दिखानी होंगी।

---

1. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा प्रतिस्थापित।
2. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 78, तारीख 4 जनवरी, 1963 द्वारा प्रतिस्थापित।

(त्र) किन्हीं मोचित डिबेंचरों की जिन्हें कंपनी को निर्गमन करने की शक्ति है, विशिष्टयाँ दी जानी चाहिएँ।

(ट) जहाँ कि कंपनी के डिबेंचरों में से कोई कंपनी के नामनिर्देशिती या न्यासी द्वारा धृत है, वहाँ डिबेंचरों की अभिहित रकम तथा वह रकम जिस मूल्य के वे कंपनी के नामनिर्देशिती या न्यासी द्वारा धृत है, वहाँ डिबेंचरों की अभिहित रकम तथा वह रकम जिस मूल्य के वे कंपनी की बहियों में दिखाए गए हैं दर्ज करनी चाहिएँ।

[3][(ठ) विनिधानों का एक विवरण (भले ही वे "विनिधान" या व्यापार के रूप में "चालू आस्तियों" के नीचे दिखाए गए हों) जिसमें व्यापारिक विनिधान और अन्य विनिधान पृथकत: वर्गीकृत किए गए हैं, तुलन-पत्र के साथ उपाबद्ध किया जाएगा जिसमें उन निर्गमित निकायों (एक ही प्रबंध-तंत्र के अधीन निगमित निकायों को पृथक्त: उपदर्शित करते हुए) के नाम जिनके अंशों, डिबेंचरों में विनिधान (उन सब विनिधानों सहित, भले ही वे अस्तित्वशील हों या न हों, जो उस तारीख के पश्चात् किए गए हैं जिसकी पूर्ववर्ती तुलन-पत्र तैयार किया गया था) किए गए थे और ऐसे प्रत्येक निगमित निकाय में ऐसे किए गए विनिधानों का स्वरूप और मात्रा दर्शित किए जाएंगे, परन्तु किसी विनिधान कंपनी की दशा में, अर्थात् ऐसी कंपनी की दशा में, जिसका प्रधान कारबार अंशों, स्टॉक डिबेंचरों या अन्य प्रतिभूतियों का अर्जन करना है, यदि विवरण में उस तारीख पर, जिस तक के लिए तुलन-पत्र तैयार किया गया है अस्तित्वशील विनिधान दिखाए जाते हैं। तो उतना ही कर देना पर्याप्त होगा। भागीदार फर्मों की पूँजी में के विनिधानों के संबंध में, विवरण में फर्मों के नाम (उनके सभी भागीदार के नाम, कुल पूँजी और प्रत्येक भागीदार के अंश सहित) दिए जाएँगे।]

(ड.) यदि बोर्ड की यह राय है कि किन्हीं [1][चालू आस्तियों, उधारों और अग्रिमों] को उनको कारोबार के मामूली अनुक्रम में धन रूप में प्राप्त करने पर उनका मूल्य कम से कम इस रकम के बरार न होगा जो उनकी होनी कथित है तो वह तथ्य कि बोर्ड की वैसी राय है कथित किया जाएगा।

(ढ) अधिनियम के प्रारंभ होने के पश्चात् जो प्रथम तुलन-पत्र कंपनी के समक्ष रखा गया है उसके सिवाय तुलन-पत्र में वे सब तत्स्थानी रकमें दिखाई जाएँगी जो अव्यवहित पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष में सब मदों, लेखों तुलन-पत्र में दिखई गई थीं, जो कंपनियों त्रैमासिक या अर्धवार्षिक लेखा आदि तैयार करती है उनकी दशा में इस बारे में की अपेक्षा पूर्ववर्ती वर्ष में की उससे मेल खाती तारीख तक के लिए तैयार किए गए तुलन-पत्र के संबंध में लागू होंगी।

(ण) अन्यान्य ऋणी शीर्षक के अधीन दिखाई जाने वाली रकमों में वे रकमें सम्मिलित की जाएँगी जो बेचे गए माल या की गई सेवाओं लेखे, अथवा अन्य संविदाजात बाध्यताओं लेखे शोध्य है किंतु वे रकमें सम्मिलित न की जाएँगी जो उधार या अग्रिम के स्वरूप की हैं।

[1][(त) निदेशकों, प्रबंध अभिकर्ताओं, सचिवों तथा कोषपालों और प्रबंध के यहाँ चालू खाते चाहे उनमें आकलन अथवा विकलन अधिक हो आदि पृथक्-पृथक् दिखाए जाएँगे।।]

भाग 2
लाभ-हानि लेखा विषयक अपेक्षाएँ

1. इस भाग के उपबंध उस आय-व्यय लेखा को, जो अधिनियम की धारा 210 की उपधारा (2) में निर्दिष्ट

---

1. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा प्रतिस्थापित।
3. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 494 (ई), तारीख 30 अक्तूबर, 1973 द्वारा प्रतिस्थापित।

है, वैसी ही रीति से, जैसी से वे लाभ-हानि लेखा को लागू होते हैं, किन्तु निदेशों विषयक उस उपान्तर सहित, जो उस उपधारा में विनिर्दिष्ट हैं, लागू होंगे।

2. लाभ-हानि लेखा–

(क) इतनी स्पष्टता से ऐसे तैयार किया जाएगा कि जितनी कालावधि के लिए वह लेखा है उतनी के दौरान कंपनी के कर्म साधन का फलस्पष्ट रूप से संप्रकट हो जाए, तथा

(ख) अनावर्ती संव्यवहारों पर या असाधारण स्वरूप के संव्यवहारों के विषय में आकलन या प्राप्तियों तथा विकलनों या व्ययों सहित हर तात्त्विक बात संप्रकट करने वाला होगा।

3. लाभ-हानि लेखा में वे सब मदें, जो कंपनी की आय और कंपनी के व्ययों से संबंधित है, अत्यन्त सुविधापूर्ण शीर्षक के नीचे कराने से लिखी होगी तथा विशिष्ट: उसमें उस कालावधि के बारे में, जितनी के लिए वह लेखा है, निम्नलिखित जानकारी संप्रकट की जाएगी–

*2[(i) (क) व्यापारावर्त, अर्थात् वह संकलित रकम जितनी के कंपनी द्वारा विक्रय किए गए हैं, जिसमें कंपनी द्वारा व्यौहार किए गए मालों के प्रत्येक वर्ग के बारे में विक्रय की रकम दी जाएगी और प्रत्येक वर्ग के ऐसे विक्रयों की मात्राएँ उपदर्शित की जाएँगी।]

1[(ख) अधिनियम की धारा 294 के अंतर्गत एकमात्र विक्रय अभिकर्ताओं को दिया जाने वाला कमीशन,

(ग) अन्य विक्रय अभिकर्ता को दिया गया कमीशन,

(घ) विक्रयों पर प्रायिक व्यापारिक डिस्काउन्ट (बट्टे) में भिन्न दलाली और डिस्काउन्ट (बट्टा)];

2[(ii) (क) विनिर्माता कंपनियों की दशा में, —

(1) मद के अनुसार ह्रास बतलाते हुए और उसकी मात्राएँ उपदर्शित करते हुए उपयुक्त कच्चे माल की कीमत इस ह्रास में, यथासंभव, सभी महत्त्वपूर्ण आधारित कच्चे मालों की पृथक् मदों के रूप में दर्शित किया जाएगा। अन्य विनिर्माताओं से प्राप्त मध्यस्थ वस्तुओं या घटकों का उस दशा में उनकी मात्रा न बताते हुए यथोचित शीर्षकों के नीचे समूहीकरण किया जाएगा जबकि ह्रास में सम्मिलित की जाने के लिए उनकी सूची अधिक बड़ी हो। परंतु उन सभी मदों को जिनका अलग-अलग मूल्य, उपयुक्त किए गए कच्चे माल के कुछ मूल्य का 10 प्रतिशत या अधिक है, ह्रास में उनकी मात्रा सहित पृथक् और सुभिन्न मदों के रूप में दिखाया जाएगा।

(2) प्रत्येक वर्ग के माल के बारे में ह्रास बताते हुए और उनकी मात्राओं को उपदर्शित करते हुए उत्पादित माल का आरंभिक या बंद स्टाक,

(ख) व्यापारिक कंपनियों की दशा में, कंपनी द्वारा व्यापार किए गए, मालों के प्रत्येक वर्ग के बारे में ह्रास बतलाते हुए और उनकी मात्राएँ उपदर्शित करते हुए किए गए, क्रय और उसका आरंभिक और बंद स्टाक,

(ग) जो कंपनियां सेवा कर रही हैं या उनका प्रदाय कर रही हैं उनकी दशा में की गई या प्रदान की गई सेवाओं से व्युत्पन्न सकल आय,

---

*2. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 494 (ई), तारीख, 30 अक्तूबर, 1973

1. 1960 के अधिनियम सं. 65 की धारा 217 द्वारा "संकर्म अभी पूरे किए जाने हैं" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

2. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा अन्त:स्थापित।

(घ) ऊपर के खण्ड (क), (ख) और (ग) में वर्णित प्रवर्गों में से एक से अधिक में आने वाली कंपनी की दशा में यदि आरंभिक और बंद स्टॉक क्रय विक्रय और मूल्य और मात्रा संबंधी ह्रास कच्चे माल का उपभोग तथा की गई सेवाओं में हुई सकल आय दिखा दिया जाता है, तो यह बात जहाँ दी गई अपेक्षाओं का पर्याप्त अनुपालन होगी।

(ड.) अन्य कंपनियों की दशा में, विभिन्न शीर्षकों के अधीन व्युत्पन्न सकल आय।

टिप्पण 1— कच्चे माल की मात्रा, क्रय, स्टाक और व्यापारावर्त, मात्रा-संबंधी उन अभिधानों के नाम से अभिव्यक्त किए जाएँगे जिनसे उनका प्रसामान्यः बाजार में क्रय या विक्रय किया जाता है।

टिप्पण 2— मद (11) (क), (11) (ख) और (11) (घ) के प्रयोजन के लिए, वे मद माल के पृथक् वर्गों के रूप में समझे जाएँगे जिनके लिए कंपनी के पास पृथक् औद्योगिक अनुज्ञप्तियाँ हैं। परन्तु जहाँ किसी कंपनी के पास एक ही मद के लिए विभिन्न स्थानों पर उत्पादन के लिए या अनुज्ञप्त हैसियत के प्राप्त विस्तार के लिए एक से अधिक औद्योगिक अनुज्ञाप्तियाँ हैं, वहाँ ऐसी सभी अनुज्ञप्तियों के अंतर्गत आने वाली मद एक वर्ग के रूप में समझी जाएगी। व्यापारिक कम्पनियों की दशा में, आयात अनुज्ञप्तियाँ अनुदत करते समय आयातित मदों की मुख्य आयात और निर्यात नियंत्रक द्वारा माने गए वर्गीकृत किया जाएगा।

टिप्पण 3— क्रयों, स्टाफ और व्यापारावर्त के ह्रास बतलाते समय, फालतू पुर्जे और उपांगो जैसी मदों को, जिनकी सूची इतनी बड़ी है कि उन्हें ह्रास में सम्मिलित नहीं किया जा सकता है, परिणाम न बतलाते हुए उचित शीर्षकों के नीचे समूहीकृत किया जा सकेगा, परंतु उन सभी मदों को जिनका अलग-अलग मूल्य, यथास्थिति, क्रय, स्टॉक या व्यापारावर्त के सकल मूल्य का दस प्रतिशत या अधिक है, अलग-अलग मात्रा सहित पृथक् और सुभिन्न मदों के रूप में दिखाया जाएगा।]

(iii) जिन समुत्थानों के संकर्मों पर काम चल रहा है उनकी दशा में वे रकमें जितनी तक [1][ऐसे संकर्म] लेखा कालावधि के प्रारंभ पर और अंत पर [1][पूरे हो चुके हैं];

(iv) स्थिर आस्तियों में अवक्षयण, उनके नवीकरण पर उनके मूल्य में कमी के लिए उपबंधित रकम में,

यदि ऐसा उपबंध अवक्षयण प्रभार के रूप में नहीं लिया गया है तो ऐसा उपबन्ध करने के लिए अपनाई गई रीति।

यदि अवक्षयण के लिए कोई उपबंध नहीं किया गया है तो यह तथ्य कि कोई उपबंध नहीं किया गया है दर्ज किया जाएगा [2][तथा अधिनियम की धारा 205(2) के अनुसार संगणित अवक्षयण की बकाया का परिमाण टिप्पण के रूप में दिया जाएगा।

(v) कंपनी के डिबंचरों और अन्य सावधिक उधारों पर अर्थात् नियत कालावधि के लिए उधारों पर ब्याज की रकम, यह बात पृथक्त: दर्ज की जाएगी कि प्रबंध निदेशक, प्रबंध अभिकर्ता, सचिव तथा कोषपालों तथा प्रबंधक को, यदि कोई हो [3][दी गई या देय] यदि कोई ब्याज है तो उस ब्याज की रकम क्या है;

---

1. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 494, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा प्रतिस्थापित।
2. 1960 के अधिनियम सं. 65 की धारा 217 द्वारा अन्त:स्थापित।
3. 1960 के अधिनियमसं. 65 की धारा 217 द्वारा "देय" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

(vi) भारतीय आय-कर तथा लाभ पर अन्य भारतीय कराधान ले जिसके अंतर्गत जहाँ साध्य हो भारतीय आय-कर के साथ वह कराधान है जो भारतीय आय-कर से अवमुक्ति की मात्रा तक, यदि कोई हो, अन्यत्र लगाया गया है, भार की रकम, तथा वहाँ जहाँ कि वह साध्य हो आय-कर और अन्य कराधान अलग-अलग दिखाया जाएगा;

(vii) [1][वें रकमें जो]—

(क) अंश (शेयर) पूँजी की वापसी के लिए, तथा

(ख) उधारों को चुकाने के लिए,

[1][आरक्षित कर दी गई है];

(viii) (क) आरक्षितियों लेखे अलग रखी या अलग रखी जाने के लिए प्रस्थापित किन्हीं रकमों का योग, यदि वह सारभूत हों, किंतु उसके अंतर्गत ऐसे किसी विनिर्दिष्ट दायित्व आकस्मिकता या अभिबंधन, की पूर्ति के लिए उपबंधित रकम नहीं आती जिसके बारे में यह जानकारी है कि वह उस तारीख को विद्यमान है जिस तक के लिए तुलन-पत्र तैयार किया गया है,

(ख) ऐसी आरक्षितियों में से निकाली गई किन्हीं रकमों का योग, यदि वे तात्त्विक हों ;

(ix) (क) विनिर्दिष्ट दायित्वों, आकस्मिकताओं या अभिबंधनों की पूर्ति करने के लिए उपबंध करने के वास्ते अलग रख दी गई रकमों का, यदि वे सारभूत हों, योग,

(ख) ऐसी उपबधित रकमों में, जिनकी आवश्यकता आगे के लिए नहीं रह गई है, निकाली गई रकमों का, यदि कोई हों, योग ;

निम्नलिखित मदों में से हर एक मद पर अलग-अलग दिखाते हुए हर मद पर उपगत व्यय -

(क) स्टोरों और फालतू पुर्जों का उपयोग,

(ख) विद्युत और ईंधन,

(ग) भाटक,

(घ) भवनों की मरम्मत,

(ड.) मशीनरी की मरम्मत,

(च) (1) संबलम्, मजदूरी और बोनस,

भविष्य और अन्य निधियों में अभिदाय, कर्मकारों ओर कर्मचारिवृन्द के कल्याण पर हुए व्यय [2][जहाँ तक कि वे किन्ही पूर्ववर्ती उपबंधित रकमों या आरक्षितियों में से समायोजित नहीं दिए गए हैं।]

टिप्पण [3][1]—इस मद सम्बन्धी जानकारी तुलन-पत्र में भी सुसंगत उपबन्धित रकम या आक्षिति खाता के शीर्षक के नीचे दी जानी चाहिए।

[4]* * * *

(छ) बीमा,

(ज) आय पर कर को अपवर्जित कर के और कर,

(झ) प्रकीर्ण आय :

---

1. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 494 (ई;, तारीख 30 अक्तूबर, 1973 द्वारा अन्त:स्थपित।
2. 1960 के अधिनियम सं. 65 की धारा 217 द्वारा अन्त: स्थापित।
3. 1960 के अधिनियम सं. 65 की धारा 217 द्वारा पैरा 4 के स्थान पर प्रतिस्थापित।
4. अधिसूचना सं.का.आ. 723 (अ.), तारीख 18.9.1990 द्वारा लोप किया गया।

[1][परंतु ऐसा कोई मद जिसके अधीन खर्चें, कंपनी के कुल राजस्व के 1 प्रतिशत या पाँच हजार रुपए में से जो भी अधिक हो, उससे अधिक हो, लाभ-हानि खाते में समुचित लेख के सामने पृथक् और सुभिन्न मद के रूप में दिखाया जाएगा और उसे "प्रकीर्ण व्यय" के अधीन दिखाए जाने वाली किसी अन्य मद के साथ नहीं जोड़ा जाएगा।]

(xi) (क) व्यापारिक विनिधानों और अन्य विनिधानों में प्रभेद करते हुए विनिधानों से आय की रकम,

(ख) ब्याज के तौर पर अन्य आय उस आय का स्वरूप विनिर्दिष्ट किया जाए,

(xii) (क) [1][किसी भागीदारी फर्म की सदस्यता मद्दे उपार्जित लाभ या हानि के विस्तार को स्पष्टत: दिखाते हुए] विनिधानों पर उस मात्रा तक लाभ और हानियाँ [2][जिस तक वे किसी पूर्ववर्ती उपबधित रकम या आरक्षिति से समायोजित नहीं कर दी गई है।

टिप्पणी — इस मद के बारे में जानकारी तुलन-पत्र में भी सुसंगत उपबन्ध या आरक्षिति खाता शीर्षक के नीचे दी जाएगी।]

(ख) उस किस्म के संव्यहारों के बारे में जो, प्राय: कंपनी द्वारा हाथ में नहीं लिए जाते, अथवा आपवादिक या अनावर्ती परिस्थितियों में हाथ में लिए जाते हैं, लाभ या हानि यदि उनकी रकम सारभूत हो,

(ग) प्रकीर्ण आय में;

(xiii)(क) समनुषंगी कंपनियों से लाभांश,

(ख) समनुषंगी कंपनियों की हानि के लिए उपबधित रकमें;

(xiv) उन लाभांशों की संकलित रकम, जो दे दिए गए हैं या दिए जाने के लिए प्रस्थापित हैं तथा यह भी दर्ज किया जाए कि उन रकमों में से आय-कर की कटौती होनी है या नहीं;

(xv) वह रकम, यदि सारभूत हो, जिसके कारण लाभ-हानि खाते में दिखाई गई किन्हीं मदों पर उस दशा में असर पड़ेगा जिसमें कि लेखाकरण के आधार पर कोई तब्दीली की जाती है।

[3][4. [4][लाभ-हानि लेखा में निम्नलिखित को पृथक्त: दिखाते हुए वे संदाय भी दिए हुए होंगे अथवा उनकी बाबत ब्यौरेवार जानकारी एक टिप्पण के रूप में उसमे दी जाएगी जो निदेशकों (जिसके अंतर्गत प्रबंध निदेशक आता है) प्रबंध अभिकर्ताओं, सचिवों तथा कोषपालों अथवा प्रबंधक को, यदि कोई हो, कंपनी, कंपनी की समनुषंगिओं और किसी अन्य व्यक्ति द्वारा वित्तीय वर्ष के दौरान उपबधित किए गए या दिए गए हैं—]

(i) [4][अधिनियम की धारा 198 के अधीन प्रबंधकीय पारिश्रमिक, जो] निदेशकों (जिसके अंतर्गत प्रबंध निदेशक आता है), प्रबंध अभिकर्ता, सचिवों तथा कोषपालों या प्रबंधक को, यदि कोई हो, वित्तीय वर्ष के दौरान [4][दिए गए हैं या देय है];

(ii) वे व्यय जिनकी बाबत प्रबंध अभिकर्ता की प्रतिपूर्ति द्वारा 354 के अधीन की गई है;

(iii) प्रबंध अभिकर्ता या उसके सहयुक्त को धारा 356, 357, 358 के अधीन पृथक्त: देय कमीशन या अन्य

1. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 494 (ई) तारीख 30 अक्तूबर, 1973 द्वारा अन्त:स्थापित
2. 1960 के अधिनियम सं. 65 की धारा 217 द्वारा अन्त:स्थापित।
3. 1960 के अधिनियम सं. 65 की धारा 217 द्वारा पैरा 4 के स्थान पर प्रतिस्थापित।
4. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 414, तारीख 21 मार्च, 1961 द्वारा प्रतिस्थापित।

पारिश्रमिक में ;

[4][(iv) वह कमीशन जो उन संविदाओं लेखे अन्य समुत्थानों के विक्रय या क्रय अभिकर्ता के रूप में प्रबंध अभिकर्ता या उसके सहयुक्त को अधिनियम की धारा 359 के अधीन प्राप्त हुआ है या उसे प्राप्य है, जो संविदा ऐसे समुत्थान द्वारा उस कंपनी से की गई थी;]

(v) मालों तथा सामग्रियों के क्रय या विक्रय की या सेवाओं के प्रदाय की उन संविदाओं का धन मूल्य जो कंपनी ने वित्तीय वर्ष के दौरान प्रबंध अभिकर्ता या उसके सहयुक्त से धारा 360 के अधीन की हैं;

[4][(vi) अन्य मोक और कमीशन जिसके अन्तर्गत प्रत्याभूति कमीशन आता है (इनके ब्यौरे दिए जाएँ);]

(vii) कोई अन्य नकदी में या वस्तु रूप में परिलब्धियाँ या फायदे (जहाँ साध्य हो वहाँ उनका लगभग धन मूल्य लिखा जाए);

(viii) पैंशनें आदि —

(क) पेंशनें,

(ख) उपदान,

(ग) अपने चंदों और उन पर ब्याज से आधिक्य में भविष्य निधियों से संदाय,

(घ) पद हानि के लिए प्रतिकर,

(ङ.) पद से निवर्तन से संबंधित प्रतिफल।

[1][4क. लाभ-हानि लेखा में अधिनियम की धारा 349 के अनुसार शुद्ध लाभ की संगणना देते हुए या वह संगणना दर्शित करते हुए कथन के रूप में एक टिप्पणी कमीशन के उन सुसंगत ब्यौरों के साथ दिया हुआ होगा जो ऐसे लाभ के प्रतिशत भाग के रूप में निदेशकों (जिनके अंतर्गत प्रबंध निदेशक आते हैं), प्रबंध अभिकर्ताओं, सचिवों तथा कोषपालों या प्रबंधक को, यदि कोई हो, देय हैं।]

[2][4 ख.] लाभ-हानि लेखा में, इसके अतिरिक्त उन रकमों की बाबत ब्यौरेवार जानकारी अन्तर्विष्ट होगी या टिप्पणी के रूप में दी हुई होगी [3][जो चाहे देय फीस, व्यय या अन्यथा की गई सेवाओं के लिए संपरीक्षक को—]

(क) संपरीक्षक के रूप में, [4] [***]

[5][(ख) निम्मलिखित के बारे में सलाहकार के रूप में या किसी अन्य हैसियत में,–

(1) कराधान संबंधी मामले,

(2) कंपनी विधि मामले,

(3) प्रबंध सेवाएँ; और

(ग) किसी अन्य रीति में।]

---

1. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 494 (ई) तारीख 30 अक्तूबर, 1973 द्वारा अन्त:स्थापित
2. 1960 के अधिनियम सं. 65 की धारा 217 द्वारा अन्त:स्थापित।
3. 1960 के अधिनियम सं. 65 की धारा 217 द्वारा पैरा 4 के स्थान पर प्रतिस्थापित।
4. अधिसूचना सं.सा.का.नि. 455, तारीख 27 अप्रैल, 1974 द्वारा ''और' शब्द का लोप किया गा।
5. अधिसूचना स.सा.का.नि. 455, तारीख 27 अप्रैल, 1974 द्वारा प्रतिस्थापित।

[6][(4ग.) विनिर्माता कंपनियों की दशा में, लाभ-हानि खाते में टिप्पणी के रूप में विनिर्माता मालों के प्रत्येक वर्ग को बाबत निम्नलिखित के बारे में परिणाम विषयक सूचना विस्तार सहित होगी, अर्थात्:-

(क) अनुज्ञप्त क्षमता (जहाँ अनुज्ञप्त प्रवृत्त है)

(ख) प्रतिष्ठापित क्षमता, और

(ग) वास्तविक उत्पादन।

टिप्पणी 1 कंपनी की अनुज्ञप्ति और प्रतिष्ठापित क्षमता, जैसी कि वह उस वर्ष के अंतिम दिन की है जिससे लाभ-हानि संबंधित है, क्रमशः उपरोक्त मद (क) और (ख) के सामने उल्लिखित की जाएंगी।

टिप्पणी 2 मद ग के सामने, विक्रय के लिए परिष्कृत उत्पादों के संबंध में वास्तविक उत्पादन उल्लिखित किया जाएगा। उन मामलों में जहाँ कंपनी द्वारा अर्ध-साधित उत्पादों का विक्रय भी किया जाता है, वहाँ उनके पृथक् ब्यौरे दिए जाएँगे।

टिप्पणी 3 इस पैरे के प्रयोजन के लिए, वे मद जिनके लिए कंपनी के पास पृथक् औद्योगिक अनुज्ञप्तियाँ हैं, माल के पृथक् वर्गों के रूप में समझी जाएँगी, किंतु जहाँ कंपनी के पास विभिन्न स्थानों पर मद के उत्पादन के लिए या अनुज्ञप्ति क्षमता के विस्तार के लिए एक से अधिक औद्योगिक अनुज्ञप्तियों हैं, वहाँ ऐसी सभी अनुज्ञप्तियों के अंतर्गत आने वाली मद को एक वर्ग के रूप में समझा जाएगा।

4 घ. लाभ-हानि खाते में टिप्पणी के रूप में निम्नलिखित सूचना भी होगी, अर्थात्:-

(क) वित्तीय वर्ष के दौरान निम्नलिखित के बारे में कंपनी द्वारा सी.आई.एफ. के आधार पर संगणित आयातों का मूल्य:-

(i) कच्चा माल,

(ii) संघटक और फालतू पुर्जे,

(iii) पूँजी माल,

(ख) वित्तीय वर्ष के दौरान स्वामित्व, जानकारी, वृतिक परामर्श फीसें, ब्याज और अन्य बातों के कारण विदेशी मुद्रा में हुए व्यय,

(ग) वित्तीय वर्ष के दौरान उपयुक्त सभी आयातित कच्चे माल, फालतू पुर्जे और संघटकों का मूल्य और उन सभी देशी कच्चे माल फालतू पुर्जे ओर संघटक का मूल्य जिनका उपभोग समान रूप से होता है ओर प्रत्येक का सकल उपभोग से प्रतिशत,

(घ) लाभांशों मुद्दे विदेशी मुद्रा में वर्ष के दौरान भेजी गई रकम जिसमें अतिवासी अंशधारियों की संख्या उनके द्वारा धारित उन अंशों की संख्या जिन पर लाभांश प्रोद्भूत हुए थे और वह वर्ष जिसके बारे में लाभाश दिए गए हों,

(ङ.) वह उपार्जन जो विदेशी मुद्रा में हैं, निम्नलिखित शीर्षकों में वर्गीकृत किए जाते हैं, अर्थात्: -

(i) एफ.ओ.बी. आधार पर संगणित मालों का निर्यात,

---

[6] अधिसूचना सं.सा.का.नि. 494 (ई) तारीख 30 अक्तूबर, 1973 द्वारा प्रतिस्थापित।

(ii) स्वामित्व, जानकारी, वृतिक और परामर्श फीस,

(iii) ब्याज और लाभांश,

(iv) वह आय, जिसमें उनकी प्रकृति उपदर्शित होगी।,

5. केंद्रीय सरकार यह निदेश दे सकेगी कि कंपनी आस्तियों में अवक्षयण, उनके नवीकरण या उनके मूल्य में कमी के लिए उपबंधित रकमों से भिन्न ऐसी रकमों को, जो अलग-अलग रख ली गई हैं, दिखाने के लिए आबद्ध उस दशा में न होगी जिसमें कि केंद्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि वह जानकारी लोकहित में संप्रकट न की जानी चाहिए और उससे कंपनी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा किंतु यह बात इस शर्त के अधीन रहते हुए है कि ऐसे अलग रखी गई रकम को गणना में लेने के पश्चात् निकली रकम जिसे किसी शीर्षक के अधीन दिखाई गई है वह उपलबंध ऐसे किया या अंकित किया जाएगा कि उससे वह तथ्य उपदिर्शित हो जाए।

6. (1) इस अधिनियम के प्रारंभ के पश्चात् कंपनी के समक्ष रखे गए प्रथम लाभ-हानि लेखा की दशा को छोड़ कर लाभ-हानि लेखे में अव्यवहित पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष में लाभ-हानि लेखे में दी गई सब मदों के लिए तत्स्थानी रकमें दिखा दी जाएँगी।

(2) उपखंड (1) में ज़ो अपेक्षा है वह वह ऐसी कंपनियों की दशा में, जो त्रैमासिक या अर्धवार्षिक लेखा तैयार करती है, उस कालावधि के लाभ-हानि लेखा से संबंधित होगी जो पूर्ववर्ती वर्ष में तत्स्थानी तारीख को खत्म हुआ था।

तुलन-पत्र का लम्बवत प्रारूप

ब. लम्बवत प्रारूप

कंपनी का नाम.....................

तुलन-पत्र ....

	खण्ड संख्या	*चालू वित्तीय वर्ष के अंत की राशि*	*पिछले वित्तीय वर्ष के अंत की राशि*
1 2	*3*	*4*	*5*
I. कोषों के स्रोत			
(1) अंशधारकों का कोष :			
(a) पूँजी			
(b) संचय एवं आधिक्य			
(2) ऋण कोष :			
(a) सुरक्षित ऋण			
(b) असुरक्षित ऋण			
योग			
II. कोषो का प्रयोग			
(I) स्थायी परिसंपत्तियां :			
(a) सकल खण्ड			
(b) घटाया : ह्रास			
(c) शुद्ध खण्ड			
(d) कार्यरत पूँजी			
(2) विनियोग			
(3) चालू परिसंपत्तियां, ऋण एवं अग्रिम :			
(a) रहतिया			
(b) विविध देनदार			
(c) हतस्थ एवं बैंकस्थ रोकड़ शेष			
(d) अन्य चालू परिसंपत्तियां			
(e) ऋण एवं अग्रिम			
घटाया :			
चालू देयताएं एवं प्रावधान :			
(a) देयताएं			
(b) प्रावधान			
शुद्ध चालू परिसंपत्तियां			
(4) (a) विविध व्यय जिसे अपलिखित या समायोजित न किया गया हो			
(b) लाभ एवं हानि खाता			
योग			

अध्याय 2

वित्तीय विश्लेषण के साधन

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप :

- कंपनी की वार्षिक प्रतिवेदन के मुख्य भागों का वर्णन कर सकेंगे;
- वित्तीय विश्लेषण के साधनों का वर्णन कर सकेंगे;
- तुलनात्मक एवं समरूप विवरण बना सकेंगे;
- तुलनात्मक एवं समरूप विवरण की अर्थपूर्ण व्याख्या कर सकेंगे।

इस पाठ में तुलन-पत्र तथा लाभ-हानि खाते की व्याख्या करने का प्रयास किया गया है ताकि वित्तीय स्थिति तथा संचालन दक्षता में आए परिवर्तनों को समझने के लिए (क) तुलनात्मक विवरण, और (ख)समरूप विवरण तैयार कर सकें।

लेखांकन प्रक्रिया के अंतिम उत्पाद तुलन-पत्र, लाभ-हानि खाता तथा रोकड़ प्रवाह विवरण हैं। इनके साथ मंडल प्रतिवेदन, परिशिष्ट तथा अनुसूचियों द्वारा विस्तृत विवरणों को संलग्नित किया जाता है। वित्तीय विवरणों में सूचना इस प्रकार क्रमागत् होती है कि एक उपक्रम की कार्यप्रणाली तथा वित्तीय-दशा को अनुमानित किया जा सके।

वित्तीय विश्लेषण प्रक्रिया को व्यवहारिक स्वरूप देने के लिए पंजाब ट्रैक्टर लिमिटेड की वर्ष 2001 के वार्षिक प्रतिवेदन से कुछ अंश अधोलिखित हैं।

वार्षिक प्रतिवेदन वह प्रतिवेदन है जो कंपनी द्वारा अपने स्वामियों अर्थात् अंशधारकों के लिए प्रतिवर्ष जारी किए जाते हैं। वार्षिक प्रतिवेदन संक्षिप्त खाते एवं विवरण हैं जो कि प्रत्येक वर्ष कंपनी द्वारा अपने स्वामियों अर्थात् अंशधारकों के लिए जारी किए जाते हैं। इनमें आधारभूत वित्तीय विवरण सहित गत् वर्ष के कार्य निष्पादन पर प्रबंधकीय चर्चा तथा भविष्य की संभावनाओं की जानकारी मंडल प्रतिवेदन द्वारा दी जाती है।

तुलन-पत्र तथा लाभ एवं हानि लेखों में सभी आंकड़े लाख रुपयों में हैं।

प्रदर्श 2.1

PUNJAB TRACTORS LIMITED
BALANCE SHEET AS AT MARCH 31, 2001

(Rs. in lacs)

	Schedule		2001		2000
		Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
SOURCES OF FUNDS					
Shareholders Funds					
Capital	A	60,75.57		20,25.19	
Reserves and surplus	B	373,56.31	434,31.88	351,76.32	372,01.51
Loan Funds					
Secured Loans	C	4.58			—
Unsecured Loans	D	13,10.00	13,14.58		12,75.32
Total			**447,46.46**		**384,76.83**
APPLICATION OF FUNDS					
Fixed Assets	E				
Gross Block		262,14.84		244,13.58	
Less : Depreciation		107,26.89		90,54.04	
Net Block		154,87.95		153,59.54	
Capital Work-in-Progress/ Advance and Construction Stores in Hand		7,58.26		6,64.59	
Capital Spares		66.53	163,12.74	84.38	161,08.51
Investment	F		7,73.46		10,84.92
Current Assets, Loans and Advances	G				
Inventories		96,87.87		119,68.50	
Sundry Debtors		298,28.64		88,27.90	
Cash and Bank Balances		4,19.64		18,39.79	
Loans & Advances		59,55.51		71,09.68	
		458,91.66		297,45.87	
Less :					
Current Liabilities and Provisions	H	182,31.40		84,62.47	
Net Current Assets			276,60.26		212,83.40
Total			**447,46.46**		**384,76.83**
Notes on Accounts	L/M				

PUNJAB TRACTORS LIMITED
PROFIT AND LOSS ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED MARCH 31, 2001

(Rs. in lacs)

	Schedule	Rs.	2001 Rs.	Rs.	2000 Rs.
INCOME					
Revenue from Operations	L(14)	1119,46.37		1170,20.86	
Dividend Income	L (7)	2,03.33	1121,49.70	8,13,68	1178,34.54
EXPENDITURE					
Raw Material, Finished & Semi Finished Products	I	651,26.87		696,43.81	
Excise Duty		154,99.10		153,36.46	
Operating & Administrative Expenses	J	130.47.32		125,08.45	
Finance Charges (Net)	K	(7.18)		(2,97.00)	
Depreciation	E	16,91.90	953,58.01	15,98.17	987,89.89
Profit for the year			167,91.69		190,44.65
Prior Period Adjustments			(+) 10.14		(-) 3.75
Profit Before Tax			168,01.83		190,40.90
Provision For Tax			55,50.00		57,15.00
Profit After Tax Available for Appropriation			**112,51.83**		**133,25.90**
Interim Dividend		—		39,49.12	
Final Dividend		45,56.68		13,16.37	
Tax on Interim & Final Dividend		4,64.78		7,24.01	
Transfer to General Reserve		61,30.37		72,36.40	
Profit Carried to Balance Sheet		1,00.00	**112,51.38**	1,00.00	**133,25.90**

PUNJAB TRACTORS LIMITED

SCHEDULE A *(Rs. in lacs)*

	2001	2000
SHARE CAPITAL		
Authorised		
Rs. 7,50,00,000 (2000–4,92,00,000) Equity Shares of Rs. 10/- Each	75,00.00	49,20.00
Preference Shares – Nil (2000-80,000) of Rs. 100 each	–	80.00
	75,00.00	**50.00.00**

Issued, Subscribed & Paid up		
6,07,55,700 (2000-2,02,51,900) Equity Shares of Rs. 10	60,75.57	20,25.19
each fully paid	60,75.57	20,25.19
	60,75.57	**20,25.19**

Note : *Paid up Capital Includes 5,61,32,725 (2000-1,56,28,925) Equity Shares allotted as fully paid Bonus Shares by Capitalisation of General Reserve and Share Premium.*

SCHEDULE B (*Rs. in lacs*)

		2001		*2000*
RESERVES AND SURPLUS Preference Share Redemption Reserve		30.00		30.00
Share Premium	9,39.49	–	9,39.49	
Less : Capitalised by Issue of Bonus Shares	9,39.49	–	9,39.49	–
Investment Allowance (Unilised) Reserve	–		1,20.00	
Less : Transferred to General Reserve	–	–	1,20.00	–
General Reserve				
Brought Forward	334,06.83		260,50.43	
Less : Capitalised by Issue of Bonus Shares	31,10.89	302,95.94	–	260,50.43
Add: Transferred from Investment Allowance (Utilised) Reserve	–		1,20.00	
Transferred from Profit and Loss Account	61,30.87	364,26.31	72,36.40	334,06.83
Surplus :				
Brought Forward	8,00.00		7,00.00	
Add : Transferred from Profit & Loss Account	1,00.00	9,00.00	1,00.00	8,00.00
		373,56.31		**351,76.32**

PUNJAB TRACTORS LIMITED

SCHEDULE C (*Rs. in lacs*)

SECURED LOANS	*2001*	*2000*
Loans from Banks		–
Cash Credit Account	4.58	
	4.58	–

Note : *Loans from Banks are secured by hypothecation of stock, stores and book debts.*

SCHEDULE D

(Rs. in lacs)

	2001	*2000*
UNSECURED LOANS		
Fixed Deposits from Public	13,10.00	12,75.32
(Include Interest Accrued and Due Rs. 10.70 lacs (2000 Rs. 9.89 lacs))	13,10.00	12,75.32

PUNJAB TRACTORS LIMITED

SCHEDULE E

FIXED ASSETS (Rs. in lacs)

DESCRIPTION	GROSS BLOCK				DEPRECIATION				NET BLOCK	
	Cost as at 31st March, 2000	Additions	Deletions/ Adjustments	Cost as at 31st March 2001	As at 31st March 2000	Provided During the Year	Deletions/ Adjustment	Upto 31st March, 2001	As at 31st March, 2001	As at 31st March, 2000
Land Freehold	49.65	25.73	—	75.38	—	—	—	—	75.38	49.65
Building	32,30.28	1,13.66	—	33,43.94	7,38.05	1,09.78	—	8,47.83	24,96.11	24,92.23
Plan & Machinery	190,79.62	16,00.47	9.24	206,75.85	75,02.39	13,89.02	8.77	88,82.64	117,88.21	115,77.23
Electrical Installations	12,13.53	34.54	4.37	1243.70	3,83.31	87.54	.22	4,70.63	7,73.07	8,30.22
Furniture, Fixtures & Officer Equipments	5,79.15	65.57	42.43	6,02.29	2,69.11	57.07	3.15	3,23.03	2,79.26	3,10.04
Vehicles	2,61.35	25.93	8.60	2,78.68	1,61.18	48.49	6.91	2,02.76	75.92	1,00.17
Total	**244,13.58**	**18.65.90**	**64.64**	**262,14.84**	**90.54.04**	**16,91.90**	**19.055**	**107,26.89**	**154,87.95**	**153,59.54**
Capital Work-in-Progress/Advances									7,51.88	6,51.90
Construction Stores in Hand									6.38	12.69
Capital Spares									66.53	84.38
									163,12.74	**161.08.51**
2000	219,23.76	25,64.12	74.30	244,13.58	75,27.19	15,98.17	71.32	90.54.04		

Note : Depreciation on all assets has been provided on straight line method and on the basis of double shift.

PUNJAB TRACTORS LIMITED

SCHEDULE F *(Rs. in lacs)*

		2001		2000
INVESTMENTS (AT COST)				
Trade-Quoted				
Swaraj Automotives Limited 5,80,000 Equity Shares of Rs. 10 each fully paid		5.83		5.83
Swaraj Mazda Limited *(a company under the same management)*				
30,45,000 Equity Share of Rs. 10 each fully paid		3,04.50		3,04.50
Swaraj Engines Limited				
13,73,000 Equity Shares of Rs. 10 each fully paid		68.65		68.65
Industrial Development Bank of India				
2,85,440 (2000-1,78,400) Equity Shares of Rs. 10 each fully paid	2,28.44		2,28.44	
Less : Provision for diminution in value	1,52.09	76.35	—	2,28.44
Non-Trade-Unquoted				
50,00,000 Units of GIC Fortune -94 Scheme of Rs. 10 each fully paid	4,77.50		4,77.50	
Less : Provision for diminution in value	1,59.37	3,18.13	—	4,77.50
		7,73.46		**10.84.92**

Note :

A. 1,07,040 (2000-Nil) Equity Shares of Industrial Development Bank of India of Rs. 10 each were issued as Bonus Shares.

B. Aggregate Value

		2001	2000
1.	Cost of quoted investments	6,07.42	6,07.42
2.	Market value of quoted investments	47,38.32	69,33.31
3.	Cost of unquoted investments	4,77.50	4,77.50

PUNJAB TRACTORS LIMITED

SCHEDULE G *(Rs. in lacs)*

				2001		2000
CURRENT ASSETS, LOANS & ADVANCES						
Current Assets						
Inventories						
Stores & Spares			6,44.11		7,57.78	
Loose Tools			7,62.74		9,12.30	
Raw Material & Components			65,74.71		76,50.25	
Finished GooosQ			3,34.01		11,68.25	
Work-in-Progress			9,63.75		9,04.64	
GooosQ-in-Transit			4,08.55	96,87.87	5,75.28	119,68.50
Sundry Debtors (Unsecured)						
Over Six Months						
- Considered Good			4.28		6.52	
- Considered Doubtful	1,13.62	—		1,13.62		
Less : Provision	1,13.62	—		1,13.62	—	
Other (Considered Good)		298,24.36	298,28.64		88,21.38	88.28.90
Cash & Bank Balances						
Cash on Hand		62.67			60.63	
Balance with Scheduled Banks						
- Current Accounts	2,71.73			10.50.80		
- Fixed Deposits	28.25			4,79.52		
- Interest Accrued but not due on Fixed Deposits	0.97			5.12		
- Unpaid/Unclaimed Dividend Accounts	56.02	3,56.97	4,19.64	2,43.72	17,79.16	18.39.79
Loans and Advances						
(Unsecured, Considered Good unless otherwise stated)						
Advances recoverable in cash or in kind or for value to be received		38,09.29				58.04.95
Security Deposits		62.69				61.62
Balance on Current Account with Excise Authorities		7,50.84				2,86.91
Income Tax, Wealth Tax and Interest (Net of provisions including tax on dividend		13,32.69	59,55.51		9,56.20	71,09.68
Total		**458,91.66**				**297,45.87**

Notes :

1. Inventories are at lower of Cost or Net Realisable Value and as certified by the Management.
2. Sundry Debtors include Rs. Nil (2000 – Rs. 97.29 lacs) due from Swaraj Mazda Ltd., — a Company under the same Management. Maximum balance during the year – Rs. (2000 – Rs. 1,67.00 lacs).
3. Loans and Advances include Rs. 24,95.65 lacs (2000-Rs. 26,00.13 lacs) top Swaraj Mazda Ltd., — a Company under the same Management. Maximum balance during the year – Rs. 29,45.65 lacs (2000 - Rs. 26,00,13 lacs).

PUNJAB TRACTORS LIMITED

SCHEDULE H *(Rs. in lacs)*

		2001		*2000*
CURRENT LIABILITIES AND PROVISIONS				
Current Liabilities				
Sundry Creditors				
- Due to Small Scale Industrial Undertakings*	18,34.69		3.72.80	
- Others	95,21.87	113,56.56	23,41.80	27.14.60
Advance Payments & Deposits Received		5,69.13		6,37.61
Other Liabilities		6,35.09		13,29.21
Interest Accrued but not due		1,26.87		85.19
DividenosQ Pending Encasement		56.02		2,43.72
IIIrd Interim Dividend Pending Payment		—		13,16.37
Provisions				
Final Dividend		45,56.68		13.16.37
Others		9,31.05		8,19.40
Total		**182,31.40**		**84,62.47**

Note :

* The amount due to Small Scale Industrial Undertakings is compiled on the basis of information available wit the Company.

SCHEDULE I *(Rs. in lacs)*

		2001		2000
RAW MATERIALS, FINISHED & SEMI-FINISHED PRODUCTS				
Raw Materials Components				
Opening Stock	76,50.25		79,44.49	
Add : Purchases	636,45.56	712,95.81	695,89.05	775,33.54
Less : Closing Stock	65,74.71		76,50.25	
Capital & Other Jobs	3,69.36	69,44.07	5,29.38	81,79.63
Consumption		643,51.74		693,53.91
(Accretion)/Decretion to Stock of Finished Products & Work-in-Progress				
Opening Stock	20,72.89		23,62.79	
Less : Closing Stock	12,97.76	7,75.13	20,72.89	2,89.90
Total		**651,26.87**		**696,43.81**

PUNJAB TRACTORS LIMITED

SCHEDULE J *(Rs. in lacs)*

	2001	2000
OPERATING, ADMINISTRATIVE & OTHER EXPENSES		
Salaries, Wages & Bonus	47,02.16	44,09.49
Contribution to Provident & Other Funds	3,33.74	3,11.35
Gratuity & Superannuation	2,64.92	2,03.18
Workmen & Staff Welfare	4,76.24	4,18.70
Consumption of Stores & Spares	15,16.96	18,72.27
Repairs to Machinery	1,99.82	2,06.19
Repairs to Building	1,31.43	1,87.09
Other Repairs	49.12	58.64
Power & Fuel Charges	10,29.95	10,03.45
Rent	21.27	27.07
Rates and taxes	38.84	5.40
Insurance	70.80	64.42
Printing, Stationery, Postage & Telephone	2,38.04	2,91.02
Traveling & Conveyance (includes Rs. 1.29 lacs for Directors, 2000-Rs. 1.59 lacs)	4,51.78	4,44.42
Market Promotion	7,43.33	6,41.10
Provision for Doubtful Debts	—	98.91

Provision for Diminution in value of Investments	3,11.46	—
Commission & Rebates	1,11.39	88.22
Packaging, Freight & Forwarding	18,11.35	16,86.60
Export Promotion & Marketing	51.22	65.86
Research, Design & Development	4,12.99	3,19.76
Miscellaneous Expenses	78.14	1,05.56
Audit Fees and Expenses	2.39	1.61
Director's Sitting Fees	0.31	0.30
	130,47.65	**125,10.61**
Less : Transfer to Capital & other Jobs	0.33	2.16
	130,47.32	**125,08.45**

PUNJAB TRACTORS LIMITED

SCHEDULE K *(Rs. in lacs)*

		2001		*2000*
FINANCE CHARGES				
Interest on Other	4,11.72		2,72.27	
Bank Charges	1,19.72	5,31.44	96.09	3,68.36
Less :				
Interest Received on				
- Bank Deposits	6.14		1,79.86	
- Others*	5,32.48	5,38.62	4,85.50	6,65.36
		(7.18)		**(2,97.00)**

* **Note** : *Includes Rs. 30.01 lacs (2000-Rs. Nil) being interest on income tax refund pertaining to earlier years. Determined and received this year.*

PUNJAB TRACTORS LIMITED

CASH FLOW STATEMENT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 2001

(Rs. in lacs)

		2001		2000
A. CASH FROM OPERATING ACTIVITIES				
Net Profit Before Tax and Extraordinary Items		168,01.83		190,40.90
Adjustments for :				
Depreciation	16,91.90		15,98.17	
Profit on sale of assets	(3.28)		(31.92)	
Diminution in value of investments	3,11.46		—	
Profit on sale of investments	—		(65.85)	
Dividend income	(2,03.33)		(8,13.68)	
Interest income	(5,38.62)		(6,65.62)	
Interest paid	5,31.44	17,89.57	3,68.36	3,89.49
Operating Profit Before Working Capital Changes		**185,91.40**		**194,30.39**
Adjustments for :				
Trade and other receivables	(194,70.08)		(76,30.95)	
Inventories	22,80.63		3,95.94	
Trade payable	78,44.99	(93,44.46)	3,22.98	(69,12.03)
Cash Generated from Operations		**92,46.94**		**125,18.36**
interest received	5,38.62		6,65.36	
Interest paid	(5,31.44)			
Direct taxes paid	(59,56.86)	(59,49.68)	(64,88.13)	(61,91.13)
Cash Flow Before Extraordinary Items		**32,97.26**		**63,27.23**
Extraordinary items		—		—
Net Cash from Operating Activities		**32,97.26**		**63,27.23**
B. CASH FLOW FROM INVESTING ACTIVITIES				
Purchase of fixed assets	(19,41.72)		(24,02.56)	
Sale of fixed assets	48.87		34.90	

Sale of investments	—		39,34.30	
Interest received	—		—	0.26
Dividend received	2,03.33		8,13.68	
Net Cash Used In Investing Activities		**(16,89.52)**		**23,80.58**
C. CASH FLOW FROM FINANCING ACTIVITIES				
ProceeosQ from short/long term borrowings		'39.26		4,96.55
Repayment of short/long term borrowings	—		—	
Dividend & Dividend tax-paid		30,67.15		85,42.25
Net Cash Used in Financing Activities		**(30,27.89)**		**(80,45.70)**
Net Increase in Cash and Cash Equivalents		**(14,20.15)**		**6,62.11**
Cash and Cash Equivalents as at April 1		**18,39.79**		**11,77.68**
Cash and Cash Equivalents as at March 31		**4,19.64**		**18,39.79**

Note :

1. The above statement has been prepared under indirect method, except in case of Dividends, Purchase of Investments and Taxes, which have been considered on the basis of actual movement of cash, with corresponding adjustments in assets and liabilities.
2. Cash and Cash Equivalents represent Cash and Bank Balances only.
3. Additions to Fixed Assets are stated inclusive of movements of Capital Work-in-Progress/ Advances, Construction Stores-in-Hand and Capital Spares between beginning and end of the year and treated as part of investing activities.

2.1 साधन

निर्णय करने (निर्धारित करने) वालो के लिए वित्तीय विवरणों की संख्याएं अधिक उपयोगी नहीं होती हैं। परन्तु जब इन संख्याओं/अंको को लम्बे समय तक या किन्ही अन्य संख्याओं के संबंध में विश्लेषित किया जाता है तब किसी व्यावसायिक उपक्रम के सुदृढ़ता एवं कमियों के संबंध में महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। वित्तीय विश्लेषण के साधन इस सन्दर्भ में सहायक होते हैं। इन साधनों में तुलनात्मक विवरण, समरूप विवरण, अनुपात विश्लेषण, कोष प्रवाह विवरण, रोकड़ प्रवाह विवरण तथा आर्थिक दशा में

परिवर्तन का विवरण। इस अध्याय में (अ) तुलनात्मक विवरण, (ब) समरूप विवरण तथा (स) अनुपात विश्लेषण पर चर्चा की गई है।

तुलनात्मक विवरण दो समयावधियों पर वित्तीय संख्याओं की तुलना करता है तथा वित्तीय स्थिति और परिचालन परिणामों में परिवर्तनों के संदर्भ में अर्थपूर्ण निष्कर्ष निकालने में सहायता करता है। समरूप विवरण एक वित्तीय विवरण के सभी मदों को सामान्य आधार की प्रतिशतत् के रूप में दर्शाता है तद्पश्चात् विशलेषक को वित्तीय संख्याओं में परिवर्तनों को दर्शाने की अनुमति प्रदान करता है। अनुपात विश्लेषण में उपक्रम के कार्य कुशलता हेतु निहित सदृढ़ता तथा कमियों की तर्कसंगत मूल्यांकन के लिए वित्तीय आंकड़ों की गणना तथा विश्लेषण सम्मिलित है।

2.1.1 तुलनात्मक विवरण

भारत में, तुलन-पत्र एवं लाभ व हानि खाता समान्यतया गत् वर्ष तथा चालू वर्ष की वित्तीय सूचना दर्शाते हैं। PTL के वार्षिक खाते वर्ष 2000 तथा 2001 के वित्तीय आंकड़े दर्शाते हैं।

तुलनात्मक विवरण, वित्तीय संख्याओं की समय के दो बिंदुओं पर तुलना करते है तथा इस में आए परिवर्तनों को दर्शाते हैं। इन परिवर्तनों को असल राशि में अथवा तुलनात्मक आधार पर, जैसे कि प्रतिशत्ता में, प्रस्तुत किया जा सकता है।

वित्तीय संख्याओं में किसी समयावधि में हुए परिवर्तनों पर ध्यान केंद्रित करने का उद्देश्य वित्तीय स्थिति तथा परिचालन परिणांमों में हुए परिवर्तनों के कारणों पर दृष्टि डालना होता है। इस विश्लेषण को क्षैतिज विश्लेषण भी कहा जाता है।

दो वर्षों के तुलन-पत्र में दर्शाई गई बिक्री की राशि क्रमश: 1,000 रु. व 1,500 रु. पर विचार करें। राशि में परिवर्तन 50 % (500 रु.) है। इसका अर्थ है कि कंपनी में एक वर्ष के दौरान बिक्री में वृद्धि 50 % है।

एक तुलनात्मक विवरण तैयार करने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं का पालन करना होता है : बिंदुओं को अच्छी तरह समझने के लिए प्रदर्श 2.2 को देखें।

बिंदु 1 : दो समय बिन्दुओं/समय अवधियों पर असल आंकड़ों (यह प्रदर्श 2.2 के स्तंभ 2 व 3 में दर्शाए गए हैं।)

बिंदु 2 : असल आकड़ों में परिवर्तन की गणना करें अर्थात् समयावधि के दौरान वृद्धि हुई है अथवा कमी आई है। (स्तंभ 4 यह परिवर्तन दर्शा रहा है।)

बिंदु 3 : असल आंकड़ो को प्रतिशत में परिवर्तित करें। स्तंभ 5 प्रतिशत वृद्धि या कमी को दर्शाता है।

इस अवधारणा को दिखाने के लिए किसी कंपनी के लाभ व हानि खाता प्रदर्श 2.2 में प्रस्तुत किया गया है।

प्रदेश 2.2

वर्षांत 31, मार्च 2000 व 2001 को आर व कंपनी की तुलनात्मक लाभ व हानि खाता

विवरण *स्तम्भ 1*	*2000* *स्तम्भ 2* रु.	*2001* *स्तम्भ 3* रु.	*वृद्धि (+) या कमी/ह्रास (राशि)* *स्तम्भ 4* रु.	*वृद्धि (+) या कमी/ह्रास (प्रतिशतता)* *स्तम्भ 5* %
विक्रय आगम	5,000	7,500	2,500	50
घटाया : व्यय	3,950	5,530	1,580	40
कर से पूर्व लाभ	1,050	1,970	920	88
घटाया : कर (50%)	525	985	460	88
कर उपरान्त लाभ	525	985	460	88

प्रर्दश 2.2 प्रदर्शित करता है कि विक्रय आगम में समयावधि के दौरान 50% की वृद्धि हुई है। परन्तु/यद्पि कंपनी के खर्च में 40% की वृद्धि हो गई है। इसका अर्थ हुआ की खर्चों पर अच्छा नियंत्रण रखा गया है और इसके परिणामस्वरूप कर-पूर्व लाभ में 80% की वृद्धि हुई है। कुल मिलाकर उपक्रम के परिचालन परिणाम संबंधी कार्यकुशलता सराहनीय रही है।

तुलनात्मक विवरण हमें किसी उपक्रम की वित्तीय स्थिति तथा परिचालन दक्षता जो कि किसी समयावधि में हुए परिवर्तन की दशा पर निर्भर होती है पर टिप्पणी देने मे सहायता देता है। लेखांकन आंकड़ों में हुए परिवर्तन, लेखांकन नीतियों में हुए परिवर्तन के कारण हो सकते है। अत: यह विश्लेषण इस बात पर जोर देता है कि लेखांकन नीतियों तथा नीतियों के प्रयोग के संबंध में निरंतरता रखी जाए।

अब हम PTL का एक तुलनात्मक विवरण बनाने का प्रयास करेंगे जिसका फिर विश्लेषण किया जाएगा तथा स्पष्टीकरण किया जाएगा।

2.1.1.1 तुलनात्मक लाभ व हानि खाता

प्रदर्श 2.3 वर्षांत मार्च 31, 2000-2001 का तुलनात्मक लाभ व हानि खाता प्रदर्शित करता है। पंजाब ट्रेक्टर लिमिटेड का वर्षांत मार्च 31, 2000-2001 का तुलनात्मक लाभ एवं हानि खाता।

प्रदेश 2.3

Comparative Profit and Loss Accounts of Punjab Tractors Limited for the year ended March 31, 2000 and 2001

(Figure in lacs)

Particulars Col. 1	2000 Col.2	2001 Col.3	Increase (+) or Decrease (-) (Amount) Col.4	Increase (+) or Decrease (-) (Percentage) Col.5
Income	Rs.	Rs.	Rs.	%
Revenue from Operations	1,17,020.86	1,11,946.37	(–)5,074.49	(–) 4.33
Dividend Income	813.68	203.33	(–) 610.35	(–) 75.01
	1,17,834.54	**1,12,149.70**	**(–) 5,684.84**	**(–)4.82**
Expenditure				
Raw Material, Finished and Semi-Finished Products	69,643.81	65,126.87	(–) 4,516.94	(–) 6.48
Excise Duty	15,336.46	15,499.10	(+) 162.64	(+) 1.06
Operating and Administrative Expenses	12,508.45	13,047.32	(+) 538.87	(+) 4.31
Finance Charges (Net)	(297.00)	(7.18)	(–)289.82	(–)97.58
Depreciation	1,598.17	1,691.90	(+) 93.73	(+) 5.68
	98,789.89	**95,358.01**	**(–) 3,431.88**	**(–) 3.47**
Profit for the year	19,044.65	16,791.69	(–) 2,252.96	(–) 11.83
Prior Period Adjustment	(–) 3.75	(+) 10.14	(+) 13.89	(+) 370
Profit Before Tax	**19,040.90**	**16,801.83**	**(–) 2,239.07**	**(–) 11.76**
Provision of Tax	5,715.00	5,550.00	(–) 165.00	(–) 2.89
Profit After Tax	**13,325.90**	**11,251.83**	**(–) 2,074.07**	**(–) 15.56**

प्रदर्श 2.3, PTL का वर्षांत मार्च 31, 2000 - 2001 का तुलनात्मक लाभ व हानि खाता प्रदर्शित करता है।

विश्लेषण तथा व्याख्या

PTL के तुलनात्मक लाभ-हानि लेखों पर एक नजर डालने से कुछ महत्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ प्राप्त होती हैं (देखें प्रदेश 2.3)। इससे ज्ञात होता है कि संचालन से प्राप्त विक्रय आमद में 4.33 % की कमी (गिरावट) आई है जो कि 5074.49 रु. की एक बड़ी धनराशि है। और इसके परिणामस्वरूप लाभ में गिरावट आई है बावजूद इसके कि माल, तैयार तथा अर्ध तैयार माल पर खर्च 6.48 % कम हो गया है। दूसरे कारक जो लाभ में गिरावट के लिए सहयोगी रहे हैं - लाभांश आमदनी में तीव्र कमी जो कि (–) 75.01%

(रु. 610.35 लाख), उत्पादन शुल्क में 1.06 % की वृद्धि (रु. 162.64 लाख) तथा वित्तीय व्यय में भारी कटौती – 97.58 % तक।

वित्तीय व्यय (शुद्ध) इसमें एक सकारात्मक राशि/आंकड़ों के रूप में उपस्थित है। इसका अर्थ है कि आमदनी में कटौती। संचालन तथा प्रशासनिक खर्च में 4.31% की वृद्धि हुई है जिसका अर्थ हुआ कि इन खर्चों पर कठोर नियंत्रण नहीं रखा गया तथा ह्रास खर्च 5.68 % बढ़ गया है। इन सब का संयुक्त परिणाम कर उपरांत लाभ में 5.68% की कमी है।

प्रर्दश 2.4

मार्च 31, 2000 - 2001 को PTL का तुलनात्मक तुलन-पत्र प्रदर्श 2.4 में दर्शाया गया है।

Comparative Balance Sheets of Punjab Tractors Limited
As at March 31, 2000 and 2001

(Figure in lacs)

Particulars *Col. 1*	*2000* *Col.2* *Rs.*	*2001* *Col.3* *Rs.*	*Increase (+) or Decrease (-) (Amount)* *Col.4* *Rs.*	*Increase (+) or Decrease (-) (Percentage)* *Col.5* *%*
Sources of Funds				
Shareholder's Fund				
Capital	2,025.19	6,075.57	(+) 4,050.38	(+) 200
Reserves and Surplus	35,176.32	37,356.31	(+) 2,179.99	(+) 6.19
Loan Funds				
Secured Loans	–	4.58	(+) 4.58	*
Unsecured Loans	1,275.32	1,310.00	(+) 34.68	(+) 2.72
Current Liabilities & Prov.	8,462.47	18,231.40	(+)9,768.93	(+)115.44
Capital and Liabilities	**46,939.30**	**62,977.86**	**(+) 16,038.56**	**(+) 34.17**
Applications of Funds				
Fixed Assets				
Gross Block	24,413.58	26,214.84	(+) 1,801.26	(+) 7.38
Less : Depreciation	(–)9,054.04	(-) 10,726.89	(+) 1,672.85	(+) 18.48
Net Block	15,359.54	15,487.95	(+) 128.41	(+) 0.84
Capital Work-in-Progress/ Advances and Construction Stores in Hand	664.59	758.26	(+) 93.67	(+) 14.09
Capital Spares	84.38	66.53	(-) 17.85	(-) 21.15

Fixed Asests Block	16,108.51	16,312.74	(+) 204.23	(+) 1.27
Investments	1,084.92	773.46	(–) 311.46	(–) 28.71
Current Assets, Loans and Advances				
Inventories	11,968.50	9,687.87	(–) 2,280.63	(–) 19.05
Sundry Debtors	8,827.90	29,828.64	(+) 21,000.74	(+)237.89
Cash and Bank Balance	1,839.79	419.64	(–) 1,420.15	(–) 77.19
Loans and Advances	7,109.68	5,955.51	(–) 1,154.17	(–) 16.23
Current Assets Block	29,745.87	45,891.66	(+) 16,145.79	(+) 54.28
Total Assets	**46,939.30**	**62,977.86**	**(+) 16,038.56**	**(+) 34.17**

* Since it is a number which figures in one year only, i.e., in 2001, it cannot be compared

विश्लेषण तथा व्याख्या

2001 की दर दर्ज करते हुए पूँजी 4050.38 रु. बढ़ गई है। जिसका अर्थ है कि PTL ने अंश पूँजी वर्ष भर में ही इकट्ठी कर ली है। बल्कि सरंक्षित तथा 6.19 % तक बढ़ गए है। ऋण अल्प मात्रा में 2.72% बढ़े है। परंतु चालू देनदारियों तथा प्रावधानों पर एक अच्छी भारी रकम रु. 9768.93 लाख (115.44 %) बढ़ गए हैं। वार्षिक लेखे कि अनुसूची-II जो कि चालू देनदारियों तथा प्रावधानों की सूची देती है पर बारिकी से नज़र डालने पर यह स्पष्ट हो ज़ाता है कि चालू देनदारियों में भारी वृद्धि हुई है। इसका अर्थ हुआ कि PTL के अल्पकालीन दायित्वों में अच्छी खासी वृद्धि हुई है। उसके समय पर भुगतान के लिए प्रबंध किए जाने का ध्यान रखा जाना आवश्यक है।

स्थायी परिसंपत्तियां (सकल खंड) 1801.26 लाख (7,38%) बढ़ गयी हैं। हालांकि, शुद्ध खंड में ह्रास घटाने के पश्चात् केवल 0.84 % ही वृद्धि हुई है। ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि ह्रास उस वर्ष में 18.48% बढ़ गया है उस वर्ष के दौरान में कुल शुद्ध परिसंपत्तियों में 204.23 लाख (1.27%) वृद्धि हुई है। निवेश 28.71% कम हो गया है।

चालू परिसंपत्ति, ऋण तथा अग्रिम 16145.79 लाख रु. बढ़ गए है जो कि वर्ष 2000 की रकम 29745.87 रु. लाख से 54 % अधिक है। तथा सर्वाधिक वृद्धि (237.89 %) विविध देनदारों में हुई है। यह इस बात को परिलक्षित करता है कि PTL को भारी प्रतिस्पर्धा दबाब को ध्यान में रखते हुए अपनी साख नीति को नर्म रखना चाहिए था। जब हम प्रदर्श 2.3 को देखते है तो यह बात और अधिक स्पष्ट हो जाती है तथा पता चलता है कि संचालन से धनराशि की प्राप्ति निरपेक्ष रूप से 5074.49 लाख रु. हो गई है। रहतिया में 19.05 % की गिरावट एक अच्छा लक्षण है।

2.2 समरूप विवरण

समरूप विवरण एक वित्तीय विवरण है जो उसकी समस्त मदों को प्रतिशत्ता के रूप में दर्शाता है। उदाहरण के लिए परिसंपत्तियों को तुलन-पत्र के लिए आकार के पैमाने के रूप में चुना जा सकता है तथा बिक्री

को लाभ व हानि खाते के लिए आकार के पैमाने के रूप में चुना जा सकता है। उदाहरण के लिए, लाभ व हानि खाते के मामले में प्रत्येक मद बिक्री की प्रतिशत में व्यक्त की जाती है। इस प्रकार, समरूप लाभ व हानि खाता वितरण, बिक्री तथा व्ययों के मध्य संबंध को दर्शाता है। इन प्रतिशतों की जांच करके हम भी किसी समयावधि में हुए व्ययों के व्यवहार का निष्कर्ष निकाल सकते हैं।

यह विश्लेषण व्यावसायिक उपक्रमों — जो कि आकार में भिन्न होते हैं, की तुलना में बहुत अधिक उपयोगी होता है क्योंकि यह वित्तीय विवरणों के ढाँचे में गहराई तक दृष्टि डालता है। एक उपक्रम समरूप विवरण का विश्लेषण समयावधि में हुए महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों को अच्छी तरह समझने से मदद करता है। यह विश्लेषण 'उर्ध्वाधर विश्लेषण' के रूप में भी जाना जाता है।

एक सामान्य आकार वाला विवरण तैयार करने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं/बातों का पालन करना चाहिए। इस प्रक्रिया को समझने के लिए प्रदर्श 2.5 को देखे:

बिंदु 1. किन्हीं दो समय बिंदुओं पर निरपेक्ष आंकड़ो को रुपयों में दर्ज करें।

बिंदु 2. एक सामान्य आधार चुनें। इस मामले से बिक्री-धन को सामान्य आधार के रूप में लिया गया है। यह आधार 100% के तुल्य लिया गया है।

बिंदु 3. स्तंभ 2 व 3 के सभी मदों को बिक्री धन (Sales Revenue) के संबंध में प्रतिशत में बदलें। स्तंभ 3 तथा 5 इन प्रतिशतों को प्रदर्शित करते है।

इसे स्पष्ट करने के लिए आइए प्रदर्श 2.5 पर एक दृष्टि डालें।

प्रदर्श 2.5

विवरण स्तंभ 1	*2000 स्तंभ 2*	*स्तंभ 3*	*2001 स्तंभ 4*	*स्तंभ 5*	*स्तंभ 6*
विक्रय आमद	5,000	100	7,500	100%	-
घटाया : व्यय	3,950	79.0	5,530	73.73	अच्छा
कर पूर्व लाभ	1,050	21.0	1,970	26.27	अच्छा
घटाया : कर	525	10.5	985	13.14	खराब
कर उपरांत लाभ	525	10.5	985	13.13	अच्छा

प्रदर्श 2.5 से ज्ञात होता है कि कंपनी का कर उपरांत लाभ में वृद्धि हुई है तथा इसका आधारभूत कारण व्ययों पर अनुकूल नियंत्रण है जिसके परिणामस्वरूप व्ययों में गिरावट आई है, जो वर्ष 2000 में 79% से वर्ष 2001 में 73.73% तक गिरे हैं। अब हम PTL के लिए समरूप विवरण तैयार करेंगे साथ ही उनका विश्लेषण भी करेंगे।

2.2.1 समरूप लाभ एवं हानि खाता

प्रदर्श 2.6 में PTL का 31 मार्च 2000 एवं 2001 को समाप्त हो रहे वर्ष का समरूप विवरण दर्शाया गया है।

प्रदर्श 2.6

Common-size statement of Punjab Tractors Ltd.
for the year ended March 31, 2002-2001

(Figure in lacs)

	2000		2001	
Particulars *Col.1*	*Amount* *Col.2* *Rs.*	*Percentage of Sales* *Col.3* *Rs.*	*Amount* *Col.4* *Rs.*	*Percentage of Sales* *Col.5* *%*
Income				
Revenue from Operations	1,17,020.8	(+) 100.00	1,11,946.37	100.00
Dividend Income	6 813.68	(+) 0.69	203.33	0.18
	1,17,834.54	**(+) 100.69**	**1,12,149.70**	**(+) 100.18**
Expenditure				
Raw Material, Finished and Semi-Finished Products	69,643.81	(–) 59.50	65,126.87	(–) 58.18
Excise Duty	15,336.46	(–) 13.10	15,499.10	(–) 13.80
Operating and Administrative Expenses	12,508.45	(–) 10.69	13,047.32	(–) 11.65
Finance Charges (Net)	(297.00)	(+) 0.25	(7.18)	(+) 0.006
Depreciation	1,598.17	(–) 1.36	1,691.90	(–) 1.51
	98,789.89	**(–) 84.4**	**95,358.01**	**(–) 85.13**
Profit for the year	19,044.65	(+) 16.29	16,791.69	(+) 15.00
Prior Period Adjustment	(–) 3.75	(–) 0.003	(+) 10.14	(+) 0.009
Profit Before Tax	**19,040.90**	**(+) 16.27**	**16,801.83**	**(+) 15.00**
Provision of Tax	5,715.00	(–) 4.88	5,550.00	(–) 4.96
Profit After Tax	**13,325.90**	**(+) 11.38**	**11,251.83**	**(+) 10.05**

विश्लेषण एवं व्याख्या

PTL के सामान्य आकार वाली लाभ-हानि विवरण से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलता है :

वर्ष 2001 में लभांश आय घट गई है। इसकी बिक्री का हिस्सा वर्ष 2000 में 0.69% था जो कि वर्ष 2001 में 0.18% है। वर्ष 2001 में कच्चे माल, तैयार तथा अर्ध तैयार उत्पादों पर खर्च घट गया है। परंतु उत्पादक शुल्क की दर में वृद्धि के कारण उत्पादन शुल्क की राशि में बढ़ोतरी हो गई है। वर्ष 2001 में संचालन तथा प्रशासनिक खर्च बढ़ गए हैं जो कि बिक्री का 11.65 % है। वर्ष 2000 में 10.69 % था तथा ह्रास के लिए शुल्क भी बढ़ गया है।

अंततः कर उपरांत लाभ घट गया है जो कि वर्ष 2000 में बिक्री का 11.38 % था जबकि यह वर्ष 2000 में 10.05 % है। इस प्रकार कोई विश्लेषक कर पश्चात् के लाभ में गिरावट/कमी के कारण को सुनिश्चित कर सकता है तथा सुधार के लिए सुझाव दे सकता है।

2.2.2 समरूप तुलन-पत्र

PTL का 31.03.2000 और 2001 का समरूप तुलन-पत्र प्रदर्श 2.7 में दर्शाया गया है।

प्रदर्श 2.7

Common-size Balance Sheets of Punjab Tractors Limited
As at March 31, 2000 and 2001

(Figure in lacs)

Particulars	*2000*	*2001*	*Increase (+)*	*Increase (+)*
			or Decrease (-) (Amount)	*or Decrease (-) (Percentage)*
Col.1	*Col.2 Rs.*	*Col.3 Rs.*	*Col.4 Rs.*	*Col.5 %*
Sources of Funds				
Shareholder's Fund				
Capital	2,025.19	6,075.57	(+) 4,050.38	(+) 200
Reserves and Surplus	35,176.32	37,356.31	(+) 2,179.99	(+) 6.19
Loan Funds				
Secured Loans	-	4.58	(+) 4.58	*
Unsecured Loans	1,275.32	1,310.00	(+) 34.68	(+) 2.72
Current Liabilities & Prov.	8,462.47	18,231.40	(+)9,768.93	(+)115.44
Capital and Liabilities	**46,939.30**	**62,977.86**	**16,038.56**	**(+) 34.17**
Applications of Funds				
Fixed Asets				
Gross Block	24,413.58	26,214.84	(+) 1,801.26	(+) 7.38
Less : Depreciation	(-)9,054.04	(-) 10,726.89	(+) 1,672.85	(+) 18.48
Net Block	15,359.54	15,487.95	(+) 128.41	(+) 0.84
Capital Work-in-Progress/ Advances and Construction Stores in Hand	664.59	758.26	(+) 93.67	(+) 14.09
Capital Spares	84.38	66.53	(-) 17.85	(-) 21.15
Fixed Asets Block	16,108.51	16,312.74	(+) 204.23	(+) 1.27
Investments	1,084.92	773.46	(-) 311.46	(-) 28.71
Current Assets, Loans and Advances				
Inventories	11,968.50	9,687.87	(-) 2,280.63	(-) 19.05
Sundry Debtors	8,827.90	29,828.64	(+)21,000.74	(+)237.89
Cash and Bank Balance	1,839.79	419.64	(-) 1,420.15	(-) 77.19
Loans and Advances	7,109.68	5,955.51	(-) 1,154.17	(-) 16.23
Current Asets Block	29,745.87	45,891.66	(+)16,145.79	(+) 54.28
Total Assets	**46,939.30**	**62,977.86**	**(+)16,038.56**	**(+) 34.17**

विश्लेषण तथा व्याख्या

PTL के दो वर्ष के दौरान धन स्रोतों में भारी परिवर्तन हुए हैं। पूँजी कुल देनदारियों का 9.65 % जो कि वर्ष 2000 में 4.31% था। दूसरा भारी परिवर्तन अधिशेष की प्रतिशत में तीव्र गिरावट है जो वर्ष 2001 में 59.32% है और वर्ष 2000 में 74.94 % था तथा कंपनी के लिए इसके दूरगामी प्रभाव गम्भीर हो सकते हैं। चालू देनदारियाँ तथा प्रावधानों के संदर्भ में कुल पूँजी तथा देयताएं 10 % बढ़ गई है। इसका अर्थ है कि कंपनी पूँजी/वित्त के चालू स्रोतों पर अधिक निर्भर कर रही है। यह विश्लेषण परिलक्षित करता है कि धन के स्रोतो का ढाँचा इस अवधि में विशेषतौर पर बदल गया है।

धन के प्रयोग पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि स्थायी परिसंपत्तियों के हिस्से में भारी कमी आई है जो कि वर्ष 2000 के लिए 52.01% है। यह प्रतिशत 2001 में गिरकर 41.62% हो गया है। यह कंपनी के हित में दीर्घकाल के लिए अच्छा नहीं है क्योंकि स्थायी परिसंपत्तियाँ कंपनी के भविष्यकालीन आमदों का स्रोत है, चूंकि ये परिसंपत्तियां फर्म की परिचालन क्षमता को दर्शाती है। स्थायी परिसंपत्तियों पर ह्रास के प्रभार का प्रतिशत गिर गया है। स्थायी परिसंपत्ति खंड घटकर 34.32% से कुल संपत्ति का 25.9% हो गया है। यह एक अच्छा संकेत नही है। चालू परिसम्पत्ति का खण्ड विशिष्ट रूप से बढ़ गया है। इसका कुल परिसंपत्ति का प्रतिशत हिस्सा 63.32% से बढ़कर 72.87% हो गया है। इसके अतिरिक्त, विविध देनदार में भारी वृद्धि हुई हैं। वर्ष 2000 में उनका कुल परिसंपत्ति में हिस्सा 18.80% था जो कि वर्ष 2001 में 47.36% हो गया है। इसका अर्थ हुआ कि चालू परिसंपत्ति इस अवधि में बढ़ गई है। परंतु विविध देनदारों में भारी वृद्धि हुई है जो कि उदार साख नीति का परिणाम हो सकता है, यह एक चिंता का विषय है। दूसरी ओर PTL अपने रहतिये का अच्छा प्रबंधन कर सकता है क्योंकि इसका प्रतिशत हिस्सा 2001 में घटा है।

2.1.2.3 प्रवृति विश्लेषण

तुलनात्मक और समरूप विवरण का उपयोग करते हुए PTL के वित्तीय विश्लेषण से उपक्रम संचालन दक्षता तथा वित्तीय स्थिति के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। किसी विश्लेषक के लिए कोई निष्कर्ष निकालने में दोनों ही प्रतिशत विश्लेषण का प्रयोग मददगार है। वित्तीय मदों के रुझान को समझने के लिए इस प्रतिशत की आगामी वर्षों के लिए गणना की जा सकती है तथा यह विश्लेषण 'रुझान विश्लेषण' के रूप में भी जाना जाता है। उदाहरण के लिए यदि 1997 से 2001 तक के 5 वर्षों का रुझान विश्लेषण करना चाहते हैं तो हम 1997 को आधार वर्ष मानेंगे। इस लिए 1997 की प्रत्येक मद का आंकड़ा 100 रहेगा। तब हम आगामी वर्ष की वित्तीय विवरण की मदों को वर्ष 1997 के आधार मूल्य में परिवर्तित करेंगे।

प्रदर्श 2.8 दो वित्तीय विवरण मदों को दिखाता है तथा कोई भी प्रत्येक मद का रुझान देख सकता है। उदाहरण के लिए बिक्री 5 वर्षों में 130% बढ़ गई है तथा बिक्री का रुझान एक बढ़ता हुआ रुझान है। स्थायी परिसंपत्ति भी एक वृद्धि करता हुआ रुझान प्रदर्शित कर रही हैं। परंतु स्थायी परिसंपत्तियों में

वृद्धि, बिक्री में वृद्धि की तुलना में कम है तथा यह दिखाती है कि स्थायी परिसंपत्तियों का समुचित उपयोग हुआ है।

किसी समयावधि में प्रतिशतताओं को देखते हुए हमने रुझान पर विचार दिए है। रुझान निर्धारण के लिए सांख्यकीय तकनीक का प्रयोग भी किया जा सकता है।

प्रदर्श 2.8

Trend Analysis

	1997 *Rs.*	*1998* *Rs.*	*1999* *Rs.*	*2000* *Rs.*	*2001* *Rs.*
Sales	2,5135	27,649	29,659	31,4188	3,2676
Fixed Assets	3,0618	33,067	35,211	37,966	3,8273
Sales	100%	$\frac{27,649}{25,135}\times 100=110\%$	$\frac{29,659}{25,135}\times 100=118\%$	125%	130%
Fixed Assets		$\frac{33,067}{30,618}\times 100=108\%$	$\frac{35,211}{30,618}\times 100=115\%$		

निम्नलिखित वर्ष 2001-02 से संबंधित विप्रो लि. के अंश मूल्यों के शेयर बाजार आंकड़े हैं। यह ग्राफ, विप्रो अंश मूल्य की प्रवृत्ति को दर्शा रहा है।

Stock Market Data

Month	*Price in NSE during each month*		*S&P CNX Nifty Index during each month*		*Wipro Price Movement %*		*Nifty Index movement %*	
	High Rs.	Low Rs.	High Rs.	Low Rs.	High	Low	High	Low
April, 01	1,588	759	1,172	1,000				
May, 01	1,868	1,451	1,226	1,096	18	91	5	10
June, 01	1,774	1,221	1,176	1,060	-5	-16	-4	-3
July, 01	1,459	1,367	1,127	1,047	-18	12	-4	-1
Aug., 01	1,565	1,362	1,084	1,052	7	0	-4	0
Sept., 01	1,525	802	1,059	849	-3	-41	-2	-19
Oct., 01	1,199	812	1,000	884	-21	1	-6	4
Nov., 01	1,564	1,010	1,098	974	30	24	10	10
Dec., 01	1,974	1,421	1,133	1,010	26	41	3	4
Jan., 02	1,875	1,461	1,122	1,052	-5	3	-1	4
Feb., 02	1,785	1,562	1,206	1,069	-5	7	8	2
Mar., 02	1,894	1,550	1,201	1,118	6	-1	0	5

2.3 अनुपात विश्लेषण

वित्तीय विश्लेषण का अनुपात विश्लेषण एक बहु प्रचलित साधन है। ऐसा इसलिए है कि लेखांकन आंकड़े स्वयं किसी प्रक्रिया का स्वयं व्याख्या नहीं करते है। तीन वित्तीय विवरणों जो कि तुलन-पत्र, लाभ व हानि खाता तथा रोकड़ प्रवाह विवरण हैं, में दर्ज दो संख्याओं के मध्य संबंध स्थापित करके प्रक्रिया का मूल्यांकन किया जा सकता है।

अनुपातिक विश्लेषण आकड़ों के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा अगले अध्याय में की जाएगी।

उदाहरण 1

एच. लिमीटेड का लाभ हानि एवं खाता वर्ष 2000-2001 के लिए इस प्रकार है:

विवरण	*2001* *राशि रु.*	*2000* *राशि रु.*
विक्रय	21,750	24,450
घटाया : विक्रय माल की लागत	(8,000)	(8,760)
सकल लाभ	13,750	15,690
घटाया : प्रशासनिक व्यय	(5,900)	(6,500)
घटाया : विक्रय व्यय	2,950	3,190
कर व ब्याज से पूर्व लाभ	4,900	6,000
घटाया : ब्याज	(1,360)	(1,540)
कर से पूर्व लाभ	3,540	4,460
घटाया : कर का आयोजन	(1,510)	2,130
कर के उपरांत लाभ	2,030	2,330

1. एच. लिमिटेड का तुलनात्मक आय विवरण बनाएँ।
2. कंपनी का समरूप विवरण बनाएँ।
3. जहाँ तक आँकड़े अनुमति के विश्लेषण द्वारा प्राप्त संबंधों पर टिप्पणी दें।

हल

वर्षांत मार्च 31, 2000 व 2001 के लिए एच लिमिटेड का तुलनात्मक लाभ एवं हानि खाता

विवरण	*2000*	*2001*	*वृद्धि (+) कमी (-) राशि रु.*	*वृद्धि (+) कमी (-) प्रतिशत*
विक्रय	21,750	2450	2,700	12.41
घटाया विक्रय माल की लागत	(8,000)	(8,760)	760	9.50
सकल लाभ	13,750	15,690	1,940	14.11
घटाया : प्रशासनिक व्यय	(5,900)	(6500)	600	10.17
विक्रय व्यय	(2,950)	(3,190)	240	8.13
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ	4,900	6,000	1,100	22.45
घटाया : ब्याज	1,360	1,540	180	13.23
कर पूर्व लाभ	3,540	4,460	920	26.00
घटाया : कराधान	1,510	2,130	620	41.6
कर उपरांत लाभ	2,030	2,330	300	14.78

विवेचना

एच लिमिटेड का तुलनात्मक लाभ एवं हानि खाता यह दर्शाता है कि विक्रय में 12.41% की वृद्धि हुई है जबकि ब्याज कर से पूर्व लाभ में 22.45% की वृद्धि हुई है। जबकि विक्रय माल की लागत में केवल 9.50% वृद्धि हुई है। यह इस बात को दर्शाता है कि बिक्री योग्य माल की लागत व्यय में प्रतिशत वृद्धि, प्रशासनिक व्यय में प्रतिशत वृद्धि से अपेक्षाकृत कम है तथा विक्रय व्यय में भी विक्रय आगम की अपेक्षा प्रतिशत कमी हुई है। (12.41) ब्याज व्यय में (13.23%) वृद्धि हुई है। कर के आयोजन में 41.06% प्रतिशत वृद्धि हुई है। इस सब के बाद में कर के पश्चात् लाभ में 14.78% वृद्धि हुई है।

वर्षांत मार्च 31, 2000 व 2001 के लिए एच लिमिटेड का समरूप लाभ एवं हानि खाता

(आकड़े लाख में)

	2000		*2001*	
विवरण	*राशि रु.*	*विक्रय का*	*राशि रु.*	*विक्रय का*
	प्रतिशत		*प्रतिशत*	
विक्रय	21,750	100	24,450	100
घटाया विक्रय माल की लागत	(8,000)	36.78	(8,760)	35.83
सकल लाभ	13,750	63.22	15,690	64.17
घटाया : प्रशासनिक व्यय	(5900)	27.12	(6500)	26.50
विक्रय व्यय	2,950	13.50	3,190	13.05
कर व ब्याज से पूर्व लाभ	4,900	22.54	6,000	24.54
घटाया : ब्याज	1,360	6.25	1540	6.30
कर से पूर्व लाभ	3,540	16.29	4,460	18.29
घटाया : कराधान	(1510)	6.94	(2130)	8.71
कर उपरांत लाभ	2,030	9.35	2,330	9.53

विवेचना

एच लिमिटेड का समरूप लाभ एवं हानि खाता यह दर्शाता है कि कर पूर्व ब्याज से कंपनी के लाभ में वृद्धि हुई है जिससे कंपनी विक्रय माल की लागत को 36.78% से 35.83% कम कर सकती है। इसी प्रकार से प्रशासनिक एवं विक्रय व्यय भी कम हुए है। यह दर्शाता है कि संचालन व्यय पर नियंत्रण रखा गया है। यद्यपि 2000 की बजाय 2001 में ब्याज व्यय एवं कर के आयोजन में वृद्धि हुई है। अतः कंपनी का प्रबंध प्रशंसनीय है।

उदाहरण2

वर्षांत मार्च 31, 2000 तथा 2001 को एस लिमिटेड का तुलन-पत्र

		2000		2001
	रु.	रु.	रु.	रु.
कोष के स्रोत				
अंशधारियो का कोष				
पूँजी	8,75,000		9,60,000	
संचय एवं अधिशेष	4,20,000		5,40,000	
		12,95,000		**15,00,000**
ऋण कोष				
सुरक्षित	3,50,000		4,00,000	
असुरक्षित	2,37,000		4,42,000	
		5,87,000		8,42,000
योग		**18,82,000**	**23,42,000**	
कोषों के प्रयोग				
स्थायी परिसंपत्तियाँ				
सकल खंड	8,50,000		12,50,000	
घटाया : ह्रास	1,95,000		3,98,500	
शुद्ध खंड		6,55,000		8,51,500
विनियोग		1,61,050		2,75,050
चालू परिसंपत्तियाँ				
रहतिया	7,98,000		8,37,500	
देनदार	3,42,000		5,48,000	
रोकड़ तथा बैंक शेष	1,56,500		3,00,000	
पूर्वदत व्यय	82,000		73,000	
		13,78,500		17,58,500
घटाया : चालू देयताएं		(3,12,550)		(5,43,500)
शुद्ध चालू परिसंपत्तियाँ		10,65,950		12,15,000
योग		**18,82,000**		**23,42,000**

तुलनात्मक तुलन-पत्र बनाइए तथा एस लिमिटेड की तुलनात्मक वित्तीय स्थिति का विवेचना करें।

हल

एस. लिमिटेड का तुलनात्मक तुलन-पत्र

	2000 रु.	2001 रु.	वृद्धि(+) अथवा कमी (–) (राशि) रु.	वृद्धि(+) अथवा कमी (–) (प्रतिशतता) %
कोषों के स्रोत				
अंशधारक कोष				
पूँजी	8,75,000	9,60,000	85,000	9.71
संचय एवं अधिशेष	4,20,000	5,40,000	1,20,000	28.57
	12,95,000	**15,00,000**	**2,05,000**	**15.83**
ऋण कोष				
सुरक्षित	3,50,000	4,00,000	50,000	14.28
असुरक्षित	2,37,000	4,42,000	2,05,000	86.50
	5,87,000	8,42,000	2,55,000	43.44
कुल योग	**18,82,000**	**23,42,000**	**4,60,000**	**24.44**
कोषों का प्रयोग				
स्थायी पूँजी				
सकल खंड	8,50,000	125000	4,00,000	47.06
घटाया : ह्रास	1,95,000	3,98,500	2,03,500	104.36
शुद्ध खंड	6,55,000	8,51,500	1,96,500	30.00
विनियोग	1,61,050	2,75,500	1,14,450	71.06
चालू परिसंपत्तियाँ				
रहतिया	7,98,000	8,37,500	39,500	4.95
देनदार	3,42,000	5,48,000	2,06,000	60.23
हतस्थ व बैंकस्थ रोकड़	1,56,500	3,00,000	1,43,500	91.69
पूर्वदत्त व्यय	82,000	73,000	(–) 9,000	(–) 10.97
कुल योग	13,78,500	17,58,500	3,80,000	27.56
घटाया : चालू देयताएं	3,12,550	5,43,500	2,30,950	73.89
शुद्ध चालू परिसंपत्तियाँ	10,65,950	12,15,000	1,49,050	13.98
योग	**18,82,000**	**23,42,000**	**4,60,000**	**24.44**

विवेचना

एस. लिमिटेड का तुलनात्मक तुलन-पत्र यह दर्शाता है कि अंशधारी कोष में 15.83% की वृद्धि हुई है। यह इसलिए है क्योंकि अंश पूँजी में 9.71% तथा संचय एवं आधिक्य में 28.57 % वृद्धि हुई है। ऋण कोष में भी 43.44 वृद्धि हुई है, असुरक्षित ऋणों में 86.50% की वृद्धि हुई है। इसका अर्थ यह है कि एस. लिमिटेड की समता अंश पूँजी, सुरक्षित ऋण, असुरक्षित ऋण, इन सभी के माध्यम से कोषों का संग्रहण किया है।

तुलनात्मक तुलन-पत्र से हम समझ सकते है कि कोषों का प्रयोग कैसे करते हैं। कोषों को स्थाई परिसंपत्तियाँ में प्रयोग किए क्योंकि इनमें 47.06 % वृद्धि हुई है। निवेश में भी 71.06 % वृद्धि है।

चालू परिसंपत्तियों में विविध देनदार, रोकड़ शेष सभी में 60.23% तथा 91.69% वृद्धि है। चालू दायित्वों में भी 73.89 % वृद्धि है जो की एक वर्ष में भुगतान करता है।

उदाहरण3

जैक लि. तथा जिल लि. का 31 मार्च 2001 को तुलन पत्र

	जैक लि.	जिल लि.
दायित्व		
अंशपूँजी	6,00,000	8,00,000
संचय एवं अधिशेष	3,50,000	4,67,000
ऋण कोष	2,75,000	3,00,000
देय विपत्र	10,000	–
विविध लेनदार	75,000	46,000
प्रस्तावित लाभांश	35,000	90,000
योग	**13,45,000**	**17,03,000**
परिसंपत्तियाँ		
भूमि एवं भवन	4,00,000	5,25,000
विनियोग	5.75,000	6,95,000
रहतिया	76,000	84,000
देनदार	1,92,000	2,37,000
रोकड़ एवं बैंक शेष	47,000	73,000
योग	**13,45,000**	**17,03,000**

समरूप तुलन-पत्र बनाइए तथा दोनों की तुलनात्मक वित्तीय स्थिति का विवेचना कीजिए।

हल

31-03-2001 को जैक लि. तथा जिल लि. का तुलन-पत्र

	जैक लि.	प्रतिशत	जिल लि.	प्रतिशत
	राशि रु.	%	राशि रु.	%
दायित्व				
अंशपूँजी	6,00,000	44.61	8,00,000	46.98
संचय एवं अधिक्य	3,50,000	26.02	467000	27.43
ऋण कोष	2,75,000	20.45	3,00,000	17.61
देय विपत्र	10,000	0.74	-	-
विविध लेनदार	75,000	5.58	46,000	2.70
प्रस्तावित लाभांश	35,000	2.60	9,000	5.28
योग	**13,45,000**	**100**	**17,03,000**	**100**
परिसंपत्तियाँ				
भूमि एवं भवन	4,00,000	29.74	5,25,000	30.83
प्लांट एवं मशीनरी	5,75,000	42.75	6,95,000	40.81
विनियोग	76,000	5.65	84,000	4.93
रहतिया	1,92,000	14.28	2,37,000	13.92
देनदार	47,000	3.49	73,000	4.29
रोकड़ एवं बैंक शेष	55,000	4.09	89,000	5.22
योग	**13,45,0 00**	**100**	**1,70,300**	**100**

विवेचना

जैक लि. तथा जिल लि. के समरूप तुलन-पत्र में कोई विशेष अंतर नहीं है। जैसे कि कुल परिसंपत्तियों में दोनों कंपनियों में अंश पूँजी, संचय एवं आधिक्य भी बराबर हैं। हालांकि जैक लि. की अपेक्षा जिल लि. का ऋण कोष अधिक है। इसी तरह विविध लेनदार भी, यह जैक लि. की कुल दायित्व का 5.58% है और जिल लि. का 2.70% है। दोनों कंपनियों की परिसंपत्तियाँ बराबर है।

विश्लेषण के आधार पर हम इस निर्णय पर पहुंचते है कि दोनों कंपनीयों ने कुल परिसंपत्तीयों एवं दायित्वों में निम्न स्तर तक प्रतिशत में तुलना बनाए रखी है।

सारांश

1. *वार्षिक रिपोर्ट के मुख्य भाग* : वार्षिक रिपोर्ट के अंतर्गत मुख्यत: वित्तीय विवरण (तुलन-पत्र, लाभ एवं हानि खाता और रोकड़ प्रवाह विवरण होते है) इसके अंतर्गत प्रबंधकों की विवेचना होती है जिससे कि आने वाले समय में कंपनी का स्थायीत्व बनाए रखा जा सकता है।
2. *वित्तीय विश्लेषण की विधियाँ* : आमतौर पर वित्तीय विश्लेषण की विधियाँ निम्नलिखित है। तुलनात्मक विवरण, निरपेक्ष विश्लेषण, अनुपात विश्लेषण, कोष प्रवाह विश्लेषण और रोकड़ प्रवाह विश्लेषण आदि।
3. *तुलनात्मक विवरण* : तुलनात्मक विवरण के अंतर्गत वित्तीय विवरण की सभी मदों को चाहे वे एक फर्म की हो या दो फर्म की हों एक निश्चित अवधि में निरपेक्ष और प्रतिशत आंकड़ों में लिखा जाता है।
4. *समरूप विवरण* : समरूप विवरण में वित्तीय विवरण की सभी मदों को एक सामान्य आधार मानकर प्रतिशत में दर्शाया जाता है जैसे विक्रय को लाभ एवं हानि खाते तथा कुल परिसंपत्तियों को तुलन-पत्र का आधार मानकर।
5. *अनुपात विश्लेषण* : अनुपात विश्लेषण वित्तीय विश्लेषण का एक महत्त्वपूर्ण साधन है जिसके आधार पर हम वित्तीय अनुपातों की गणना करते हैं, विवेचना करते है जिससे हमें किसी व्यावसायिक इकाई की सुदृढ़ता और कमजोरी का पता चलता है।

अभ्यास

I *वस्तुनिष्ठ प्रश्न*

क्या निम्नलिखित में जो सत्य और असत्य है लिखें:

1. व्यावसायिक ईकाई के वित्तीय विवरण के अंर्तगत रोकड़ प्रवाह विवरण को शामिल करते है।
2. तुलनात्मक विवरण क्षैतिज या समानांतर विश्लेषण का रूप है।
3. समरूप विवरण और वित्तीय अनुपात लम्वरूप विश्लेषण के दो साधन है।
4. अनुपात विश्लेषण दो वित्तीय विवरणों का संबंध वनाता हैं।
5. अनुपात विश्लेषण किसी व्यावसायिक इकाई के वित्तीय विवरण की विवेचना करने का एक यंत्र है।
6. वित्तीय विश्लेषण का प्रयोग केवल लेनदार करते है।
7. लाभ एवं हानि खाता किसी संस्था की निश्चित समय की संचालन क्षमता को दर्शाता है।
8. वित्तीय विश्लेषण विश्लेषक को निर्णय लेने में सहायता करता है।
9. रोकड़ प्रवाह विवरण, वित्तीय विवरण विश्लेषण का एक साधन है।
10. समरूप विवरण के अंर्तगत प्रत्येक मद को सामान्य आधार के प्रतिशत में दर्शाया जाता है।

II. सही विकल्प चुनिए

1. व्यावसायिक ईकाई के वित्तीय विवरण में शामिल है।

   (अ) तुलन-पत्र

   (ब) लाभ एवं हानि खाता

   (स) रोकड़ प्रवाह विवरण

   (द) ऊपरोक्त सभी

2. वित्तीय विश्लेषण का महत्त्वपूर्ण यंत्र जिसे प्रयोग में लाते है।

   (अ) समानांतर विश्लेषण

   (ब) लम्बरूप विश्लेषण

   (स) अनुपात विश्लेषण

   (द) उपरोक्त सभी

3. कंपनी अपनी वार्षिक रिपोर्ट जारी करती है अपने -

   (अ) संचालकों को

   (ब) अंकेक्षकों

   (स) अंशधारियों को

   (द) प्रबंधन को

4. तुलन-पत्र व्यावसायिक संस्था की आर्थिक स्थिति के बारे में सूचना देता है।

   (अ) निश्चित समय पर

   (ब) एक निश्चित अवधि के बाद

   (स) एक निश्चित अवधि के लिए

   (द) इनमें से कोई नहीं

5. तुलनात्मक विवरणों को निम्मलिखित के नाम से भी जानते है।

   (अ) गतिशील विश्लेषण

   (ब) क्षैतिज/समानांतर विश्लेषण

   (स) लम्बरूप विश्लेषण

   (द) बाह्य विश्लेषण

III लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वित्तीय विवरण विश्लेषण के यंत्रो को लिखिए।
2. तुलनात्मक विवरणों पर एक संक्षिप्त टिपणी लिखो।
3. समरूप विवरण क्या है?
4. लम्बवत और समानांतर विश्लेषण में अंतर स्पष्ट करो।

IV निबंधात्मक प्रश्न

1. वित्तीय विवरण के विश्लेषण और विवेचना से आप क्या समझते हैं ?
2. वित्तीय विवरण के विश्लेषण में कौन-से विभिन्न यंत्रों का प्रयोग किया जाता है ?
3. तुलनात्मक तुलन-पत्र और लाभ एवं हानि खाता क्या है?
4. समरूप तुलन-पत्र तथा लाभ एवं हानि खाता किस प्रकार तैयार किया जाता है?

1. नैशनल फारमर कंपनी का 31.3.2001 और 2002 को लाभ एवं हानि खाता निम्नलिखित है।

नैशनल फारमर कंपनी

31.3.2001 तथा 2002 को लाभ एवं हानि खाता

	2001 रु.	*2002* रु.
शुद्ध विक्रय	2,42,500	2,12,500
विक्रय वस्तु की लागत	1,30,000	1,22,500
सकल लाभ	1,12,500	90,000
संचालन व्यय	30,000	22,500
शुद्ध लाभ	82,500	62,500

2001 से 2002 में प्रतिशत परिवर्तन को निकाले तथा विवेचना करें।

2. रेनबो पेंट्स लिमिटेड की 31.3.2000 तथा 2001 का तुलन-पत्र निचे दिया गया है।

रेनबो पेन्टस् लिमिटेड का 31.3.2001 तथा 2002 को तुलन-पत्र

	2000 रु.	2001 रु.
अंशधारियों के कोष		
अंश पूंजी	2,74,000	2,74,000
संचय एवं आधिक्य	1,52,000	70,000
	4,26,000	**3,44,000**
दायित्व		
सुरक्षित ऋण	1,00,000	2,32,000
असुरक्षित ऋण	5,96,000	2,06,000
चालू दायित्व एवं आयोजन	2,98,000	78,000
	9,94,000	5,16,000
पूंजी एवं दायित्व	**14,20,000**	**8,60,000**
परिसंपत्तियाँ		
शुद्ध स्थाई परिसंपत्तियाँ	5,68,000	4,30,000
विनियोग	6,000	4,000
रहतिया	4,26,000	2,16,000
शुद्ध देनदार	3,30,000	1,40,000
रोकड़	90,000	70,000
कुल परिसंपत्तियाँ	**14,20,000**	**8,60,000**

वर्ष 2000 - 2001 के लिए रेनबो पेंटस का समरूप तुलन-पत्र तैयार तथा इस पर टिप्पणी करें।

3. ईस्टर्न पेपर मिल लिमिटेड तथा पेपर उद्योग के आय और व्यय के चालू वित्तीय वर्ष के आंकड़े दिए हुए है। ईस्टर्न पेपर लिमिटेड के आंकड़े रुपए में प्रस्तुत है तथा पेपर उद्योग के औसत और प्रतिशत में प्रस्तुत हैं।

	ईस्टर्न पेपर मिल लिमिटेड रु.	*औसत पेपर उद्योग* रु.
विक्रय	70,70,000	100.5%
विक्रय वापसी एवं छूट	70,000	0.5%
बेचे गये माल की लागत	50,40,000	70.5%
विक्रय व्यय	5,74,000	9.2%
सामान्य व्यय	4,34,000	8.0%
अन्य आय	35,000	0.6%
अन्य व्यय	84,000	1.4%
आय कर	4,06,000	5.5%

1. समरूप आय विवरण बनाओ तथा परिणामों से दोनों उद्योगों की तुलना करो।
2. आंकड़ो के आधार पर दोनों कंपनियों के महत्त्वपूर्ण संबंध की विवेचना करो।

4. उपभोक्ता उत्पाद अंतराष्ट्रीय लिमिटेड वर्ष 2000 में अपनी विक्रय को बढ़ाने के लिए 40,000 रु. का विज्ञापन पर व्यय भी करती है वर्ष के अंत में मिस्टर आर, मुख्य कार्यकारी पदाधिकारी अपनी तुलनात्मक आय विवरण प्रस्तुत करता है।

उपभोक्ता उत्पाद अर्न्तराष्ट्रीय लिमिटेड का 31.3.2000 तथा 2001 के आय विवरण

	2000	*2001*
विक्रय	2,04,000	1,21,200
विक्रय वापसी	4,000	1,200
शुद्ध विक्रय	2,00,000	1,20,000
बिक्री लागत	1,24,000	72,000
सकल लाभ	76,000	48,000
विक्रय व्यय	36,000	19,200
सामान्य व्यय	8,000	54,00
कुल व्यावसायिक आय	44,000	24,600
व्यावसायिक आय.	32,000	23,400
अन्य आय	800	360
आय कर से पूर्व आय	32,800	23,760
आय कर	8,000	6,000
शुद्ध आय	24,800	17,760

1. दो वर्षों का समरूप आय विवरण तैयार करें जिससे दोनों वर्षों में शुद्ध विक्रय का विश्लेषण एवं प्रत्येक मद का संबंध स्पष्ट हो सके।
2. जहाँ तक आंकड़े (i) में बताए गए विवरण के आधार पर उनके महत्त्व और संबंध पर विवेचना करें।

5. मेहता कारपोरेशन का वित्तीय विवरण निम्नलिखित है।

मेहता कारपोरेशन का 31.3.2000 - 2001 का लाभ एवं हानि खाता

	2000	*2001*
शुद्ध विक्रय	19,46,000	17,60,000
विक्रय माल की लागत	13,70,000	11,52,000
सकल लाभ	5,76,000	6,16,000
विक्रय तथा प्रशासनिक व्यय	10,6000	90,000
कर व ब्याज से पूर्व लाभ	4,70,000	5,26,000
ब्याज व्यय	36,000	28,000
कर से पूर्व आय	4,34,000	4,98,000
आय कर	2,10,000	2,40,000
कर उपरांत लाभ	2,24,000	2,58,000

मेहता कारपोरेशन का 31.3.2000-2001 का तुलन-पत्र

		2000 रु.		2001 रु.
अंशधारियों के कोष				
अंश पूंजी	5,00,000		5,00,000	
संचय एवं अधिक्य	2,36,000		1,72,000	
		7,36,000		6,72,000
दायित्व				
सुरक्षित ऋण	1,80,000		1,60,000	
असुरक्षित ऋण	60,000		20,000	
चालू दायित्व	4,66,000		3,42,000	
		7,06,000		5,22,000
पूंजी और दायित्व		**14,42,000**		**11,94,000**
परिसंपत्तियाँ				
स्थायी संपत्तियाँ	6,44,000		5,30,000	
विनियोग	56,000		86,000	
रहतिया	2,12,000		98,000	
देनदार	4,18,000		3,12,000	
रोकड़	88,000		1,40,000	
अन्य चालू संपत्तियाँ	34,000		28,000	
कुल संपत्तियाँ		**14,42,000**		**11,94,000**

1. वर्ष 2000 से 2001 तक का तुलनात्मक लाभ हानि एवं खाता एवं तुलन-पत्र बनाकर प्रतिशत में परिवर्तन करो।
2. समरूप लाभ एवं हानि खाता एवं तुलन-पत्र बनाएँ।
3. 1 तथा 2 के परिणामों को निकालो तथा विवेचना करें।

6. आर लिमिटेड का 31.3.2000 वर्ष 2001 का लाभ एवं हानि खाता दिया है।

आर लिमिटेड का 31.3.2000 - 2001 का लाभ एवं हानि खाता

	2000 रु.	2001 रु.
शुद्ध विक्रय	4,62,930	4,05,000
घ्याया : विक्रय माल की लागत	(96,750)	(1,85,000)
सकल लाभ	3,66,180	2,20,000

घटाया : प्राशासनिक एवं विक्रय व्यय	(15,750)	(40,000)
कर व व्याज से पूर्व लाभ	3,50,430	1,80,000
घटाया : देय ब्याज	(13,750)	(13,500)
कर से पूर्व लाभ	3,36,680	1,66,500
घटाया : कर का आयोजन	(99,280)	(36,000)
कर के उपरांत शुद्ध लाभ	2,37,400	1,30,500

तुलनात्मक लाभ एवं हानि खाता बनाए तथा उद्यम की लाभ प्रदता पर विवेचना करें।

7. जी. लिमिटेड को वर्ष 2000-2001 का तुलन-पत्र नीचे दिया गया है।

31.3.2000 - 2001 को तुलन-पत्र

		2000 रु.		2001 रु.
कोषो के स्रोत अंशधारियों के कोष				
पूंजी	27,950		22,555	
संचय एवं अधिक्य	3,90,000		1,07,705	
		4,17,950		1,30,260
ऋण कोष				
सुरक्षित	1,31,625		1,13,815	
असुरक्षित	1,51,840	2,83,465	57,330	1,71,145
योग		**7,01,415**		**3,01,405**
कोषो के उपयोग				
स्थायी परिसंपतियाँ	1,93,375		1,33,250	
ह्रास	(45,110)		(33,280)	
शुद्ध खण्ड	1,48,265		99,970	
अर्धनिगर्मित माल	20,605		10,140	
		1,68,870		1,10,110
विनियोग		1,56,260		22,360
चालू परिसंपत्तियाँ, **ऋण एवं अग्रिम**				
रहतिया		67,110		65,650
विविध देनदार		1,08,680		72,735

रोकड़ तथा बैंक शेष		37,245		45,240
अन्य चालू परिसंपत्तियाँ		10,075		845
ऋण एवं अग्रिम		2,34,715		37,895
चालू दायित्व एवं नियोजन		1,11,540		53,430
शुद्ध चालू परिसंपतियाँ		3,76,285		1,68,935
योग		**7,01,415**		**3,01,405**

जी लिमिटिड का तुलनात्मक तुलन-पत्र और उसकी आर्थिक स्थिति पर विवेचना करें।

8. के. लिमिटेड का वर्ष 2000-2001 का लाभ एवं हानि खाता दिया है।

31.3.2000 - 2001 को के. लिमिटिड का लाभ एवं हानि खाता

	2000 रु.	2001 रु.
आय		
परिचालन के आगम	36,000	50,400
विविध आय	1,440	1,080
	37,440	**51,480**
व्यय		
विक्रय योग्य माल की लागत	16,050	22,750
प्रशासनिक व्यय	8,000	12,000
विक्रय एवं वितरण व्यय	2,950	6,363
	27,000	41,112
ब्याज एवं कर से पूर्व लाभ	10,440	10,368
घटाया : ब्याज	(1,800)	(1,320)
कर से पूर्व लाभ	8,640	9,040
कराधान	2,088	7,114
कर उपरांत लाभ	6,532	7,114

समरूप लाभ एवं हानि खाता बनाओ जिसमें प्रत्येक मद का विश्लेषण किया जा सके, आय का संचालन से संबंध स्पष्ट किया जा सके तथा के. लिमिटिड की लाभ प्रदता की विवेचना करें।

9. निम्नलिखित एच. लिमिटिड का तुलन-पत्र वर्ष 1999 एवं 2000 के लिए है।

एच. लिमिटेड की 31.3.1999 तथा 2000 का तुलन-पत्र

	1999 रु.	2000 रु.
कोषो के स्रोत		
अंशधारियों के कोष		
पूंजी	17,200	13,880
संचय एवं आधिक्य	2,40,000	66,280
	2,57,200	80,160
ऋणकोष		
सुरक्षित	81,000	70,040
असुरक्षित	93,440	35,280
	1,74,440	1,05,320
योग	**4,31,640**	**1,85,480**
कोषो के उपयोग		
स्थायी परिसंपत्तियाँ	1,19,000	81,960
ह्रास	(27,760)	(20,480)
शुद्ध खण्ड	91,240	61,480
अर्ध निर्मित माल	12,680	6,240
	10,3,920	67,720
विनियोग	96,120	11,420
ऋण एवं अग्रिम		
रहतिया	59,800	40,440
विविध देनदार	66,880	44,720
रोकड़ तथा बैंक शेष	22,920	27,840
अन्य चालू परिसंपत्तियाँ	6,200	2,900
ऋण एवं अग्रिम	1,44,400	23,320
	3,00,200	1,39,220
घटाया : चालू दायित्व एवं आयोजन	(68,600)	(32,880)
शुद्ध चालू परिसंपत्तियाँ	2,31,600	1,06,340
योग	**4,31,640**	**1,85,480**

समरूप विवरण तैयार करें और एच लिमिटिड की आर्थिक स्थिति पर विवेचना करें।

10. वर्ष 2000-2001 का डोनाल्ड कंपनी लिमिटिड का तुलन-पत्र और लाभ एवं हानि खाता।

31.3.2000 तथा 2001 का डोनाल्ड कंपनी लिमिटिड का तुलन-पत्र

		2000 रु.		*2001* रु.
कोषो के स्त्रोत				
अंशधारियों के कोष				
पूंजी	20,640		21,264	
संचय एवं अधिक्य	2,88,000		3,67,968	
		3,086,40		3,89,232
ऋण कोष				
सुरक्षित	97,200		1,44,192	
असुरक्षित	1,12,128		87,504	
		2,09,328		2,31,696
योग		**5,17,968**		**6,20,928**
कोषो के उपयोग				
स्थायी परिसंपत्तियाँ	1,42,800		2,12,592	
घटाया : ह्रास	(33,312)		(44,352)	
शुद्ध खण्ड	1,09,488		1,68,240	
विनियोग		3,03,936		2,80,128
चालू परिसंपत्तियाँ ऋण एवं अग्रिम :				
रहतिया	71,712		1,17,072	
देनदार	80,256		96,960	
रोकड़	27,504		12,960	
अन्य चालू परिसंपतियाँ	7,392		25,632	
		1,86,864		2,52,624
घटाया : चालू दायित्व एवं आयोजन		(82,320)		(80,064)
शुद्ध चालू सम्पतियाँ		1,04,544		1,72,560
योग		**5,17,968**		**6,20,928**

डोनाल्ड कंपनी लिमिटेड वर्ष 31.3.2000-2001 का लाभ एवं हानि खाता

	2000 रु.	2001 रु.
आय		
संचालन से आगम	3,42,672	4,26,912
अन्य आय	10,944	16,032
	3,53,616	**4,42,944**
व्यय		
माल	1,56,240	2,06,832
निर्माण	39,888	40,512
व्यक्तिगत	20,736	27,552
विक्रय और प्रशासन	65,328	80,208
	2,82,192	**3,55,104**
ह्रास से पूर्व लाभ	71,424	87,840
घटाया : ह्रास	(11,664)	(12,754)
कर से पूर्व लाभ	59,760	75,086
कर का आयोजन	11,280	13,926
कर के उपरांत लाभ	48,480	61,160

(i) डोनाल्ड कंपनी लिमिटेड का तुलनात्मक तुलन-पत्र एवं तुलनात्मक लाभ एवं हानि खाता बनाएँ और उसकी विवेचना करें।

(ii) डोनाल्ड कंपनी लिमिटेड का समरूप तुलन-पत्र लाभ एवं हानि खाता बनाएँ और उसकी विवेचना करें।

उत्तर

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(अ) सत्य
(ब) सत्य
(स) सत्य
(द) सत्य
(य) सत्य
(र) सत्य
(ल) सत्य
(व) संत्य
(ह) सत्य
(क्ष) सत्य

बहुविकल्प प्रश्न

1. (द)
2. (द)
3. (स)
4. (अ)
5. (ब)

अध्याय 3

अनुपात विश्लेषण

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप :

- अनुपात विश्लेषण की अवधारणा की व्याख्या कर सकेंगे;
- अनुप्रस्थ तथा समय-शृंखला विश्लेषणों को समझ सकेंगे;
- एक व्यावसायिक उपक्रम की तरलता, शोधन-क्षमता, आवर्त तथा लाभोपार्जन क्षमता का संबंधित अनुपातों के द्वारा विश्लेषण कर सकेंगे।

पिछले अध्याय में वित्तीय विश्लेषण के विभिन्न साधनों एवम उनके व्याख्यान यथा तुलनात्मक विवरण, समानाकार विवरण तथा अनुपात विश्लेषण आदि की चर्चा की गई है। यह अध्याय अनुपात विश्लेषण की अवधारणा तथा वित्तीय विवरणों की व्याख्या में इसके प्रयोग से संबंधित है।

3.1 अनुपात विश्लेषण — अर्थ

अनुपात विश्लेषण में वित्तीय अनुपातों की संगणना एवं उनकी व्याख्या करने की विधियाँ सम्मिलित है जिसका प्रयोग एक उपक्रम के निष्पादन की शक्तियों व कमियों के मूल्यांकन के लिए किया जाता है। एक अनुपात की गणना के लिए, वित्तीय विवरणों की दो संख्याओं के मध्य संबंध स्थापित किया जाता है तथा उसके परिणामों के आधार पर अर्थपूर्ण निष्कर्ष निकाले जाते है।

एक अनुपात की गणना के लिए दो संख्याओं की आवश्यकता होती है —एक संख्या को अंश एवं दूसरी को हर के स्थान पर रखा जाता है। उदाहरणस्वरूप हम एक दंतमंजन के ब्रांड 'x' का बाजार अंश जानना चाहते है। इसके लिए हम एक अनुपात की गणना करेंगे। इस अनुपात के अंश के रूप में ब्रांड 'x' की बेची गई मदों की संख्या रखी जाएगी तथा हर में बाजार में दंतमंजन की कुल बिक्री संख्याओं को लिया जाएगा। मान लीजिए, ये संख्याएँ क्रमश: 200 तथा 1,000 है। अत: यह अनुपात 20% होगा (200/1000 × 100) अर्थात् ब्रांड 'x' का बाजार अंश 20 % है।

इस प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि अंश व हर, तर्कसंगत रूप से एक-दूसरे से संबंधित होने चाहिए, अन्यथा निर्णय लेने के लिए अनुपात आवश्यक जानकारी प्रदान नहीं कर पाएगा। उदाहरण के लिए, "यदि पिछले उदाहरण में 200 (ब्राण्ड 'x' की बेची गई मदें) को अंश में तथा 2000 (कपड़े धुलाई की मशीनों के उपभोगक्ताओं की कुल संख्या) को हर के रूप में लेते है तब यह अनुपात 10% होगा। यद्यपि यह एक अनुपात है तथापि इस अनुपात से कोई अर्थपूर्ण निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता क्योंकि अंश व हर की संख्याएं भिन्न उत्पाद श्रेणियों की होने के कारण तार्किक रूप

से एक दूसरे से संबंधित नहीं हैं। अतः, जब भी एक अनुपात की गणना की जाती है, विश्लेषणकर्ता को चाहिए कि अनुपात की दोनों संख्याओं के मध्य एक तर्कपूर्ण संबंध हो। इसी के एक उपसिद्धांत के रूप में, हम किसी भी प्रकार का अनुपात बना सकते हैं, जिससे एक व्यावसायिक उपक्रम की कार्यकुशलता का विश्लेषण किया जा सके। यह हमारे उद्देश्य पर निर्भर करता है और इस शर्त पर कि हम उसमें किस स्तर तक तार्किक संबंध देखते है।

एक अनुपात को निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है :

(1) प्रतिशत के रूप में, जैसे सकल लाभ अनुपात विक्रय का 25% है (सकल लाभ 1,000 रु. को विक्रय 4,000 रु. से भाग देकर एवं 100 से गुणा करके निकला गया है।)

(2) अनुपात के रूप में, जैसे चालू अनुपात 2:1 है। चालू परिसंपत्तियों 2,000 रु. को चालू दायित्वों 10,000 रु. से भाग कर निकाला गया है।

(3) गुना के रूप में, जैसे स्कन्ध आवर्त अनुपात 5 गुना है (विक्रय 40,000 रु. को औसत रहतिये 80,000 रु. से भाग किया गया)

(4) भिन्न के रूप में, जैसे शुद्ध लाभ विक्रय का दसवाँ भाग है (शुद्ध लाभ 4,000 रु. को विक्रय 40,000 रु. से भाग करके निकाला गया है।)

3.2 अनुप्रस्थ एवं समय-शृंखला विश्लेषण

अनुपात विश्लेषण की चर्चा हमने दंतमंजन के एक ब्राण्ड से प्रारंभ की। यह अनुपात 20% निकाला। इसका उद्देश्य ब्राण्ड 'x' का बाजार अंश जानना था। एक अनुपात की व्याख्या के लिए, इस प्रश्न का उत्तर जानना होगा कि ब्राण्ड 'x' का बाजार अंश अधिक है या कम। इस प्रश्न के उत्तर के लिए इस अनुपात की तुलना या तो अन्य ब्राण्डों से अथवा एक ही समयावधि में उसी ब्राण्ड के बाजार अंश से करनी होगी।

अनुप्रस्थ विश्लेषण

ब्राण्ड 'x' की तुलना दंतमंजन के अन्य ब्राण्डों से की जा सकती है। हम अन्य ब्राण्डों के अनुपातों की गणना भी इसी प्रकार करेंगे और तब ब्राण्ड 'x' के 20% अनुपात से इनकी तुलना करेंगे। इसके आंकड़ें अधोलिखित है :

दंतमंजन के विभिन्न ब्राण्डों का बाजार अंश (2002)

ब्राण्ड 'x'	ब्राण्ड 'y'	ब्राण्ड 'z'
20%	45%	35%

उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर यह ज्ञात किया जा सकता है कि ब्राण्ड 'x' का बाजार अंश सबसे कम है। इस प्रकार का विश्लेषण अनुप्रस्थ विश्लेषण कहलाता हैं। इस विश्लेषण में, एक ही ब्राण्ड की तुलना

प्रतियोगियों अथवा उद्योग-औसत से एक ही समय-बिंदु पर की जाती है। इस प्रकार का विश्लेषण विद्यमान कठिनाइयों को पहचानने में सहायक होता है। यह कठिनाइयों के कारणों की जाँच तथा सुधारात्मक कार्यों को करने में सहायता करता हैं। परंतु, अनुप्रस्थ रचना का चयन सावधानीपूर्वक करना आवश्यक है। यहाँ समानता का एक ही चरांक होना आवश्यक है। उदाहरणार्थ, ब्राण्ड 'x' की तुलना ब्राण्डों 'y' एवं 'z' के साथ केवल तभी की जा सकती है जबकि ये दोनों उत्पाद एक ही प्रकार के हो तथा एक ही बाजार में बिकते हो।

समय-शृंखला विश्लेषण

एक अन्य विधि के अनुसार, ब्राण्ड 'x' के सापेक्षिक बाज़ार अंश की गणना इसी ब्राण्ड के बाज़ार अंश से एक समयावधि में की जाती है। उस समयावधि का चयन सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए जिससे सही तुलना संभव हो सके। इस विश्लेषण में एक समयावधि के आँकड़ों में एक समान गुण होने चाहिए जिससे अर्थपूर्ण निष्कर्षों तक पहुँचा जा सके। विश्लेषण की समयावधि के दौरान हुए परिवर्तनों, जैसे लेखांकन नीति, सरकारी नीति, तकनीकी विकास एवं प्रतियोगिता के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। उदाहरणस्वरूप, एक कंपनी अपनी ह्रास नीति सीधी रेखा पद्धति में, परिवर्तन के प्रभाव को दर्शाना होगा जिससे अनुप्रस्थ विश्लेषण संभव हो सके। इस प्रकार की स्थिति तब होगी जब सामान्यत: एक वर्ष की लेखांकन अवधि (12 महीने) को किसी और अवधि में परिवर्तित किया जाता हैं। उदाहरणस्वरुप, 15 महीने की लेखांकन अवधि है तब इन 15 कालांशों को 12 महीनों में विभक्त किया जाएगा, अन्यथा दो वर्षो के आँकड़ों की तुलना नहीं की जा सकेगी। मान लेते हैं कि यह समय-शृंखला विश्लेषण पाँच वर्षो के लिए किया जा रहा है। पाँच वर्षो के लिए ब्राण्ड 'x' का बाज़ार अंश निम्नलिखित है : (वर्ष 1997-2001)

वर्ष	1997	1998	1999	2000	2001
बाज़ार अंश	40%	37%	30%	27%	25%

यह अनुपात व्यवहार स्पष्ट रूप से संकेत दे रहा है कि अनुपात कम होता जा रहा है। इसका अर्थ है कि ब्राण्ड 'x' का बाज़ार अंश कम होता जा रहा है। हम यह स्पष्ट निर्णय इसलिए दे सकते हैं क्योंकि हमने इस अनुपात व्यवहार को एक समयावधि तक अवलोकित किया है। इस प्रकार के विश्लेषण को समय-शृंखला विश्लेषण कहते है। समय-शृंखला विश्लेषण एक व्यावसायिक उपक्रम के कार्य निष्पादन का मूल्यांकन करता है और उन दोनों की पहचान में सहायता करता है यहां सुधारात्मक कार्य करने की आवश्यकता है। इस स्थिति को भलीभांति समझने के लिए हम अनुप्रस्थ विश्लेषण एवं समय-शृंखला विश्लेषण दोनों को एक साथ उपयोग में ला सकते है।

जैसे कि पहले चर्चा की गई है कि एक अनुपात की गणना किसी उद्देश्य के आधार पर की जाती है। अत: यह आवश्यक हो जाता है कि वित्तीय विवरणों के विश्लेषण में रूचि रखने वाले विभिन्न पक्षों की आशाओं को ध्यान में रखें। लेनदार, अंशधारी एवं प्रबंधकर्ता अनुपात विश्लेषण का प्रयोग करने तथा वित्तीय विवरणों के विश्लेषण में हित रखते हैं। लेनदार अल्पकालीन व दीर्घकालीन हो सकते है।

अल्पकालीन लेनदार मुख्य रूप से उपक्रम की तरलता में रूचि रखते हैं क्योंकि इनके दायित्वों का भुगतान अल्पकाल में किया जाता है। तरलता विश्लेषण से तात्पर्य एक उपक्रम की उस क्षमता से है जिसमें वह अल्पकालीन दायित्वों का भुगतान कर सकें।

दीर्घकालीन लेनदारों का हित भिन्न होता है। वे उपक्रम की उस क्षमता में रूचि रखते हैं जिससे वे अपनी ऋण के रूप में दी गई राशि व उसके ब्याज के भुगतान के बारे में पता लगा सकें। अतः, ऐसे लेनदार संगठन की दीर्घकालीन लाभोपार्जन क्षमता, रोकड़ प्रवाह उत्पन्न क्षमता एवं दीर्घकालीन ऋणों की मात्रा व वृद्धि के बारे में अधिक ध्यान रखते हैं जिससे वे उपक्रम की शोधन-क्षमता स्थिति को समझ सकें।

अंशधारी (वर्तमान व भावी) अंश कीमतों व लाभांश के रूप में होने वाली आय में रूचि रखते हैं। प्रबंधक उपक्रम के सभी पहलुओं से संबंधित होते है इसलिए प्रबंधक उपक्रम के पूर्ण विश्लेषण में रूचि रख सकते हैं जैसे कि तरलता, शोधन-क्षमता, परिचालनता एवं लाभोपार्जन क्षमता।

3.3 मानक/मापदण्ड

जैसा कि पहले भी चर्चा की गई कि हम अनुपातों की गणना इसलिए करते हैं क्योंकि इस प्रकार की गई तुलना अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। एक अनुपात की गुणवत्ता पर टिप्पणी करने के लिए उसका किसी मानक या मापदण्ड से तुलना करनी होती है। ये मानक अधोलिखित हो सकते है :

(i) *विगत अनुपात :* *एक अनुपात की पिछले वर्ष के अनुपात से तुलना की जा सकती है। इस प्रक्रिया को* समय-शृंखला विश्लेषण में वर्णित किया गया है।

(ii) *समान इकाइयों या उद्योग औसत अनुपात :* एक अनुपात की समान इकाइयों के अनुपात से या एक ही समय-बिंदु पर औसत उद्योग अनुपात से तुलना की जा सकती है। इस प्रक्रिया की अनुप्रस्थ विश्लेषण में चर्चा की गई हैं।

(iii) *अंगुठा टेक सिद्धांत :* अंगुठा टेक सिद्धांत समय के साथ विकसित होते हैं। उदाहरण के लिए, अनुभव के आधार पर चालू अनुपात 2:1 होना चाहिए, अर्थात् चालू परिसंपत्तियाँ चालू दायित्वों से दुगुनी होनी चाहिए। तथापि ये अगुठा टेक सिद्धांत सावधानी पूर्वक प्रयोग में लाने चाहिए।

3.4 अनुपातों के प्रकार

वित्तीय अनुपातों को चार वर्गों में बाँटा जा सकता है :

(i) तरलता अनुपात

(ii) शोधन-क्षमता अनुपात

(iii) परिचालन (आवर्त या निष्पादन) अनुपात

(iv) लाभोपार्जन क्षमता अनुपात

जब हम इन विभिन्न वर्गों के अनुपातों की विस्तृत चर्चा करें तो यह जान पाएंगे कि तरलता, शोधन-क्षमता एवं परिचालन अनुपात जोखिम को मापते हैं तथा लाभोपार्जत क्षमता अनुपात आय को मापता है। इनमें से कुछ अनुपात अल्पकालीन मापक होते है जबकि अन्य दीर्घकालीन मापक होते हैं। शोधन-क्षमता अनुपात की गणना दीर्घकालीन परिपेक्ष्य में की जाती है जबकि अन्य वर्गों के अनुपात मुख्यतया अल्पकालीन मापन पर बल देते है।

अनुपात विश्लेषण का एक महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि इनमें निष्पादन कला की भाँति अधिक कल्पनात्मकता व सृजनात्मकता होती है। अनुपातों के एक समूह का चयन यूं तो उद्देश्य व लक्ष्य पर आधारित होता है किंतु इनकी व्याख्या विश्लेषक की प्रतिभा कौशल या कल्पनाशक्ति पर निर्भर करती है। यद्यपि हमारे पास कुछ अनुपातों के समूह हैं तथापि व्यवसाय के निरंतर बदलते आयामों व जटिलताओं को ध्यान में रखते हुए, वित्तीय विश्लेषण की आवश्यकताओं के अनुकूल नए अनुपातों का सृजन निर्माण किया जा सकता हैं।

अब हम चारों वर्गों के प्रत्येक अनुपात की चर्चा करते है। हम पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड के आँकड़ों का प्रयोग करेंगे जिसके वार्षिक खाते पिछले अध्याय में दिए गए है।

3.4.1 तरलता अनुपात

तरलता का अर्थ है अल्पकालीन देयताओं का भुगतान करने की क्षमता। देयताओं का भुगतान चालू परिसंपत्तियों द्वारा किया जाता है। एक तरल परिसंपत्ति वह है जिसे आसानी से रोकड़ में परिवर्तित किया जा सके। यदि हमारी तरल परिसंपत्तियाँ निम्न गुणवत्ता की है तो आवश्यकता पड़ने पर उन्हें रोकड़ में परिवर्तित करने में कठिनाई होती हैं। अथवा यदि तरल परिसंपत्तियों में निवेश अल्पकालीन दायित्वों से कम होता है तो हम अल्पकालीन देयताओं के भुगतान में सक्षम नहीं होंगे।

अल्पकालीन ऋणदाताओं का प्राथमिक हित इस प्रकार के विश्लेषण में होता है। वह उपक्रम की तरलता का मूल्यांकन इस उद्देश्य से करते हैं कि उनके अल्पकालीन ऋण सुरक्षित होंगें या नहीं। इसी प्रकार, प्रबंध का हित भी यह जानने में होता है कि वे अपने किए गए वादों को समय पर पूरा कर पाएंगे या नहीं।

पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड का लेखांकन चक्र में देय चालू दायित्व 18,232.40 लाख रु. हैं। क्या पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड इस स्थिति में होगी कि वह अपने देयताओं का भुगतान कर पाएगी? अधोलिखित तरलता अनुपात इस प्रश्न का उत्तर देने में सहायक होगा :

3.4.1.1 चालू अनुपात

चालू अनुपात चालू परिसंपत्तियों व चालू दायित्वों के बीच संबंध है। चालू परिसंपत्तियों को अल्पकालीन समयावधि के आधार पर रखा जाता है। इन परिसंपत्तियों में रोकड़, बैंक शेष, पूर्वदत्त व्यय, देनदार, प्राप्य बिल, रहतिया (पूर्णनिर्मित माल, कार्य में प्रयुक्त माल, व कच्चा माल), अल्पकालीन निवेश/विनियोग एवं आर्जित आय शामिल है। साधारणतया अल्पकालीन से तात्पर्य एक लेखांकन समयावधि से है। चालू दायित्व वे दायित्व है जिनका भुगतान एक लेखांकन अवधि के भीतर करना होता है। चालू दायित्वों में लेनदार, रोकड़ उधार, अल्पकालीन बैंक अधिविकर्ष, खर्चों का दायित्व, अग्रिम आय एवं कोई अन्य दायित्व जिसका भुगतान चालू लेखांकन अवधि में देय हो साम्मिलित किए जाते हैं।

चालू अनुपात की गणना चालू परिसंपत्तियों को चालू दायित्वों से भाग देकर की जाती है।

$$\text{चालू अनुपात} = \frac{\text{चालू परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू दायित्व}}$$

पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड
31 मार्च 2002 के तुलन-पत्र का सार

(रु. लाख में)

	2001		*2000*	
चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण व अग्रिम				
रहतिया	9,687.87		11,968.50	
विविध देनदार	29,828.64		8,827.90	
रोकड़ एवं बैक शेष	419.64		1,839.79	
ऋण एवं अग्रिम	5,955.51		7,109.68	
कुल योग	**45,891.66**		**29,745.87**	
घटाया: चालू दायित्व एवं प्रावधान	18,231.40		8,462.47	
शुद्ध चालू परिसंपत्तियाँ		**27,660.26**		**21,283.40**

पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड के लिए	2001	2000
चालू अनुपात	$\frac{45,891.66}{18,231.40}$	$\frac{29,745.87}{8,462.47}$
	= 2.5	= 3.5

इस अनुपात की व्याख्या कैसे हो? सामान्यतया चालू अनुपात 2:1 हो तो इसे स्वीकार किया जाता है। जबकि यह अंगुठा टेक सिद्धांत में उद्योग-दर-उद्योग अंतर होता है। चालू अनुपात जितना अधिक होता

है उतना ही अच्छा माना जाता है क्योंकि यह अधिक तरलता का सूचक है। व्याख्या की एक अन्य विधि के अनुसार इस अनुपात के व्यवहार का अवलोकन एक समयावधि के दौरान किया जाता है। जैसा कि पहले चर्चा की गई है कि इसे समय-शृंखला विश्लेषण कहते हैं। हमारे पास पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड के वर्ष 2000 एवं 2001 के चालू अनुपात है। इन दोनों अनुपातों की तुलना करने पर ज्ञात होता है कि यह अनुपात पिछले वर्ष की अपेक्षा कम हुआ है। इसका अर्थ यह है कि पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड की तरलता स्थिति इस समयावधि के दौरान क्षीण हुई है। जबकि पहले बताया गया है कि अंगुठा टेक सिद्धांतानुसार यह अनुपात 2:1 का होना चाहिए। तब यह कहा जा सकता है कि पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड ने चालू परिसंपत्तियों के निवेश में कटौती की है। इस अनुपात की व्याख्या प्रतियोगियों से या उद्योग औसत से तुलना करके भी की जा सकती है। जैसा कि पहले बताया गया है, यह प्रक्रिया अनुप्रस्थ विश्लेषण कहलाती हैं। उदाहरण के लिए, पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड के मुख्य प्रतियोगी महिन्द्रा एवं महिन्द्रा है। महिन्द्रा एवं महिन्द्रा का चालू अनुपात वर्ष 2001 का 1.4:1 है। यदि हम पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड के वर्ष 2001 के चालू अनुपात की महिन्द्रा एवं महिन्द्रा के चालू अनुपात से तुलना करें तो कोई भी यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड का चालू अनुपात अधिक है। यह लगभग दोगुना है। पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड को अपने चालू अनुपात को महिन्द्रा एवं महिन्द्रा के बराबर लाने के लिए हर संभव कदम उठाने होंगे, यदि पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड अपनी तरलता प्रबंध के मापक/मापदण्ड को महिन्द्रा एवं महिन्द्रा जैसा करना चाहता है।

तुलना के लिए उद्योग औसत को भी देखा जा सकता है। ट्रैक्टर उद्योग का चालू अनुपात वर्ष 2001 के लिए 1.4:1 है। इस उद्योग समूह में शामिल इकाइयाँ हैं — महिन्द्रा एवं महिन्द्रा, आयशर लिमिटेड, पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड, एस्कार्ट्स लिमिटेड एवं एच.एम.टी. लिमिटेड। इस अनुपात की तुलना करने पर एक बार फिर वही अवलोकन होता है जैसा कि महिन्द्रा एवं महिन्द्रा से तुलना करने पर हुआ था क्योंकि दोनों का चालू अनुपात समान है अर्थात् 1.4:1।

जबकि अत्यधिक चालू अनुपात उचित नहीं होता क्योंकि चालू परिसंपत्तियों के रूप में मुद्रा का अधिक विनियोग लाभोपार्जन क्षमता को कम करता है। यदि एक संगठन अधिक रहतिया रखता है तो इसका अर्थ है कि संगठन के कोषों का भारी भाग रहतिया में विनियोजित किया है जिससे लाभोपार्जन क्षमता पर प्रभाव पड़ता है। यह स्थिति अन्य सभी चालू परिसंपत्तियों के साथ भी होती है। इसके स्थान पर यदि कोषों का यही भाग स्थायी परिसंपत्तियों में विनियोजित किया जाता तो अधिक लाभ कमाया जा सकता था। अत: यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि तरलता व लाभोपार्जन क्षमता और अधिक लाभोपार्जन क्षमता होने पर तरलता कम होगी। अत:, इन दोनों में संतुलन बनाए रखना चाहिए।

उपरोक्त चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि किसी अनुपात की व्याख्या अंगुठा टेक सिद्धांत अथवा किसी घटना का एक समयावधि के दौरान अवलोकन (समय-शृंखला विश्लेषण) अथवा उद्योग औसत या प्रतियोगी मापदण्ड (अनुप्रस्थ विश्लेषण) के संबंध में की जा सकती हैं।

अनुपान विश्लेषण एक साधन है और प्रत्येक साधन की भांति इसका प्रयोग विश्लेषक द्वारा सावधानी पूर्वक किया जाना चाहिए। इसका कुशल प्रयोग विश्लेषक की व्यकिगत कुशलता, अनुभव एवं निर्णय लेने की क्षमता पर निर्भर करता है।

3.4.1.1 *तरल अनुपात*

तरल अनुपात को 'अम्ल परख अनुपात' अथवा 'त्वरित अनुपात' के नाम से भी जाना जाता है। यह अनुपात किसी व्यावसायिक उपक्रम की अल्पकालीन शोधन-क्षमता को निर्धारित करता है। तरलता चालू परिसंपत्तियों को रोकड़ में परिवर्तित करने की क्षमता है। तरल अनुपात को निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है —

$$\text{तरल अनुपात} = \frac{\text{तरल परिसंपत्तियों का योग}}{\text{चालू दायित्वों का योग}}$$

तरल परिसंपत्तियों का आशय है चालू परिसंपत्तियाँ तथा रहतिया का अंतर। चालू दायित्वों का वर्णन चालू अनुपात के संदर्भ में पहले ही किया जा चुका है। तरल परिसंपत्तियों में केवल उन चालू परिसंपत्तियों को सम्मिलित किया जाता है जिन्हें संस्था के भुगतान हेतु आवश्यकतानुसार रोकड़ में परिवर्तित किया जा सकता है। अत: तरल परिसंपत्तियों के मूल्यांकन के लिए चालू परिसंपत्तियों में से कुछ परिासंपत्तियाँ जैसे रहतिया, पूर्व-प्रदत्त व्यय, प्राप्त बिलों का वह भाग जिसकी वसूली न हो सकती हो एवम् बिक्री योग्य प्रतिभूतियों का वह भाग जिसे बेचा न जा सके, को घटा देते हैं। जबकि यदि देनदारों व बिक्री योग्य प्रतिभूतियों की जानकारी स्पष्ट नहीं की गई हो तो इन्हें पुस्तक मूल्य पर प्राप्य माना जाएगा।

पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड की तरल परिसंपत्तियाँ (चालू परिसंपत्तियाँ घटा रहतिया) अधोलिखित है।

	2001	2000
	= 45,891.66 – 9,687.87 = 36203.79	= 29,745.87–11,968.50 = 17,777.37
तरल अनुपात	$= \frac{36,203.79}{18,231.40}$ **= 1.98**	$\frac{17,777.37}{8,462.47}$ **= 2.10**

साधारणतया तरल अनुपात 1.1 हो या इससे अधिक हो तो इसे अच्छा माना जाता है। क्योंकि यह दायित्वों के भुगतान की 100 % कोष उपलब्धता दर्शाता है। जबकि यह अंगुठा टेक सिद्धांत उद्योग दर उद्योग बदलता रहता है जैसा कि चालू अनुपात व अन्य सिद्धांतों के संदर्भ में होता है।

पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड के संदर्भ में यह अनुपात वर्ष 2001 के लिए 1.98 है। इसका अर्थ है कि तरलता का स्तर बहुत अधिक है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि *अधिक तरलता कम लाभोपार्जन क्षमता।* अत: पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड को किसी मापदण्ड या उद्योग औसत का प्रयोग करना चाहिए जिससे इसकी तरलता स्थिति सही हो सके।

तरलता के दो उपायों एवं उनके औचित्य तथा गणना की प्रक्रिया को समझने के पश्चात् हम यह उल्लेख कर सकते हैं कि एक तरल अनुपात की गणना करते समय चालू परिसंपत्तियों की गुणवत्ता व मात्रा का तरल रहतिया है, परंतु यदि धीमी गति के देनदार हैं तो ऐसे देनदारों को चालू परिसंपत्तियों में से घटा देनी चाहिए (न कि रहतिये को)। अत: वे सभी चालू परिसंपत्तियाँ जो कि हमारे निर्णयानुसार कम तरल है,

चालू परिसंपत्तियों में से घटा देनी चाहिए। परंपरानुसार रहतिया सबसे कम तरल परिसंपत्ति मानी जाती हैं। अतः तरल अनुपात की गणना के लिए इसे चालू परिसंपत्तियों से कम किया जाता है। प्रबंधकों के दृष्टिकोण से उपरोक्त गणना की विधि एवं व्याख्या की वैधता तुलन-पत्र विश्लेषण के लिए है जिसकी प्रकृति अपरिवर्तनशील होती है क्योंकि यह एक समय बिंदु पर तैयार की जाती है। यह अधिक उपयोगी नहीं होगी यदि एक व्यवसाय के प्रबंधकीय निर्णय लेने पर प्रबंधकों का ध्यान उपक्रम की प्रचालन क्रियाओं/गतिविधियों पर केंद्रित हो। प्रचालन स्तर पर तरलता को दैनिक आधार पर तथा पूर्तिकर्ताओं द्वारा प्रदान उधार/ऋण की समयावधि के आधार पर व्यवस्थित किया जाता है। अतः व्यवसाय की रोकड़ उत्पत्ति क्षमता का मिलान इसके भुगतान चक्र में देय दायित्वों से लिया जाता है।

3.4.2 शोधन-क्षमता अनुपात

शोधन-क्षमता से अभिप्राय एक व्यवसाय की देय तिथि पर देयताओं के भुगतान योग्यता से हैं। कुछ भुगतान अल्पकाल में परिपक्व होते हैं जबकि कुछ दीर्घकाल में परिपक्व होते हैं। फर्म को अल्पकाल व दीर्घकाल दोनों प्रकार के भुगतानों का नियोजन करना होता है। हमने पिछले भाग में व्यवसाय की अल्पकालीन शोधन-क्षमता का विश्लेषण किया है। अब हम दीर्घकालीन शोधन-क्षमता का विश्लेषण करेंगे। दीर्घकालीन शोधन-क्षमता से तात्पर्य दीर्घकाल दायित्वों के भुगतान क्षमता/योग्यता से है। दीर्घकालीन ऋणदाता प्राथमिक रूप से इस प्रकार के विश्लेषण में रूचि रखते हैं।

दीर्घकालीन ऋणदाता मुख्य रूप से दो बातों में रूचि रखते हैं — ऋण रूप में प्रदान मूलधन राशि की सुरक्षा में तथा ऋण पर ब्याज एवं ऋण की किश्तों के पुनः भुगतान की सुनिश्चितता में। उदाहरण के लिए, एक करोड़ रुपए का ऋण 5 वर्षों के लिए 10% वार्षिक ब्याज की दर से दिया गया है। ऋणदाता यह सुनिश्चित करना चाहेगा कि उसकी एक करोड़ की मूल धनराशि 5 वर्षों की समयावधि के लिए सुरक्षित रहे तथा उसे प्रतिवर्ष 10 लाख रु. ब्याज के रूप में नियमित रूप से मिलता रहें।

दीर्घकालीन शोधन-क्षमता के इन दो पहलुओं के विश्लेषण के लिए दो अनुपातों की गणना की जाती है : ऋण-समता अनुपात एवं ब्याज व्याप्ति अनुपात। ब्याज व्याप्ति अनुपात एक उपक्रम द्वारा अर्जित धनराशि में से ब्याज भुगतान क्षमता से संबंधित होता है। इसे शुद्ध प्रचालन रोकड़ अंतः प्रवाहों पर ब्याज व्याप्ति की गुणांक के रूप में व्यक्त किया जाता है। दूसरे शब्दों में ,

ब्याज व्याप्ति अनुपात = शुद्ध प्रचालन रोकड़ अंतः प्रवाह/ऋण प्रभार

शुद्ध प्रचालन रोकड़ अंतः प्रवाहों की गणना की चर्चा 'रोकड़ प्रवाह विवरण' अध्याय में करेंगे।

3.4.2.1 ऋण-समता अनुपात

यह अनुपात उपक्रम के दीर्घकालीन ऋणों एवं समता के बीच संबंध दर्शाता है। इस अनुपात द्वारा एक उपक्रम के ऋण स्तर का पता चलता है।

दीर्घकालीन ऋणदाता, व्यावसायिक संस्था में निवेशित बाहरी दीर्घकालीन ऋणों एवं स्वामित्व कोष की स्थिति के लिए उत्सुक रहते हैं। इस प्रकार के संबंध को स्थापित करके वे एक समय बिंदु पर यह जांचते

हैं कि दीर्घकालीन ऋणों की तुलना में स्वामियों का अंश कितना है। दीर्घकालीन ऋणों की परिपक्वता अवधि सामान्यतया एक वर्ष से अधिक होते है। इनमें ऋण-पत्र, बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं से प्राप्त ऋण तथा सार्वजनिक जमा शेष सम्मिलित होते है। समता (जिसे अंशदाता कोष कहा जाता है) में समता अंश पूँजी, अधिमानी अंश पूँजी, सामान्य संचय, पूँजीगत संचय, प्रतिभूति अधिमूल्य खाते का शेष तथा वे समस्त संचय एवं अधिशेष शामिल होते हैं जिनपर अंशधारियों का अधिकार है। समता की गणना हेतु फुटकर व्ययों तथा लाभ एवं हानि खाते के नाम शेष को घटा दिया जाता है। ऋण-समता अनुपात को निम्न प्रकार व्यक्त किया जा सकता है :

$$\text{ऋण-समता अनुपात} = \frac{\text{ऋण}}{\text{समता}}$$

पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड

31 मार्च 2001 के तुलन-पत्र का अंश

अंशधारी कोष		*2001*		*2000*
पूँजी	6,075.57		2,025.19	
संचय एवं अधिशेष	37,356.31	**43,431.68**	35,176.32	**37,201.51**
ऋण कोष				
सुरक्षित ऋण	4.58			1,275.30
असुरक्षित ऋण	1,310.00	1,314.58	–	
		44,746.46		**38,476.83**

	2001	*2000*
$\frac{\text{ऋण}}{\text{समता}}$	$= \frac{1,314.58}{43,431.88} = 0.030$	$\frac{1,275.32}{37,201.51} = 0.034$

जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि यह अनुपात व्यावसायिक संस्था की ऋण शोधन-क्षमता के स्तर को आंकता है। अत: इस अनुपात द्वारा दीर्घकालीन ऋणदाता को मूलधन की सुरक्षा की जानकारी प्राप्त होती है। यदि ये अनुपात ऊँचा होता है तब संस्था को ऋण देने में अधिक जोखिम होता है। इस अनुपात के लिए अंगूठे टेक का सिद्धांत 2:1 है। इससे आशय है कि ऋण समता से दो गुणा हो सकता है। हालांकि, यह अनुपात, अन्य अनुपातों के समान, उद्योग दर उद्योग भिन्न रहता है। उदाहरणस्वरूप, तेल कंपनियों की दशा में, जहाँ कि आमदों में स्थिरता पाई जाती है। यह अनुपात 2:1 से कहीं ज्यादा होता है। इसके विपरीत, भारी उपकरण तथा मशीनरी निर्माण उद्योगों में, जहाँ कि आमद और रोकड़ प्रवाह में अस्थिरता पाई जाती है, यह अनुपात निम्न होता है।

पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड का ऋण-समता अनुपात बहुत कम है और वर्ष 2000 की तुलना में इसमें कोई बदलाव नहीं आया है। इसका अर्थ यह है कि यदि यह भविष्य में व्यवसाय बढ़ाना चाहती है तो पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड के पास दीर्घकालीन ऋण प्राप्ति क्षमता अधिक है। पंजाब टैक्ट्रर्स लिमिटेड प्रबंध का वित्तीय उपागम संकीर्ण हैं क्योंकि यह अपनी वृद्धि की वित्तपूर्ति मुख्यतया स्वामी स्रोतों से करती है। इस अनुपात को स्वामियों के परिप्रेक्ष्य से भी देखा जा सकता है। सामान्य रूप में, समता के संबंध में ऋण/देयताओं का जितना अधिक उपयोग किया जाएगा उतना ही वित्तीय उत्तोलक अधिक होगा। उत्तोलक स्थायी प्रभार प्रतिभूतियों जैसे, ऋणपत्रों के प्रयोग का परिणाम है। यह स्वामियों के प्रतिफल व जोखिम को प्रभावित करती है। वित्तीय उत्तोलक में थोड़ी मात्रा में वृद्धि के परिणामस्वरूप अधिक भावी प्रतिफल और जोखिम होता है।

इस दृष्टिकोण से, पंजाब टैक्ट्रर्स लिमिटेड स्वामियों के लिए वित्तीय उत्तोलक के लाभ नहीं प्राप्त करती क्योंकि इसका वित्तीय उत्तोलक बहुत कम है। पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड स्वामियों की आय को ऋण-समता अनुपात में वृद्धि करके बढ़ा सकती है।

3.4.2.2 कुल परिसंपत्तियों का ऋणों से अनुपात

यह अनुपात दीर्घकालीन ऋण द्वारा वित्तपूर्ति में कुल परिसंपत्तियों के भाग की गणना करता है। यह अनुपात कम होगा यदि संगठन की उन गतिविधियों के लिए जो कि लाभ कमाने के उद्देश्य से की जा रही हैं, में ऋण लिए गए कोषों का उपयोग करती हैं। इस अनुपात की गणना इस प्रकार की जाती है :

$$\text{कुल परिसंपत्तियों का ऋणों से अनुपात} = \frac{\text{कुल परिसंपत्तियों का योग}}{\text{कुल ऋण का योग}}$$

पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड
31 मार्च 2001 के तुलन-पत्र से लिए गए अंश

(रु. लाख में)

		2001		2000
कोषो के स्रोत				
अंशधारी कोष :				
पूँजी	6,075.57		2.025.19	
संचय एवं अधिशेष	37.356.31	43.431.68	35.176.32	37.201.51
ऋण कोष :				
सुरक्षित ऋण	4.58		-	
असुरक्षित ऋण	1.310.00	1.314.58	1.275.32	1.275.32
योग		**44,746.46**		**38,476.83**
कोषो का प्रयोग				
स्थायी परिसंपत्तियाँ :				
सकल खंड	26,214.84		24,413.58	
घटाया : ह्रास	(10,726.89)		(9,054.04)	
शुद्ध खंड	15,487.95		15,359.54	
कार्य में प्रयुक्त पूँजी/अग्रिम	758.26		664.59	
एवम् निर्माण				
पूँजी	66.53	16,312.74	84.38	16,108.51
विनियोग		773.46		1,084.92
चालू परिसंपत्तियाँ				
ऋण एवम् अग्रिम :				
रहतिया	9,687.87		11,968.50	
विविध देनदार	29,828.64		8,827.90	
रोकड़ एव बैंक शेष	419.64		1,839.79	
ऋण एवं अग्रिम	5,955.51		7,109.68	
योग		45,891.66		29,745.87
कुल परिसंपत्तियाँ		**62,977.86**		**46,939.30**
घटाया : चालू देयताएँ एवं प्रावधान		18,231.40		8,462.47
		44,746.46		**38,476.83**

PTL के अनुपात की गणना निम्न प्रकार की जाएगी :

(रु. लाख में)

2001	2000
$\frac{62,977.86 \text{ रु.}}{1,314.58 \text{ रु.}} = 47.9$	$\frac{46,939.30 \text{ रु.}}{1,275 \text{ रु.}} = 36.8$

उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि बाहरी ऋणों के द्वारा PTL में कुल परिसंपत्ति आधार में गिरावट आई है। इस प्रकार हम दीर्घकालीन ऋणदाताओं द्वारा कुल परिसंपत्तियों के वित्त का प्रतिशत ज्ञात कर सकते हैं। PTL के लिए यह प्रतिशत इस प्रकार होगा : (रु. लाख में)

2001	2000
$\frac{1,314.5 \text{ रु.}}{62,977.86 \text{ रु.}} \times 100 = 2.1\%$	$\frac{1,275.32 \text{ रु.}}{46,939.30 \text{ रु.}} \times 100 = 2.7\%$

उपरोक्त से स्पष्ट है कि वर्ष 2001 में PTL की कुल परिसंपत्तियाँ 2.1% से वित्त की गई थी जबकि वर्ष 2000 में यह प्रतिशत 2.7% था।

3.4.2.3 स्वामित्व अनुपात

यह अनुपात समता और कुल परिसंपत्तियों के मध्य संबंध स्थापित करता है। यह अनुपात इस ओर सकेंत देता है कि कुल परिसंपत्तियों का कितना भाग समता द्वारा वित्त किया जाता है। इस अनुपात का सूत्र है:

$$\text{स्वामित्व अनुपात} = \frac{\text{समता}}{\text{कुल परिसंपत्तियाँ}}$$

PTL के लिए इस अनुपात की गणना

(रु. लाख में)

2001	2002
$\frac{43,431.88 \text{ रु.}}{62,977.86 \text{ रु.}} = 0.69$ अथवा 69%	$\frac{37,201.51 \text{ रु.}}{46,939.30 \text{ रु.}} = 0.79$ = 79%

उपरोक्त से स्पष्ट है कि वर्ष 2001 में PTL का कुल परिसंपत्ति खंड 69% समता द्वारा वित्त हुआ है। वर्ष 2000 में यह प्रतिशत 79% था। इससे आशय है कि एक वर्ष में 34.17%

$\left(\frac{62,977.86\text{रु.} - 46,939.30 \text{ रु.}}{4,693.30 \text{ रु.}} \times 100\right)$ की कुल परिसंपत्ति में वृद्धि 16.75%

$\left(\frac{43,431.88-37201.51 \text{ रु.}}{37,201.51 \text{ रु.}} \times 100\right)$ समता से वित्त की गई है। शेष वृद्धि प्रमुखतः चालू दायित्वों के माध्यम से हुई है जो कि 115.44 % $\left(\frac{18,231.40-8,462.47 \text{ रु.}}{8,462.47 \text{ रु.}} \times 100\right)$ है।

कुल परिसंपत्तियों के वित्त हेतु दीर्घकालीन ऋणों की भूमिका बहुत कम है। यह बिंदु कुल परिसंपत्ति-ऋण अनुपात से भी स्पष्ट हुआ है।

3.4.3 क्रियाशीलता अनुपात

यह अनुपात फर्म की परिसंपत्तियों के प्रबंधन कुशलता पर टिप्पणी करने में सहायता करता है। परिसंपत्तियों की बिक्री में परिवर्तन की गति या तीव्रता का ज्ञान क्रियाशीलता अनुपातों द्वारा किया जा सकता है। किसी उपक्रम की क्रियाशीलता उसके द्वारा अर्जित विक्रय मात्रा की योग्यता से परिलक्षित होती है। अतः एक निश्चित समयावधि में की गई बिक्री के संबंध में विभिन्न परिसंपत्तियों की कुशलता पर टिप्पणी की जा सकती है। एक साधारण उदाहरण द्वारा इसकी व्याख्या करते है :

	कंपनी 'क'	*कंपनी 'ब'*
स्थायी परिसंपत्तियाँ	1,000 रु.	2,000 रु.
विक्रय	10,000 रु.	18,000 रु.

इन आँकड़ो के आधार पर कोई भी यह मत दे सकता है कि कंपनी 'क' अधिक कुशल है क्योंकि 1 रु. के स्थायी परिसंपत्तियों में विनियोग पर वह 10 रु. का विक्रय करती है जबकि कंपनी 'ब' 9 रु. का ही विक्रय करती है। इससे कोई भी यह समझ सकता है कि जितनी अधिक पुनरावृत्ति होगी, कुशलता भी उतनी ही अधिक होगी। निम्न भाग में कुछ महत्वपूर्ण क्रियाशीलता अनुपातों का वर्णन किया जा रहा है।

10.4.3.1 रहतिया आवर्त अनुपात

रहतिया चालू परिसंपत्तियों का एक घटक है। रहतिया तीन प्रकार का होता है — कच्चे माल के रूप में, कार्य में प्रयुक्त माल के रूप में एवं तैयार माल के रूप में। कच्चे माल एवं कार्य में प्रयुक्त रहतिया को उत्पादन के निरंतर प्रवाह को बनाए रखने के लिए रखा जाता है। निर्मित या तैयार माल ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रखा जाता है। सामान्यतया तैयार माल का रहतिया रखा जाता है। रहतिया आवर्त अनुपात रहतिया विक्रय में परिवर्तन कुशलता का मापक है। इस अनुपात को इस प्रकार दिखाया जा सकता है :

$$\text{रहतिया आवर्त अनुपात} = \frac{\text{विक्रय}}{\text{औसत रहतिया}}$$

सामान्यतया रहतिया का मूल्यांकन लागत मूल्य पर किया जाता है। हर के साथ तार्किक संबंध के उद्देश्य से अंश भी एक लागत चर होनी चाहिए। विक्रय में लाभ सम्मिलित होता हैं। इस लाभ घटक के बिना बेचे गए माल के लागत मूल्य की गणना की जाती है और तब रहतिया आवर्त अनुपात निम्न होगा :

$$\text{रहतिया आवर्त अनुपात} = \frac{\text{बेचे गए माल का लागत मूल्य}}{\text{औसत रहतिया}}$$

$$\text{औसत रहतिया} = \frac{\text{प्रारंभिक रहतिया + अंतिम रहतिया}}{2}$$

औसत रहतिया की गणना वर्षारंभ और वर्षांत रहतिया के शेषों के योग को 2 से भाग करके की जाती है। बेचे गए माल के लागत मूल्य आंकड़े भारतीय कंपनियों के खातों में अलग से उपलब्ध नहीं होते और एक बाहरी विश्लेषक की पहुँच बेचे गए माल के लागत मूल्य तक नहीं होती। अत: वे विक्रय को अंश के रूप में प्रयोग करते है। जबकि प्रबंधकों को इस अनुपात की गणना के लिए विक्रय के लागत मूल्य का ही प्रयोग करना चाहिए। विक्रय मूल्य का प्रयोग हमेशा शुद्ध उत्पादन शुल्क घटाकर करना चाहिए। इन शेषों की अनुपस्थिति में वर्ष के अंत में दिए गए शेषों का भी प्रयोग किया जा सकता है।

पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड
31 मार्च, 2001 की समाप्ति तक तुलन-पत्र
एवं लाभ-हानि खाते के अंश

	2001(रु.)	*2000 (रु.)*
परिचालक आगम	1,11,946.37	1,17,020.86
उत्पादन शुल्क	15,499.10	15,336.46
प्रचालन आगम (उत्पादन शुल्क घटाकर)	**96,447.27**	**1,01,684.40**
रहतिया	9,687.87	11,968.50

वर्ष 2001 के लिए पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड के रहतिया आवर्त अनुपात की गणना नीचे दी गई है। वर्ष 2000 के लिए इस अनुपात की गणना नहीं की जा सकती क्योंकि इसके लिए हमें वर्ष 1999 के अंतिम स्कन्ध शेष की आवश्यकता होगी। इस वार्षिक प्रतिवेदन में यह राशि उपलब्ध नहीं है।

$$\text{रहतिया औसत अनुपात} = \frac{\text{वि य}}{\frac{\text{प्रारंभिक रहतिया + अंतिम रहतिया}}{2}}$$

$$= \frac{96{,}447.27 \text{ रु.}}{\frac{11{,}968.50 + 9687.87}{2}}$$

$$= \frac{96,447.25\text{रु.}}{\frac{11,968.50+9,687.87}{2}}$$

= **8.9 गुणा**

यह 8.9 का अनुपात दर्शाता है कि पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड का रहतिया एक वर्ष में 8.9 बार विक्रय में परिवर्तित हुआ है। पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड के पिछले वर्षों के लिए इस अनुपात की गणना नहीं की जा सकती क्योंकि पर्याप्त आँकड़े उपलब्ध नही है। अतः समय शृंखला विश्लेषण भी नहीं किया जा सकता। इस अनुपात की आधारभूत प्रकृति के अनुसार यह जितना ऊँचा होगा उतना ही अच्छा होगा। यदि पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड का यह अनुपात सुधरते हुए 18 बार हो जाता है तो इसका अर्थ होगा कि रहतिया के उसी स्तर पर पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड ने वर्तमान विक्रय को दुगुना किया या रहतिया विनियोग को उस स्तर तक कम किया जिससे विक्रय स्तर में परिवर्तन हुआ और जो संगठन के लिए लाभदायक हैं। अतः यह अनुपात जितना अधिक होगा उतना ही अच्छा होगा। यह एक स्थिति विशेष पर निर्भर करता है कि रहतिया आवर्त अनुपात बहुत अधिक न हो जिसके परिणामस्वरूप रहतिया शेष न होने की स्थिति उत्पन्न हो जाए। इसका अर्थ यह है कि रहतिया की मात्रा इतनी कम हो जाएगी कि माल की पूर्ति के लिए ग्राहकों को मना करना पड़ेगा अर्थात् रहतिया के स्तर में इस सीमा तक कमी की जाए जिससे ग्राहकों को माल के निरंतर प्रवाह में नुकसान न हो। संगठन में अधिक रहतिया को रखने से अधिक लागत लगती है जिससे लाभ कम हो जाते है। एक दूसरे रूप में, अपर्याप्त रहतिया रखने से कम लागत लगती है किंतु यह रहतिया न होने पर विक्रय हानि की अवसर लागत को बढ़ाता है।

रहतिया आवर्त अनुपात को दिनों की अवधि में निम्न प्रकार परिवर्तित किया जा सकता है :

$$\text{रहतिया औसत अवधि} = \frac{\text{एक वर्ष में कुल दिन}}{\text{रहतिया आवर्त अनुपात}}$$

$$= \frac{365}{8.9} = 41 \text{ दिन}$$

इस विषय में रहतिया की 41 दिन की अवधि से तात्पर्य है कि इतने समय के लिए कार्यशील पूँजी का निवेश है। अतः औसत रूप में, रहतिया के रूप में लगी मुद्रा को 4 दिनों में विक्रय में परिवर्तित किया जा सकता हैं। यह रहतिया आवर्त अनुपात जब बढ़ता है तब रहतिया की औसत अवधि कम हो जाती है एवं रहतिया की औसत अवधि बढ़ने पर रहतिया आवर्त अनुपात कम हो जाता है।

3.4.4.2 देनदार आवर्त अनुपात

देनदार आवर्त अनुपात देनदारों को रोकड़ में परिवर्तित करने की कुशलता को मापता है। यह अनुपात देनदारों की गुणवत्ता एवं व्यवसाय के वसूली प्रयासों को दर्शाती है। इस अनुपात की गणना इस प्रकार की जाती हैं :

$$\text{देनदार आवर्त अनुपात} = \frac{\text{विक्रय}}{\text{औसत देनदार}}$$

$$\text{औसत देनदार} = \frac{\text{प्रारंभिक देनदार} + \text{अंतिम देनदार}}{2}$$

इस अनुपात के अंश में उधार विक्रय मूल्य होना चाहिए क्योंकि हर तार्किक रूप से उधार विक्रय से संबंधित है। देनदार सिर्फ उधार विक्रय से उत्पन्न होते है। जबकि निगमित खातों में उपलब्ध आँकड़ो में उधार विक्रय के बारे में जानकारी अलग से नहीं दी होती हैं। अत: कुल विक्रय को अंश में लिया जा सकता है। औसत देनदारों की गणना के लिए वर्ष के प्रारंभ व अंत में दिए गए शेषों के योग को दो से भाग किया जाता है।

पंजाब ट्रैक्टर्स लिमिटेड

31 मार्च, 2001 की परिसंपत्ति पर लाभ-हानि खाता एवं तुलन-पत्र के अंश

(रु. लाख में)

	2001 (रु.)	*2000 (रु.)*
परिचालन से आगम	1,11,946.37	1,17,020.86
आबकारी शुल्क	15,499.10	15,336.46
परिचालन से आगम (आबकारी शुल्क कटौती के पश्चात शुद्ध)	**96,447.27**	**1,01,684.40**
विविध देनदार	29,828.64	8,827.90

PTL के लिए इस अनुपात की गणना वर्ष 2001 के लिए :

$$\text{देनदार आवर्त अनुपात} = \frac{\text{विक्रय}}{\text{प्रारंभिकदेनदार+अंतिमदेनदार}}$$

$$= \frac{96{,}447.27 \text{रु.}}{\frac{29828.64\text{रु.} + 8827.90\text{रु.}}{2}}$$

$$= \frac{96{,}447.27\text{रु.}}{19{,}328.27} = 5.0$$

इसका अर्थ यह है कि PTL के देनदारों की वसूली एक वर्ष में औसत 5 गुना रही है। जैसा कि 3.4.3.1 में वर्णित है, एक आवर्त अनुपात जितना अधिक होता है उतना लाभदायक होता है। जबकि, एक बहुत अधिक देनदार आवर्त अनुपात सामान्यतया कठोर साख नीति का संकेतक हैं और इस कारण विक्रय वृद्धि अवसरों, को जिसे उदार साख नीति द्वारा बढ़ाया जा सकता है, की हानि हो सकती हैं।

इस अनुपात को उन दिनों में भी परिवर्तित किया जा सकता है जो देनदारों से रोकड़ वसूली में लगते हैं। इसकी गणना इस प्रकार की जा सकती है।

$$\text{औसत वसूली} = \frac{\text{अवधि वर्ष में दिनों की संख्या}}{\text{देनदार आवर्त अनुपात}}$$

$$= \frac{365}{5.8} = 73 \text{ दिन}$$

इसका अर्थ है कि पंजाब ट्रैक्टर लिमिटेड के देनदारों की वसूली औसत 63 दिनों में होती है। इस अनुपात को अच्छी तरह समझने के लिए इसका एक समयावधि में अध्ययन किया जाए तथा इसकी तुलना उद्योग की सर्वोत्तम इकाई से या उद्योग औसत से की जानी चाहिए।

3.4.3.3 देय/आवर्त अनुपात

यह अनुपात लेनदारों के भुगतान करने की कुशलता दर्शाता है। सतर्कता के सिद्धांत के अनुसार देनदारों से भुगतान प्राप्त करने की गति से तेज लेनदारों के भुगतान गति नहीं होनी चाहिए। अत: सामान्यतया इस अनुपात की तुलना देनदार आवर्त अनुपात से करते हैं जिससे अपनी दायित्वों का भुगतान की गति का अवलोकन कर सकें। इस अनुपात का एक समयावधि तक एवं अपने प्रतियोगी के संबंध में भी अध्ययन करते है।

$$\text{देय आवर्त अनुपात} = \frac{\text{क्रय}}{\text{औसत लेनदार}}$$

$$\text{औसत लेनदार} = \frac{\text{प्रारंभिक लेनदार} + \text{अंतिम लेनदार}}{2}$$

इस अनुपात के अंश में वर्ष के दौरान की गई क्रय राशि एवं हर में औसत लेनदार लिये जाते हैं जो उधार क्रय से ही उत्पन्न हुए हैं।

पंजाब ट्रैक्टर लिमिटेड

वर्षांत मार्च 31, 2001 को तुलन-पत्र एवं लाभ-हानि खाता के अंश

(रु. लाख में)

	2001	*2000*
कच्चा माल एवं उपकरणों का क्रय अनुसूची-I	63,645.50	9,589.05
विविध लेनदार (अनुसूची-II)	11,356.56	2,714.60

$$\text{लेनदार आवर्त अनुपात} = \frac{\text{क्रय}}{\frac{\text{प्रारंभिक लेनदार} + \text{अंतिम लेनदार}}{2}}$$

$$= \frac{63{,}645.56\text{रु.}}{7{,}035.58\text{रु.}} = 9.05$$

देय आवर्त अनुपात को एक वर्ष के दिनों से भाग करके दिनों की संख्या में भी परिवर्तित किया जा सकता है।

$$\text{औसत भुगतान अवधि} = \frac{\text{वर्ष में कुल दिन}}{\text{लेनदार आवर्त अनुपात}} = \frac{365}{9.05} = 40.3 \text{ दिन}$$

PTL अपने लेनदारों का भुगतान औसत 41 दिन के बाद करती है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि व्यावहारिक रूप से एक दिन की भिन्न संख्या का अर्थ अगला दिन होगा। अत:, 40.3 दिन को 41 दिन माना जाएगा। PTL की औसत वसूली अवधि जिसकी गणना पहले की जा चुकी है, 73 दिन है। इसका अभिप्राय यह है कि PTL लेनदारों का भुगतान, देनदारों के देने से पहले कर रही है।
यह अनुपात PTL के दो वर्षों के लिए है :

2001	*2000*
$= \frac{\text{Rs. } 1,11,946.37}{\text{Rs. } 27,660.26} = 4.0$	$= \frac{\text{Rs. } 1,17,020.86}{\text{Rs. } 21,283.40} = 5.5$

इन दो वर्षों के अनुपातों से यह निष्कर्ष निकलता है कि कार्यशील पूँजी आवर्त 2001 में कम हो गया है। PTL 2000 की तुलना में वर्ष 2001 में कार्यशील पूँजी की उतनी ही विनियोजित राशि में कम विक्रय आगम उपाय किए है। इसे प्रबंधकों के ध्यान की आवश्यकता है।

3.4.3.4 कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात

कार्यशील पूँजी से आशय चालू परिसंपत्ति में निवेश से है। इसे कार्यशील पूँजी की सकल अवधारणा भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त, एक अन्य कार्यशील पूँजी अवधारणा है जिसे शुद्ध कार्यशील पूँजी कहते हैं। शुद्ध कार्यशील पूँजी चालू परिसंपत्ति और चालू देयताओं के मध्य अंतर को कहा जाता है।

विश्लेषकगण कार्यशील पूँजी और विक्रय संबंध-स्थापित करने की कोशिश करते हैं। इस अनुपात से हम यह जान सकते हैं कि संस्था द्वारा निवेशित 1 रुपया कितना विक्रय अर्जित करता है। यह अनुपात यदि उच्च कोटि में होता है तो संस्था के लिए अच्छा माना जाता है।

$$\text{कार्यशील पूँजी आवर्त} = \frac{\text{विक्रय}}{\text{शुद्ध कार्यशील पूँजी}}$$

पंजाब ट्रेक्टर लिमिटेड
वर्षांत मार्च 31, 2001 को तुलन-पत्र एवं लाभ व हानि खाता के अंश

		2001		2000
परिचालन से आमद		1,11,946.37		1,17,020.86
उत्पादन कर		(15,499.10)		(15,336.46)
परिचालन से आमद (शुद्ध उत्पादन कर)		**96,447.27**		**1,01,684.40**
चालू परिसंपत्ति ऋण एवं अग्रिम				
रहतिया	9,687.87		11,968.50	
विविध देनदार	29,828.68		8,827.90	
रोकड़ एवं बैंक शेष	419.64		1,839.79	
ऋण एव अग्रिम	5,955.51		7,109.68	
घटाया : चालू दायित्व एवं प्रावधान		45,891.66		29,745.87
शुद्ध चालू परिसंपत्तियाँ		18,231.40		8,462.47
शुद्ध कार्यशील पूँजी		**27,660.26**		**21,283.40**

PTL का यह अनुपात 2 वर्षों के लिए है :

2001	2000
$= \frac{96,447.27}{27,660} = 3.5$	$= \frac{1,01,684.40}{21,283.40} = 4.8$

इन दो वर्षों के अनुपात से यह निष्कर्ष निकलता है कि कार्यशील पूँजी आवर्त्त में गिरावट आई है। वर्ष 2001 में वर्ष 2000 की तुलना में PTL के विक्रय आमद में कमी आई है। यह प्रबंध के द्वारा ध्यान बिंदु है।

3.4.4 लाभोपार्जन अनुपात

हर व्यवसाय उपक्रम के लिए लाभ महतत्त्वपूर्ण है। ऐसा इसलिए है क्योंकि बिना लाभ के एक व्यवसाय को पूँजी को एकत्रित करने, लेनदारों व स्वामियों को उनके कोषों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में कठिनाई होती है। लाभ प्रबंध की नीतियों एवं निर्णयों के मापक का कार्य करता है। लाभोपार्जन क्षमता को नापने के कई तरीके हैं। यहाँ हम केवल सकल लाभ अनुपात एवं परिचालन अनुपात का ही व्याख्या करेंगे।

3.4.4.1 सकल लाभ अनुपात

विक्रय व बेचे गए माल की लागत पर आधिक्य सकल लाभ होता है। सकल लाभ अनुपात सकल लाभ का

के खरीदे/बनाए गए माल की लागत पर विक्रय की अधिकता है। यह आधिक्य अन्य परिचालन (प्रशासनिक, विक्रय एवं वितरण व्ययों), ऋणों पर ब्याज, एवं आय-कर के भुगतान के लिए उपलब्ध होता है। इन खर्चों के घटाने पर शेष राशि शुद्ध लाभ होती है।

सकल लाभ अनुपात उन बाज़ार स्थितियों जिनमें कि व्यवसाय किया जा रहा है, एवं उत्पादन करने व बेचने की गतिविधियों की कुशलता को दर्शाती है। अतः एक संस्था सकल-लाभ अनुपात को बेचे गए माल की लागत में कमी लाकर बढ़ा सकती है।

$$\text{सकल लाभ अनुपात} = \frac{\text{सकल लाभ}}{\text{विक्रय}} \times 100$$

एक व्यापारिक संस्था के लिए

बेचे गए माल की लागत = प्रारंभिक रहतिया + क्रय + प्रत्यक्ष व्यय - अंतिम रहितया

एक निर्माण संस्था के लिए :

बेचे गए माल की लागत = निर्मित माल का प्रारंभिक माल + निर्मित माल की लागत – अंतिम रहतियां

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि फर्म की उच्च संवेदनशील प्रतिस्पर्धा के कारण सकल लाभ अनुपात की गणना फर्म के द्वारा जनसाधारण के लिए प्रकाशित खाते से नहीं की जा सकती अतः इसकी गणना प्रबंध द्वारा आंतरिक निर्णयों, विक्रय मूल्य निर्धारण इत्यादि के लिए की जाती है।

पब्लिक लिमिटेड कंपनियों के लिए जैसे PTL, वार्षिक खाते, निर्माण खाते अथवा व्यापारिक खातों के बारे में जानकारी नहीं देते। अतः सकल अनुपात की गणना के लिए अतिरिक्त जानकारी की आवश्यकता होती है जिसे PTL के खातों से प्राप्त करना पड़ता है। इस स्थिति में PTL के लिए सकल अनुपात की गणना नहीं की गई है। जबकि, अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए अधोलिखित आंकड़ों का उपयोग किया जा सकता है।

आर एंड ब्रदर्स	रु.
1 अप्रैल 2000 को प्रारंभिक रहतिया	2,00,000
वर्ष के दौरान किया गया क्रय	15,00,000
वर्ष के दौरान किया गया विक्रय	20,00,000
माल क्रय भाड़ा	25,375
मजदूरी (चढ़वाई/उतरवाई प्रभार)	2,585
अंतिम रहतिया 31 मार्च, 2000 को	2,25,000

सकल लाभ = विक्रय – बेचे गए माल की लागत

= विक्रय – [प्रारंभिक रहतिया + क्रय + आंतरिक ढुलाई + मजदूरी - अंतिम रहतिया]

= 20,00,000 रु. – [2,00,000 रु. + 15,00,000 रु. + 25,375 रु. + 2,585 रु. – 2,25,000 रु.]

= 20,00,000 - [15,02,960]

सकल लाभ 4,97,040 रु.

सकल लाभ अनुपात = सकल लाभ / विक्रय × 100

= 4,97,040 रु. /20,00,000 रु. × 100

= 24.9%

सकल लाभ अनुपात (24.9%) दर्शाता है कि विक्रय आगम 100 रु. में से 75.10 रु. बेचे गए माल की लागत पर खर्च किए गए हैं। शेष 24.90 रु. परिचालन व्यय यथा प्रशासनिक, विक्रय एवं वितरण व्यय, ब्याज प्रभार एवं आय कर के भुगतान के लिए उपलब्ध है। इन खर्चों के पश्चात् शेष राशि स्वामियों की आय है।

3.4.4.2 परिचालन अनुपात

यह परिचालन व्ययों से विक्रय का अनुपात है। परिचालन व्ययों में कच्चे माल की लागत, निर्मित एवं अर्ध-निर्मित माल, निर्माण खर्च, प्रशासनिक व्यय, विक्रय एवं वितरण व्यय (ह्रास शामिल कर) सम्मिलित होते हैं। परिचालन व्ययों में ब्याज प्रभार एवं आय-कर शामिल नहीं होते है। दूसरे शब्दों में, परिचालन व्ययों में वे सभी व्ययों को सम्मिलित किया जाता हैं जो व्यवसाय उपक्रम के परिचालन से संबंधित नहीं है। यदि एक निर्माण अथवा व्यापारिक संस्था ने बाह्य निवेश (जिसे स्थिति विवरण में निवेश के अंतर्गत दिखाया जाता है।) इससे उत्पन्न कोई आय को भी परिचालन आगम में शामिल नहीं किया जाता है। इसी प्रकार इनसे संबंधित लागत जिसमें मूल्य में कमी भी सम्मिलित है को परिचालन व्यय में शामिल नहीं करते है।

$$\text{परिचालन अनुपात} = \frac{\text{परिचालन व्यय}}{\text{विक्रय}} \times 100$$

पंजाब ट्रैक्टर लिमिटेड

वर्षांत मार्च 31,2001 को लाभ एवं हानि खाता के अंश

(रु. लाख में)

	2001	*2000*
कच्चा माल, निर्मित व अर्ध-निर्मित माल	65,126.87	69,643.81
परिचालन एवं प्रशासनिक व्यय *(अनुसूची J)*	13,047.32	12,508.45
ह्रास	1,691.90	1,598.17
प्रपत्रों के मूल्य में गिरावट का प्रावधान *(अनुसूची J)*	311.46	0
परिचालन से आमद	1,11,946.37	1,17,020.86
उत्पादन कर	15,499.10	15,336.46
परिचालन से आमद (शुद्ध उत्पादन कर)	**96,447.27**	**1,01,684.40**

अनुसूची J (जिसे पिछले अध्याय में सूचीबद्ध किया है) जिसमें परिचालन, प्रशासनिक एवं अन्य व्ययों की व्याख्या दी गई है से स्पष्ट होता है कि सूची में दिए गए सभी व्यय परिचालन व्यय हैं 'निवेश के मूल्य में गिरावट का प्रावधान' को छोड़कर। 'निवेश के मूल्य में गिरावट का प्रावधान' एक परिचालन व्यय नहीं है। यह PTL के परिचालन से संबंधित नहीं है। अतः 2001 के लिए परिचालन व्ययों की गणना के लिए 311.46 लाख रु. को घटा दिया गया है। अतः PTL के 2 वर्षों के परिचालन व्यय निम्नवत होंगे :

परिचालन व्यय	=	कच्चे माल की लागत + निर्मित व अर्ध-निर्मित माल परिचालन व प्रशासनिक व्यय वितरण व्यय – वित्त प्रभार + ह्रास
2001 के लिए	=	65,126.87 रु. + (10,347.32 – 311.46) + 691.90
	=	76,854.63 रु.
2000 के लिए	=	69,643.81 रु. + (12,508.45 – 0)
		+ 1,598.17 रु.
	=	83,750.43 रु.

	2001	2000
परिचालन अनुपात	$= \frac{\text{रु. } 76,854.63}{\text{रु. } 96,447.27} \times 100$	$= \frac{\text{रु. } 83,750.43}{\text{रु. } 1,01,684.40} \times 100$
	= 78.6 %	= 82.4%

PTL का परिचालन अनुपात 2001 में कम हो रहा है। यह 2001 में 78.6% है। यह दर्शाता है कि विक्रय का लगभग 80% बेचे गए माल की लागत एवं परिचालन व्यय के रूप में उपयोग किया गया है। और 20% ब्याज प्रभारों, करों एवं अंशधारियों की आय के लिए शेष है।

यह अनुपात जितना कम होगा, उतना ही अच्छा होगा। क्योंकि अधिक परिचालन अनुपात के कारण कर, ब्याज एवं लाभांश के लिए कम राशि बचती है। इस अनुपात को भालि-भांति समझने के लिए एक समयावधि में इसके व्यवहार का अध्ययन करना चाहिए। यह ध्यान देने योग्य है कि समान व्यासायिक उपक्रम जैसे जीरोक्स कंपनी, कंप्यूटर हार्डवेयर कंपनी, इन्टरनैट सर्विस प्रोवाईडर प्रारंभ में मशीनों के विक्रय से आय-अर्जन करती हैं। परंतु बाजार की संतृप्ति के कारण पुर्जों के विक्रय, रख-रखाव वार्षिक आदि द्वारा विक्रय आगम प्राप्त करती है। इस विषय में, इस प्रकार की गतिविधियों से आय, परिचालन की आय का हिस्सा बनेंगी। सेवाओं एवं उत्पादों के वर्गीकरण का उत्पाद-खण्ड विश्लेषण करते समय एक व्यावसायिक संस्था की बदलती हुई प्रकृति का गहरा निरीक्षण किया जा सकता है। कभी-कभी व्यवसाय यह अनुभव करती है कि व्यवसाय की मुख्य इकाई लाभोपार्जन नहीं कर पा रही है एवं वे तकनीक को किराए पर ले सकते हैं।

उदाहरण 1

(अ) यदि चालू अनुपात 2.5 गुना है एवं चालू दायित्व 27,000 रु. हैं। तो चालू परिसंपत्तियों की गणना कीजिए।

कीजिए।

(ब) चालू दायित्वों की गणना कीजिए। यदि चालू संपत्तियाँ 1,05,000 रु. एवं चालू अनुपात 3 गुना है।

(स) यदि चालू दायित्व 35,000 रु. हैं। चालू अनुपात 3.25 गुना तथा तरल अनुपात 2.75 गुना है, तो चालू परिसंपत्तियों, तरल परिसंपत्तियों एवं रहतिया की गणना कीजिए।

हल

(अ) चालू परिसंपत्तियाँ $= \dfrac{\text{चालू परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू देयताएँ}}$

2.5 $= \dfrac{\text{चालू परिसंपत्तियाँ}}{\text{रु. } 27{,}000}$

चालू परिसंपत्तियाँ $=$ रु. $27{,}000 \times 2.5$

$=$ **रु. 67,500**

(ब) चालू अनुपात $= \dfrac{\text{चालू परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू देयताएँ}}$

3 $= \dfrac{\text{रु. } 1{,}05{,}000}{\text{चालू देयताएँ}}$

चालू देयताएँ $= \dfrac{\text{रु. } 1{,}05{,}000}{3}$

$=$ रु. 35,000

(स) चालू अनुपात $= \dfrac{\text{चालू परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू देयताएँ}}$

3.25 $= \dfrac{\text{चालू परिसंपत्तियाँ}}{\text{रु. } 35{,}000}$

चालू परिसंपत्तियाँ $=$ 35,000 रु. $\times$ 3.25

$=$ **1,13,750 रु.**

तरल अनुपात $= \dfrac{\text{तरल परिसंपत्तियाँ}}{\text{चालू देयताएँ}}$

2.75 $= \dfrac{\text{तरल परिसंपत्तियाँ}}{\text{रु. } 35{,}000}$

तरल परिसंपत्तियाँ $=$ 35,000 रु. $\times$ 2.75

$=$ **96,250 रु.**

रहतिया $=$ चालू परिसंपत्तियाँ – तरल परिसंपत्तियाँ

$=$ 1,13,750 रु. – 96,250 रु. $=$ **17,500 रु.**

उदाहरण 2

ज्ञात करें : (i) ऋण समता अनुपात
(ii) स्वामित्व अनुपात

समता अंश पूँजी	75,000 रु.
संचय एवं अधिशेष	20,000 रु.
ऋणपत्र	40,000 रु.
ICICI से ऋण	30,000 रु.
चालू देयताएँ	15,000 रु.
स्थायी परिसंपत्तियाँ	82,000 रु.
ख्याति	48,000 रु.
चालू परिसंपत्तियाँ	50,000 रु.

हल

(i) ऋण समता अनुपात $= \frac{\text{ऋण}}{\text{समता}}$

$$= \frac{\text{ऋणपत्र + ICICI से ऋण}}{\text{समता अंश पूँजी + संचय एवं अधिशेष}}$$

$$= \frac{70{,}000}{95{,}000}$$

= **0.74 गुणा**

उदाहरण 3

रहतिया आवर्त अनुपात 2.75 गुणा है। विक्रय 75,000 रु. है। रहतिये का प्रारंभिक शेष अंतिम शेष से 7,000 रु. अधिक है। रहतिये का प्रारंभिक व अंतिम शेष ज्ञात करें।

हल

स्कंध आवर्त अनुपात $= \frac{\text{विक्रय}}{\text{औसत रहतिया}}$

औसत रहतिया $= \frac{75{,}000}{3}$

औसत रहतिया = 25,000 रु.

कुल रहतिया	= 25,000 रु. × 2 = 50,000 रु.
मान लीजिए प्रारंभिक रहतिया	= x
अंतिम रहतिया	= x – 7,000 रु.
कुल रहतिया	= x + (x – 7,000 रु.)
50,000 रु.	= x + (x – 7,000 रु.)
2x	= 57,000 रु.
x	= 28,500 रु.
अतः प्रारंभ में रहतिया	= 28,500 रु.
अंत मे रहतिया	= 28,500 रु. – 7,000 रु.
अंतिम रहतिया	= 28,500 रु.

उदाहरण 4

अधोलिखित आँकड़ों से कार्यशील-पूंजी आवर्त अनुपात की गणना कीजिए

देयताएँ	*(रु.)*
अंश पूँजी	2,00,000
12% ऋणपत्र	1,60,000
संचय + अधिशेष	40,000
चालू देयताएँ	1,40,000
योग	5,40,000
परिसंपत्तियाँ	
स्थायी परिसंपत्तियाँ	3,40,000
चालू परिसंपत्तियाँ	2,00,000
योग	**5,40,000**

वर्ष के दौरान शुद्ध विक्रय 2,70,000 रु.

हल

कार्यशील पूँजी आवर्त्त अनुपात $= \dfrac{\text{शुद्ध विक्रय}}{\text{कार्यशील पूँजी}}$

कार्यशील पूँजी = चालू परिसंपत्तियाँ – चालू देयताएँ

= 2,00,000 रु.– 1,40,000 रु.

= 60,000 रु.

कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात $= \frac{\text{रु. } 2,70,000}{\text{रु. } 60,000}$

= 4.5 गुणा

उदाहरण 5

ज्ञात करें (i) देय आवर्त अनुपात
(ii) औसत भुगतान अवधि

	2000 रु.	*2001* रु.
वार्षिक क्रय	25,840	28,500
प्रारंभिक लेनदार	3,040	2,800
अंतिम लेनदार	2,680	4,200

हल

(i) देय आवर्त अनुपात $= \frac{\text{क्रय}}{\text{औसत लेनदार}}$

$$= \frac{25,840}{\frac{(3040 + 2680)}{2}} = \frac{28500}{\frac{(2800+4200)}{2}}$$

= 9.03 = 8.14

(ii) औसत भुगतान अवधि $= \frac{\text{वर्ष में कुल दिन}}{\text{देय आवर्त अनुपात}}$

औसत भुगतान अवधि

2000	*2001*
$= \frac{365}{9.03}$	$= \frac{365}{8.14}$
= 40 दिन	= 45 दिन

उदाहरण 6

निम्न सूचनाओं से ज्ञात करें :

(i) देनदार आवर्त अनुपात
(ii) औसत वसूली अवधि
(iii) देय आवर्त अनुपात
(iv) औसत भुगतान अवधि

दिया गया है :

	(रु.)
विक्रय	8.75,000
लेनदार	90,000
प्राप्य विपत्र	48,000
देय विपत्र	52,000
क्रय	4,20,000
देनदार	59,000

हल

(i) देनदार आवर्त अनुपात $= \dfrac{\text{विक्रय}}{\text{औसत देनदार}}$

$= \dfrac{8,75,000}{59,000 + 48,000^{*}}$

= 8 .18 गुणा

*** इस मद को 2 से भाग नहीं किया गया है कि वर्ष के आरंभिक देनदार एंव प्राप्य बिलो की राशी उपलब्ध नहीं है। अत: जब वर्ष के अंत में उपलब्ध आँकड़ों को उसी रूप में उपयोग किया जाता है।**

(ii) औसत वसूली अवधि $= \dfrac{365}{\text{देनदार आवर्त अनुपात}}$

औसत वसूली अवधि $= \dfrac{365}{8.18}$

= 45 दिन

(iii) देय आवर्त अनुपात $= \dfrac{\text{क्रय}}{\text{औसत लेनदार}}$

$= \dfrac{\text{क्रय}}{\text{लेनदार} + \text{देय विपत्र}}$

$= \dfrac{4,20,000}{90,000 + 52,000}$

$= \dfrac{4,20,000}{1,42,000}$

= 3 गुणा

(iv) औसत भुगतान अवधि $= \dfrac{365}{\text{देय भुगतान आवर्त्त अनुपात}}$

औसत भुगतान अवधि $= \dfrac{365}{3}$

= **122 दिन**

उदाहरण 7

निम्नलिखत सूचनाओं से सकल लाभ अनुपात और परिचालन अनुपात की गणना करें।

	(रु.)
विक्रय	3,40,000
बेचे गए माल की लागत	1,20,000
विक्रय व्यय	80,000
प्रशासनिक व्यय	40,000

हल

सकल लाभ = विक्रय - बिक्रय योग्य माल की लागत

= 3,40,000 रु.– 1,20,000 रु.

= 2,20,000 रु.

सकल लाभ अनुपात $= \dfrac{\text{सकल लाभ}}{\text{विक्रय}} \times 100$

$= \dfrac{2,20,000\text{रु.}}{3,40,000\text{रु.}} \times 100$

= 64. 71%

परिचालन व्यय = बेचे गए माल की लागत + विक्रय व्यय + प्रशासनिक व्यय

= 1,20,000 रु. + 80,000 रु. + 40,000 रु.

= 2,40,000 रु.

परिचालन व्यय $= \dfrac{2,40,000\text{रु.}}{3,40,000\text{रु.}} \times 100$

= 70.60%

उदाहरण 8

दो वर्षों के आजाद कं. लि. का लाभ व हानि खाता एवं तुलन-पत्र नीचे दिए गए हैं :

वर्षांत मार्च 31, 2001 का आज़ाद कं. लि. का तुलन-पत्र

(रु. लाख में)

		2000		*2001*
शुद्ध विक्रय		3,75,000		4,20,000
घटाया : बेचे गए माल की लागत	1,08,500		1,13,000	
प्रशासनिक व्यय	42,000		65,5000	
विक्रय व्यय	47,500	1,98,000	56,500	2,35,000
कर व ब्याज से पूर्व लाभ		1,77,000		1,85,000
घटाया : ब्याज		35,000		42,000
कर पूर्व लाभ		1,42,000		1,43,000
घटाया : कर हेतु प्रावधान		76,000		89,000
कर पश्चात् लाभ		66,000		54,000

वर्ष 2000-2001 के लिए आज़ाद कं. लि. का तुलन पत्र

(रु. लाख में)

	2000	*2001*
देयताएँ		
पूँजी	8,00,000	8,00,000
संचय + अधिशेष	3,50,000	3,00,000
दीर्घकालीन ऋण	8,20,000	98,000
लेनदार	54,000	46,000
देय विपत्र	23,000	26,000
योग	**13,09,500**	**12,70,000**

परिसंपत्तियाँ		
स्थायी परिसंपत्ति (शुद्ध)	4,62,000	5,04,000
प्रपत्र	2,42,500	1,33,000
देनदार	72,000	64,000
रहतिया	2,18,000	2,84,000
रोकड़ व बैंक शेष	3,15,000	2,85,000
योग	**13,09,500**	**12,70,000**

निम्नलिखित अनुपात ज्ञात करें तथा फर्म की शोधन क्षमता पर टिप्पणी दें। साथ ही परिचालन प्रबंध की कार्य कुशलता का विश्लेषण करें।

1. ऋण-समता अनुपात
2. स्वामित्व अनुपात
3. रहतिया आवर्त अनुपात
4. देनदार आवर्त अनुपात
5. कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात
6. कुल परिसंपत्ति-ऋण अनुपात

हल

1\. ऋण समता अनुपात $= \dfrac{\text{ऋण}}{\text{समता}} = \dfrac{\text{ऋण}}{\text{पूँजी + संचय + अधिशेष}}$

2000 — 2001

$= \dfrac{82,000}{80,000 + 3,50,000} = \dfrac{98,000}{8,00,000 + 3,00,000}$

$= \dfrac{82,000}{11,50,00} = \dfrac{98,000}{11,00,00}$

= **0.07 गुणा** = **0.09 गुणा**

2\. स्वामित्व अनुपात $= \dfrac{\text{समता}}{\text{कुल परिसंपत्तियाँ}}$

2000 — 2001

$= \dfrac{11,50,000}{13,09,500} = \dfrac{11,00,000}{12,70,000}$

= .878 **गुणा अथवा** 87.8 = .866 **गुणा अथवा** 86.6

3. रहतिया आवर्त अनुपात = $\frac{\text{विक्रय}}{\text{औसत रहतिया*}}$

* वर्ष के अंत में रहतिये के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है।

	2000	2001
	$= \frac{3,75,000}{2,18,000}$	$\frac{42,00,000}{2,84,000}$
	1.72 गुणा	1.47 गुणा

4. देनदार आवर्त अनुपात = $\frac{\text{विक्रय}}{\text{औसत देनदार*}}$

* वर्ष के अंत में देनदारों के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है।

	2000	2001
	$= \frac{3,75,000}{72,000}$	$\frac{42,00,000}{64,000}$
=	5.21 गुणा	= 6.56 गुणा

5. कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात = $\frac{\text{विक्रय}}{\text{शुद्ध कार्यशील पूँजी}}$

शुद्ध कार्यशील पूँजी = [(देनदार + रहतिया + रोकड़ व बैंक शेष – (लेनदार + देय विपत्र)]

कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात 2000

$$\frac{3,75,000}{72,000 + 2,18,000 + 3,15,000 - (54,000 + 23,500)} = \frac{3,75,000}{5,27,500}$$

= 0.71 गुणा

कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात 2001

$$= \frac{42,00,000}{64,000+2,84,000+2,85,000-(46,000+26,000)} = \frac{42,00,000}{5,61,000}$$

= 0.75 गुणा

व्याख्या

ऋण–समता अनुपात एवं स्वामित्व अनुपात एक व्यवसाय की शोधन–क्षमता से संबंधित हैं। एर्नोल्ड कं. लिमिटेड का ऋण–समता अनुपात बहुत कम है। पिछले वर्ष की तुलता में यह कुछ कम नहीं हुआ है। इस अनुपात में वर्ष 2001 में सूक्ष्म-वृद्धि दीर्घकालीन ऋणों में वृद्धि दर्शाती हैं। इसका अर्थ यह है कि एक संस्था वित्तीय उत्तोलक का लाभ नहीं ले पा रही है। दीर्घकालीन ऋणों एवं वित्तीय उत्तोलक के वृद्धि के माध्यम से एर्लोल्ड कंपनी लिमिटेड अपने स्वामियों की आय में वृद्धि कर सकती है। स्वामित्व अनुपात यह समझाने में मदद करता है। कि परिसंपत्तियों के कितने भाग को समता द्वारा निधि उपलब्ध है। यह अनुपात वर्ष 2001 में 86.6% है जिसका अर्थ है कि एर्नोल्ड कंपनी की कुल परिसंपत्तियों को 86.6% समता द्वारा निधि–प्रदान की गई है। वर्ष 2000 में यह 87.8% है।

रहतिया आवर्त अनुपात, देनदार आवर्त अनुपात एवं कार्यशील पूँजी अनुपात 'आवर्त अनुपात' की श्रेणी से संबंध रखते हैं। ये सभी अनुपात संस्था के विभिन्न परिसंपत्तियों द्वारा संचालित विक्रय की कार्यकुशलता पर टिप्पणी करने में सहायता करती हैं। वर्ष 2000 के 1.72 गुना की तुलना में कंपनी का रहतिया आवर्त अनुपात वर्ष 2000 में घटकर 1.47 गुणा हो गया है। इसका अर्थ यह है कि दी गई समयावधि में रहतिये के संदर्भ में कंपनी की कार्यकुशलता में कमी आती जा रही हैं। फलतः रहतिया अनुपात भी कम है। कम रहतिया आवर्त अनुपात का एक समयावधि में लगातार कम होना भविष्य में आने वाली परेशानियों/कठिनाइयों का सूधक है। निम्न रहतिया आवर्त–अनुपात के परिणामस्वरूप रहतिया का धीमा–आवर्त्त एवं अंत में (Non-moving) स्थायी रहतिया का होने से कोषों का (Blockade) रूक जाना है। वर्ष 2000 के 5.21 गुना देनदार आवर्त अनुपात की तुलना में यह सुधरकर वर्ष 2001 में 6.56 गुणा हो गया है। यह देनदारों से वसूली एवं उनकी के सुधार को प्रदर्शित करता है। वर्ष 2001 में कार्यशील-पूंजी आवर्त अनुपात में भी कुछ सुधार हुआ है।

समग्र रूप में, एश्नोल्ड कंपनी को यह सलाह दी जाती है कि व दीर्घ–कालीन ऋणों का अधिक उपयोग करे एवं अपनी कार्यशील पूंजी की आवृति की गति को बढ़ाए।

सारांश

1. *अनुपात विश्लेषण*

   अनुपात विश्लेषण एक व्यावसायिक संस्था की स्थिति विवरण तथा लाभ–हानी खाते में दिए गए आँकड़ों के बीच तार्किक संबंध स्थापित करके वित्तीय सुदृढ़ता एवं कमजोरी को पहचाने एवं प्राप्त परिणामों से सार्थक निष्कर्ष निकालने एवं उनका व्याख्यान करने की प्रक्रिया है।

2. *अनुप्रस्थ एवं समय-शृंखला विश्लेषण*

   अनुप्रस्थ विश्लेषण में, एक संस्था के अनुपातों को एक समय विंदु पर उसके प्रतियोगियों एवं व्यवसाय के औसत तुलना की जाती है। समय-शृंखला विश्लेषण एक व्यावसायिक संस्था की एक समयावधि के दौरान प्रदर्शित कार्यकुशलता को मूल्यांकित करता है। ये दोनों ही विश्लेषण कठिनाइओं एवं सुधार कार्यों की आवश्यकता वाले क्षेत्रों को ढूँढ निकालने में सहायता करते हैं।

3. *अनुपात विश्लेषण के लाभदाता/उपयोगकर्ता एक संस्था के अनुपात विश्लेषण में मुख्यत: तीन (parties) ध्यान केंद्रित करती हैं, वे हैं:- लेनदार, अंशधारी एवं संचालक/प्रबंधक*

4. *अनुपातों के प्रकार*

   वित्तीय अनुपातों को मुख्यतः चार वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है:-

   - *तरलता अनुपात :* तरलता अनुपात को संस्था की अल्प-कालीन देयताओं/दायित्वों के भुगतान की सक्षमता/समर्थता बताने में सहायता करती है।
   - *शोधन-क्षमता अनुपात :* शोधन-क्षमता अनुपात व्यावसायिक संस्था के दीर्घकालीन ऋणों में भुगतान की क्षमता का विश्लेषण करता है।
   - *आवर्त्त अनुपात :* आवर्त्त अनुपात संस्था की परिसंपत्तियों के प्रबंधन व कार्यकुशलता पर टिप्पणी करने में सहायता करती हैं। वह गति (speed) जिसके द्वारा परिसंपत्तियों का विक्रय में परिवर्तन होता है, को आवर्त्त अनुपातों द्वारा ज्ञात किया जाता है।
   - *लाभोपार्जन क्षमता अनुपात :* एक व्यवसायिक संस्था की लाभर्जन क्षमता की गणना लाभोपार्जन क्षमता अनुपातों द्वारा की जाती है।

प्रश्न और अभ्यास

I बहुविकल्पीय प्रश्न

1. अनुपात एक कंपनी की कार्य एवं स्थिति का ____________ माप देते हैं।

   (अ) स्थिर

   (ब) सकल

   (स) संबंधित

   (द) गुण-संबंधी

2. ____________ विश्लेषण में बिभिन्न संस्थाओं के बित्तीय अनुपातों की एक समय-बिंदु पर तुलना की जाती है।

   (अ) समय-शृंखला

   (ब) क्रॉस सैक्शनल (अनुप्रस्थ शृंखला)

   (स) सीमांत

   (द) परिणाम-संबंधी

3. ____________ विश्लेषण, वर्तमान तथा पूर्व कार्यकुशलता की तुलना तथा उनके विकास की प्रवृत्तियों के मूल्यांकन से सम्बन्धित है।

   (अ) समय-शृंखला

   (ब) अनुप्रस्थ-शृंखला

(स) सीमांत

(द) परिमाण संबंधी

4. एक संस्था की दृढ़ता का मूल्यांकन करते समय लेनदारों की प्रमुख रूचि होती है, उस संस्था की

(अ) लाभोपार्जन क्षमता में

(ब) उत्तोलक में

(स) अल्प कालीन तरलता में

(द) अंश कीमतों में

5. समय-शृंखला विश्लेषण का उपयोग अधिकांशतः होता है ______

(अ) विकासशील प्रवृत्तियो के मूल्यांकन में

(ब) निर्णयों की उपयुक्त त्रुटियों में

(स) कुछ मापदण्डों से संबंधित स्थिति में

(द) प्रमाप परिणामों में

6. अनुपात विश्लेषण में, स्तरीय उद्यम अनुपात की तुलना, प्रमाप से ____________ विचलनों को समाप्त करने के लिए किया जाता है।

(अ) धनात्मक

(ब) ऋणात्मक

(स) कोई भी

(द) मानक

7. वह विश्लेषण, जो मुख्यतः सुधार के क्षेत्रों की पहचान करता है, तथा जिसमें संस्था के अनुपात मूल्यों की तुलना या प्रतियोगियों के दल के अनुपात मूल्यों से की जाती है, कहलाता है ____________।

(अ.) समय-शृंखला विश्लेषण

(ब.) माप दण्ड

(स.) संयुक्त विश्लेषण

(द.) इनमें से कोई नहीं

8. अनुप्रस्थ अनुपात विश्लेषण का प्रयोग होता है ____________।

(अ) परिचालन में उपयुक्त संभावित कठिनाइयों

(ब) कठिनाइयों के कारणों को दूर करना

(स) एक कठिनाई के अस्तित्व के निश्चित प्रमाण उपलब्ध कराना

(द) एक संभावित कठिनाई के लक्षण व्यक्त करना

9. एक कठिनाई के अस्तित्व अथवा अदत प्रबन्ध का कार्य का ____________ प्रमाण अनुपात विश्लेषण द्वारा उपलब्ध कराया जाता है।

(अ) निश्चित

(ब) अनिश्चित

(स) पूर्ण

(द) स्थिर

10. समीप मद में, वे महत्त्वपूर्ण अनुपात जो संस्था के अल्पकालीन परिचालन में समालोचनात्मक जानकारी उपलब्ध कराते हैं वे हैं :

(अ) तरलता, आवर्त एवं लाभोपार्जन

(ब) तरलता, आवर्त एवं सामान्य रहतिया

(स) तरलता, आवर्त एवं ऋण

(द) आवर्त, ऋण एवं लाभोपार्जन

11. अनुपात के निम्न समूह मुख्यत: जोखिम को मापते हैं ____________।

(अ) तरलता, आवर्त एवं लाभोपार्जन

(ब) तरलता, आवर्त एवं सामान्य रहतिया

(स) तरलता, आवर्त एवं ऋण

(द) तरलता, ऋण एवं लाभोपार्जन

12. आय को प्रमुखत: ____________ अनुपातों के द्वारा मापा जाता है।

(अ) तरलता

(ब) आवर्त

(स) ऋण

(द) लाभोपार्जन

13. एक व्यावसायिक संस्था की ____________ की क्षमता को उसके अल्पकाल दायित्वों के समय पर भुगतान की क्षमता से मापा जा सकता है।

(अ) आवर्त

(ब) तरलता

(स) ऋण

(द) लाभोपार्जन

14. ____________ अनुपात, बिभिन्न खातों को बिक्रय अथवा रोकड़ में परिवर्तित करने की गति का मापक है।

(अ) आवर्त

(ब) तरलता

(स) ऋण

(द) लाभोपार्जन

15. ____________ ऋण एवं वसूली नीतियों के मूल्यांकन में सहायक है।
    (अ) औसत भुगतान अवधि
    (ब) चालू अनुपात
    (स) औसत वसूली अवधि
    (द) चालू परिसंपत्ति आवर्त्त
16. शुद्ध कार्यशील पूंजी का अर्थ है ____________।
    (अ) सकल संपत्तियाँ - चालू संपत्तियाँ
    (ब) चालू संपत्तियाँ - चालू दायित्व
    (स) चालू दायित्व - चालू संपत्तियाँ
    (द) विपणन प्रतिभूतियाँ तथा रोकड़
17. एक व्यावसायिक संस्था के रहतिये की गतिविधियों को ____________ मापता है।
    (अ) औसत वसूली अवधि
    (ब) रहतिया आवर्त्त
    (स) तरल अनुपात
    (द) चालू अनुपात
18. तरलता के दो आधार मापक है:
    (अ) रहतिया आवर्त्त एवं चालू अनुपात
    (ब) चालू अनुपात एवं तरल अनुपात
    (स) सीमांत सकल लाभ एवं परिचालन अनुपात
    (द) चालू अनुपात एवं औसत वसूली अवधि
19. तरलता को मापता है जिसमें ____________ शामिल नहीं है, सामान्यत: सबसे कम तरल संपत्ति है:-
    (अ) चालू अनुपात, प्राप्य खाते
    (ब) तरल अनुपात, प्राप्य खाते
    (स) चालू अनुपात, रहतिया आवर्त्त
    (द) तरल अनुपात, रहतिया आवर्त्त
20. यह अनुपात व्यवसाय के उन अनुभवों जिससे निम्न पूर्ति का आभास है, को व्यक्त करता है:
    (अ) औसत भुगतान अवधि
    (ब) रहतिया आवर्त्त
    (स) औसत वसूल अवधि
    (द) तरल

21. यह अनुपात कमजोर वसूली प्रणाली अथवा एक ऋणकर नीति को दर्शा सकता है:

    (अ) औसत भुगतान अवधि

    (ब) स्कन्ध आवर्त

    (स) औसत वसूली अवधि

    (द) तरल

22. ए बी सी कंपनी अपने ग्राहकों की ऋण काल को 45 दिन को बढ़ा देती है। इसके ऋण वसूली को कमजोर माना जाएगा यदि उसकी औसत वसूली अवधि थी:

    (अ) 30 दिन

    (ब) 36 दिन

    (स) 37 दिन

    (द) 57 दिन

23. ये विशेष रूप से औसत अवधि में रूची रखते हैं, क्योंकि यह उन्हें संस्था की बिल भुगतान विधियों की जानकारी देती है:

    (अ) ग्राहक

    (ब) अंशधारी

    (स) ऋणदाता एवं पूर्तिकर्ता

    (द) कर्जदार एवं ग्राहक

24. यदि रहतिया आवर्त्त अनुपात को 365 से भाग दिया जाता है, तब यह माप बन जाएगा :

    (अ) बिक्रय कुशलता का

    (ब) रहतिया की औसत आयु का

    (स) बिक्रय आवर्त्त का

    (द) औसत वसूली अवधि का

25. यह ऋण एवं वसूली नीतियों के मूल्यांकन में सहायता करता है:

    (अ) औसत भुगतान अवधि

    (ब) चालू अनुपात

    (स) औसत वसूली अवधि

    (द) चालू संपत्ति आवर्त्त

26. अनुपात की दो श्रेणियाँ जिन्हें एं व्यवसाय संस्था की वास्तविक तरलता के लिए उपयोग किया जाना चाहिए वे हैं:

    (अ) चालू एवं तरल अनुपात

    (ब) तरलता एवं लाभोपार्जन अनुपात

(स) तरलता एवं ऋण अनुपात

(द) तरलता एवं आवर्त अनुपात

27. वे अनुपात जो व्यवसाय के दीर्घकालीन गतिविधियों के गुण-दोष की जानकारी देते है:

(अ) तरलता

(ब) आवर्त

(स) शोधन-क्षमता

(द) लाभोपार्जन-क्षमता

28. प्रत्येक विक्रय रुपये का वह जिसे व्यवसाय ने माल के लिए दिया है भाग के शेष को प्रतिशत के रूप में दर्शाता है:

(अ) सीमांत शुद्ध लाभ

(ब) सीमांत परिचालन लाभ

(स) सीमांत सकल लाभ

(द) सामान्य अंशधारियों की उपलब्ध आय

II लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अनुपात-विश्लेषण से आप क्या समझते हैं?
2. अनुप्रस्थ एवं समय-शृंखला विश्लेषण के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. वित्तीय अनुपात विश्लेषण के उपयोगकर्ता/पक्षधर कौन हैं एवं उनके लिए बित्तीय विश्लेषण की महत्ता की व्याख्या कीजिए।
4. अनुपात के भिन्न प्रकार क्या हैं?
5. तरलता अनुपात क्या हैं? चालू अनुपात एवं तरल अनुपात के महत्त्व की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।
6. एक व्यवसाय की शोधन-क्षमना स्थिति का अध्ययन आप कैसे करेंगे?
7. अध्ययन के लिए कौन-से संबंध स्थापित करने होंगे?

   (अ) रहतिया आवर्त (स) देय/लेनदार आवर्त

   (ब) देनदार आवर्त (द) कार्यशील पूंजी आवर्त
8. महत्त्वपूर्ण लाभोपार्जन क्षमता अनुपात क्या हैं? इनकी गणना किस प्रकार की जाती है?
9. विश्लेषक के चार समूहों द्वारा वित्तीय विश्लेषण अनुपातों का संचालन किया जाता है वे है: प्रबंधक, समता विनियोजक/निवेशक, दीर्घ-कालीन लेनदार एवं अल्प-कालीन लेनदार/अनुपातों के मूल्यांकन में प्रत्येक का मुख्य रूप से क्या महत्त्व है?
10. रहतिया आवर्त अनुपात की एक परचून भंडार के लिए एक बीमा कंपनी से अधिक महत्ता क्यों होगी?

III निबंधात्मक प्रश्न

1. एक समय बिंदु पर समय-शृखंला विश्लेषण फर्म की वित्तीय स्थिति की तुलना अन्य फर्मों से करने में सहायक होता है? चर्चा करें।

2. एक नियमानुसार, प्रभावित वित्तीय विश्लेषण में कम से कम आय वितरण और रोकड़ प्रवाह विवरण को आवश्यक घटक के रूप में शामिल किया जाता है। चर्चा करें।
3. अनुप्रस्थ अनुपात विश्लेषण के अंतर्गत एक ही समय बिंदु पर किसी फर्म के अनुपातों की तुलना अन्य उद्योग में सम्मिलित फर्मों से की जाती है। चर्चा करें।
4. माप दण्ड एक प्रकार का अनुप्रस्थ विश्लेषण है। जिसमें किसी फर्म के अनुपात की तुलना अन्य उद्योग की फर्मों से प्राथमिक रूप में इसलिए की जाती है कि सुधारात्मक क्षेत्रों की पहचान की जा सकें? टिप्पणी दें।
5. समय-शृखला किसी एक समय बिंदु पर वित्तीय अनुपातों द्वारा फर्म की स्थिति का मूल्यांकन करती है। चर्चा करें।
6. फर्म के लेनदार प्राथमिक रूप से लघु अवधि तरलता और मूलधन व ब्याज की भुगतान क्षमता की ओर ध्यान देते हैं। ऐसा क्यो?
7. अनुपात विश्लेषण विश्लेषक को भावी क्षेत्रों की ओर निदेशित करता है किंतु किसी भी दशा में यह समस्या के विद्यमान होने का संपूर्ण प्रमाण नही देता है। टिप्पणी दें।
8. शुद्ध कार्यशील पूँजी किसी समय अवधि के दौरान एक ही फर्म की तरलता की तुलना में सहायक होती है तथा किसी भी दशा में इसका प्रयोग विभिन्न फर्मों की तरलता के मूल्यांकन हेतु नहीं किया जा सकता है। तदापि विभिन्न फर्मों की तरलता को ज्ञात करने के लिए चालू अनुपात का प्रयोग किया जा सकता है। चर्चा करें।
9. व्यावसायिक फर्म की तरलता को उसके दीर्घकालीन देयताओं की शोधन-क्षमता पर मूल्यांकित किया जाता है। चर्चा करें।
10. जब फर्म के रहतिये को सुविधानुसार रोकड़ में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है तो ऐसी स्थिति में चालू अनुपात के प्रयोग से फर्म की तरलता को ज्ञात किया जा सकता है। यदि रहतिया तरल प्रवृति का है तो तरल अनुपात से फर्म की तरलता को आंका जाता है। चर्चा करें।
11. चूंकि फर्म की चालू परिसंपत्तियों और देयताओं के संगठन में बदलाव द्वारा फर्म की तरलता प्रभावित होती है, अतः यह आवश्यक है कि विशिष्ट चालू परिसंपत्तियों की तरलता का मूल्यांकन संपूर्ण तरलता से हट कर किया जाए। चर्चा करें।
12. रहतिये की औसत आयु का मूल्यांकन फर्म द्वारा धारित रहतिये की औसत अवधि अथवा रहतिये के विक्रय के औसत दिनों के आधार पर किया जाता है। चर्चा करें।
13. सकल लाभ, प्रत्येक विक्रय पर फर्म द्वारा माल एवं परिचालन व्ययों के भुगतान के पश्चात् बची हुई धनराशि के प्रतिशत को ज्ञात करता है। चर्चा करें।

प्रश्न

1. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर निम्न अनुपातों की गणता कीजिए :

   (i) चालू अनुपात

   (ii) तरल अनुपात

(iii) परिचालन अनुपात

(iv) सकल लाभ अनुपात

चालू परिसंपत्तियाँ = 70,000 रु. विक्रय = 1,40,000 रु.

शुद्ध कार्यशील पूंजी = 30,000 रु. विक्रय माल की लागत = 68,000 रु.

रहतिया = 30,000 रु.

2. मोर्नाक कंपनी की चालू परिसंपत्तियाँ का मूल्य 29,745 रु. है तथा चालू अनुपात 1.5 हैं। रहतिया का मूल्य 8,827 रु. हैं। तरल अनुपात की गणना कीजिए तथा कंपनी की तरलता स्थिति पर टिप्पणी कीजिए।

3. निम्नलिखित सूचनाओं से अंशधारियों के कोषों की गणना कीजिए :

चालू अनुपात	2.5
तरल अनुपात	1.5
स्वामी अनुपात	0.75
कार्यशील पूंजी	60,000 रु.
संचिति व अतिरेक	40,000 रु.
ऋण कोष	10,000 रु.

4. निम्नलिखित विवरणों के आधार पर सकल लाभ और विक्रय राशि का निर्धारण कीजिए :

औसत रहतिया 95.000 रु.

रहतिया आवर्त्त अनुपात 3 गुणा

सकल लाभ विक्रय का 25%

5. एक कंपनी के निम्नलिखित अनुपातों के आधार पर उसके प्रबंध की कुशलता पर टिप्पणी कीजिए :

वर्ष	*रहतिया आवर्त (गुणा में)*	*लेनदार आवर्त (गुणा में)*	*प्रचालन आवर्त (प्रतिशत में)*
1999	9.4	5.1	83.15
2000	9.0	4.7	82.56
2001	7.3	4.5	81.34
2002	6.5	3.7	82.93

6. निम्नलिखित ऑकड़े जी के दो लगातार वर्षों के खाते से लिए गए है।

	2001 (रु. में)	*2002 (रु. में)*
प्रचालन से आगम	2,10,000	4,20,000
सकल लाभ	52,500	84,000

दो वर्षों की लाभोपार्जन क्षमता पर टिप्पणी कीजिए।

7. भाटिया कंपनी का तरल अनुपात 1.4 है, चालू अनुपात 3.0 है, रहतिया आवर्त 6 गुना है, कुल चालू परिसंपत्तियाँ 8,10,000 रु. है तथा रोकड़ व विपणन योग्य प्रतिभूतियाँ 1,20,000 रु. है। वार्षिक विक्रय क्या होगी? गणना कीजिए।

8. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर गणना कीजिए :

   (i) सकल लाभ अनुपात

   (ii) ऋण-समता अनुपात

   (iii) कार्यशील पूंजी आवर्त अनुपात

	(रु. में)
शुद्ध विक्रय	36,50,000 रु.
विक्रय माल की लागत	23,60,000 रु.
चालू दायित्व	7,80,000 रु.
उधार कोष	6,25,000 रु.
चालू परिसंपत्तियाँ	13,29,000 रु.
समता अंश पूंजी	17,80,000 रु.
ऋणपत्र	8,40,000 रु.

9. निम्नलिखित सूचनाओं से परिचालन अनुपात की गणना कीजिए :

शुद्ध विक्रय	5,40,000 रु.
शुद्ध क्रय	3,10,000 रु.
प्रारंभिक रहतिया	75,000 रु.
प्रत्यक्ष व्यय	32,000 रु.
अंतिम रहतिया	50,000 रु.
बिक्री व्यय	25,000 रु.
वितरण व्यय	15,000 रु.

10. डी कंपनी लिमिटेड का वर्षान्त मार्च 31, 2001 का लाभ-हानि खाता

शुद्ध विक्रय	20,00,000 रु.	
घटाया: विक्रय माल की लागत		
प्रारंभिक रहतिया	2,50,000 रु.	
जमा क्रय	13,00,000 रु.	
	15,50,000 रु.	
घटाया : अंतिम रहतिया	5,50,000 रु.	10,00,000 रु.

सकल लाभ	10,00,000 रु.
घटाया : परिचालन व्यय	3,70,000 रु.
परिचालन लाभ	6,30,000 रु.
घटाया : ब्याज	2,10,000 रु.
कर पूर्व लाभ	4,20,000 रु.

परिचालन अनुपात एवं सकल लाभ अनुपात की गणना कीजिए।

11. निम्नांकित अनुपातों के संदर्भ में, इन अनुपातों का सूत्र बताएं तथा उन समस्याओं को उजागर करें यदि ये उद्योग औसत से अधिक अथवा कम हैं। निम्नवत् सारणी के प्रकार अन्य सारणी तैयार करें तथा रिक्त स्थानों को भरें :

अनुपात	उच्च	निम्न
चालू अनुपात		
रहतिया आवर्त्त		
रहतिया आवर्त्त		
सकल लाभ		
ऋण समता अनुपात		

12. सुप्रीम पेपर कंपनी की गत् 4 वर्षों की कुल चालू परिसंपत्तियों, शुद्ध कार्यशील पूंजी व रहतिया इस प्रकार हैं :

मद	1999	2000	2001	2002
कुल चालू परिसंपत्ति	1,01,700	1,31,400	1,35,000	1,62,000
शुद्ध कार्यशील पूंजी	47,700	55,800	59,400	57,600
रहतिया	36,000	41,400	41,400	43,200

(अ) चालू व तरल अनुपात ज्ञात करें। शुद्ध कार्यशील पूँजी, चालू अनुपात व तरल अनुपात की तुलना करें।

(ब) वर्ष 1999-2002 की अवधि के लिए फर्म की तरलता पर टिप्पणी दें।

(स) यदि आपको सुप्रीम पेपर कंपनी का रहतिया आवर्त्त प्रत्येक वर्ष के लिए दिया गया हो साथ ही उद्योग औसत भी ज्ञात हो तो क्या उससे आपके मूल्यांकन (ब) में अंतर आएगा? क्यों?

रहतिया आवर्त	1999	2000	2001	2002
सुप्रीम पेपर	6.3	6.8	7.0	6.4
	10.6	11.2	10.8	11.0

13. कैपिटल कंपनी की विक्रय राशि 16,00,000 रु. है तथा सकल लाभ 40 % है। चतुर्थ अवधि के अंत में रहतिया इस प्रकार था :

1.	16,00,000
2.	32,00,000
3.	48,00,000
4.	8,00,000

(अ) औसत चतुर्थ रहतिया ज्ञात करें तथा रहतिया आवर्त्त व रहतिये की औसत आयु ज्ञात करें।

(ब) मान लीजिए यह कंपनी उस उद्योग में शामिल है जिनका औसत रहतिया आवर्त्त 2.0 है। आप कंपनी के रहतिये का मूल्यांकन किस प्रकार करेंगे।

14. नैचुरल फूड्स कंपनी के नए स्वामियों ने आपको कंपनी के समक्ष पर्याप्त शुद्ध कार्यशील पूँजी के रखरखाव की समस्या के निवारण हेतु नियुक्त किया है। प्रथम चरण में आप तरलता विश्लेषण करेंगे। उसके पश्चात् आप कंपनी के लघु अवधि क्षमता अनुपात का विश्लेषण करेंगे। आपके द्वारा की गई गणनाएँ एवं उद्योग नियम इस प्रकार है :

	नैचुरल फूड्स	*उद्योग नियम*
चालू अनुपात	4.5	4.0
तरलता अनुपात	2.0	3.1
औसत वसूली	73 दिन	52 दिन
औसत भुगतान अवधि	31 दिन	40 दिन
रहतिया आवर्त्त	6.0	10.4

(अ) आप नए स्वामियों को रहतिये के रखरखाव व धनराशि हेतु क्या संस्तुति देंगे।

(ब) आप नए स्वामियों को प्राप्य विपत्र के रखरखाव व धनराशि हेतु क्या संस्तुति देंगे।

(स) आप नए स्वामियों को देय विपत्र के रखरखाव व धनराशि हेतु क्या संस्तुति देंगे।

(ड) आपकी संस्तुति द्वारा क्या परिणाम उत्पन्न होंगे।

15. औद्योगिक वित्त लि. के पास दो उपभोक्ताओं ने 1,75,000 रु. के लघु ऋण हेतु आवेदन दिया है। उनकी संक्षिप्त वित्तीय सूचनाएं इस प्रकार हैं :

	अ	ब
शुद्ध	31,85,000	26,25,080
सकल लाभ	13,37,700	10,23,750
ब्याज	70,000	28,700
आय कर	2,62,500	1,75,000

कर उपरांत लाभ	2,87,000	1,96,875
रहतिया	3,15,000	2,28,200
देनदार	2,45,000	1,96,000
रोकड	21,000	63,000
चालू देयताएँ	6,39,100	4,06,000
लघु अवधि देयताएँ	5,60,000	4,55,000
अंशधारी कोष	6,30,000	4,90,000

औद्योगिक वित्त लि. के पास इन दोनों में किसी एक को ऋण स्वीकृति देनी है।
आप अपनी वित्तीय विश्लेषण क्षमता के आधार पर औद्योगिक वित्त लि. को इन दोनों में किस आवेदन के स्वीकृति का सुझाव देंगे।

उत्तर

(i) अ	(ii) ब	(iii) अ	(iv) अ
(v) अ	(vi) अ	vii) अ	(viii) स
(ix) अ	(x) स	(xi) द	(xii) ब
(xiii) ब	(xiv) अ	(xv) स	(xvi) अ
(xvii) ब	(xviii) ब	(xix) द	(xx) अ
(xxi) स	(xxii) स	(xxiii) स	(xxiv) ब
(xxv) अ	(xxvi) अ	(xxvii) स	(xxviii) द

1 (i) चालू अनुपात 7:4
  (ii) तरल अनुपात 1:1
  (iii) परिचालन अनुपात 48.57%
  (iv) सकल लाभ अनुपात 51.42

2. तरल परिसंपत्तियाँ = 20,918 रु.
   चालू देयताएं = 19,830 रु.
   तरल अनुपात = 1.05:1

4. विक्रय = 2,85,000 रु.
   सकल लाभ 71,200 रु.

5. 41,46,000 रु.

6. सकल लाभ अनुपात = 35.3%
   ऋण-समता अनुपात = .82
   कार्यशील पूँजी आवर्त अनुपात 6.64 गुणा

7. परिचालन अनुचात = 78.7%

8. सकल लाभ अनुपात = 50%

अध्याय 4

वित्तीय स्थिति में परिवर्तन का विवरण

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप :

- कोष (कार्यशील पूंजी) तथा कोष के प्रवाह से आशय समझ सकेंगे;
- वित्तीय स्थिति में परिवर्तन के विवरण से तात्पर्य एवं आवश्यकता की व्याख्या कर सकेंगे;
- वित्तीय स्थिति में परिवर्तन के विवरण की उपयोगिता एवं सीमाओं की व्याख्या कर सकेंगे;
- परिचालन क्रियाओं, निवेशित क्रियाओं एवं वित्तीय क्रियाओं में अंतर कर सकेंगे;
- प्रत्यक्ष विधि द्वारा रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार कर सकेंगे;
- अप्रत्यक्ष विधि द्वारा रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार कर सकेंगे;
- कार्यशील पूंजी पर आधारित वित्तीय स्थिति में परिवर्तन के विवरण और रोकड़ प्रवाह विवरण में अंतर कर सकेंगे;
- वित्तीय स्थिति में परिवर्तन हेतु विवरण एवं रोकड़ प्रवाह विवरण का विश्लेषण कर सकेंगे।

वित्तीय विवरण के उपयोगकर्ता अधिकतर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए उत्सुक होते हैं :

(i) कंपनी द्वारा वर्तमान लाभों में से लाभांश का भुगतान किस प्रकार किया जाएगा।

(ii) जब वर्तमान लाभ गत वर्ष के लाभों में से अधिक थे तो कंपनी द्वारा लाभांश का भुगतान क्यों नहीं किया गया।

(iii) जबकी लाभ अधिक मात्रा में है तब भी चालू परिसंपत्तियों के मूल्य में गिरावट क्यों आई।

(iv) स्थायी परिसंपत्ति को किस प्रकार वित्त किया जाता है।

(v) अंशों एवं ऋणपत्रों से प्राप्त धनराशि का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है।

अधिकतर, निवेशक उक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने हेतु उत्सुक होते हैं। सामान्यतया, एक व्यावसायिक संस्था अपनी वित्तीय क्षमता तथा वित्तीय स्थिति के संदर्भ में सूचना वित्तीय विवरणों के माध्यम से संप्रेषित करती है। हांलाकि, यह विवरण निवेशकों के उत्तर तब भी उन्हें प्राप्त नहीं हो पाते है। इस उद्देश्य हेतु, हमें इन विवरणों के विश्लेषण की आवश्यकता होती है तथा उपरोक्त प्रश्नों के संबंध में जानकारी प्राप्त करने हेतु विशेष विवरण तैयार करने होते हैं।

यह विशेष विवरण वित्तीय स्थिति में परिवर्तन हेतु विवरण और रोकड़ प्रवाह विवरण हैं। हम, इस अध्याय में इन दोनों विवरणों के संबंध में पढ़ेंगे।

4.1 कोष से आशय

शब्द 'कोष' की व्याख्या विभिन्न प्रकार से की जा सकती है। इस शब्द को निम्न उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है। एक पुत्र अपने पिता से कंप्यूटर की खरीद के लिए बहस कर रहा है, किंतु पिता का मत है कि उनके पास उसके लिए कोष नहीं है। यहाँ पिता का कोष से तात्पर्य कंप्यूटर प्रणाली के क्रय के लिए नकद राशि से है। अत: इस स्थिति में 'कोष' को रोकड़ (हस्तस्थ एवं बैंकस्थ) के समानार्थ माना गया है। इस पर, पुत्र का मत है कि कोष की व्यवस्था बैंक से ऋण प्राप्त करके अथवा अंशों या अन्य प्रपत्रों को बाजार में बेच कर की जा सकती है। यहाँ पुत्र द्वारा 'कोष' से तात्पर्य पिता के समक्ष अन्य संसाधनों से है जिन्हें नकद में परिवर्तित किया जा सकता है। हालांकि, वित्तीय स्थिति के विवरण की दशा में 'कोष' शब्द से आशय 'शुद्ध कार्यशील पूँजी' से है। शुद्ध कार्यशील पूँजी चालू परिसंपत्तियों के उस भाग का प्रतिनिधित्व करती है जिसे दीर्घकालीन साधनों द्वारा वित्त किया जाता है। शुद्ध कार्यशील पूँजी की गणना चालू परिसंपत्तियों में से चालू देयताओं को घटा कर की जाती है।

शुद्ध कार्यशील पूँजी = चालू परिसंपत्तियाँ - चालू देयताएँ

चालू परिसंपत्तियाँ : इनमें रोकड़ तथा अन्य परिसंपत्तियाँ सम्मिलित की जाती हैं जिन्हें प्रमुख परिचालन व्यावसायिक क्रियाओं के दौरान नकदी में परिवर्तित किया जा सके, अथवा उपभोग किया जा सके। परिचालन चक्र से तात्पर्य माल के अधिग्रहण तथा उत्पादों/सेवाओं के विक्रय से उत्पन्न नकद वसूली के मध्य औसत समय से है। इनके अतिरिक्त अन्य समस्त परिसंपत्तियों को गैर-चालू परिसंपत्तियाँ कहते हैं। चालू परिसंपत्तियों में रहतिया, देनदार, प्राप्त विपत्र, पूर्वदत्त व्यय, उपार्जित आमदनी, लघु कालीन प्रपत्र, हस्तस्थ रोकड़ तथा बैंकस्थ रोकड़ को शामिल किया जाता है।

चालू देयताएँ : वे दायित्व जिनका परिसमापन समान्यतया वर्तमान रूप से विद्यमान संसाधनों में से किए जाने की संभावना रहती है जिन्हें चालू परिसंपत्तियों के रूप में वर्गीकृत किया गया है अथवा एक वर्ष की अवधि या परिचालन चक्र, जिनकी भी अवधि अधिक हो, के भीतर अन्य चालू देयताओं का भारग्रहण किया गया है, चालू देयताओं के वर्ग में सम्मिलित की जाती हैं। चालू देयताओं में लेनदार, देय विपत्र, अदत्त व्यय/आमदनी, कराधान हेतु प्रावधान आदि मदें आती हैं।

एक कंपनी का तुलन-पत्र नीचे दिया गया है जिसमें विभिन्न परिसंपत्तियों एवं देयताओं को चालू तथा गैर-चालू मदों में वर्गीकृत किया गया है :

तुलन-पत्र का प्रारूप

मद 1	मद 3
समता एवं गैर-चालू देयताएँ	स्थायी परिसंपत्तियाँ
अंश पूँजी	मूर्त परिसंपत्तियाँ
सचंय एवं आधिक्य	भूमि
ऋणपत्र	प्लांट एवं मशीनरी
दीर्घकालीन ऋण	दीर्घकालीन प्रपत्र
मद 2	**मद 4**
चालू देयताएँ	चालू परिसंपत्ति
विविध लेनदार	रहतिया
देय विपत्र	देनदार
लघु कालीन ऋण	प्राप्य विपत्र
उपार्जित व्यय	उपार्जित आय
अग्रिम आमदनी प्राप्त	विक्रेय प्रपत्र
अन्य चालू देयताएँ एवं प्रावधान	ऋण एवं अग्रिम राशि
बैंक अधिविकर्ष	बैंकस्थ एवं हस्तस्थ रोकड़

कोष का निर्धारण कुल चालू देयताओं (मद 2) में से कुल चालू परिसंपत्तियों (मद 4) को घटा कर किया जाता है।

कोष (शुद्ध कार्यशील पूँजी) = चालू परिसंपत्ति (मद 4 का योग) - चालू देयताएँ (मद 2 का योग)

उदाहरण 4.1

मार्च 31, 2002 को राम रहीम लिमिटेड का संक्षिप्त तुलन-पत्र इस प्रकार था।

31 मार्च 2002 को राम रहीम लि. का तुलन-पत्र

		2001 रु.		2002 रु.
देयताएँ				
समता अंश पूँजी		10,00,000		10,00,000
संचय एवं आधिक्य		3,18,000		5,44,600
10% ऋणपत्र		6,00,000		5,00,000
लेनदार		1,40,000		1,71,200
देय विपत्र		54,400		72,800
भुगतान किए गए व्यय		18,600		27,800
		21,31,000		**23,16,400**

परिसंपत्तियाँ				
भूमि		5,00,000		5,00,000
भवन (लागत पर)	6,80,000		6,80,000	
घटाया: समेकित ह्रास	1,50,000	5,30,000	1,63,600	5,16,400
संयंत्र एवं मशीनरी (लागत पर)	7,50,000		9,00,000	
घटाया : समेकित ह्रास	2,50,000	5,00,000	3,25,000	5,75,000
फर्नीचर	1,50,000		1,50,000	
घटाया : समेकित ह्रास	15,000	1,35,000	30,000	1,20,000
रहतिया		1,85,000		2,57,000
देनदार		1,92,000		2,25,000
प्राप्य प्रपत्र		43,000		38,000
हस्तस्थ रोकड़		46,000		85,000
योग		**21,31,000**		**23,16,400**

31 मार्च 2001 को राम रहीम लि. की चालू परिसंपत्ति और देयताओं को ज्ञात करें। साथ ही राम रहीम लिमिटेड की शुद्ध कार्यशील पूँजी की गणना करें।

हल

चालू परिसंपत्तियाँ	**रहतिया**	**देनदार**	**प्राप्य विपत्र**	**रोकड़**
(31.03.2001 को)	= (रु. 1,85,000 +	1,92,000 +	43,000 +	46,000)
	= रु. 4,66,000			
चालू देयताएँ	**लेनदार**	**देय विपत्र**	**उपार्जित व्यय**	
(31.03.2001 को)	= (रु. 1,40,000	+ 54,400	+ 18,600)	
	= रु. 2,13,000			
शुद्ध कार्यशील पूँजी (31.03.2001 को)			= रु. [4,66,000 – 2,13,000]	
			= रु. 2,53,000	
चालू परिसंपत्तियां	**रहतिया**	**देनदार**	**प्राप्य विपत्र**	**रोकड़**
(31.03.2001 को)	= रु.[2,57,000 +	2,25,000 +	38,000 +	85,000]
	= रु. 6,05,000			
चालू देयताएँ	**लेनदार**	**देय विपत्र**	**उपार्जित व्यय**	
(31.03.2001 को)	= रु. 1,71,200 +	72,000 +	27,800	
	= रु. 2,71,000			
शुद्ध कार्यशील पूँजी (31.03.2002 को)			= रु. [6,05,000 – 2,71,000]	
			= रु. 3,34,000	

4.2 कोष का प्रवाह

'प्रवाह' से आशय 'परिवर्तन' अथवा गति से है। जब कभी, किसी लेनदेन की उत्पत्ती होती है, तो उसका प्रभाव तुलन-पत्र के एक या अधिक मदों पर पड़ता है। यदि किसी एक लेनदेन से एक ही समय में चालू परिसंपत्ति अथवा चालू देयताओं में वृद्धि अथवा कमी होती है या उस लेनदेन से इन मदों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है तो व्यवसाय के कोषों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उनसे दूसरी तरफ, यदि किन्हीं दो मदों में से किसी एक मद में वृद्धि अथवा कमी होती है तो कोष का प्रवाह होगा।

कोष के प्रवाह को प्रभावित करने वाले लेनदेन

कोष के प्रवाह को प्रभावित न करने वाले लेनदेन

यदि लेनदेन द्वारा चालू परिसंपत्तियों में शुद्ध वृद्धि होती है तो उसे 'कोष के स्रोत' कहते हैं। दूसरी ओर, यदि लेनदेन द्वारा चालू परिसंपत्तियों में शुद्ध कमी अथवा चालू देयताओं में शुद्ध वृद्धि होती है तो उसे "कोष के प्रयोग" कहते हैं।

उदाहरण 4.2

निम्नलिखित लेनदेनों का विश्लेषण करें तथा कंपनी की कार्यशील पूंजी पर इन लेनदेनों के प्रवाह को ज्ञात करें :

(i) माल का नकद क्रय

(ii) लेनदेन को देय राशि का भुगतान

(iii) नकदी पर ऋणपत्रों का निर्गम

(iv) दीर्घ कालीन बैंक ऋण का भुगतान

(v) पुरानी फर्नीचर का नकद विक्रय

हल

लेनदेनों का विश्लेषण तथा कार्यशील पूंजी पर प्रभाव

(i) यह लेनदेन एक ओर रहतिये (चालू परिसंपत्ति) में वृद्धि करता है, वहीं दूसरी ओर नकदी चालू परिसंपत्ति में कमी करता है। अतः कार्यशील पूंजी में परिवर्तन नहीं होगा, अर्थात इस लेनदेन में कोष का प्रवाह नहीं है।

(ii) यह लेनदेन नकदी (चालू परिसंपत्ति) तथा लेनदारो (चालू देयताओं) में कमी करता है। अतः कार्यशील पूंजी में परिवर्तन नहीं होगा, अर्थात इस लेनदेन में कोष का प्रवाह नहीं है।

(iii) यह लेनदेन ऋणपत्रों (दीर्घ कालीन) तथा नकदी में एक साथ वृद्धि दर्शा रहा है। अतः, इससे चालू परिसंपत्तियों में वृद्धि हुई है। इससे कार्यशील पूंजी में परिवर्तन आया है अर्थात कोष का प्रवाह संभव हुआ है अतः इसे कार्यशील पूंजी का स्रोत माना जाएगा।

(iv) इस लेनदेन के परिणामस्वरूप बैंक ऋण (चालू दायित्व) तथा नकदी में एक साथ कमी हुई है। अतः इस लेनदेन से कार्यशील पूंजी का प्रवाह प्रभावित हुआ है। इससे कार्यशील पूंजी में कमी आई। इस कारणवश इसे कार्यशील पुंजी का प्रयोग कहते हैं।

(v) इस लेनदेन के द्वारा एक ओर फर्नीचर (स्थायी परिसंपत्ति) में कमी आई है तथा दूसरी ओर नकदी (चालू परिसंपत्ति) में वृद्धि हुई है। अतः इस लेनदेन से कोष का प्रवाह संभव हुआ है क्योंकि इसके परिणामस्वरूप चालू परिसंपत्तियों में वृद्धि हुई है अतः, इसे कोष का स्रोत कहा जाएगा।

4.2.1 शुद्ध कार्यशील पूंजी में परिवर्तन की सारणी

शुद्ध कार्यशील पूंजी में परिवर्तन की सारणी वर्ष के दौरान कार्यशील पूंजी में हुए शुद्ध परिवर्तन (वृद्धि अथवा कमी) को ज्ञात करने के लिए तैयार किया जाता है। उपरोक्त उदाहरण 4.2 में हमने पढ़ा कि व्यावसायिक लेनदेनों को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है :

(i) वे लेनदेन जिससे शुद्ध कार्यशील पूंजी प्रभावित नही होती है;
(ii) वे लेनदेन जिससे शुद्ध कार्यशील पूंजी प्रभावित होती है।

समस्त लेनदेनों का प्रभाव व्यावसायिक संस्था के तुलन-पत्र पर पड़ता है। कार्यशील पूंजी में हुए शुद्ध परिवर्तन को ज्ञात करने हेतु हमें एक समयावधि में चालू परिसंपत्ति और चालू दायित्व में हुए परिवर्तन (वर्ष के प्रारंभ एवं अंत में) के विश्लेषण की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में निम्न सारणी तैयार की जाती है।

विवरण	*समय अवधि के प्रारंभ में (0)* रु.	*समय अवधि के अंत में (1)* रु.	*शुद्ध कार्यशील पूँजी पर प्रभाव*	
			कार्यशील पूँजी में वृद्धि रु.	*कार्यशील पूँजी में कमी* रु.
चालू परिसंपत्तियां	C.A.(0)*	C.A.(1)*	C.A.(1)-C.A (0) (चालू परिसंपत्तियों वृद्धि)	
	C.A.(0)*	C.A.(1)*		C.A.(0) C.A.(1) (चालू परिसंपत्तियों में कमी)
चालू देयताएँ	C.L.(0)*	C.L.(1)*	C.L.(0)-C.L. (1) (चालू देयताओं में कमी)	
	C.A.(0)*	C.L.(1)*		C.A.(1)-C.L.(0) (चालू दायित्वों में वृद्धि)
कार्यशील पूँजी में शुद्ध वृद्धि अथवा (कमी)			शेष अंक ⟷ अथवा	शेष अंक
			योग	**योग**

* C.A. (0) समय अवधि के प्रारंभ में चालू परिसंपत्ति
C.A. (0) समय अवधि के अंत में चालू परिसंपत्ति
C.L. (0) समय अवधि के प्रारंभ में चालू देयताएँ
C.L. (0) समय अवधि के अंत में चालू देयताएँ

उदाहरण 4.3

रॉबट, राकेश और रहमान लि. का तुलन-पत्र निम्नलिखित है :

31 मार्च 2002 को रॉबट, राकेश और रहमान लि. का तुलन-पत्र

परिसंपत्तियाँ	रु.	*2001* रु.	रु.	*2002* रु.
भूमि		8,00,000		8,00,000
भवन (लागत पर)	14,50,000		16,80,000	
घटाया : समेकित ह्रास	4,80,000	9,70,000	5,20,000	11,60,000
प्लाँट एवं मशीनरी	18,75,000		19,95,000	
घटाया : समेकित ह्रास	6,80,000	11,95,000	7,85,000	12,10,000
फर्नीचर	2,89,000		3,65,000	
घटाया : समेकित ह्रास	69,000	2,20,000	75,000	2,90,000
रहतिया		2,50,000		3,35,000
प्राप्य बिल		3,45,000		3,40,000
हस्तस्थ एवं बैंकस्थ रोकड़		85,000		1,30,000
योग		**38,65,000**		**42,65,000**
दायित्व				
समता अंश पूँजी		20,00,000		20,00,000
संचय एवं आधिक्य		10,44,000		12,28,000
12% ऋणपत्र		5,00,000		7,00,000
देय विपत्र		2,16,000		2,36,000
लेनदार		70,000		61,000
भुगतान किए गए व्यय		35,000		40,000
योग		**38,65,000**		**42,65,000**

कार्यशील पूँजी में परिवर्तन की सारणी तैयार करें।

हल

31 मार्च 2002 को रॉबट, राकेश और रहमान लि. का कार्यशील पूँजी में परिवर्तन की सारणी

	2001 राशि रु.	2002 राशि रु.	राशि रु.	राशि रु.
विवरण			*शुद्ध कार्यशील पूँजी में वृद्धि*	*शुद्ध कार्यशील पूँजी में कमी*
चालू परिसंपत्ति :				
रहतिया	2,50,000	3,35,000	85,000	
प्राप्य विपत्र	3,45,000	3,40,000		5,000
रोकड़ शेष	85,000	1,30,000	45,000	
योग	**6,80,000**	**8,05,000**		
चालू देयताएँ :				
लेनदार	2,16,000	2,36,000		20,000
देय विपत्र	70,000	61,000	9,000	
भुगतान किए गए व्यय	35,000	40,000		5,000
कार्यशील पूँजी में वृद्धि				109,000
योग	**3,21,000**	**3,37,000**	**1,39,000**	**1,39,000**

4.3 वित्तीय स्थिति में परिवर्तन का विवरण

यह व्रितरण एक समयावधि में हुए शुद्ध कार्यशील पूंजी के परिवर्तन को दर्शाता है। यह इस पर प्रकाश नहीं डालता है कि यह परिवर्तन किस प्रकार हुए हैं। इसे जानने के लिए हम वित्तीय स्थिति में परिवर्तन का विवरण तैयार करते हैं। इस विवरण के दो भाग होते है। एक ओर कार्यशील पूंजी के स्रोत दर्शाए जाते हैं तथा दूसरी ओर कार्यशील पूंजी के प्रयोग दर्शाए जाते है। इन दोनों के मध्य अंतर कार्यशील पूंजी में वृद्धि दर्शाता है।

4.3.1 कोष का स्रोत एवं प्रयोग

जब लेनदेन चालू परिसंपत्तियों में वृद्धि और चालू देयताओं में कमी दर्शाता है तो इसे कार्यशील पूंजी (कोष) के स्रोत कहते हैं। जब लेनदेन चालू परिसंपत्तियों में कमी और चालू देयताओं में वृद्धि दर्शाता है तो इसे कार्यशील पूंजी (कोष) के प्रयोग कहते है। यह प्रदर्श सं. 4.1 में दिखाया गया है।
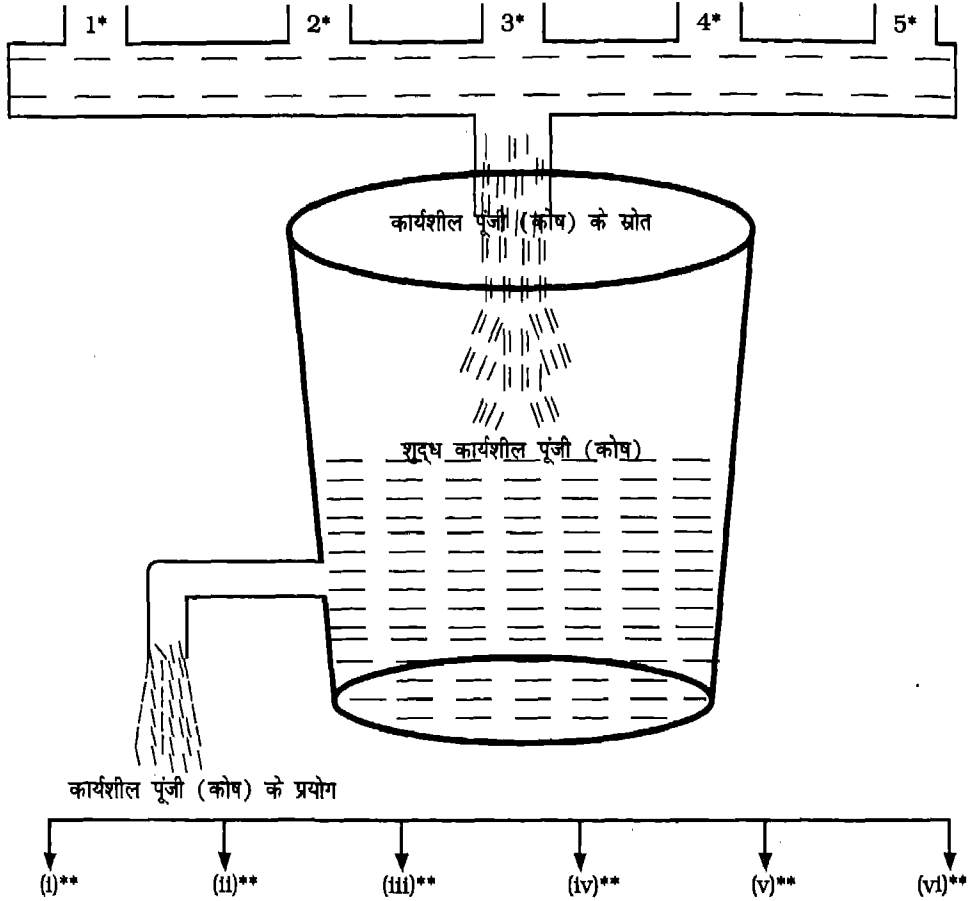
प्रदर्श 4.1

कार्यशील पूंजी (कोष) के स्रोत :

1. स्थाई परिसंपत्तियों का विक्रय
2. अंशों का निर्गम
3. ऋणपत्रों का निर्गम
4. दीर्घ कालीन ऋणों द्वारा कोष
5. परिचालन द्वारा कोष

**कार्यशील पूंजी (कोष) के प्रयोग :

(i) दीर्घकालीन परिसंपत्तियों का क्रय
(ii) अंशों का भुगतान
(iii) ऋणपत्रों का भुगतान
(iv) दीर्घ कालीन ऋणों की वापसी
(v) लाभांशों का भुगतान
(vi) परिचालन के लिए कोषों का प्रयोग

4.3.2 वित्तीय स्थिति में परिवर्तन विवरण का निर्माण

इस विवरण को तैयार करते समय कोष के स्रोतों को बाईं ओर तथा कोष के प्रयोगो को दाईं ओर सूचीबद्ध किया जाता है। दोनों ओर के मध्य अंतर कार्यशील पूंजी में शुद्ध वृद्धि अथवा कमी दर्शाता है। कोष के स्रोत एवं प्रयोग को ज्ञात करने हेतु निम्न चरण होते हैं :

(1) परिचालन द्वारा कोष की गणना।

(2) समयावधि के प्रारंभ और अंत में तुलन-पत्र में हुए गैर-चालू परिसंपत्तियों और देयताओं में कमी और वृद्धि का विश्लेषण करें तथा कोष के आगमन एवं वहिर्गमन को ज्ञात करें।

(3) समस्त स्रोतों को विवरण के बाईं ओर और समस्त प्रयोगों को दाईं ओर सूचीबद्ध करें।

(4) दोनों ओर का योग करें। यदि दाईं तरफ का योग कम है तो कार्यशील पूंजी में शुद्ध वृद्धि लिखें। अथवा कार्यशील पूंजी में शुद्ध कमी लिखें। यह कार्यशील पूंजी में परिवर्तन की सारणी में ज्ञात की गई राशि के बराबर होनी चाहिए।

4.3.3 परिचालन द्वारा कोष

लाभ एवं हानि खाता परिचालन द्वारा अर्जित आय को दर्शाता है। आय का निर्धारण आगम मान्यता तथा आमद व्यय के सिद्धांत पर आधारित है। आय के निर्धारण हेतु सम्मिलित की गई मदें व्यावसायिक संस्था के कोषों को प्रभावित कर भी सकती हैं अथवा नहीं भी कर सकती हैं। अत: हमें उन मदों को समायोजित करने की आवश्यकता होती है जो आय को तो प्रभावित करती हैं किंतु कोष अप्रभावित रहता है। अत: ऐसी मदों के समायोजन के पश्चात ही हम परिचालन द्वारा कोष की गणना कर सकते हैं। ऐसी मदें निम्नलिखित हैं :

- ह्रास, अप्रचलन, रिक्तीकरण एवं परिशोधन;
- ऋणपत्रों के निर्गम पर बट्टे, प्रारंभिक व्ययों, स्थगित आमद व्ययों का परिशोधन
- गैर-चालू परिसंपत्तियों के विक्रय पर हानि;

  उपरोक्त के अतिरिक्त कुछ अन्य मदें भी है जिन्हें आय में शामिल किया जाता है परंतु वे कार्यशील पूंजी को प्रभावित नहीं करती हैं :

  - गैर-चालू परिसंपत्तियों के विक्रय पर लाभ, जिसे परिचालन द्वारा कोष की गणना करते समय शुद्ध आय में से घटाया जाता है।
  - कभी-कभी शुद्ध आय की राशि नहीं दी गई होती है। ऐसी दशा में लाभ एवं हानि समायोजन खाते के प्रारंभ एवं अंत के शेष में शुद्ध परिवर्तन की राशि से गणना प्रारंभ की जाती है। इस राशि में निम्नलिखित मदों का समायोजन भी किया जाता है :

(i) सामान्य संचय में हस्तांतरण

(ii) प्रस्तावित/घोषित लाभांश

उदाहरण 4.4

31 मार्च 2002 का नवराज लि. का लाभ व हानि खाता निम्न है :

विवरण	राशि रु.	विवरण	राशि रु.
वेतन	4,90,000	सकल लाभ	15,80,000
ह्रास	1,85,000		
प्रारंभिक व्ययों का अपलेखन	12,000		
किराया	1,84,000		
ब्याज	15,000		
कमीशन	18,000		
प्रशासनिक व्यय	2,62,000		
विक्रय एवं वितरण व्यय	2,54,000		
बीमा व्यय	36,000		
शुद्ध लाभ	1,24,000		
योग	**15,80,000**	**योग**	**15,80,000**

ज्ञात करें : परिचालन द्वारा कोष

हल

परिचालन द्वारा कोष

विवरण	राशि रु.
वर्ष का शुद्ध लाभ	1,24,000
जमा : ह्रास	1,85,000
प्रारंभिक व्ययों का अपलेखन	12,000
परिचालन द्वारा कोष	**3,21,000**

उदाहरण 4.5

मार्च 31, 2002 को निम्नलिखित मदें रंगास्वामि मेटल वर्क्स लि. की पुस्तकों से ली गई :

	31.03.2001 को	31.03.2002 को
लाभ व हानि बिनियोजन (जमा)	6,00,000	7,50,000
सामान्य संचय (जमा)	11,00,000	12,50,000
ख्याति (नाम)	2,85,000	2,35,000
प्रारंभिक व्यय (नाम)	60,000	45,000
समेकित ब्याज (जमा)	3,85,000	4,70,000

जून 2002 को 1,50,000 रु का लाभांश दिया गया साथ ही स्थायी परिसंपत्तियों का क्रय-विक्रय नहीं हुआ।

ज्ञात करें : परिचालन द्वारा कोष

हल

परिचालन द्वारा कोष

विवरण	*राशि रु.*
लाभ एवं हानि विनियोजन कोष में वृद्धि (7,50,000-6,00,000)	1,50,000
जमा : समान्य संचय में हस्तांतरण	1,50,000
लाभांश का भुगतान	1,50,000
वर्ष की शुद्ध आय	**4,50,000**
जमा : ख्याति का अपलेखन	50,000
प्रारंभिक व्ययों का अपलेखन	15,000
ह्रास का अपलेखन	85,000
परिचालन द्वारा कोष	**6,00,000**

4.3.4 कोषों के अन्य के स्त्रोत एवं प्रयोग की गणना

कोष के अन्य स्रोतों एवं प्रयोगों की गणना अंशों का निर्गम, ऋणपत्रों का निर्गम, दीर्घकालीन ऋण, स्थायी परिसंपत्ति तथा दीर्घकालीन परिसंपत्ति का विक्रय आदि कोष के स्रोत होते हैं। अंशों व ऋणपत्रों का शोधन, दीर्घकालीन ऋणों का भुगतान, स्थायी एवं दीर्घकालीन परिसंपत्तियों का क्रय आदि कोष के प्रयोग होते है। अंशों व ऋणपत्रों के निर्गम तथा दीर्घकालीन ऋण से संबंधित सूचनाएं हमें प्रारंभिक तथा अंतिम तुलन-पत्र से प्राप्त होती हैं। अंशों तथा ऋणपत्रों पर बट्टा अथवा अधिमूल्य की सूचना अतिरिक्त सूचना के रूप में दर्शायी जाती है। इसी प्रकार, प्रारंभिक एवं अंतिम स्थायी परिसंपत्ति तथा दीर्घकालीन प्रपत्रों के सदंर्भ में सूचनाएं जो कि क्रय, विक्रय और ह्रास से संबंधित हैं, परिसंपत्तियों व प्रपत्रों के क्रय अथवा विक्रय को ज्ञात करने हेतु प्रयोग में लाई जाती हैं। गुप्त अंकों के निर्धारण के लिए निम्न खाते तैयार किए जाते हैं:

स्थायी परिसंपत्ति खाता

नाम | जमा

दिनांक	विवरण	पृ.सं.	राशि	दिनांक	विवरण	पृ.सं.	राशि
	प्रारंभिक शेष		××		परिसंपत्तियों का विक्रय (लागत पर)		××
	परिसंपत्तियों का क्रय		××		अंतिम शेष		××
योग			××		**योग**		××

स्थायी परिसंपत्ति ह्रास खाता

नाम | जमा

दिनांक	विवरण	पृ.सं.	राशि	दिनांक	विवरण	पृ.सं.	राशि
	विक्रय कि गई संपत्ति पर समेकित ह्रास अपलिखित		××		प्रारंभिक शेष		××
					चालू वर्ष का ह्रास		××
	अंतिम शेष		××				
	योग		××		**योग**		××

स्थायी परिसंपत्ति विक्रय खाता

नाम | जमा

दिनांक	विवरण	पृ. सं.	राशि	दिनांक	विवरण	पृ.सं.	राशि
	स्थायी परिसंपत्ति (लागत)		××		समेकित ह्रास		××
					बैंक (विक्रय पर वसूली)		××
	विक्रय पर लाभ		××	अथवा	विक्रय पर हानि		××
	योग		××		**योग**		××

उदाहरण 4.6

31 मार्च 2002 को जील लि. का तुलन-पत्र अगले पृष्ठ पर दिया गया है।

मार्च 31, 2002 को तुलन-पत्र

विवरण	2001 राशि रु.	2002 राशि रु.	विवरण	2001 राशि रु.	2002 राशि रु.
समता पूँजी	10,00,000	15,00,000	भूमि	9,00,000	11,00,000
संचय एवं आधिक्य	8,10,000	10,15,000	भवन	16,50,000	26,00,000
10% ऋणपत्र	4,00,000	6,00,000	समेकित ह्रास	(4,00,000)	(7,00,000)
विविध लेनदार	3,20,000	2,90,000	रहतिया	2,10,000	2,15,000
वकाया व्यय	20,000	65,000	देनदार	1,70,000	1,85,000
कराधान के लिए प्रावधान	20,000	30,000	हस्तस्थ रोकड़	25,000	90,000
			प्रारंभिक व्यय	15,000	10,000
योग	**25,70,000**	**35,00,000**	**योग**	**25,70,000**	**35,00,000**

अतिरिक्त सूचनाएँ

(i) 9,50,000 रु. का भवन और 2,00,000 रु. की भूमि का नकद क्रय किया गया।

(ii) समता अंशो और ऋणपत्रों को समभूत पर निर्गमित किया गया

(iii) 3,00,000 रु. को लाभांश का भुगतान किया गया।

शुद्ध कार्यशील पूँजी में परिवर्तन हेतु सारणी सहित कोष प्रवाह विवरण तैयार करें।

हल

परिचालन द्वारा कोष की गणना

विवरण	रु.
संचय एवं आधिक्य में वृद्धि (10,15,000 - 8,10,000)	2,05,000
लाभांश का भुगतान	3,00,000
प्रारंभिक व्ययों का अपलेखन	5,000
ह्रास	3,00,000
परिचालन द्वारा कोष	**8,10,000**

वर्षान्त 31, मार्च 2002 को जील लि. की कार्यशील पूँजी में परिवर्तन की सारणी

विवरण	*2001*	*2002*	*कार्यशील पूँजी में शुद्ध वृद्धि रु.*	*कार्यशील पूँजी में शुद्ध कमी रु.*
चालू परिसंपत्तियाँ				
रहतिया	2,10,000	2,15,000	5,000	
देनदार	1,70,000	1,85,000	15,000	
रोकड़	25,000	90,000	65,000	
चालू देयताएँ				
विविध लेनदार	3,20,000	2,90,000	30,000	
बकाया व्यय	20,000	65,000		45,000
कराधान हेतु प्रावधान	20,000	30,000		10,000
कार्यशील पूँजी में शुद्ध बढ़ोत्तरी				60,000
योग			**1,15,000**	**1,15,000**

कोष प्रवाह विवरण

स्रोत	*रु.*	*प्रयोग*	*रु.*
परिचालन द्वारा कोष	8,10,000	लाभांश का भुगतान	3,00,000
अंशो का निर्गम	5,00,000	भूमि का क्रय	2,00,000
ऋणपत्रों का निर्गम	2,00,000	भवन का क्रय	9,50,000
		कार्यशील पूँजी में शुद्ध बढ़ोत्तरी	60,000
योग	**15,10,000**	**योग**	**15,10,000**

उदाहरण 4.7

मार्च 31, 2002 को रोहन लि. का तुलन-पत्र अगले पृष्ठ पर दिया गया है:

मार्च 31, 2002 को रोहन लि. का तुलन-पत्र

		2001 रु.		2002 रु.
दायित्व				
समता अंश पूँजी		20,00,000		20,00,000
संचय एवं आधिक्य		6,00,000		8,60,000
12% ऋणपत्र		5,00,000		7,00,000
विविध लेनदार		2,70,000		3,60,000
देय विपत्र		70,000		1,50,000
भुगतान किए गए व्यय		45,000		30,000
योग		**34,85,000**		**41,00,000**
संपत्ति				
ख्याति		50,000		
भूमि		8,00,000		9,50,000
भवन (लागत पर)	11,85,000		14,55,000	
घटाया : समेकित ह्रास	2,85,000	9,00,000	3,25,000	11,30,000
उपकरण	1,95,000		2,45,000	
घटाया : समेकित ह्रास	45,000	1,50,000	75,000	1,70,000
प्रपत्र		5,60,000		6,50,000
रहतिया		4,90,000		5,30,000
देनदार		2,80,000		3,10,000
प्राप्य बिल		80,000		60,000
पूँजीदत्त व्यय		25,000		40,000
बैंकस्थ रोकड़		1,10,000		1,90,000
हस्तस्थ रोकड़		40,000		70,000
योग		**34,85,000**		**41,00,000**

अतिरिक्त सूचनाएँ

(i) उपकरण का एक भाग जिसकी लागत 50,000 रु. है, (समेकित ह्रास 10,000 रु.) को 36,000 रु. पर बेचा गया।

(ii) वर्ष के दौरान 2,00,000 रु. के लाभांश दिए गए।

कार्यशील पूँजी में परिवर्तन हेतु सारणी तथा वित्तीय स्थिति में परिवर्तन का विवरण तैयार करें।

हल

मार्च 31, 2002 को रोहन लि. का कार्यशील पूँजी में परिवर्तन हेतु सारणी

विवरण	*2001*	*2002*	*कार्यशील पूँजी में परिवर्तन*	
			शुद्ध कार्यशील पूँजी में वृद्धि	*शुद्ध कार्यशील पूँजी में कमी*
	रु.	रु.	रु.	रु.
चालू परिसंपत्ति				
रहतिया	4,90,000	5,30,000	40,000	
देनदार	2,80,000	3,10,000	30,000	
प्राप्य विपत्र	80,000	60,000		20,000
पूर्वदत व्यय	25,000	40,000	15,000	
बैंकस्थ व्यय	1,10,000	1,90,000	80,000	
हस्तस्थ रोकड़	40,000	70,000	30,000	
चालू देयताएँ				
देय विपत्र	70,000	1,50,000		80,000
विविध लेनदार	2,70,000	3,60,000		90,000
भुगतान किए गए व्यय	45,000	30,000	15,000	
कार्यशील पूँजी में शुद्ध वृद्धि				20,000
			2,10,000	**2,10,000**

परिचालन द्वारा कोष की गणना

	रु.
संचय और आधिक्य में शुद्ध वृद्धि	
(8,60,000 – 6,00,000)	2,60,000
जमा : लाभांश	2,00,000
भवन पर ह्रास	40,000
उपकरण पर ह्रास	40,000
उपकरण के विक्रय पर हानि	4,000
ख्याति का अपलेखन	50,000
परिचालन द्वारा कोष	**5,94,000**

वित्तीय स्थिति में परिवर्तन का विवरण

नाम **जमा**

कोष के स्रोत	*राशि(रु.)*	*कोष के प्रयोग*	*राशि(रु.)*
परिचालन द्वारा कोष	5,94,000	भूमि का क्रय	1,50,000
ऋणपत्रों का निर्गमन	2,00,000	भवन का क्रय	2,70,000
उपकरण का विक्रय	36,000	उपकरण का क्रय	1,00,000
		प्रपत्र का क्रय	90,000
		लाभांश का क्रय	2,00,000
		कार्यशील पूँजी में शुद्ध वृद्धि	20,000
योग	**8,30,000**	**योग**	**8,30,000**

उपकरण खाता

नाम **जमा**

	राशि(रु.)		*राशि(रु.)*
शेष आ/ला	1,95,000	उपकरण का विक्रय	50,000
उपकरण का क्रय	1,00,000	शेष आ/ले	2,45,000
योग	**2,95,000**	**योग**	**2,95,000**

उपकरण का विक्रय खाता

नाम **जमा**

		राशि(रु.)		*राशि(रु.)*
	उपकरण	50,000	समेकित ह्रास	10,000
	बैंक	36,000		
	विक्रय पर हानि	4,000		
	योग	**50,000**	**योग**	**50,000**

उपकरण का समेकित ह्रास खाता

नाम **जमा**

		राशि(रु.)		*राशि(रु.)*
	उपकरण पर समेकित ह्रास	10,000	शेष आ/ले	45,000
	शेष आ/ला	75,000	ह्रास	40,000
	योग	**85,000**	**योग**	**85,000**

उदाहरण 4.8

निम्नलिखित जिरकॉन लि. का तुलन-पत्र अगले पृष्ठ पर दर्शाया गया है:

मार्च 31, 2003 को जिरकॉन लि. का तुलन-पत्र

पूँजी एवं दायित्व	*2002* रु.	*2003* रु.	*परिसंपत्तियां*	*2002* रु.	*2003* रु.
समता अंश पूँजी	80,00,000	88,00,000	भूमि	26,00,000	44,00,000
संचय	14,50,000	26,00,000	भवन	36,00,000	36,00,000
9% ऋणपत्र	–	40,00,000	(लागत पर)		
देय विपत्र	9,00,000	10,00,000	समेकित ह्रास	(6,00,000)	(6,72,000)
भुगतान किए गए व्यय	75,000	95,000	प्लॉट एवं मशीनरी	36,00,000	49,80,000
			समेकित ह्रास	(8,00,000)	(8,90,000)
			रहतिया	9,18,000	10,12,000
			प्राप्य विपत्र	6,54,000	8,37,000
			बैंकस्थ रोकड़	4,53,000	32,28,000
योग	**1,04,25,000**	**1,64,95,000**	**योग**	**1,04,25,000**	**1,64,95,000**

अतिरिक्त सूचनाएँ

1. वर्ष में 20,00,000 रु. की भूमि क्रय की गई।
2. प्लाँट व मशीनरी जिसकी लागत 4,20,000 रु. (समेकित ह्रास 3,80,000 रु.) 25,000 रु. पर बेची गई।
3. 18,00,000 रु. की मशीनरी क्रय की गई।
4. प्लाँट व मशीनरी पर 4,70,000 रु. और भवन पर 72,000 रु. का ह्रास लगाया गया।

कार्यशील पूँजी पर आधारित वित्तीय स्थिति में परिवर्तन सारणी (कोष प्रवाह विवरण) तैयार करें।

हल

कार्यशील पूँजी में परिवर्तन की सारणी

विवरण	*2002*	*2003*	*कार्यशील पूँजी में परिवर्तन*	
	रु.	रु.	*शुद्ध कार्यशील पूँजी में वृद्धि*	*शुद्ध कार्यशील पूँजी में कमी*
रहतिया	9,18,000	10,12,000	94,000	
प्राप्य विपत्र	6,54,000	8,37,000	1,83,000	
बैंकस्थ रोकड़	4,53,000	32,28,000	27,75,000	
देय विपत्र	9,00,000	10,00,000		1,00,000
भुगतान किए गए व्यय	75,000	95,000		20,000
कार्यशील पूँजी में शुद्ध वृद्धि				29,32,000
योग			**30,52,000**	**30,52,000**

परिचालन द्वारा कोष की गणना

	रु.
संचय में शुद्ध वृद्धि (26,00,000 – 14,50,000)	11,50,000
लाभांश का भुगतान	8,00,000
भवन पर ह्रास	72,000
प्लाँट एवं मशीनरी	4,70,000
प्लाँट एवं मशीनरी के विक्रय पर हानि	15,000
परिचालन द्वारा कोष	**25,07,000**

कोष प्रवाह विवरण

कोष के स्रोत	रु.	*कोष के प्रयोग*	रु.
परिचालन द्वारा कोष	25,07,000	लाभांश का भुगतान	8,00,000
अंशो का निर्गम	8,00,000	भूमि का क्रय	18,00,000
ऋणपत्रों का निर्गम	40,00,000	प्लाँट व मशीनरी का क्रय	18,00,000
प्लाँट एवं मशीनरी का विक्रय	25,000	कार्यशील पूँजी में शुद्ध वृद्धि	29,32,000
योग	**73,32,000**	**योग**	**73,32,000**

हल के संदर्भ में टिप्पणी :

नाम **प्लांट व मशीनरी खाता** जमा

	विवरण	रु.		विवरण	रु.
	शेष आ/ला	36,00,000		प्लाँट व मशीनरी का विक्रय	4,20,000
	प्लाँट व मशीनरी	18,00,000		शेष आ/ले	49,80,000
	योग	**54,00,000**		**योग**	**54,00,000**

नाम **प्लांट व मशीनरी विक्रय खाता** जमा

	विवरण	रु.		विवरण	रु.
	प्लाँट व मशीनरी	4,20,000		प्लाँट पर समेकित ह्रास	3,80,000
				बैंक	25,000
				विक्रय पर हानि	15,000
	योग	**4,20,000**		**योग**	**4,20,000**

नाम **प्लाँट व मशीनरी पर समेकित ह्रास खाता** जमा

	विवरण	रु.		विवरण	रु.
	प्लाँट व मशीनरी विक्रय	3,80,000		शेष आ/ला	8,00,000
	शेष आ/ले	8,90,000		ह्रास	4,70,000
	योग	**12,70,000**		**योग**	**12,70,000**

4.4. वित्तीय स्थिति में परिवर्त्तन हेतु विवरण के लाभ एवं सीमाएँ

वित्तीय स्थिति में परिवर्तन हेतु विवरण यह ज्ञात करने के लिए उपयोगी होता है कि एक निश्चित समयावधि में कोषों का उपार्जन एवं प्रयोग किस प्रकार हुआ है। यह परिचालन द्वारा उपार्जित एवं प्रयोग किस प्रकार हुआ है। यह परिचालन द्वारा उपार्जित कुल कोषों का निर्धारण करता है, जोकि समान्यतया एक सुदृढ़ कंपनी के कोष का प्रमुख स्रोत है। यह व्यवसाय की वित्तीय एवं निवेशित क्रियाओं से उपार्जित कोषों को मूल्यांकित करने में सहायता करता है। यह इस पर भी प्रकाश डालता है कि कोषों का प्रयोग किस प्रकार किया गया है। यह विवरण ऋण्दाताओं को व्यावसायिक संस्था की वित्तीय देयताओं की भुगतान क्षमता की संपूर्ण छवि प्रवाह करता है। विस्तार कार्यक्रमों के लिए यह विवरण आवश्यक कोष उपार्जन का निर्धारण भी करता है।

हालांकि वित्तीय स्थिति में परिवर्तन हेतु विवरण संबंध और बाह्य उपयोगकर्ताओं के लिए एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण साधन है, किंतु, इसकी अपनी कुछ सीमाएँ हैं। यह विवरण केवल वित्तीय विवरणों में निहित

सूचनाओं को पुन: व्यवस्थित करता है, अत:, यह विवरण वित्तीय विवरणों से अधिक विश्वसनीय नहीं होता है। इस विवरण द्वारा यह ज्ञात नहीं किया जाता है कि भविष्यकालीन भुगतानों के लिए रोकड़ उपलब्ध होगा अथवा नहीं। यह विवरण भविष्यकालीन प्रवाहो को नहीं दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, चालू दायित्वों द्वारा वित्त की गई चालू परिसंपत्तियों को यह विवरण नहीं दर्शाता है।

4.5 रोकड़ प्रवाह विवरण : आशय एवं उद्देश्य

'कोष' शब्द की व्याख्या विभिन्न प्रकार से की जाती है। इसे 'रोकड़' के समरूप भी माना जाता है। अत: वित्तीय स्थिति में परिवर्तन हेतु विवरण का निर्माण 'कार्यशील पूँजी' के बजाय 'रोकड़' को आधार बना कर भी किया जा सकता है। यह विवरण 'रोकड़ प्रवाह विवरण' कहलाता है। इंस्टीच्यूट ऑफ चार्टड एकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया द्वारा जारी लेखांकन मानक 3 'रोकड़ प्रवाह विवरण' से संबंधित है। भारत के मान्य रहतिया बाज़ार में सूचीबद्ध कंपनियों तथा निजि एवं सार्वजनिक क्षेत्रों के अन्य व्यापारिक, औद्योगिक तथा व्यावसायिक संस्थाओं को लाभ व हानि खाते एवं तुलन-पत्र सहित रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करना अनिवार्य है।

रोकड़ प्रवाह विवरण का उद्देश्य एक नियमित समयावधि पर व्यापारिक संस्था की रोकड़ प्राप्ति (रोकड़ अर्न्तवाह) और भुगतान (रोकड़ बहीर्वाह) की सूचना प्रदान करना है। इस कारणवश, रोकड़ प्रवाह को परिचालन, वित्त तथा निवेशित क्रियाओं में विभाजित किया जाता है। विवरण का निर्माण इन तीनों क्रियाओं से उत्पन्न शुद्ध रोकड़ प्रवाह द्वारा किया जाता है। रोकड़ के प्रारंभिक शेष को अवधि के दौरान के शुद्ध प्रवाह में जोड़ा जाता है जिससे अवधि के अंत का रोकड़ शेष प्राप्त होता है। जैसा कि ज्ञात है कि शुद्ध प्रवाह प्रारंभिक और अंतिम शेष का अंतर है। अत: यह विवरण शुद्ध प्रवाह के कारणों को दर्शाता है।

रोकड़ प्रवाह विवरण, कार्यशील पूँजी पर आधारित वित्तीय स्थिति में परिर्वतन से अधिक उपयोगी माना जाता है। यह विवरण कार्यशील पूँजी के बजाय रोकड़ प्रवाह पर केंद्रित होता है। चूंकि, कंपनी को स्वयं की वित्तीय देयताओं की पूर्ति के लिए अपनी चालू परिसंपत्तियों को रोकड़ में परिवर्तित करना आवश्यक होता है। अत: इस विवरण से उपयोगकर्ता फर्म की तरलता को सही रूप में मूल्यांकित करने में समर्थ होते हैं।

रोकड़ में हस्तस्थ रोकड़, बैंकस्थ रोकड़ और रोकड़ समरूप परिसंपत्तियों को सम्मिलित किया जाता है। रोकड़ समरूप वह प्रपत्र हैं जिन्हें आवश्यकतानुसार रोकड़ में परिवर्तित किया जा सकता है तथा जिनके मूल्य में गिरावट का जोखिम भी नही पाया जाता है।

4.5.1 रोकड़ प्रवाह विवरण की उपयोगिताएँ

रोकड़ प्रवाह विवरण निवेशकों, लेनदारों तथा अन्य उपयोगकर्ताओं को फर्म की वित्तीय स्थिति के विभिन्न पहलुओं से संबंधित सूचनाएं प्रदान करता है। यह विवरण उपक्रम की भविष्यकालीन रोकड़ प्रवाह उपार्जन क्षमता के निर्धारण में भी सहायता करता है। इसके अतिरिक्त यह विवरण उपक्रमों की लाभांश और देयताओं

की भुगतान क्षमता को दर्शाता है। यह शुद्ध आय और परिचालन क्रियाओं द्वारा रोकड़ के मध्य अंतर की भी व्याख्या करता है। यह विनियोजित और वित्त लेनदेनों द्वारा अर्जित रोकड़-प्रवाह के संदर्भ में सूचना प्रदान करता है।

4.6 रोकड़ प्रवाह विवरण का निर्माण

रोकड़ प्रवाह विवरण के निर्माण हेतु सूचनाएँ तुलनात्मक तुलन-पत्र, लाभ व हानि खाते एवं इन दोनों विवरणों में दी गई अतिरिक्त सूचनाओं से प्राप्त होती है। अतिरिक्त सूचनाओं के संदर्भ में परिसंपत्तियों, देयताओं एवं समता में हुए परिवर्तनों को स्थायी परिसंपत्तियों के क्रय/विक्रय, अंश और ऋणपत्र के निर्गम एवं शोधन तथा दीर्घकालीन ऋणों की प्राप्ति एवं भुगतान के रूप में विश्लेषित किया जाता है। तुलन-पत्र सहित आय विवरण व अन्य सूचनाओं की सहायता से परिचालन द्वारा रोकड़ प्रवाह ज्ञात किया जाता है। लेखांकन मानक 3 के अनुसार रोकड़ प्रवाह को तीन भागों में वर्गीकृत किया जाता है : परिचालन द्वारा रोकड़ प्रवाह, निवेश द्वारा रोकड़ प्रवाह, वित्त द्वारा रोकड़ प्रवाह। इन तीनों वर्गों की व्याख्या निम्नवत् की गई है।

4.6.1 परिचालन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह

शुद्ध आय का निर्धारण उपार्जन आधार पर किया जाता है। अतः परिचालन क्रियाओं के द्वारा रोकड़ ज्ञात करने के लिए उपार्जन आधार पर परिचालन क्रियाओं को रोकड़ आधार पर परिवर्तित किया जाता है। इस प्रक्रिया के लिए हम 'प्रत्यक्ष' अथवा 'अप्रत्यक्ष' विधि का प्रयोग कर सकते हैं। लेखांकरण मानक 3 के अनुसार, भारतीय कंपनियाँ परिचालन क्रियाओं द्वारा रोकड़ को किसी भी विधि द्वारा प्रतिवेदित कर सकती हैं।

परिचालन क्रियाओं से प्राप्त रोकड़ : प्रत्यक्ष विधि

इस विधि में, आय विवरण की प्रत्येक मद को उपार्जन आधार से नकद आधार में समायोजित किया जाता है। आमदों एवं व्ययों से संबंधित नकद प्राप्तियों एवं नकद भुगतानों के निर्धारण एवं सूचीबद्धन को परिचालन क्रियाओं से नकद अतर्वाह एवं बहिर्वाह कहा जाता है। शुद्ध राशि को परिचालन से नकद प्राप्ति के रूप में अंतिम कॉलम में प्रतिवेदित किया जाता है :

चरण-I : परिचालन क्रियाओं से प्राप्त नकद का निर्धारण

(i) ग्राहकों से नकद प्राप्ति

विक्रय से प्राप्त आमद को आय विवरण में उपार्जन आधार पर प्रतिवेदित किया जाता हैं। शुद्ध विक्रय में प्रारंभिक प्राप्य विपत्रों को जोड़ा जाता है तथा अंतिम प्राप्त विपत्रों, एक अवधि के दौरान अपलिखित डूबत ऋण एवं ग्राहकों को दिए गए बट्टे की राशि को घटाया जाता है।

विवरण	रु.
शुद्ध विक्रय	x x x
जमा : प्रारंभिक प्राप्य विपत्र	x x x
घटाया : अंतिम प्राप्य विपत्र	(x x x)
दिया गया बट्टा	x x x
अपलिखित डूबत ऋण	(x x x)
ग्राहकों से प्राप्त शुद्ध नकद राशि	**x x x**

(ii) अन्य नकद प्राप्तियाँ

नकद प्राप्ति के निर्धारण हेतु अन्य आमद जैसे कि किराया, आय, अर्जित कमीशन आदि जिन्हें प्राप्त नहीं किया गया है अथवा अग्रिम रूप से प्राप्त किया गया है, को समायोजित किया जाता है।

विवरण	रु.
अन्य अर्जित आमदें	x x x
जमा : प्रारंभिक प्राप्य विपत्र	x x x
घटाया : अंतिम प्राप्य विपत्र	(x x x)
जमा : अंत में प्राप्त अग्रिम राशि	x x x
घटाया : प्रारंभ में प्राप्त अग्रिम राशि	(x x x)
अन्य आमदों से प्राप्त नकद राशि	**x x x**

(iii) आय कर के लिए नकद भुगतान

आय विवरण में आय कर पर प्रावधान को दर्शाया जाता है। तुलनात्मक तुलन-पत्र प्रारंभ व अंत में देय कर राशि को दर्शाता है। हम आय कर के नकद भुगतान की गणना निम्न प्रकार कर सकते हैं :

विवरण	रु.
आय कर के लिए प्रावधान	x x x
जमा : प्रारंभ में देय कर	x x x
घटाया : अंत में देय कर	(x x x)
आय कर का नकद भुगतान	x x x

(iv) ब्याज का भुगतान

ब्याज को आदम में से घटा कर शुद्ध आय ज्ञात की जाती है। लेखांकन मानक 3 के अनुसार वित्तीय संस्थाओं के देय ब्याज और ब्याज एवं लाभांश की नकद प्राप्ति से अर्जित नकद प्रवाह को परिचालन

क्रियाओं से उत्पन्न नकद प्रवाह के रूप में दर्शाया जाता है। अन्य संस्थाओं की दशा में, देय ब्याज से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह को वित्तीय क्रियाओं में वर्गीकृत किया जाता है तथा ब्याज और लाभांश की नकद प्राप्ति को विनियोजित क्रियाओं से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह के रूप में दर्शाया जाता है। पूर्तिकर्ताओं को देय राशि की गणना हेतु क्रय राशि में प्रारंभिक लेनदारों को जोड़ा तथा अंतिम लेनदारों को घटाया जाता है।

विवरण	रु.
क्रय	x x x
जमा : प्रारंभिक लेनदार	x x x
घटाया : अंतिम लेनदार	(x x x)
पूर्तिकर्ताओं को नकद भुगतान	x x x

(v) परिचालन व्ययों के लिए नकद भुगतान

आय विवरण पर परिचालन व्ययों को आय विवरण में उपार्जन आधार पर दर्शाया जाता है। परिचालन व्ययों को बकाया व्ययों के और पूर्वदत्त व्ययों के नकद भुगतान के लिए समायोजित किया जाता है।

विवरण	रु.
परिचालन व्यय	x x x
जमा : समयावधि के अंत में पूर्वदत्त व्यय	x x x
घटाया : समयावधि के प्रारंभ में पूर्वदत्त व्यय	(x x x)
घटाया : समयावधि के अंत में बकाया व्यय	(x x x)
परिचालन व्ययों के लिए नकद भुगतान	**(x x x)**

परिचालन क्रियाओं द्वारा रोकड़ का प्रयोग

(i) पूर्तिकर्ताओं को नकद भुगतान

आय विवरण में विक्रय माल की लागत को उपार्जन आधार पर दर्शाया जाता है। पूर्तिकर्ताओं को नकद भुगतान का निर्धारण करने के लिए, सर्वप्रथम वर्ष भर में किए क्रय को ज्ञात किया जाता है तद्पश्चात् पूर्तिकर्ताओं को देय भुगतान की राशि की गणना की जाती है। वर्ष भर में क्रय की राशि की गणना के लिए अंतिम रहतिये को विक्रय माल की लागत में जोड़ा जाता है तथा प्रारंभिक रहतिये को घटाया जाता है।

विवरण	रु.
विक्रय माल की लागत	x x x
जमा : अंतिम रहतिया	x x x
घटाया : प्रारंभिक रहतिया	(x x x)
क्रय	**(x x x)**

परिचालन क्रियाओं से रोकड़ प्राप्ति — अप्रत्यक्ष विधि

इस विधि के अंतर्गत, हम शुद्ध आय से आरंभ करते हैं तथा उन मदों का समायोजनं करते हैं जिससे शुद्ध आय तो प्रभावित होती है किंतु रोकड़ अप्रभावित रहता है। इस विधि के चरण निम्नलिखित हैं :

वर्ष भर की शुद्ध आय में उन व्ययों को चार्ज किया जाता है जिनसे नकद वहिर्वाह नहीं हुआ है। यह मदें हैं : स्थायी परिसंपत्तियों पर ह्रास का अपलेखन, स्थगित आमद व्ययों का अपलेखन, स्थायी परिसंपत्तियों के विक्रय पर हानि। दूसरी तरफ, स्थायी परिसंपत्तियों के विक्रय पर लाभ चालू वर्ष की आय में वृद्धि करता है परंतु इसे स्थायी परिसंपत्तियों के विक्रय से प्राप्त नकद प्रवाह में सम्मिलित किया जाता है। अत: स्थायी परिसंपत्तियों के विक्रय पर लाभ को लाभों में से घटाया जाता है। चालू परिसंपत्तियों और चालू देयताओं में हुए परिवर्तनों को परिचालन क्रियाओं से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह को ज्ञात करने के लिए समायोजित किया जाता है। चालू देयताओं में वृद्धि और चालू परिसंपत्तियों में गिरावट को शुद्ध लाभ में जोड़ा जाता है। देय ब्याज को वित्तीय क्रियाओं से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह माना जाता है। अत: लाभों में पुनः जोड़ दिया जाता है। ब्याज तथा लाभांश प्राप्तियों को शुद्ध लाभ में से घटा दिया जाता है तथा विनियोजित क्रियाओं से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह के रूप में दर्शाया जाता है। परिचालन क्रियाओं द्वारा रोकड़ प्रवाह ज्ञात करने का प्रारूप निम्नवत् है :

परिचालन क्रियाओं द्वारा रोकड़ प्रवाह की गणना

विवरण	रु.
परिचालन क्रियाओं द्वारा रोकड़ प्रवाह :	
कर उपरांत शुद्ध आय	xxx
जमा : ह्रास	xxx
जमा : स्थायी परिसंपत्तियों का अपलेखन	xxx
जमा : स्थायी परिसंपत्तियों के विक्रय पर हानि	xxx
जमा : स्थगित आमद व्ययों का अपलेखन	xxx
जमा : ब्याज	xxx
जमा : आय कर प्रावधान	xxx
घटाया : स्थायी परिसंपत्ति पर के विक्रय पर लाभ	xxx
जमा : चालू देयताओं में वृद्धि (बैंक अधिविकर्ष के अतिरिक्त)	xxx
जमा : चालू परिसंपत्ति में कमी (रोकड़ के अतिक्ति)	xxx
घटाया : चालू परिसंपत्ति में वृद्धि	xxx
परिचालन क्रियाओं द्वारा शुद्ध रोकड़	xxx
घटाया : आय कर का भुगतान	xxx
कर उपरांत शुद्ध रोकड़	**xxx**

4.6.2 विनियोजित क्रियाओं द्वारा रोकड़ प्रवाह

स्थायी परिसंपत्तियों और दीर्घकालीन प्रपत्रों की वर्ष के प्रारंभ और वर्ष के अंत में राशि तुलनात्मक तुलन-पत्र से प्राप्त की जा सकती है। अतिरिक्त सूचनाएं इन मदों के मूल्यांकन तथा परिवर्तन के कारणों को दर्शाती हैं। इस प्रकार हम स्थायी परिसंपत्तियों और प्रपत्रों के क्रय हेतु प्रयोग में लाई गई राशि तथा विक्रय द्वारा प्राप्त राशि को ज्ञात कर सकते है जैसा कि वित्तीय स्थिति में परिवर्तन के विवरण की दशा में बताया गया है।

विनियोजित क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह :

(i) स्थायी परिसंपत्तियों के अधिग्रहण हेतु नकद भुगतान

(ii) स्थायी परिसंपत्तियों के विक्रय से प्राप्त नकद राशि

(iii) अन्य उपक्रमों के अंशों, अधिपत्रों अथवा ऋण प्रपत्रों के क्रय हेतु नकद भुगतान (उन प्रपत्रों के नकद भुगतान के अतिरिक्त जो कि नकद समरूप समझे जाते है तथा व्यापारिक उद्देश्यों के लिए होते हैं)

(iv) प्रपत्रों पर प्राप्त ब्याज व लाभांश

(v) तीसरे पक्ष को दिए गए ऋण व नकद अग्रिम राशि। वित्तीय संस्थाओं की दशा में इन्हें परिचालन क्रियाओं से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह माना जाएगा।

(vi) तीसरे पक्ष को दिए गए ऋण एवं नकद अग्रिम राशि की वसूली। वित्तीय संस्थाओं की दशा में इन्हें परिचालन क्रियाओं से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह माना जाएगा।

4.6.3 वित्तीय क्रियाओं से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह

वित्तीय क्रियाओं से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह उपक्रम के स्वामियों और लेनदारों द्वारा दी गई नकद धनराशि को दर्शाता है। वित्तीय क्रियाओं से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह को वर्ष के प्रारंभ व अंत की समता व दीर्घकालीन देयताओं के मध्य अंतर के विश्लेषण से ज्ञात किया जाता है।

वित्तीय क्रियाओं से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह में निम्नलिखित मदों को सम्मिलित किया जाता है :

(i) अंशों के निर्गम से प्राप्त धन राशि

(ii) ऋणों के निर्गम से प्राप्त धनराशि

(iii) ऋणों से प्राप्त धनराशि

(iv) अंशों के शोधन हेतु नकद भुगतान

(v) ऋणपत्रों के शोधन हेतु नकद भुगतान

(vi) ऋणों का नकद भुगतान

(vii) लाभांश व ब्याज का नकद भुगतान

(viii) ऋणों व ऋणपत्रों पर ब्याज का नकद भुगतान

तीसरे रोकड़ प्रवाह विवरण का प्रारूप (प्रत्यक्ष विधि)

	रु.	रु.
परिचालन क्रियाओं द्वारा रोकड़ प्रवाह		
ग्राहकों से नकद प्राप्ति	x x x	
पूर्तिकर्ताओं को नकद भुगतान	x x x	
कर्मचारियों को नकद भुगतान	x x x	
व्ययों का नकद भुगतान	x x x	
परिचालन से अर्जित रोकड़	**x x x**	
आय कर का नकद भुगतान	x x x	
परिचालन क्रियाओं से शुद्ध रोकड़		**x x x**
विनियोजन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह		
स्थायी परिसंपत्तियों एवं प्रपत्रों का क्रय	x x x	
प्रपत्रों से ब्याज व लाभांश प्राप्त	x x x	
शुद्ध रोकड़ प्रवाह		x x x
वित्तीय क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह		
अंश पूँजी के निर्गम से नकद	x x x	
ऋणपत्रों के निर्गम से नकद	x x x	
ऋणों द्वारा नकद	x x x	
अंशों का शोधन	x x x	
ऋणपत्रों का शोधन	x x x	
ऋणों का भुगतान	x x x	
ब्याज का भुगतान	x x x	
लाभांश का भुगतान	x x x	
वित्तीय क्रियाओं से शुद्ध नकद		x x x or (x x x)
नकद में शुद्ध वृद्धि (कमी)		x x x or (x x x)
प्रारंभिक रोकड़		x x x
अंतिम रोकड़	**x x x**	

रोकड़ प्रवाह विवरण (अप्रत्यक्ष विधि)

इस विधि के अंतर्गत केवल परिचालन क्रियाओं से नकद प्रवाह खंड में परिवर्तन होगा।

परिचालन क्रियाओं द्वारा रोकड़ प्रवाह	रु.	रु.
कर पूर्व शुद्ध लाभ		x x x
समायोजन के लिए :		
ह्रास	x x x	
ब्याज आय	x x x	
लभांश आय	x x x	
ब्याज व्यय	x x x	
कराधान	x x x	
स्थायी परिसंपत्ति के विक्रय पर हानि	x x x	
स्थायी परिसंपत्ति के विक्रय पर लाभ	x x x	
अन्य गैर नकदीय मदें	x x x	x x x
कार्यशील पूंजी में परिवर्तन से पूर्व परिचालन लाभ	x x x	
जमा : चालू देयताओं में वृद्धि	x x x	
चालू परिसंपत्तियों में कमी	x x x	
(नकद के अतिरिक्त)		
घटाया : चालू देयताओं में कमी	(x x x)	
चालू परिसंपत्तियों में वृद्धि	(x x x)	
(नकद के अतिरिक्त)		
परिचालन क्रियाओं से शुद्ध रोकड़		**x x x**
विनियोजन क्रियाओं से नकद		
स्थायी परिसंपत्ति और प्रपत्रों का क्रय	x x x	
प्रपत्र और स्थायी परिसंपत्ति के विक्रय से रोकड़ प्रवाह	x x x	
ब्याज और लाभांश से नकद प्राप्ति	x x x	
विनियोजित क्रियाओं (प्रयोग द्वारा) शुद्ध रोकड़		**x x x**
वित्तीय क्रियाओं से रोकड़		
अंशों के निर्गम से नकद	x x x	
ऋणों से नकद	x x x	
अंशों का शोधन	x x x	
ऋणपत्रों का शोधन	x x x	
ब्याज का भुगतान	x x x	
लाभांश का भुगतान	x x x	
वित्तीय क्रियाओं (प्रयोग द्वारा) शुद्ध रोकड़		**x x x**
नकद रोकड़ में शुद्ध वृद्धि (कमी)		x x x
समय अवधि के अंत में रोकड़		**x x x**

उदाहरण 4.9

निम्नांकित समायोजनों के उपरांत 31 मार्च, 2003 को गंगा यमुना लि. में 12,50,000 रु. का लाभ दर्शाया:

भवन पर ह्रास	35,000 रु.
संयंत्र पर ह्रास	75,000 रु.
फर्नीचर पर ह्रास	18,000 रु.
ख्याति का अपलेखन	12,000 रु.
संयंत्र के विक्रय पर हानि	12,000 रु.

वर्ष के प्रारंभ एवं अंत में चालू परिसंपत्तियों एवं देयताएं इस प्रकार हैं :

	मार्च 31, 2002	मार्च 31, 2003
देनदार	38,000 रु.	42,000 रु.
रहतिया	75,000 रु.	18,000 रु.
रोकड़	34,000 रु.	32,000 रु.
लेनदार	7,000 रु.	10,000 रु.

हल

परिचालन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह	रु.
वर्ष में शुद्ध लाभ	12,50,000
जमा : भवन पर ह्रास	35,000
संयंत्र में ह्रास	75,000
फर्नीचर पर ह्रास	18,000
ख्यति का अपलेखन	12,000
संयंत्र पर हानि	20,000
कार्यशील पूंजी में परिवर्तन से पूर्व परिचालन लाभ	**14,10,000**
देनदारों में वृद्धि	(4,000)
रहतिए में कमी	7,000
लेनदारों में कमी	(3,000)
देय व्ययों में वृद्धि	3,000
परिचालन क्रियाओं से शुद्ध रोकड़	**14,13,000**

उदाहरण 4.10

एक व्यापारिक संस्था का तुलन-पत्र एवं लाभ व हानि खाता निम्नवत् है:

वर्ष 31 मार्च 2002, 2003 को ---------- का तुलन-पत्र

देयताएँ	*मार्च 31 2002* रु.	*मार्च 31 2003* रु.	*परिसंपत्तियाँ*	*मार्च 31 2002* रु.	*मार्च 31 2003* रु.
पूंजी	90,000	1,30,000	संचय लागत पर	1,60,000	1,65,000
संचय	60,000	96,000	समेकित ह्रास	(30,000)	(38,000)
9% दीर्घकालिन ऋण	70,000	50,000	पेटेंट	–	29,000
प्रस्तावित लाभांश	8,000	10,000	रहतिया	80,000	90,000
लेनदार	40,000	30,000	देनदार	60,000	55,000
बकाया व्यय	32,000	19,000	पूर्वदत्त व्यय	10,000	12,000
			रोकड़	20,000	22,000
योग	**3,00,000**	**3,35,000**	**योग**	**3,00,000**	**3,35,000**

मार्च 31, 2002 को -------------------- का लाभ एवं हानि खाता

विवरण	रु.	*विवरण*	रु.
कच्चे माल का उपयोग	2,00,000	विक्रय	3,75,000
देय मजदूरी	40,000		
व्यय	80,000		
ह्रास	8,000		
पेटेंट अपलिखित	1,000		
शुद्ध लाभ	46,000		
	3,75,000		**3,75,000**
प्रस्तावित लाभांश	10,000	शुद्ध लाभ	46,000
धाये लाभ	36,000		46,000
	46,000		**46,000**

अतिरिक्त सूचनाएँ

जून 2002 को लिया गया 20,000 रु. का ऋण लौटाया गया। मासिक आधार पर प्रत्येक मास के अंत में देय ब्याज का भुगतान किया गया जिसे व्ययों में सम्मिलित किया गया था।

रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करें।

हल

रोकड़ प्रवाह विवरण (अप्रत्यक्ष विधि)

	रु.	रु.
परिचालन क्रियाओं द्वारा रोकड़ प्रवाह		
शुद्ध लाभ	46,000	
जमा : ह्रास	8,000	
पेटेंट अपलिखित	1,000	
ब्याज का भुगतान	4,800	
कार्यशील पूंजी परिवर्तन से पूर्व परिचालन लाभ		59,800
जमा : देनदारों में कमी	5,000	
घटाया : अस्तियों में वृद्धि	(10,000)	
पूर्वदत्त व्ययों में वृद्धि	(2,000)	
लेनदारों में कमी	(10,000)	
घटाया बकाया व्ययों में कमी	(13,000)	
परिचालन क्रियाओं से प्राप्ति रोकड़		**29,800**
विनियोजन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह		
संयंत्र क्रय हेतु नकद भुगतान	(5,000)	
पेटेंट के क्रय हेतु नकद भुगतान	(30,000)	
विनियोजन क्रियाओं से शुद्ध रोकड़ प्राप्त		(35,000)
वित्तीय क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह		
अंशों मे निर्गम से प्राप्त रोकड़	40,000	
ऋणों का भुगतान	(20,000)	
लाभांश का नकद भुगतान	(8,000)	
ब्याज का नकद भुगतान	(4,800)	
वित्तीय क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह		7,200
रोकड़ में शुद्ध वृद्धि		2,000
वर्ष के प्रारंभ में नकद शेष		20,000
वर्ष के अंत में नकद शेष		**22,000**

उदाहरण 4.11

सॉफ्टवेयर सर्विस लि. का मार्च 31,2001, 2002 को तुलन पत्र व लाभ हानी खाता इस प्रकार था :

मार्च 31, 2001, 2002 को साफ्टवेयर सर्विस लि. का तुलन-पत्र

	2001 रु. .000 में	2002 रु. .000 में
पूँजी व देयताएँ		
समता अंश पूँजी	108.0	396.0
घटाया आय	244.8	370.8
9% ऋणपत्र	270.0	198.0
विविध लेनदार	72.0	41.4
देय व्यय	0	18.0
योग	**694.8**	**1,024.2**
परिसंपत्तियाँ	2001 रु. .000 में	2002 रु. .000 में
भूमि	126.0	81.0
भवन	360.0	360.0
समेकित ह्रास भवन पर	(19.8)	(37.8)
उपकरण	122.4	347.4
उपकरण पर समेकित ह्रास	(18.0)	(50.4)
रहतिया	10.8	97.2
देनदार	36.0	122.4
रोकड़	66.6	97.2
प्रारंभिक व्यय	10.8	7.2
योग	**694.8**	**1,024.2**

वर्षान्त मार्च 31,2002 को सॉफ्टवेयर सेक्युरीटीज लि. का आय विवरण

	रु. 000 में	रु. 000 में
विक्रय		1602.0
घटाया : विक्रय माल की लागत	837.0	
परिचालन व्यय	397.8	
ब्याज व्यय	21.6	
उपकरण के विक्रय पर हानि	3.6	1,260.0
कर पूर्व शुद्ध आय		342.0
कराधान		117.0
कर उपरांत शुद्ध आय		225.0

अतिरिक्त सूचनाएँ

1. परिचालन व्ययों में 59,400 रु. का ह्रास तथा 3,600 रु. का प्रारंभिक व्ययों पर प्रभार सम्मिलित हैं।
2. भूमि को पुस्तक मूल्य पर बेचा गया।
3. वर्ष 2002 के लिए 27,000 रु. का नकद भुगतान दिया गया तथा पूर्ण भुगतान अधिलाभांश अंश प्रत्येक 3 अंशों पर 2 अंश के अनुपात में दिए गए।
4. ब्याज का नकद भुगतान किया गया।
5. 2,98,800 रु. के उपकरण क्रए किए गए। 73,800 रु. का उपकरण जिसका पुस्तक मूल्य 64,800 रु. है, को 61,200 रु. पर बेचा गया।
6. ऋण-पत्रें के शोधन और समता अंश के निर्गम से पूर्व अधिलाभांश अंशें का नकद निर्गम प्रत्येक 3 अंशों के बदले में 2 अंशों के आधार पर किया गया।
7. 18,000 रु. के ऋणपत्रों का शोधन नकद किया गया तथा 54,000 रु. के ऋणपत्रों का सममूल पर समता अंशों में परिवर्तित कर के शोधन किया गया।
8. 1,62,000 रु. के समता अंश सममूल्य पर निर्गमित किए गए।
9. वर्ष के दौरान 1,17,000 रु. का आय कर दिया गया।

रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करें।

हल

रोकड़ प्रवाह विवरण

परिचालन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह	रु.	रु.
कर से पूर्व शुद्ध आय	3,42,000	
ह्रास	59,400	
प्रारंभिक व्यय	3,600	
उपकरण के विक्रय पर हानी	3,600	
ब्याज	21,600	
कार्यशील पूंजी में परिवर्तन से पूर्व परिचालन लाभ	4,30,200	
कार्यशील पूंजी में परिवर्तन :		
रहतिए में वृद्धि	(86,400)	
देनदारों में वृद्धि	(86,400)	
लेनदारों में कमी	(30.600)	
देय व्ययों में वृद्धि	18,000	
परिचालन से अर्जित रोकड़	2,44,000	
घटाया : आय कर का भुगतान	1,17,000	
कर उपरांत परिचालन क्रियाओं से शुद्ध रोकड़ प्रवाह		**1,27,800**

विनियोजन क्रियाओं से रोकड़		
उपकरण का क्रय	(2,98,800)	
उपकरण के विक्रय से नकद प्राप्ति	61,200	
भूमि के विक्रय से नकद प्राप्ति	45,000	
विनियोजन क्रियाओं में प्रयोग हुआ शुद्ध रोकड़		**1,92,600**
वित्तीय क्रियाओं से रोकड़		
समता अंश पूंजी के निर्गम से प्राप्त रोकड़	1,62,000	
ऋणपत्रों का शोधन	(18,000)	
लाभांश का भुगतान	(27,000)	
ब्याज का भुगतान	(21,600)	
वित्तीय क्रियाओं से शुद्ध रोकड़ प्रवाह		**95,400**
रोकड़ में शुद्ध वृद्धि		30,000
वर्ष के प्रारंभ में रोकड़		66,600
वर्ष के अंत में रोकड़		97,200

हल के संदर्भ में टिप्पणी

नाम **उपकरण खाता** **जमा**

दिनांक		*राशि(रु.)*	*दिनांक*		*राशि(रु.)*
	प्रारंभिक शेष	1,22,400		उपकरण का विक्रय	73,800
	उपकरण का क्रय	2,98,800		अंतिम शेष	3,47,000
		4,21,200			**4,21,200**

नाम **उपकरण विक्रय खाता** **जमा**

दिनांक		रु.		*दिनांक*	रु.
	उपकरण	73,800		समेकित ह्रास	9,000
				बैंक	61,200
				विक्रय पर हानि	3,600
		73,200			**73,200**

लागत – पुस्तक मूल्य = समेकित ह्रास

73,800 – 64,800 = 9,000

नाम **उपकरण पर समेकित ह्रास खाता** जमा

दिनांक		राशि(रु.)	दिनांक		राशि(रु.)
	उपकरण का विक्रय	9,000		प्रारंभिक शेष	18,000
	अंतिम शेष	50,400		चालू वर्ष में ह्रास	41,400
	योग	**59,400**		**योग**	**59,400**

31.3.2002 को समता अंश पूँजी		3,96,000
घटाया: समता अंश पूँजी 31.3.2001 को	1,08,000	
अधिलाभांश निर्गम	72,000	
ऋणपत्रों का शोधन	54,000	2,34,000
नकद निर्गम		1,62,000

भवन पर ह्रास = 37,800 – 19,800 = 18,000

चालू वर्ष में ह्रास = 41,400 + 18,000 = 59,400

अध्याय में प्रयुक्त शब्द

- कोष
- कोष प्रवाह
- विनियोजित क्रियाएँ
- कार्यशील पूंजी
- रोकड़ प्रवाह
- परिचालन क्रियाएँ
- वित्तीय क्रियाएँ
- शुद्ध कार्यशील पूंजी

सारांश

ऐसे कई प्रश्न हैं जिसके उत्तर के लिए विनियोजित तथा अन्य उपयोकर्ता उत्सुक रहते हैं। उदाहरणस्वरूप: चालू लाभों में से कंपनी अधिक लाभांश देने में कैसे अक्षम है, परिसंपत्तियों को कैसे वित्त किया जाता है, अंश निर्गम से प्राप्त राशि का उपयोग किस प्रकार किया गया है, आदि वित्तीय स्थिति में परिवर्तन हेतु विवरण द्वारा इन प्रश्नों का हल प्राप्त होता है। इस स्थिति में कोष से आशय शुद्ध कार्यशील पूंजी है अर्थात चालू परिसंपत्तियाँ – चालू देयताएँ।

रोकड़ प्रवाह विवरण वित्तीय स्थिति में परिवर्तन से उच्च माना जाता है क्योंकि इस विवरण के माध्यम से उपक्रम की तरलता ज्ञात की जाती है। इंस्टीट्यूट आफ चार्टर्ड एकाऊंटेंट ऑफ इंडिया द्वारा जारी किए गए AS 3 के अनुसार भारतीय कंपनियों को रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करना तथा प्रतिवेदित करना अनिवार्य है। रोकड़ प्रवाह को परिचालन क्रियाओं, विनियोजित क्रियाओं और वित्तीय क्रियाओं में वर्गीकृत किया जा सकता है। यह वितरण उपयोगकर्ताओं को उपक्रम द्वारा अर्जित रोकड़ प्रवाह की राशि व निश्चितता ज्ञात करने में सहायक होता है।

प्रश्न एवं अभ्यास

1. *वस्तुनिष्ट प्रश्न*

अ *बताएँ कि निम्नलिखित लेनदेन कोष प्रवाह को प्रभावित करेगा अथवा नहीं*

(i) देनदारों से नकद प्राप्ति

(ii) अंशों का नकद निर्गम

(iii) पुराने फर्नीचर का अपलेखन

(iv) स्थगित आमद व्यय लाभ पर प्रभारित

(v) उधार माल का क्रय

(vi) पूर्तिकर्ताओं को भुगतान पर बट्टा प्राप्त

(vii) अंश निर्गम द्वारा स्थायी परिसंपत्तियों का क्रय

(viii) चालू माह की मजदूरी का भुगतान

(ix) गत् माह के बकाया किराये का भुगतान

(x) स्वामियों द्वारा व्यवसाय से नकद आहरण

ब *सत्य असत्य बताएँ*

(i) स्थायी परिसंपत्तियों को पुस्तक मूल्य से कम मूल्य पर विक्रय से नकदी प्राप्त कोष का स्रोत है।

(ii) रहतिये के क्रय का नकद भुगतान कोष का प्रयोग है।

(iii) लाभांश का भुगतान कोष का स्रोत नहीं है।

(iv) उधार माल का क्रय कोष का स्रोत नहीं है।

(v) परिचालन से कोष किसी उपक्रम का प्रमुख कोष स्रोत नहीं है।

स *सही विकल्प का चयन करें*

(i) रोकड़ प्रवाह विवरण के लिए

(अ) यह उपक्रम के रोकड़ प्राप्ति एवं रोकड़ भुगतान के संदर्भ में सूचना प्रदान करता है।

(ब) यह अंतिम रोकड़ शेष का बैंक विवरण में दर्शाए गए शेष से मिलान करता है।

(स) यह परिचालन विनियोजन व वित्तीय क्रियाओं के संदर्भ में सूचना प्रदान करता है।

(ii) रोकड़ प्रवाह विवरण रोकड़ प्रवाह को किसके अनुसार सपष्ट करता है।

(अ) परिचालन और परिचालन प्रवाह

(ब) विनियोजन व गैर-परिचालन प्रवाह

(स) अंतर्वाह व बहिर्वाह

(ड) परिचालन विनियोजन व वित्तीय क्रियाएँ

(iii) वित्तीय क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह का उदाहरण है:

(अ) लाभांश का भुगतान

(ब) प्रपत्रों पर लाभांश प्राप्ति

(स) ग्राहकों से नकद प्राप्ति

(ड) स्थायी परिसंपत्ति का क्रय

(iv) विनियोजन क्रिया से रोकड़ प्रवाह का उदाहरण है:

(अ) ऋणपत्रों का निर्गम

(ब) दीर्घकालीन ऋणों का भुगतान

(स) कच्चे माल का नकद क्रय

(ड) गैर-वित्तीय उपक्रम द्वारा प्रपत्रों का विक्रय

(v) परिचालन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह का उदाहरण है:

(अ) स्वयं के ऋणपत्रों का क्रय

(ब) स्थायी परिसंपत्तियों का विक्रय

(स) बैंक द्वारा सावधि जमा शेष पर ब्याज का भुगतान

(द) समता अंश पूँजी का निर्गम

द *कोष के स्रोत व प्रयोग की शुद्ध राशि बताएँ*

(i) स्थायी परिसंपत्ति 12,480 रु. पर बेची गई (पुस्तक मूल्य 14,000 रु.)

(ii) देनदार से 17,980 रु. प्राप्त हुए, 220 रु. का बट्टा दिया गया (देनदार से 18,200 रु. देय थे)

(iii) 14,900 रु. की लागत का माल 18,500 रु. पर बेचा गया

(iv) चालू माह की मजदूरी 24,000 रु. दी गई

(v) व्यवसाय के क्रय पर जिसमें 7,60,000 रु. की स्थायी परिसंपत्तियां, 2,15,000 रु. की चालू परिसंपत्तियां तथा 1,25,000 रु. की चालू देयताएँ सम्मिलित हैं, के एवज में 8,50,000 रु. के अंश जारी किए गए।

ह *प्रत्येक के संदर्भ में बताएँ कि वे 'परिचालन', 'विनियोजन' अथवा 'वित्तीय' क्रियाओं से उत्पन्न रोकड़ प्रवाह है :*

(i) नकद पर अंशों का निर्गम

(ii) अधिमूल्य पर ऋणपत्रों का शोधन

(iii) मशीनरी का नकद क्रय

(iv) रहतिये का नकद क्रय

(v) माल का नकद विक्रय

(vi) ऋणपत्रों पर ब्याज का भुगतान

(vii) व्यापारिक संस्था द्वारा निवेशित प्रपत्रों पर ब्याज की प्राप्ति

(viii) आय-कर का भुगतान

(ix) लाभांश का भुगतान

(x) हानि पर पुराने फर्नीचर का विक्रय

फ *रिक्त स्थानों की पूर्ति करें*

(i) कार्यशील पूंजी में परिवर्तन की सारणी शुद्ध ------ दर्शाती है।

(ii) वित्तीय स्थिति का वितरण (कार्यशील पूंजी पर आधारित).......... व .... दर्शाती है।

(iii) कोष प्रवाह विवरण का अंतिम शेष .... दर्शाता है।

(iv) कार्यशील पूंजी में परिवर्तन की सारणी .... दर्शाती है जबकि कोष प्रवाह विवरण ..... व ..... दर्शाता है।

(v) रोकड़ प्रवाह को .... व .... क्रियाओं में वर्गीकृत किया जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) 'कोष' क्या है।

(ii) वित्तीय स्थिति में परिवर्तन के विवरण से आप क्या समझते है।

(iii) रोकड़ प्रवाह विवरण क्या हैं?

(iv) कार्यशील पूँजी में परिवर्तन सारणी से आप क्या समझते हैं।

(v) कार्यशील पूँजी में परिवर्तन सारणी और कोष प्रवाह विवरण में अंतर बताएँ।

(vi) वित्तीय स्थिति में परिवर्तन का विवरण और रोकड़ प्रवाह विवरण में अंतर करें।

(vii) कोष के प्रमुख प्रयोग बताएँ।

(viii) कोष के प्रमुख स्रोत बताएँ।

(ix) परिचालन से कोष क्या है।

(x) परिचालन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह की गणना हेतु प्रत्यक्ष विधि की व्याख्या करें।

(xi) परिचालन क्रियाओं से रोकड़ प्रवाह की गणना हेतु अप्रत्यक्ष विधि की व्याख्या करें।

(xii) परिचालन से कोष को ज्ञात करने की विधि बताएँ।

(xiii) विनियोजन क्रियाओं के प्रमुख रोकड़ अंतर्वाह व रोकड़ बहिर्वाह क्या हैं।

(xiv) वित्तीय क्रियाओं के प्रमुख रोकड़ अंतर्वाह व बहीर्वाह क्या हैं।

(xv) वित्तीय स्थिति में परिवर्तन विवरण की सीमाएँ बताएँ।

(xvi) रोकड़ प्रवाह को कोष प्रवाह से अच्छा क्यों समझा जाता है।

निबंधात्मक प्रश्न

(i) वित्तीय स्थिति में परिवर्तन के विवरण की विधि बताएँ।

(ii) रोकड़ प्रवाह विवरण को तैयार करने की विधि बताएँ।

(iii) परिचालन क्रियाओं द्वारा रोकड़ प्रवाह ज्ञात करने की प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष विधि की व्याख्या करें।

(iv) वित्तीय स्थिति में परिवर्तन के विवरण के लाभ व सीमाएँ बताएँ। साथ ही रोकड़ प्रवाह व कोष प्रवाह में अंतर करें।

प्रश्न

4. निम्नलिखित आंकड़े चन्द्रा फूडस लि. से संबंधित हैं

31 मार्च, 2002, 2003 चन्द्रा फूडस लि. का तुलन-पत्र

देयताएँ	2002 रु.	2003 रु.	परिसंपत्तियाँ	2002 रु.	2003 रु.
अंश पूँजी	2,50,000	2,50,000	भूमि व भवन	1,40,000	1,40,000
लेनदार	55,000	80,000	रहतिया	1,00,000	1,30,000
देय विपत्र	20,000	40,000	देनदार	28,000	30,000
ऋण	10,000	15,000	हस्तस्थ रोकड	7,000	25,000
			ख्याति	60,000	60,000
योग	**3,35,000**	**3,85,000**	**योग**	**3,35,000**	**3,85,000**

कार्यशील पूँजी में परिवर्तन सारणी तैयार करें।

5. निम्नलिखित तुलन-पत्र राजेश्वरी लि. से संबंधित है:

31 मार्च, 2002, 2003 को राजेश्वरी लि. का तुलन-पत्र

देयताएँ	2002 रु.	2003 रु.	परिसंपत्तियाँ	2002 रु.	2003 रु.
अंश पूँजी	6,50,000	7,80,000	परिसंपत्तियाँ	8,30,000	8,60,000
लाभ एवं हानि	40,000	65,000	रहतिया	2,90,000	3,70,000
8% ऋणपत्र	3,00,000	2,50,000	हस्तस्थ रोकड़	80,000	90,000
लेनदार	1,70,000	1,60,000	पूर्वदत्त व्यय	10,000	15,000
देय विपत्र	40,000	50,000	प्रारंभिक व्यय	10,000	-
बकाया व्यय	20,000	30,000			
योग	**12,20,000**	**13,35,000**	**योग**	**12,20,000**	**13,35,000**

कार्यशील पूँजी में परिवर्तन सारणी तैयार करें।

6. रोज लि. के वर्ष मार्च 31, 2002, 2003 के दो तुलन-पत्र इस प्रकार हैं:

वर्ष 31 मार्च, 2002, 2003 को रोज लि. का तुलन-पत्र

परिसंपत्तियाँ	2002 रु.	2003 रु.
हस्तस्थ रोकड़	30,000	47,000
देनदार	1,20,000	1,15,000
रहतिया	80,000	90,000
भवन	50,000	66,000
योग	**2,80,000**	**3,18,000**
पूँजी व दायित्व		
समता अंश पूँजी	2,00,000	2,50,000
लेनदार	70,000	45,000
संचित आय	10,000	23,000
योग	**2,80,000**	**3,18,000**

कार्यशील पूँजी में परिवर्तन सारणी तैयार करें।

7. निम्नलिखित आंकड़े पलॉश लि. से संबंधित है:

वर्ष 31 मार्च, 2002 व 2003 पलॉश लि. का तुलन-पत्र

देयताएँ	*मार्च 31, 2002* रु.	*मार्च 31, 2003* रु.
पूँजी	80,000	85,000
लाभ एवं हानि विनियोजन	14,500	24,500
लेनदार	9,000	5,000
ऋण	-	5,000
संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	1,000	1,300
योग	**1,04,500**	**1,20,000**
परिसंपत्तियाँ		
भूमि व भवन	50,000	50,000
सयंत्र व मशीनरी	24,000	34,000
रहतिया	9,000	7,000
प्राप्य विपत्र	17,500	20,800
बैंकस्थ रोकड़	4,000	9,000
योग	**1,04,500**	**1,20,000**

कार्यशील पूँजी में परिवर्तन सारणी तैयार करें।

8. निम्नलिखित आंकड़े पवन हंस लि. से संबंधित है:

वर्ष 31 मार्च, 2002, 2003 को पवन हंस लि. का तुलन-पत्र

देयताएँ	*2002* रु.	*2003* रु.	*परिसंपत्तियाँ*	*2002* रु.	*2003* रु.
अंश पूँजी	90,000	1,11,000	बैंकस्थ रोकड़	15,000	18,000
लेनदार	60,000	54,000	प्राप्य विपत्र	42,000	42,000
उपार्जित व्यय	6,000	12,000	रहतिया	66,000	24,000
देय आय कर	3,000	3,300	पूर्वदत्त किराया	450	300
संचित आय	37,950	40,950	पूर्वदत्त बीमा	600	750
			पूर्वदत्त संपत्ति कर	900	1,200
			भूमि	12,000	24,000
			भवन व उपकरण	90,000	1,44,000
			घटाया: समेकित ह्रास	(30,000)	(33,000)
योग	**1,96,950**	**2,21,250**	**योग**	**1,96,950**	**2,21,250**

कार्यशील पूँजी में परिवर्तन सारणी तैयार करें।

परिचालन द्वारा कोष ज्ञात करें।

9. निम्नलिखित आंकड़े सुरभि लि. से संबंधित है

वर्षान्त मार्च 31, 2000 को सुरभि लि. का लाभ व हानि खाता

विवरण	रु.	*विवरण*	रु.
देय व्यय	1,50,000	सकल लाभ	8,00,000
ह्रास	35,000	भूमि के विक्रय पर लाभ	30,000
मशीन के विक्रय पर हानि	2,000		
ख्याति	10,000		
शुद्ध लाभ	6,33,000		
योग	**8,30,000**	**योग**	**8,30,000**

10. वर्षान्त 2003 को फ्रेश डेयरी की शुद्ध आय 14,87,000 रु. है यह आय निम्न समायोजनों के उपरांत प्राप्त की गई:

(i) मूर्त परिसंपत्तियों पर ह्रास 86,000 रु. ; ख्याति एवं पेटेंट का मूल्यांकन 18,000 रु.

(ii) प्रारंभिक व्यय का अपलेखन 18,000 रु.

(iii) पुराने फर्नीचर के विक्रय पर हानि 800 रु. व पुरानी मशीनरी के विक्रय पर हानि 4,600 रु.

(iv) ऋणपत्रों पर ब्याज का भुगतान 80,000 रु.

परिचालन से कोष की गणना करें।

11. निम्नलिखित आंकड़े ग्रेजिम लि. से संबंधित है

वर्षान्त मार्च 31, 2003 को ग्रेजिम लि. का लाभ व हानि खाता

विवरण	रु.	*विवरण*	रु.
देय व्यय	6,000	सकल लाभ	9,000
ह्रास	1,400	भूमि के विक्रय पर लाभ	1,200
मशीन के विक्रय पर	80		
बट्टा	4		
ख्याति	400		
शुद्ध लाभ	2,316		
योग	**10,200**	**योग**	**10,200**

संकेत : बट्टे से आशय ग्राहकों को बट्टा प्रदान करने से है।
परिचालन से कोष ज्ञात करें।

12. निम्नलिखित आंकड़े आकाश लि. से संबंधित है:

वर्षान्त मार्च 31, 2003 को आकाश लि. का लाभ व हानि खाता

विवरण	रु.	*विवरण*	रु.
ह्रास	900	सकल लाभ	8,500
अंश निर्गम पर बट्टा	200	सयंत्र के विक्रय पर लाभ	4,000
मशीनरी के विक्रय पर हानि	400		
ख्याति (अपलिखित)	2,200		
प्रारंभिक व्यय	650		
व्यापारिक व्यय	2,500		
शुद्ध लाभ	5,650		
योग	**12,500**	**योग**	**12,500**

परिचालन से कोष ज्ञात करें।

13. निम्नलिखित आंकड़े ऐपल लि. से संबंधित है:

वर्षान्त मार्च 31, 2003 को ऐपल लि. का लाभ व हानि खाता

विवरणरु.		विवरण	रु.		
कर्मचारियों को वेतन		60,000	सकल लाभ		1,50,000
किराया		22,500	भवन के विक्रय पर लाभ		
डूबत ऋणों का प्रावधान		7,500	विक्रय राशि	15,000	
प्रारंभिक व्ययों का अपलेखन		15,000	घटाया :		
ख्याति (अपलिखित)		7,500	पुस्तक मूल्य	7,500	7,500
मशीनरी पर ह्रास		7,500			
संयत्र के विक्रय पर हानि					
पुस्तक मूल्य	15,000				
घटाया : विक्रय राशि	12,000	3,000			
कराधान		7,500			
शुद्ध लाभ		27,000			
योग		**1,57,500**	**योग**		**1,57,500**

परिचालन से कोष ज्ञात करें।

14. निम्नलिखित आंकड़े से सेफायर लि. से संबंधित है:

वर्षान्त मार्च 31, 2002 को सेफायर लि. का लाभ व हानि खाता

विवरण	रु.	विवरण	रु.
वेतन	50,000	सकल लाभ	3,00,000
व्यय	12,000	संयत्र व उपकरण के	
ह्रास	30,000	विक्रय पर लाभ	12,000
फर्नीचर के विक्रय पर हानि	5,000	प्राप्त ब्याज	3,000
शुद्ध लाभ	2,18,000		
योग	**3,15,000**	**योग**	**3,15,000**

संकेत : प्राप्त ब्याज को गैर-परिचालन आय समझा जाएगा चूँकि फर्म वित्तीय व्यापार से संबंधित नहीं है।

परिचालन से कोष ज्ञात करें।

15. वर्ष 2001 के दौरान कोचर लि. ने निम्न समायोजनों के उपरान्त 1,75,720 रु. का लाभ कमाया

(i) ह्रास : संयत्र पर 12,800 रु., फर्नीचर पर 2,500 रु.

(ii) स्थायी परिसंपत्तियों के विक्रय पर लाभ 15,000 रु.

(iii) ऋणपत्रों के निर्गम पर बट्टा अपलिखित 20,000 रु.

(iv) 30,000 रु. के प्रपत्रों को 28,000 रु. पर बेचा गया

(v) प्रारंभिक व्यय पुस्तकों में 40,000 रु. पर दिखाए गए हैं जिसमें से 20% अपलिखित किए जा चुके हैं।

(vi) प्रस्तावित लाभांश 50,000 रु.

(vii) प्राप्त लाभांश 2,500 रु.

(viii) निक्षेप निधि में हस्तांतरित

परिचालन से कोष ज्ञात करें।

रोकड़ प्रवाह विवरण

16. वैल्केनो लि. ने वर्ष 2003 को 84,50,000 रु. की शुद्‌ध आय दर्शायी। वर्ष के दौरान ह्रास 14,95,000 रु. था। वर्ष के अंत में देनदार वर्ष के प्रारंभ से 87,000 रु. अधिक रहे। लेनदारों में 43,000 रु. से वृद्‌धि हुई। वर्ष के दौरान रहतियों में 9,000 रु. से कमी आई। परिचालन क्रियाओं से शुद्‌ध रोकड़ की गणना करें।

17. बताएँ कि निम्नलिखित मदों को रोकड़ प्रवाह विवरण में किस प्रकार दर्शाया जाएगा।

(i) प्रत्येक अंश 100 के 20,00,000 समता अंशों को 4 रु. प्रति अंश अधिमूल्य पर निर्गमित किया ।

(ii) 4,85,000 रु. के उपकरण क्रय किए गए।

(iii) 98,000 रु. के पुस्तक मूल्य के पुराने उपकरण को 87,000 रु. पर बेचा गया।

iv) घोषित लाभांश का भुगतान किया गया 1,26,000 रु.।

(v) प्रपत्रों पर प्राप्त ब्याज 18,000 रु.।

18. निम्नलिखित आकड़े मुद्रा लि. से संबंधित हैं।

वर्ष मार्च 31, 2000, 2001 को मुद्रा लि. का तुलन-पत्र

देयताएँ	*2000 राशि रु.*	*2001 राशि रु.*	*परिसंपत्तियाँ*	*2000 राशि रु.*	*2001 राशि रु.*
अंश पूँजी	1,40,000	1,48,000	हस्तहस्थ रोकड़	18,000	15,600
ऋणपत्र	24,000	12,000	विक्रय प्रतिभूतियाँ	29,800	35,400
संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	1,400	1,600	रहतिया	98,400	85,400
			भूमि	40,000	60,000
लाभ व हानि	20,080	21,120	ख्याति	20,000	10,000
योग	**2,06,200**	**2,06,400**	**योग**	**2,06,200**	**2,06,400**

(1) शुद्‌ध प्रचालन लाभ (2) परिचालन से रोकड़ ज्ञात करें।

19. निम्नलिखित आंकड़ों को गौर से पढ़े

प्लासटिक प्रोडक्ट का मार्च 31, 2000, 2001 का तुलन-पत्र

देयताएँ	2000 राशि रु.	2001 राशि रु.	परिसंपत्तियाँ	2000 राशि रु.	2001 राशि रु.
देय लेनदार	20,000	25,000	हस्तस्थ रोकड़	20,000	10,000
देय विपत्र	20,000	5,000	विक्रय		
अन्य चालू दायित्व	40,000	45,000	प्रतिभूतियाँ	40,000	30,000
6% ऋणपत्र.	60,000	80,000	रहतिया	30,000	45,000
लाभ व हानि	80,000	1,10,000	प्राप्य विपत्र	30,000	40,000
			सकल खंड	1,00,000	1,40,000
योग	**2,20,000**	**2,65,000**	**योग**	**2,20,000**	**2,65,000**

शुद्ध परिचालन लाभ व परिचालन से रोकड़ ज्ञात करें।

20. निम्नलिखित आकड़े सुंदरम् लि. से संबंधित है :

वर्ष मार्च 31, 2000, 2001 को सुंदरम् लि. का तुलन-पत्र

देयताएँ	2000 राशि रु.	2001 राशि रु.	परिसंपत्तियाँ	2000 राशि रु.	2001 राशि रु.
अंश पूँजी	48,000	51,000	बैंकस्थ रोकड़	2,400	5,400
लाभ व हानि	85,00	1,05,000	प्राप्य विपत्र	99,000	1,19,000
लेनदार	5,400	6,000	रहतिया	5,400	4,200
ऋण	2,800	10,000	भूमि	20,000	20,000
			संयंत्र	14,400	23,400
योग	**1,41,200**	**1,72,000**	**योग**	**1,41,200**	**1,72,000**

रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करें।

21. निम्नलिखित आकड़ों को गौर से देखें।

देयताएँ	2002 राशि रु.	2003 राशि रु.	परिसंपत्तियाँ	2002 राशि रु.	2003 राशि रु.
समता अंश पूँजी	50,000	60,000	हस्तस्थ रोकड़	3,000	5,000
लेनदार	10,000	22,000	बैंकस्थ रोकड़	8,000	14,000
देय विपत्र	8,000	5,000	देनदार	9,000	12,000
समान्य संचय	6,000	10,000	भूमि	10,000	16,000
लाभ व हानि विनियोजन	40,000	55,000	भवन	50,000	70,000
			उपकरण	34,000	35,000
योग	**1,14,000**	**1,52,000**	**योग**	**1,14,000**	**1,52,000**

रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करें।
कोष प्रवाह विवरण ज्ञात करें।

22. निम्नलिखित आंकड़े कोटा स्टोव से संबंधित है

वर्ष मार्च 31, 2002, 2003 को कोटा स्टोव का तुलन-पत्र

देयताएँ	2002 राशि रु.	2003 राशि रु.	परिसंपत्तियाँ	2002 राशि रु.	2003 राशि रु.
अंशपूँजी	2,40,000	2,55,000	भूमि एवं भवन	1,50,000	1,50,000
लाभ व हानि विनियोजन	43,500	73,500	संचय	75,000	1,05,000
देय विपत्र	27,000	15,000	रहतिया	24,000	18,000
सामान्य संचय	-	15,000	हस्तस्थ रोकड़	13,500	28,500
योग	**3,10,500**	**3,58,500**	**योग**	**3,10,500**	**3,58,500**

कोष प्रवाह विवरण तैयार करें।

23. निम्नलिखित आंकड़े कुमार लि. से संबंधित हैं:

वर्ष मार्च 31, 2002, 2003 को कोटा स्टोव का तुलन-पत्र

पूँजी व देयताएँ	*मार्च 31 2002* रु.	*मार्च 31 2003* रु.
पूँजी	1,60,000	1,70,000
लाभ एवं हानि विनियोजन	29,000	49,000
लेनदार	18,000	10,000
ऋण	-	10,000
योग	**2,07,000**	**2,39,000**
परिसंपत्तियाँ		
भूमि एवं भवन	1,00,000	1,00,000
संयत्र एवं मशीनरी	48,000	68,000
रहतिया	18,000	14,000
प्राप्य विपत्र	33,000	39,000
बैंकस्थ रोकड़	8,000	18,000
योग	**2,07,000**	**2,39,000**

कोष प्रवाह विवरण तैयार करें।

24. निम्नलिखित आंकड़े आर. के. इंटरप्राइजिज से संबंधित है :

वर्ष मार्च 31, 2002, 2003 को आर. के. इंटरप्राइजिज का तुलन-पत्र

देयताएँ	*2002* रु.	*2003* रु.
पूँजी एवं देयताएँ	80,000	85,000
लाभ एवं हानि विनियोजन	14,500	24,000
लेनदारा	9,000	5,000
ऋण	-	5,000
संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान	1,000	1,300
योग	**1,04,500**	**1,20,800**
परिसंपत्तियाँ		
भूमि एवं भवन	50,000	50,000
संयत्र एवं मशीनरी	24,000	34,000
रहतिया	9,000	7,000
देनदार	17,500	20,800
बैंकस्थ रोकड़	4,000	9,000
योग	**1,04,500**	**1,20,800**

कोष प्रवाह विवरण तैयार करें।

25. निम्नलिखित आंकड़े महिन्द्रा फिल्मस् लि. के तुलन-पत्र से प्राप्त किए गए हैं:

परिसंपत्तियाँ	31-03-2002	31-03-2003
फर्नीचर (लागत पर)	40,000	50,000
घटाया : ह्रास	(18,000)	(23,000)
	22,000	27,000
रहतिया	70,000	78,000
देनदार	17,000	16,000
बैंकस्थ रोकड़	12,000	34,000
पूर्वदत्त व्यय	2,500	1,600
योग	**1,23,500**	**1,56,600**
देयताएँ		
समता अंश पूँजी	50,000	1,00,000
अधिमानी अंश पूँजी	25,000	-
लाभ एवं हानि	20,000	37,000
लेनदार	28,500	19,600
योग	**1,23,500**	**1,56,600**

कोष प्रवाह विवरण तैयार करें

26. निम्नलिखित आंकड़े सुपर सिक्स लि. से संबंधित है:

मार्च 31, 2002, 2003 को सुपर सिक्स लि. का तुलन-पत्र

देयताएँ	*2002* रु.	*2003* रु.
समता अंश पूँजी	80,000	1,20,000
प्रतिभूति अधिमूल्य	8,000	12,000
सामान्य संचय	6,000	9,000
लाभ एवं हानि	19,500	20,800
5% ऋणपत्र	-	26,000
आयकर	9,800	10,900
लेनदार	33,500	36,400
योग	**1,56,800**	**2,35,100**

परिसंपत्तियाँ		
भूमि	55,400	1,13,200
संयत्र एवं मशीनरी	35,600	51,300
फर्नीचर	2,400	1,500
रहतिया	22,100	26,000
देनदार	36,500	39,100
बैंक शेष	4,800	4,000
योग	**1,56,800**	**2,35,100**

अतिरिक्त सूचना

वर्ष के दौरान ह्रास अपलिखित

संयत्र व मशीनरी 12,800 रु.

फर्नीचर 400 रु.

कार्यकारी टिप्पणी सहित कोष प्रवाह विवरण तैयार करें।

27. निम्नलिखित आंकड़े राजधानी कॉरपोरेशन लि. से संबंधित है:

देयताएँ	*2001* रु.	*2002* रु.	*परिसंपत्तियाँ*	*2001* रु.	*2002* रु.
समता अंश पूँजी	80,000	1,20,000	ख्याति	20,000	16,000
			भूमि एवं भवन	40,000	20,000
11% अधिमानी अंश (शोधनीय)	40,000	20,000	संयत्र	36,000	76,400
सामान्य संचय	8,000	12,000	प्रपत्र (दीर्घकालीन)	4,000	14,000
लाभ एवं हानि	7,200	10,800	देनदार	30,000	43,200
प्रस्तावित लाभांश	11,200	15,600	रहतिया	34,000	31,200
देय विपत्र	14,000	21,200	रोकड़	6,800	11,200
बकाया व्यय	3,200	2,400	प्रारंभिक व्यय	4,000	2,800
कराधान	11,200	12,800			
योग	**1,74,800**	**2,14,800**	**योग**	**1,74,800**	**2,14,800**

कोष प्रवाह विवरण तैयार करें।

28. निम्नलिखित आंकड़े माया लि. के तुलन-पत्र से प्राप्त किए गए हैं

देयताएँ		31-3-2001 रु.		31-3-2002 रु.
समता अंश पूँजी		1,50,000		2,00,000
प्रतिभूति अधिमूल्य		-		5,000
सामान्य संचय		50,000		60,000
लाभ एवं हानि		20,000		35,000
ऋणपत्र		1,00,000		75,000
देय विपत्र		25,000		20,000
लेनदार		35,000		40,000
बकाया व्यय		2,000		1,000
योग		**3,82,000**		**4,36,000**
परिसंपत्तियाँ				
ख्याति		10,000		8,000
फर्नीचर (लागत)	50,000		60,000	
घटाया : ह्रास	28,000		34,000	
		22,000		26,000
दीर्घकालीन प्रपत्र		40,000		52,000
रहतिया		2,54,000		2,89,000
प्राप्य विपत्र		31,000		28,000
बैंकस्थ रोकड़		22,000		31,000
ऋणपत्रों पर बट्टा		3,000		2,000
योग		**3,82,000**		**4,36,000**

कोष प्रवाह विवरण तैयार करें।

29. निम्नलिखित आंकड़े तरूण लि. से संबंधित है :

	मार्च 31, 2002 रु.	मार्च 31, 2003 रु.
परिसंपत्तियाँ		
भूमि व भवन	80,000	1,20,000
संयत्र एवं मशीनरी	5,00,000	8,00,000
रहतिया	1,00,000	75,000
देय विपत्र लेनदार	1,50,000	1,60,000
रोकड़	20,000	20,000
योग	**8,50,000**	**11,75,000**

दायित्व एवं पूँजी		
अंश पूँजी	5,00,000	7,00,000
लाभ एवं हानि	1,00,000	1,60,000
सामान्य संचय	50,000	70,000
देनदार	1,53,000	1,90,000
प्राप्य बिल	40,000	50,000
बकाया व्यय	7,000	5,000
योग	**8,50,000**	**11,75,000**

अतिरिक्त सूचनाएँ

(i) वर्ष 2003 के दौरान संयत्र व मशीनरी पर 50,000 रु. का ह्रास लगाया गया।

(ii) एक मशीनरी जिसे 2003 में 8,000 रु. में बेचा गया था उसकी लागत 12,000 रु. थी जिस पर 7,000 रु. ह्रास लगाया गया था।

कोष प्रवाह विवरण तैयार करें।

30. निम्नलिखित आंकड़ो को ध्यान पूर्वक पढ़े।

वर्ष मार्च 31, 2001 व 2002 को .... का तुलन-पत्र

देयताएँ	*2001* रु.	*2002* रु.	*परिसंपत्तियाँ*	*2001* रु.	*2002* रु.
समता अंशपूँजी	6,00,000	6,00,000	ख्याति	72,000	72,000
सामान्य संचय	1,04,000	1,08,000	भूमि	2,40,000	2,16,000
लाभ एवं हानि	76,000	78,000	भवन	2,22,000	2,16,000
लेनदार	48,000	32,400	लघु अवधि ऋण	60,000	66,000
लघु अवधि ऋण	7,200	4,800			
कराधान	96,000	1,08,000	रहतिया	1,80,000	1,40,000
संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान	2,400	3,600	देनदार	1,20,000	1,33,600
			बैंकस्थ रोकड़	39,600	91,200
योग	**9,33,600**	**9,34,800**	**योग**	**9,33,600**	**9,34,800**

अतिरिक्त सूचना

(1) भूमि के एक भाग को 24,000 रु. पर बेचा गया।

(2) भवन पर 42,000 रु. का ह्रास लगाया गया।

(3) 30,000 रु. को अंतरिम लाभांश का भुगतान किया गया।

कोष प्रवाह विक्रय तैयार करें।

31. निम्नलिखित आंकड़ो को ध्यानपूर्वक पढ़े

वर्ष मार्च 31, 2001 व 2002 को रूचिता क्रियेशन का तुनल-पत्र

देयताएँ	2001 रु.	2002 रु.	परिसंपत्तियाँ	2001 रु.	2002 रु.
समता अंश पूँजी	1,60,000	1,10,000	स्थायी परिसंपत्तियाँ	1,60,000	1,64,000
अधिमानी अंश पूँजी	40,000	50,000	घटाया :		
सामान्य संचय	8,000	8,000	समेकित ह्रास	(60,000)	(44,000)
लाभ एवं हानि	4,800	4,000			
13% ऋण-पत्र	28,000	24,000	देनदार	1,40,000	1,20,000
लेनदार	44,000	48,000	रहतिया	96,000	80,000
कराधान	16,800	12,000	पूर्वदत्त	2,000	1,200
प्रस्तावित लाभांश	23,200	20,000	बैंकस्थ रोकड़	14,000	4,800
बैंक अधिविकर्ष	27,200	50,000			
योग	**3,52,000**	**3,26,000**	**योग**	**3,52,000**	**3,26,000**

अतिरिक्त सूचना

(1) 14,000 रु. के कर का भुगतान किया गया

(2) स्थायी परिसंपत्ति को 20,000 रु. पर बेचा गया जिसकी लागत 40,000 रु. थी तथा उस पर ह्रास 12,000 रु. का था

(3) 18,000 के अंतरिम लाभांश का भुगतान किया गया।

कोष प्रवाह विवरण तैयार करें।

32. मार्च 31, 2002 एवं 2003 को उपकरण खाते तथा समेकित ह्रास खाते का शेष निम्नलिखित था:

शेष	2002	2003
उपकरण	65,00,00 रु.	78,70,000 रु.
समेकित ह्रास	10,80,000 रु.	16,32,000 रु.

एक उपकरण जिसकी लागत 12,30,000 रु. थी तथा उसपर समेकित ह्रास 7,18,000 रु. था उस उपकरण को 4,68,000 रु. पर बेचा गया।

(i) उपकरण की क्रय राशि, वर्ष के दौरान ह्रास तथा उपकरण के विक्रय पर हानि ज्ञात करें।

(ii) बताएँ प्रत्येक मद किस प्रकार रोकड़ प्रवाह विवरण में दर्शायी जाएगी।

33. ब्लयू स्काई लि. की मार्च 31, 2003 को शुद्ध आय 4,89,000 रु. थी। वर्ष के दौरान 87,000 रु. का ह्रास लगाया गया। आय का निर्धारण भूमि के विक्रय पर लाभ 1,05,000 रु. उपकरण के विक्रय पर हानि 48,000 रु. एवं समता निर्गम लागत 25,000 रु. अपलिखित करने के समायोजन के उपरांत ज्ञात की गई।

मार्च 31, 2002 व 2003 को चालू परिसंपत्तियाँ एवं चालू देयताएँ इस प्रकार है।

	मार्च 31 2002	*मार्च 31 2003*
रहतिया	1,85,000	1,67,000
प्राप्य विपत्र	1,42,000	1,45,000
पूर्वदत्त व्यय	12,000	8,000
बैंकस्थ एवं हस्तस्थ रोकड़	87,000	1,02,000
देय विपत्र	95,000	1,07,000
बकाया व्यय	13,000	9,000

रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करें।

34. निम्नलिखित आंकड़े फलावर लि. से संबंधित है:

मार्च 31, 2002, 2003 को फलावर लि. का तुलन-पत्र

देयताएँ एवं समता	*2002* रु.	*2003* रु.
समता अंश पूँजी	15,00,000	17,50,000
संचय एवं अधिशेष	3,90,000	6,27,000
9% ऋणपत्र	10,00,000	10,00,000
लेनदार	67,000	1,20,000
बकाया व्यय	18,000	23,000
योग	**29,75,000**	**35,20,000**
परिसंपत्तियाँ		
भूमि	10,00,000	13,00,000
भवन	8,00,000	9,96,000
भवन पर समेकित ह्रास	(1,20,000)	(1,60,000)
उपकरण	14,00,000	16,50,000
उपकरण पर समेकित ह्रास	(4,35,000)	(5,80,000)
फर्नीचर	85,000	1,25,000
फर्नीचर पर समेकित ह्रास	(17,000)	(38,000)
देनदार	1,28,000	1,43,000
रोकड़	47,000	84,000
योग	**29,75,000**	**35,20,000**

अतिरिक्त सूचना

(i) 10 रु. प्रति अंश वाले 25,000 समता अंश 2 रु. के अधिमूल्य पर जारी किया गया।

(ii) उपकरण जिसका लागत मूल्य 220,000 रु. (समेकित ह्रास 1,20,000 रु.) था 75,000 रु. की हानि पर बेचा गया।

(i) कार्यशील पूँजी में शुद्ध परिवर्तन की गणना करें।

(ii) कोष प्रवाह विवरण बनाएँ।

(iii) रोकड़ प्रवाह विवरण बनाएँ।

35. निम्नलिखित आय विवरण और तुलन-पत्र ऑरेंज लि.

ऑरेंज लि. का तुलन-पत्र

परिसंपत्तियाँ	रु.	रु.	रु.	रु.
स्थायी परिसंपत्तियाँ	7,80,000		9,75,000	
घटाया : समेकित ह्रास	3,00,000	4,80,000	2,40,000	7,35,000
रहतिया		78,000		93,000
देनदार		85,000		1,02,000
नकद		47,000		95,000
योग		**6,90,000**		**10,25,000**
समता व देयताएँ				
समता अंश पूँजी		3,00,000		5,00,000
संचय और अधिशेष		1,18,000		3,74,000
10% ऋणपत्र		2,00,000		1,00,000
ऋणपत्र शोधन अधिलाभ		20,000		10,000
विविध लेनदार		38,000		32,000
अदत्त व्यय		14,000		09,000
योग		**6,90,000**		**10,25,000**

अतिरिक्त सूचनाएँ

(i) नकद लाभांश भुगतान 45,000 रु.।

(ii) 4,00,000 रु. का नकद संयंत्र का क्रय।

(iii) पुरानी मशीन 20,000 रु. की हानि पर, 45,000 रु. में बेचा गया।

(iv) रोकड़ के लिए सममूल्य पर समता अंश जारी किया गया।

(v) ऋणपत्रों का भुगतान 10% अधिमूल्य पर किया गया।

कार्यशील पूँजी में परिवर्तन और वित्तीय स्थिति दर्शाए।

रोकड़ प्रवाह विवरण बनाए।

उत्तर

4. कार्यशील पूँजी में शुद्ध वृद्धि	5,000 रु.
5. कार्यशील पूँजी में शुद्ध वृद्धि	85,000 रु.
6. कार्यशील पूँजी में शुद्ध वृद्धि	47,000 रु.
7. कार्यशील पूँजी में शुद्ध वृद्धि	10,000 रु.
8. कार्यशील पूँजी में शुद्ध कमी	39,000 रु.
9. परिचालन से कोष	6,50,000 रु.
10. परिचालन से कोष	16,01,400 रु.
11. परिचालन से कोष	2,996 रु.
12. परिचालन से कोष	6,000 रु.
13. परिचालन से कोष	60,000 रु.
14. परिचालन से कोष	2,38,000 रु.
15. परिचालन से कोष	2,73,520 रु.
16. परिचालन क्रियाओ से रोकड़ प्राप्ति	99,10,000 रु.
17. वित्तीय क्रियाओ से रोकड़ अंतर्वाह	2,80,000 रु.
विनियोजन क्रियाओं के लिए रोकड़ का प्रयोग	4,85,000 रु.
विनियोजन क्रियाओं से रोकड़ अंतर्वाह	87,000 रु.
वित्तीय क्रियाओं के लिए रोकड़ का प्रयोग	1,25,000 रु.
विनियोजन क्रियाओं के लिए रोकड़ का प्रयोग	18,000 रु.
18. शुद्ध परिचालन लाभ	11,040 रु.
परिचालन से रोकड़	21,600 रु.
19. शुद्ध परिचालन लाभ	30,000 रु.
परिचालन से रोकड़	10,000 रु.
20. शुद्ध परिचालन लाभ	20,000 रु.
कुल रोकड़ प्रवाह	14,400 रु.
21. शुद्ध परिचालन लाभ	19,000 रु.
कुल रोकड़ प्रवाह	46,000 रु.

22.	कार्यशील पूँजी में वृद्धि	30,000 रु.
	परिचालन से कोष	30,000 रु.
	कुल कोष प्रवाह	60,000 रु.
23.	कार्यशील पूँजी में शुद्ध वृद्धि	24,200 रु.
	कुल कोष प्रवाह	30,200 रु.
24.	कार्यशील पूँजी में वृद्धि	10,000 रु.
	परिचालन से कोष	10,000 रु.
	कुल कोष प्रवाह	20,000 रु.
25.	कार्यशील पूँजी में वृद्धि	37,000 रु.
	परिचालन से कोष	22,000 रु.
	कुल कोष प्रवाह	72,000 रु.
26.	कार्यशील पूँजी में वृद्धि	1,700 रु.
	परिचालन से कोष	17,500 रु.
	कुल कोष प्रवाह	88,000 रु.
27.	कार्यशील पूँजी में वृद्धि	6,800 रु.
	परिचालन से कोष	28,400 रु.
	कुल कोष प्रवाह	88,400 रु.
28.	कुल कोष प्रवाह	1,46,000 रु.
29.	कार्यशील पूँजी में कमी	60,000 रु.
	परिचालन से कोष	1,27,000 रु.
30.	कुल कोष प्रवाह	2,10,000 रु.
31.	कुल कोष प्रवाह	1,70,000 रु.
32.	(i) उपस्कर का क्रय	26,00,000 रु.
	उपस्कर के विक्रय पर हानि	44,00,000 रु.
33.	परिचालन क्रियाओं द्वारा रोकड़	5,71,000 रु.
34.	(i) कार्यशील पूँजी में शुद्ध परिवर्तन	3,000 रु.
	(ii) परिचालन से कोष	6,78,000 रु.
	कोषो का कुल स्रोत	10,93,000 रु.
	कोषों का कुल प्रयोग	10,90,000 रु.
	(ii) परिचालन क्रियाओं द्वारा रोकड़	8,02,000 रु.
	विनियोग क्रियाओ के लिए रोकड़ का प्रयोग	8,25,000 रु.
	वित्तीय क्रियाओ से रोकड़	10,93,000 रु.
35.	कार्यशील पूँजी में शुद्ध वृद्धि	91,000 रु.
	परिचालन से कोष	4,01,000 रु.
	कोषो का कुल स्रोत	6,46,000 रु.
	कोषो का कुल प्रयोग	5,55,000 रु.
	विनियोग क्रियाओं में रोकड़ का प्रयोग	3,55,000 रु.
	वित्तीय क्रियाओं से रोकड़	45,000 रु.